राजस्थान के जैन शास्त्र मण्डारों

की

____ ग्रन्थ-सूची

[भाग ३]

[जयपुर के श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान वधीचन्दजी एवं दिगम्बर जैन मन्दिर ठोलियों के शास्त्र भएडारों के ग्रन्थों की सूची]

A

सम्पादक -

कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए , शास्त्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ साहित्यरत्न,

घारतीय श्रीत-दर्शन केन्द्र रूडि पुर

प्रकाशक —

7

वधीचन्द गंगवाल

मन्त्री .—

प्रवन्धकारिगा कमेटी श्री दिगम्बर जैन र्घ्यातशय त्तेत्र श्री महावीरजी महावीर पार्क रोड, जयपुर

्रपुस्तक प्राप्ति स्थानः ः —

- मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० तेत्र श्री महावीरजी
 महावीर पार्क रोड, जयपुर (राजस्थान)
- २. मैनेजर श्री दिगम्बर जैन श्र० चेत्र श्री महातीरजी श्री महाबीरजी (राजस्थान)

鷌

प्रथम संस्करण ४०० प्रति बीर निर्वाण संवत् २४८३ वि० सं० २०१४ अगस्त १६५७

मृत्य को जैन विद्या संस्थान Rs 5 0 ₹ 0 0

鲘

मुद्रक '— भँवरलाल न्यायतीर्थ, श्री बीर प्रेस, जयपुर ।

★ विषय सूची ¥

		3 /	
٧.	प्रकाशकीय	grang.	पृष्ठ संख्या त्र्य
٠. ع.	प्रस्तावना प्रस्तावना	-	8
	न प्राप्ता विषय	वधीचन्दजी के मन्दिर के प्रन्थ	ठोलियों के मन्दिर के ग्रन्थ
₹,	1444	·	पृष्ठ
सि	द्धांत एव चर्चा	पृष्ठ १—-२२	[≥] 5 १७४—-१ ५ २
	े एव त्राचार शास्त्र	२३३⊏	१८२—१६०
	ध्यात्म एव योग शास्त्र	३५—४६	854—85x
	ाय एव दर्शन	४६—४६	१६६१६७
	 जा एवं प्रतिष्ठादि श्रन्य विधा		30 9— 208
	ाण	६३—६७	२२२—२२४
का	व्य एव चरित्र	ξ υ — <u></u> πο	२०६—२२१
क	था एव रासा साहित्य	<u> </u>	२२४२२६
ठर	ाकरण शास्त्र	ተ <u></u> ያ	२ ३०—२३१
को	श एव छन्द शास्त्र	55	२३२—-२३३
ना	टक	<u> =६</u> ६२	२३३—२३ ४
त्तो	क विज्ञान	४३	२३ ४
सुः	भाषित एव नीति शास्त्र	88-800	२३४—-२३ ७
-	त्रि- ्	१००-६०६	₹ ३८—५४४
, दर	ोतिष एव निमित्तज्ञान शास्त्र		२४४—२४६
翙	ायुर्वेद		२४६—२४७
ग	णित	descents	₹8=
रस	त एवं श्रलकार	_	 २४≂—३४२
स्य	हर एव श्रवशिष्ट रचनाये	१६⊏-१७४	 ₹४२—२४=
गु	टके एव सम्रह मन्थ	११०–१६७	२४५—३१४
8.	ग्रन्था <u>न</u> ुक्रमणिका		३१४—३४६
¥.		1 —	३४०३४३
ξ,	लेखक प्रशस्तियों की सृ	ची —	३ ४४— ३ ४४
৩,			३४६३७६
≂,	_		३७७

क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से शीघ प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

* *

१. प्रद्युम्नेचरित:-

् हिन्दी भाषा की एक अत्यधिक प्राचीन रचना जिसे किव सधारु ने सवत् १४११ (सन् १३४४) में संमाप्त किया था।

२. सदंसणचरिउ:-

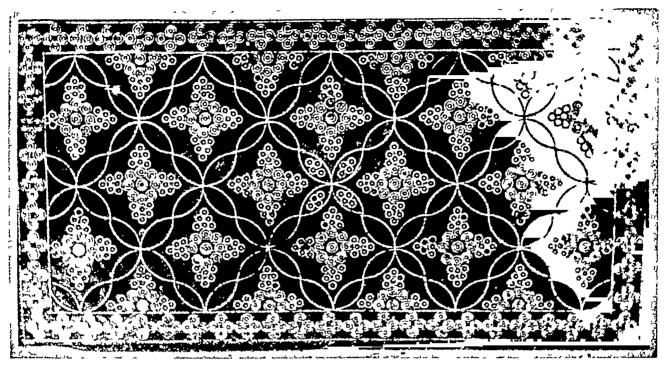
्रश्रपभ्र श भाषा का एक महत्त्वपूर्ण काव्य जो महाकवि नयनन्दि द्वारा सवत् ११०० (सन् १०४५) में लिखा गया था।

- ३. प्राचीन हिन्दी जैन पद संग्रह :
 ६० से भी अधिक कवियों द्वारा रचे हुये २५०० हिन्दी पदों का अपूर्व संग्रह ।
- राजस्थान के जैन मूर्त्त लेख एवं शिलालेख :
 राजस्थान के १००० से अधिक प्राचीन मूर्त्तिलेखों एव शिलालेखों का सर्चित्र सग्रह ।
- ५. हिन्दी के नये साहित्य की खोज :- [राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों से]

र्रिष्ठेवीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक रचित हिन्दी की श्रज्ञात एव श्रप्रकाशित रचनाश्रों का विस्तृत परिचय ।



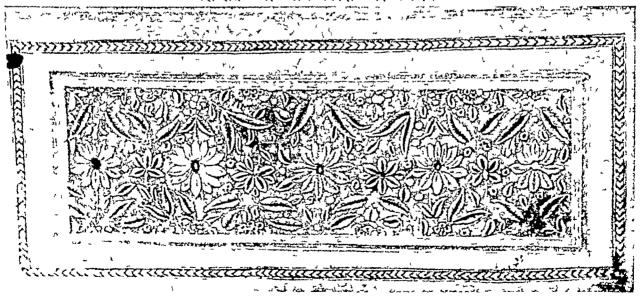
जैन शास्त्र-भरडारों के प्रन्थों के नीचे ऊपर लगाये जाने वाले कलात्मक पुट्टों के चित्र-



जयपुर के चौधरियों के मन्दिर के शास्त्र भग्डार का एक कलात्मक पुटा जिस पर चांदी के तारों से काम किया गया है।

मिछें जीवंद्रसं नित्संबतंनासंहर्षं मेरी लागोहेन्द्रनाहितंकले कक्तम् सनके। नाहिको निर्मिने पारी रागाहिक नावंज एं नवीहेदारीरको मिलाप जैसेरवंलको। गागहिक नावनिको पाय के निर्मिन प् निरातक में बेश्री संहित्नावकलको। ग्रेसेंटी ग्रमतन वो मानुषदार्थं रेजो गास्त वने तो बतें हुण्या है इह्डपायतिजयलको। वह पत्र हारिना पति स्वतगुन जन्मि । जानिको गी हो सासिर्दिन के स्वाप्त है । जानिको प्रमानिक के सामित्र के सम्बन्धित स्वाप्त है । जानिक सम्बन्धित स्वाप्त स्वाप्त

जयपुर के वधीचन्द्जी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में सम्रहीत महा पं० टोडरमलजी द्वारा लिखित 'मोचमार्ग प्रकाश' का चित्र।



जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक पुटा— जिस पर खिले हुए फूलों का जाल विछा हुआ है।

— प्रकाशकीय —

श्री महावीर प्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन प्रन्थभण्डारों की प्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है। प्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १६४४ में प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्चे समय में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली वात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान वीन तथा सूची बनाने आदि के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग में जयपुर के दि० जैन मन्दिर वधीचन्दानी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के प्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध मन्दिरों में से है। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य संप्रहीत है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुमे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि बधीचन्दानी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १० वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोत्तमार्गप्रकाश एव आत्मानुशासन की प्रतियां इस भण्डार में सप्रहीत हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में भी प्राचीन साहित्य का अच्छा संप्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।

इस तीसरे भाग में निर्दिष्ट भण्डारों के श्रातिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमावाद, वसवा, करौली, वयाना श्रादि स्थानों के करीव ४० भण्डारों की सूचियां पूर्ण रूप से तैय्यार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग मे प्रकाशित करने की योजना है। प्रन्थ सूचियों के श्रातिरिक्त हिन्दी एव श्रापन्न श भाषा के प्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद समह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनाये, महाकवि नयनिद कृत सुद्रसण्चिरेड एव राजस्थान के जैन मूर्तिलेख एवं शिलालेख श्रादि पुस्तकें प्रायः तैय्यार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एव विशेषत जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्कालर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये ज्ञाने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश मे ज्ञाने से जैन शास्त्र भण्डारों के ज्ञवलोकन की ज्ञोर जैन एवं जैनेतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुरतकों के लेखन मे जैन भण्डारों के प्रन्थों का ज्ञवलोकन भी ज्ञावश्यक सममने लगे हैं।

सूचिया बनाने का एक श्रोर लाभ यह होता है कि जो भग्डार वर्षों से वन्द पडे रहते हैं वे भी खुल जाते हैं श्रोर उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सके। यहाँ हम समाज से एक निवेदन करना चाहते हैं कि यदि राजस्थान श्रथवा श्रन्य स्थानों मे प्राचीन शास्त्र भएडार हों तो वे हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे हम वहां के भएडारो की प्रन्थ सूची तैयार करवा सकें। तथा उसे प्रकाश मे ला सकें।

त्रेत्र के सीमित साधनों को देखते हुये साहित्य प्रकाशन का भारी कार्य जल्दी से नहीं हो रहा है इसको हमें भी दु खें है लेकिन भविष्य में यही खोशा की जाती है कि इस कार्य में और भी तैजी खावेगी और हम ख्रधिक से ख्रधिक प्रन्थों को प्रकाशित कराने का प्रयत्न करेंगे।

श्चन्त में हम वधीचेन्द्जी एवं ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के व्यवस्थापकों को धन्यवाट दिये विना नहीं रह सकते जिन्होंने हमें शास्त्रों की सूची वनाने एवं समय समय पर प्रनथ देखने की पूरी सुविधाएं प्रदान की है।

जयपुर तो० १४–६–४७ वधीचन्द गंगवाल



🗏 प्रस्तावना 💳

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा महाराजा स्वयं साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों में होने वाले कवियों एवं विद्वानों की श्राश्रय दिया तथा बड़ी बड़ी पद्वियां देकर सम्मानित किया। अपनी अपनी राजधानियों में हस्तलिखित प्रथ संयहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरत्ता करके प्राचीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि को नष्ट होंने से बचाया। यही कारण है कि स्रांज भी राजस्थान में कितने ही स्थानों पर विशेषतः जयपुर, स्रलवर, बीकानेर त्र्यादि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते हैं जिनमें संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा का महत्त्वपूर्ण साहित्य संप्रहीत किया हुन्ना है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया। किन्तु इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवाये की हैं त्रौर इस दिशा मे ब्राह्मण परिवारों की सेवात्रों से भी ऋधिक जैन यतियों एवं गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुत्रों से ऋनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये प्रंथों की प्रतिलिपियां करवायी गयी तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भएडारों मे विराजमान की गयी। जन साधारण के लिये नये नये प्रंथों की उपलब्धि की गयी, प्राचीन एवं श्रमुपलच्घ साहित्य का संप्रह किया गया तथा जीर्ण एवं शीर्ण प्रंथों का जीर्णीद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बंचाया। उधर साहित्यिकों ने भी श्रपना जीवन साहित्य सेवा में होम दिया। दिन रात चे इसी कार्य में जुटे रहे। उनको अपने खान-पान एव रहन-सहन की कुछ भी चिन्ता न थी। महापंडित टोड़रमलजी के सम्बन्ध में तो यह किम्बद्न्ती है कि साहित्य-निर्माण में व्यस्त रहने के कारण ६ मास तक र्जनके भोजन में नमक नहीं डाला गया किन्तु इसका उनको पता भी न लगा। ऐसे विद्वानों के कारण ही विशाल साहित्य का निर्माण हो सका जो हमारे लिये आज अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त कुछ साहित्यसेवी जो अधिक विद्वान नहीं थे वे प्राचीन प्र'थों की प्रतिलिपियां करके ही साहित्य सेवा का 'महान पुण्य उपार्जन करते थे। राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों मे ऐसे साहित्य-सेवियों के हजारों शास्त्र संप्रहीत हैं। विज्ञान के इस स्वर्णयुग मे भी हम प्रकाशित प्रंथों को शास्त्र-भण्डारों मे इसिलये संप्रह करना नहीं चाहते कि उनका स्वाध्याय करने वाला कोई नहीं है किन्तु हमारे पूर्वजों ने इन शास्त्र भएडारों में शास्त्रों का संग्रह केवल एक मात्र साहित्य सेवा के स्त्राधार पर किया था न कि स्वाध्याय करने वालों की संख्या को देख कर । क्योंकि यदि ऐसा होता तो आज इन शास्त्र भएडारों में इतने वर्षी के प्रश्चात् भी हमे हजारों की संख्या में हस्तिलिखित यन्य समहीत किये हुये नहीं मिलते ।

जैन सघ की इस अनुकराणीय एव प्रशंसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गांबों, करबों एवं नगरों में प्रंथ सप्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरत्ता एव सरत्त्रण का सारा भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन श्रावकों को दिया गया। कुछ स्थानों के भण्डार भट्टारकों, र्यातयों एव पांड्यों के अधिकार में रहे। ऐसे भण्डार रवेताम्बर जैन समाज में अधिक हैं। राजस्थान में आज भी करीब ३०० गांव, करवे तथा नगर आदि होंगे जहाँ जैन शास्त्र सप्रहालय मिलते हैं। यह तीन सौ की सख्या स्थानों की सख्या है भण्डारों की नहीं। भण्डार तो किसी एक स्थान में दो तीन से लेकर २४-३० तक पाये जाते हैं। जयपुर में ३० से अधिक भण्डार हैं, पाटन में बीस से अधिक भण्डार हैं तथा बीकानेर आदि स्थानों में दस पन्द्रह के आस पास होंगे। सभी भण्डारों में शास्त्रों की सख्या भी एक सी नहीं है। यदि किसी किसी भण्डार में पन्द्रह हजार तक प्रन्थ हैं तो किसी में दो सौ तीन सौ भी हैं। भण्डारों की आकार प्राकार के साथ साथ उनका महत्त्व भी अनेक दृष्टियों से भिन्न भिन्न है। यदि किसी भण्डार में प्राचीन प्रतियों का अधिक समह है तो दूसरे भण्डार में किसी भाषा विशेष के प्रंथों का अधिक समह है। यदि कि भी भण्डार में काच्या, नाटक, रासा, ज्याकरण, उयोतिष आदि लीकिक साहित्य का अधिक समह है। इनके अतिरिक्त किसी किसी भण्डार में जैनेतर साहित्य का भी पर्याप्त समह मिलता है।

साहित्य समह की इस दिशा में राजस्थान के घ्रान्य स्थानों की घ्रपेत्ता जयपुर, नागौर, जैसलमेर, वीकानेर, त्राजमेर च्यादि स्थानों के भएडार सख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एव विषय-वैचित्र्य च्यादि सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भएडारों में, ताडपत्र, कपडा, च्यौर कागज इन तीनों पर ही प्रथ मिलते हैं किन्तु ताडपत्र के प्रथ तो जैसलमेर के भएडारों में ही मुख्यतया समहीत हैं घ्रान्य स्थानों में उनकी संख्या नाम मात्र की है। कपडे पर लिखे हुये प्रथ भी बहुत कम सख्या में मिलते हैं। च्याभी जयपुर के पार्श्वनाथ प्रथ भएडार में कपडे पर लिखा हुच्या सबत् १४१६ का एक प्रथ मिला है। इसी तरह के प्रथ च्यान्य भएडारों में भी मिलते हैं लेकिन उनकी सख्या भी बहुत कम है। सबसे घ्यािक सख्या कागज पर लिखे हुये प्रथों की है जो सभी भएडारों में मिलते हैं तथा जो १३ वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। जयपुर के एक भएडार में सतत् १३१६ (सन् १२६२) का एक प्रथ कागज पर लिखा हुच्या सुरित्त है।

यद्यपि जयपुर नगर को बसे हुये करीब २२४ वर्ष हुये हैं किन्तु यहाँ के शास्त्र-भएडार सख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एव विषय वैचित्र्य स्त्रादि सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। वैसे तो यहा के प्राय प्रत्येक मन्दिर एव चैंत्यालय मे शास्त्र सप्रह किया हुन्त्रा मिलता है किन्तु न्त्रामेर शास्त्र भएडार, वडे मन्दिर का शास्त्र भएडार, वावा दुलीचन्द का शास्त्र भएडार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भएडार, वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भएडार, पाडे ल्एाकरणजी के मन्दिर का शास्त्र भएडार, गोधों के मन्दिर का शास्त्र भएडार, पार्वनाथ के मन्दिर का शास्त्र भएडार, पार्वेदी के मन्दिर का शास्त्र भएडार, लक्कर के मन्दिर

का शास्त्र भण्डार, छोटे दीवान जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, सघीजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, छावडों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, जोवनेर के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, नया मन्दिर का शास्त्र भण्डार द्वावडों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार हैं जिनमे संस्कृत, प्राकृत, श्रपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, भाषात्रों के महत्त्व-पूर्ण साहित्य का संग्रह है। उक्त भण्डारों की प्राय सभी की प्रंथ सूचियां तैंग्यार की जा चुकी हैं जिससे पता चलता है कि इन भण्डारों में कितना श्रपार साहित्य सकलित किया हुआ हैं। राजस्थान के प्रंथ भण्डारों के छोटे से श्रमुभव के श्राधार पर यह लिखा जा सकता है कि श्रपभ्रंश एवं हिन्दी की विभिन्न धारात्रों का जितना श्रधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों में संग्रहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में संभवत नहीं है। इन प्रन्थ भण्डारों की प्रन्थ सूचियां प्रकाशित हो जाने के पश्चात् विद्वानों को इस दिशा में श्रधिक जानकारी मिल सकेगी।

प्रथ सूची का तृतीय भाग विद्वानों के समन्न है। इसमें जयपुर के दो प्रसिद्ध भण्डार-बधी-चन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार एव ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—के प्रथों का संन्तित परिचय उपस्थित किया गया है। ये दोनों भण्डार नगर के प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण भण्डारों में से है।

वधीचन्द्रजी के मन्दिर का शास्त्र भएडार-

वधीचन्दजी का दि॰ जैन मन्दिर जयपुर के जैन पञ्चायती मन्दिरों में से एक मन्दिर हैं। यह मन्दिर गुमानपन्थ के श्राम्नाय का है। गुमानीरामजी महापिडत टोडरमलजी के सुपुत्र थे जिन्होंने श्रपना श्रलग ही गुमानपन्थ चलाया थं। यह पन्थ दि॰ जैनों के तेरहपन्थ से भी श्रिधिक सुधारक है तथा महारकों द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कहर विरोधी है। यह विशाल एवं कलापूर्ण मन्दिर नगर के जौहरी बाजार के घी वालों के रास्ते में स्थित है। काफी समय तक यह मन्दिर पं॰ टोडरमलजी, गुमानीरामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का केन्द्रस्थल रहा है। पं॰ टोडरमलजी ने यहीं बैठकर गोमहसार, श्रात्मानुशासन जैसे महान प्रथों की हिन्दी भाषा एवं मोचमार्गप्रकाश जैसे महत्त्वपूर्ण सद्धान्तिक प्रन्य की रचना की थी। श्राज भी इस भएडार में मोचमार्गप्रकाश, श्रात्मानुशासन एव गोमहसार भाषा की मूल प्रतिया जिनको पंडितजी ने श्रपने हाथों से लिखा था, संप्रहीत हैं।

पञ्चायती मन्दिर होने के कारण तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक प्रगतियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार श्रधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ सस्क्रत, प्राक्रत, अपभ्रंश हिन्दी, राजस्थानी एव ह ढारी भाषाओं के प्रन्थों का उत्तम संप्रह किया हुआ मिलता है। इन हस्तिलिखित प्रन्थों की सख्या १२०५ है। इनमे १६२ गुटके तथा शेष १११६ प्रथ हैं। हस्तिलिखिन प्रंथ सभी विषय के हैं जिनमें सिद्धान्त, धर्म एव श्राचार शास्त्र, श्रध्यात्म, पूजा, स्तोत्र आदि विषयों के अतिरिक्त, काव्य, चिरत, पुराण, कथा, नीतिशास्त्र, सुभाषित आदि विषयों पर भी श्रच्छा सप्रह है। लेखक प्रशस्ति सप्रह में ४० लेखक प्रशस्तियां इसी भण्डार के प्रन्थों पर से दी गयी हैं। इनसे पता चलता है कि भण्डार में

१५ वं। शनावरों से लेक (१६ वं। शतावरी तक की प्रतियों का अन्छ। ममह है। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में काफी सहायक सिद्ध हो सकती है। हेमराज कृत प्रवचनसार भाषा एवं गोमहसार कर्मकाएड भाषा, वनारसीदास का समयसार नाटक, भ० शुभचन्द्र का चारित्रशृद्धि विधान, पं० लाखू का जिएदत्तचरित्र, पं० टोडरमलजी द्वारा रचित गोमहसार भाषा, आदि कितने ही प्रन्थों की तो ऐसी प्रतियां है जो अपने अस्तित्व के कुछ वर्षों पश्चात् की ही लिखी हुई हैं। इनके अतिरिक्त कुछ प्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी है जो प्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवशपुराण, प्रभाचन्द्र की आत्मानुशासन टीका, मह किव वीर वृत ज वृत्वाभी चिरत्र, किव सधारू का प्रयुम्नचिरत, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्लकिव कृत प्रवोधचन्द्रोदय नाटक, सुखदेव कृत विण्कप्रिया, वशीधर की दस्तूरमालिका, पृष्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि आदि उल्लेखनीय है।

भएडार में सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाएक। व्य की वृत्ति की है जो सबत् १४८१ की लिखी हुई है। यह प्रति अपूर्ण है। तथा सबसे नवीन प्रति मवत् १६८७ की श्रद्धाई द्वीप पूजा की है। इस प्रकार गत ५०० वर्षों में लिखा हुआ साहित्य का यहाँ उत्तम संप्रह है। भएडार में मुख्य रूप में आमेर एवं सागानर इन दो नगरों से श्राये हुये प्रन्थ हैं जो अपने २ समय में जैनों के केन्द्र थे।

ठोलियों के दि॰ जैन मन्दिर का शास्त्र भएडार-

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार भी ठोलियों के दि॰ जैन मन्दिर में स्थित है। यह मन्दिर भी जयपुर के सुन्दर एव विशाल मन्दिरों में से एक है। मन्दिर में विराजमान जिल्लोरी पापाण की सुन्दर मृत्तिया दर्शनार्थियों के लिये विशेष श्राकर्पण की वस्तु है। जयपुर के किसी ठोलिया परिवार द्वारा निर्मित होने के कारण यह मन्दिर ठोलियों के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर पञ्चायती मन्दिर तो नहीं है किन्तु नगर के प्रमुख मन्दिरों में से एक है। यहाँ का शास्त्र भण्डार एक नवीन एव भन्य कमरे में विराजमान है। शास्त्र भण्डार के सभी प्रन्थ वेष्टनों में वधे हुये हैं एव पूर्ण व्यवस्था के साथ रखे हुये हैं जिससे श्रावश्यकता पढ़ने पर उन्हें सरलता से निकाला जा सकता है। पहिले गुटके की कोई व्यवस्था नहीं थी तथा न उनकी सूची ही बनी हुई थी किन्तु श्रव उनको भी व्यवस्थित रूप से रख दिया गया है।

प्रत्य भएडार में ४१४ प्रन्थ तथा १४३ गुटके हैं। यहाँ पर प्राचीन एव नवीन दोनों ही प्रकार की प्रतियों का समह है जिससे पता चलता है कि भएडार के व्यवस्थापकों का ध्यान सदेव ही हस्तिलिखित प्रन्थों के समह की श्रोर रहा है। इस भएडार में ऐसा श्रन्छा समह मिल जावेगा ऐसी श्राशा सूची वनाने के प्रारम्भ में नहीं थी। किन्तु वास्तव में देखा जावे तो समह श्रिधक न होने पर भी महत्त्वपूर्ण है श्रीर भाषा साहित्य के इतिहास की किननी ही किडिया जोडने वाला है। यहाँ पर मुख्यत सस्कृत श्रीर हिन्टी इन दो भाषाश्रों के प्रन्थों का ही श्रिधक समह है। भएडार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्वर्चसंग्रह टीका की है जो सवत् १४१६ (सन् १३४६) की लिखी हुई है। इसके श्रितिरिक्त ये गीन्द्रदेव

का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एव पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतियां उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर पूजापाठ संप्रह का एक गुटका है जिसमें ४७ पूजाओं का संप्रह है। गुटका प्राचीन है। प्रत्येक पूजा का मण्डल चित्र दिया हुआ है। जो रंगीन एव सुन्दर है। इस सचित्र प्रन्थ के आतिरिक्त वेष्टनों के २ पुट्टे ऐसे मिले हैं जिनमें से एक पर तो २४ तीर्थंकरों के चित्र आकित हैं तथा दूसरे पट्टे पर केवल वेल बूटे हैं।

भएडार में संप्रहीत गुटके बहुत महत्त्व के हैं। हिन्दी की श्रिधकांश सामग्री इन्हों गुटकों में प्राप्त हुई है। भ० शुभचन्द्र, मेघराज, रघुनाथ, ब्रह्म जिनदास आदि कियों की कितनी ही नवीन रचनाये प्राप्त हुई हैं जिनको हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त भएडार मे २ रासो मिले है जो ऐतिहासिक हैं तथा दिगम्बर भएडारों में उपलब्ध होने वाले ऐसे साहित्य में सर्वप्रथम रासों हैं। इनमें एक पर्वत पाटणी का रासो है जो १६ वीं शताब्दी में होने वाले पर्वत पाटणी के जीवन पर प्रकाश डालता है। दूसरा कृष्णदास वघेरवाल का रामो है जो कृष्णदास के जीवन पर तथा उनके द्वारा किये गये चान्दखेडी में प्रतिष्ठा महोत्सव पर विस्तृत प्रकाश डालता है। इसी प्रकार सवत् १७३३ में लिखित एक भट्टारक पट्टाविल भी प्राप्त हुई है जो हिन्दी में इस प्रकार की प्रथम पट्टाविल है तथा भट्टारक परम्परा पर प्रकाश डालती है।

भएडारों में उपलब्ध नवीन साहित्य-

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है दोनों शास्त्र भण्डार ही हिन्दी रचनाओं के संग्रह के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। १४ वी शताब्दी से लेकर २० वी शताब्दी तक जैन एवं जैनेतर विद्वानों द्वारा निर्मित हिन्दी साहित्य का यहां अच्छा सग्रह है। हिन्दी साहित्य की नवीन कृतियों से किंव सुधारु का प्रद्युक्त चिरत, (स० १४११) किंव वीर कृत मणिहार गीत, आज्ञासुन्दर की विद्याविलास चौपई (१४१६), मुनि कनकामर की ग्यारहप्रतिमादर्णन, पद्मनाभ कृत टूंगर की वाबनी (१४४३), विनयसमुद्र कृत विक्रमप्रवन्ध रास (१४७३) छीहल का उदर गीत एवं पद, ब्रह्म जिनदास का आदिनाथस्तवन, ब० कामराज कृत त्रेसठ शलाकापुरुपवर्णन, कनकसोम की जइतपदवेलि (१६२४), कुमदचन्द्र एवं पृनो की पद एव विनतियां आदि उल्लेखनीय हें। ये १४ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी के कुछ किंव हैं जिनकी रचनायों दोनों भण्डारों मे प्राप्त हुई है। इसी प्रकार १७ वीं शताब्दी से १६ वीं शताब्दी के किवयों की रचनायों मे व० गुलाल की विवेक चौपई, उपाध्याय जयसागर की जिनकुशलसूरि स्तुति, जिनरंगसूरि की प्रवोधवावनी एव प्रस्ताविक दोहा, व० जानसागर का व्रतकथाकोश, टोडर किंव के पद, पदमराज का राजुल का वारहमासा एवं पार्श्वनाथस्तवन, नन्द की यशोधर चौपई (१६७०), पोपटशाह कृत मदनमंजरी कथा प्रवन्ध, वनारसीदास कृत मामा, मनोहर किंव की चिन्तामणि मनवावनी, लघु वावनी एवं सुगुरुसील, मल्लकि कृत प्रवोधचन्द्रोद्यनाटक, मुनि मेघराज कृत संयम प्रवहण्णनीत (१६६६ क्रे, रूपचन्द्र का प्रध्यात सहवेंग्या, भ० शुभचन्द्र कृत तत्त्वसार

दोहा; समयसुन्दर का श्रात्मजपदेशगीत, समावत्तीसी एवं दानशीलसवाद, सुखदेच कृत विश्वित्रिया, (१७१७) ह्पैकीत्ति का नेमिनाथराजुलगीत, नेमीश्वरगीत, एवं मोरखा; श्रजयराज कृत नेमिनाथचिरत (१७६३) एव यशोधर चौपई (१७६२), कनककीर्त्ति का मेघकुमारगीत, गोपालदास का प्रमादीगीत एव यदुरासो, थानसिंह का रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं सुबुद्धिप्रकाश (१८४७) दादूदयाल के दोहे, दूलह कि का कि कुलकण्ठा-भरण, नगरीदास का इश्किचमन, एवं वैनिविलास, वशीधर कृत दरतूरमालिका, भगवानदास के पद, मनराम द्वारा रचित श्रक्तरमाला, मनरामविलास, एवं धर्मसहेली, मुनि महेस की श्रक्तरचत्तीसी, रघुनाथ का गणभेद, ज्ञानसार, नित्यविहार एवं प्रसंगसार, श्रुतसागर का पट्मालवर्णन (१८२१), हेमराज कृत दोहाशतक, केशरीर्सिह का वर्द्ध मानपुराण (१८७३) चपाराम का धर्मप्रशोत्तरश्रावकाचार, एवं भद्रवाहुचिरत्र, वावा दुलीचन्द कृत धर्मपरीचा भाषा श्रादि उल्लेखनीय हैं। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रस एव श्रलकार प्रर्थशास्त्र, इतिहास श्रादि सभी विषयों से सम्बन्धित है। इनमें से वहुत सी तो ऐसी रचनायें हैं। जो सम्भवत सर्व प्रथम विद्वानों के समच श्रायी होंगी।

सचित्र साहित्य-

दोनों भण्डारों में हिन्दी एव अपभ्रंश का महत्त्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध होते हुये सचित्र साहित्य का न मिलना जैन श्रावकों एवं विद्वानों की इस और उदासीनता प्रगट करती है। किन्तु फिर भी ठोलियों के मन्दिर में एक पूजा संग्रह प्राप्त हुआ है जो सचित्र है। इसमें पूजा के विधानों के महल चित्रित किये हुये हैं। चित्र सभी रगीन है एव कला पूर्ण भी हैं। इसी प्रकार एक शस्त्र के पुट्टे पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र दिये हुये हैं। सभी रगीन एवं कला पूर्ण हैं। यह पुट्टा १६ वीं शताब्दी का प्रतीत होता है।

विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रन्थ-

इस दृष्टि से वधीचन्द्जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार उल्लेखनीय है। यहाँ पर महा पिडत टोडरमलजी द्वारा लिखित मोत्तमार्गप्रकाश एवं स्नात्मानुशासन भाषा एव गोमट्टसार भाषा की प्रतिया सुरित्तत हैं। ये प्रतियां साहित्यिक दृष्टि से नहीं किन्तु इतिहास एवं पुरातत्त्व की दृष्टि से श्रिधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

विशाल पद साहित्य-

दोनों भगडारों के गुटकों में हिन्दी किवयों द्वारा रिचत पदों का विशाल संग्रह है। इन किवयों की सख्या ६० है जिनमें किवीरदास, बन्द, सुन्दर, सूरदास श्रादि कुछ किवयों के श्रातिरिक्त शेष मभी जैन किव हैं। इनमें श्राजयराज, छीहल, जगजीवन, जगतराम, मनराम, रूपचन्द, हर्पकीर्त्त श्रादि के नाम उल्लेखनीय है। इन किवयों द्वारा रिचत हिन्दी पद भाषा एवं भाव की दृष्टि से श्रान्छे हैं तथा जिनका प्रकाश में श्राना श्रावश्यक है। चेत्र के श्रानुसन्धान विभाग की श्रोर से ऐसे पद एवं भजनों का संग्रह

किया जा रहा है श्रीर शीव ही करीब २४०० पदों का एक वृहद् संग्रह प्रकाशित करने का विचार है। जिससे कम से कम यह तो पता चल सकेगा कि जैन विद्वानों ने इस दिशा में कितना महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

गुटकों का महत्त्व—

षास्तव में यदि देखाँ जांवें तो जितना भी महत्त्वपूर्ण एव अनुपलच्य सोहित्य मिलता है उसका अधिकारा भाग इन्हीं गुटकों में संग्रहींत किया हुआ है। जैन श्रावकों को गुटकों में छोटी छोटी रचनाय संग्रहीत करवाने का वंडों चांवें थां। कभी कभी तो वें स्वयं ही संग्रह कर लिया करते थें और कभी अन्य लेखकों के द्वारा संग्रह करवातें थे। इन दोनों भर्रहारों में भी जितना हिन्दी का नवीन साहित्य मिला है उसका आधे से अधिक भाग इन्हीं गुटकों में संग्रह किया हुआ है। दोनों भर्रहारों में गुटकों की संख्या ३०४ है। यद्यपि इन गुटकों में सर्वसाधारण के काम आने वाले स्तोत्र, पूजायें, कथायें आदि की ही अधिक संख्या है किन्तु महत्त्वपूर्ण साहित्य भी इन्हीं गुटकों में उपलब्ध होता है। गुटके सभी साइज के मिलते हैं। यदि किसी गुटके में १००-२० पत्र ही हैं तो किसी किसी गुटके में १००-४० पत्र तक हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भर्यडार के एक गुटके में ६४४ पत्र है जिनमें ४७ पूजाओं का संग्रह किया हुआ है। छुछ गुटकों में तो लेखनकाल उसके अन्त में दिया हुआ होता है किन्तु कुछ गुटकों में बीच बीच में भी लेखनकाल दे दिया जाता है अर्थात जैसे जैसे पाठ समाप्त होते जाते हैं वैसे वैसे लेखनकाल भी दे दिया जाता है।

ईन गुटकों में साहित्यिक एवं धार्मिक रचनाओं के अतिरिक्त आयुर्वेद के नुसखे भी बहुत मिलते हैं। यदि इन्ही नुसखों के आधार पर कोई खोज की जाने तो वह आयुर्वेदिक साहित्य के लिये महत्त्वपूर्ण चीज प्रमाणित हो सकती है। ये नुसखे हिन्दी भाषा में, अनुभव के आधार पर लिखे हुये हैं।

श्रायुर्वेदिक सीहिंदियं कें श्रातिरिक्त किसी किसी ग्रिटकें में ऐतिहासिक सामग्री भी मिल जाती है। यह सामग्री मुख्यतः राजाश्री श्रथवा वादशाहीं की वंशावित के रूप में होती है। कीन राजा कब राज्य सिंहासन पर बैठा तथा उसने कितने वर्ष, कितने महिने एवं कितने दिन तक शासने किया श्रादि विवरण दिया हुश्रा रहता है।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में---

प्रस्तुत प्रन्थ-सूची में जयपुर के केवल दो शास्त्र भगड़ारों की सूची है। हमारा विचार तो एक भगड़ार की और सूची देना था लेकिन प्रन्थ सूची के अधिक प्रत्र हो जाने के डेर से नहीं दिया गया। प्रस्तुत प्रन्थ सूची में जिन नवीन रचनाओं का उल्लेख आया है उनके आदि अन्त भाग भी दे दिये गये हैं जिससे विद्वानों को प्रन्थ की भाषा, रचनाकाल, एवं यन्थकार के सम्बन्ध में कुछ परिचय मिल सकें।

इसके श्रतिरिक्त जो लेखक प्रशस्तियां श्रधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण थी उन्हें भी प्रनथ सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार सूची में १०६ प्रनथ प्रशास्तिया एवं ४४ लेखक प्रशस्तियां दी गयी हैं जो स्वयं एक पुस्तक के रूप में हैं।

प्रस्तुत सूची में एक श्रोर नवीन ढग श्रपनाया गया है वह यह है कि श्रधिकांश प्रन्थों की एक प्रति का ही सूची मे परिचय दिया गया है। यदि उस प्रन्थ की एक से श्रधिक प्रतियाँ हैं तो विशेष में उनकी संख्या को ही लिख दिया गया है लेकिन यदि दूसरी प्रति भी महत्वपूर्ण श्रथवा विशेष प्राचीन है तो उस प्रति का भी परिचय सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार करीब ५०० प्रतियों का परिचय प्रन्थ-सूची में नहीं दिया गया जो विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतिया नहीं थी।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्रत्येक भण्डार की प्रन्थ सूची न होकर एक सूची मे १०-१४ भण्डारों की सूची हो तथा एक प्रन्थ किस किस भण्डारों में मिलता है इतना मात्र उसमें दे दिया जावे जिससे प्रकाशन का कार्य भी जल्दी हो सके तथा भण्डारों की सूचियां भी आजावें। इसने इस शैली को अभी इसीलिये नहीं अपनाया कि इससे भण्डारों का जो भिन्न भिन्न महत्त्व है तथा उनमें जो महत्त्वपूर्ण प्रतिया हैं उनका परिचय ऐसी प्रन्थ सूची में नहीं आसकेगा। यह तो अवश्य है कि बहुत से प्रन्थ तो प्रत्येक भण्डार में समान रूप से मिलते हैं तथा प्रन्थ सूचियों में वार वार में आते हैं जिससे कोई विशेष अर्थ प्राप्त नहीं होता। आशा है भविष्य में सूची प्रकाशन का यह कार्य किस दिशा में चलना चाहिये इस पर इस सम्बन्ध के विशेषज्ञ विद्वान अपनी अमूल्य परामर्श से हमें सूचित करेंगे जिससे यदि अधिक लाभ हो सके तो उसी के अनुसार कार्य किया जा सके।

प्रनथ सूची बनाने का कार्य कितना जिटल है यह तो वे ही जान सकते हैं जिन्होंने इस दिशा में कार्य किया हो। इसलिये किमयां रहना आवश्यक हो जाता है। कौनसा प्रनथ पहिले प्रकाश में आ चुका है तथा कौनसा नवीन है इसका भी निर्णय इस सम्बन्ध की प्रकाशित पुस्तकों न मिलने के कारण जल्दी से नहीं किया जा सकता इससे यह होता है कि कभी कभी प्रकाश में आये हुये प्रनथ नवीन सममने की गल्ती हो जाया करती है। प्रस्तुत प्रथ सूची में यदि ऐसी कोई आशुद्धि हो गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने वा कष्ट करेंगे।

दोनों भण्डारों में जो महत्त्वपूर्ण कृतियां प्राप्त हुई है उनके निर्माण करने वाले विद्वानों का परिचय भी यहां दिया जा रहा है। यद्यपि इनमें से बहुत से विद्वानों के सम्बन्ध में तो हम पहिले से ही जानते हैं किन्तु उनकी जो श्रभी नवीन रचनायें मिली हैं उन्हीं रचनाश्रों के श्राधार पर उनका संदिप्त परिचय दिया गया है। श्राशा है इस परिचय से हिन्दी साहित्य के इतिहास निर्माण में कुछ सहायता मिल सकेगी।

१. अचलकीर्त्त

अचलकीत्ति १८ वीं शताब्दी के हिन्दी किवे थे। विषापहार स्तोत्र भाषा इनकी प्रसिद्ध रचना है जिसका समाज मे अच्छा प्रचार है। अभी जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में कर्म वत्तीसी नाम की एक और रचना प्राप्त हुई है जो संवत् १७०० में पूर्ण हुई थी। इन्होंने कर्मबत्तीसी में पावा नगरी एवं वीर संघ का उल्लेख किया है। इनकी एक रचना रविव्रतकथा देहली के भण्डार में संप्रहीत है।

२. ग्रनयराज

१८ वीं शताब्दी के जैन साहित्य सेवियों में अजयराज पाटगी का नाम उल्लेखनीय है। ये खरडेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटगी इनका मोत्र था। पाटगीजी आमेर के रहने वाले तथा धार्मिक प्रकृति के प्रांगी थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने हिन्दी में कितनी ही रचनायें लिखी थी। अब तक छोटी और बडी २० रचनाओं का तो पता लग चुका है इनमें से आदि पुराण भाषा, नेमिनाथचरित्र, यशोधरचरित्र, चरखा चडपई, शिव रमगी, का विवाह, कक्काबत्तीसी आदि प्रमुख हैं। इन्होंने कितनी ही पूजायें भी लिखी हैं। इनके द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी पर्याप्त सख्या में मिलते हैं। किव ने हिन्दी में एक जिनजी की रसोई लिखी है जिसमें षट् रस व्यंजन का अच्छा वर्णन किया गया है।

श्रजयराज हिन्दी साहित्य के श्रच्छे विद्वान् थे। इनकी रचनाश्रों में काव्यत्व के दर्शन होते हैं। इन्होंने श्रादिपुराण को संवत् १७६७, में यशोंधरचौपई को १७६२ में तथा नेमिनाथचरित्र को संवत् १७६३ में समाप्त किया था।

३. ब्रह्म ऋजित

महा अजित संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान् थे। ह्नुमचरित में इनकी साहित्य निर्माण की फला स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ये गोलशंगार वंश में उत्पन्न हुये थे। माता का नाम पीथा तथा पिता का नाम वीरसिंह था। भृगुकच्छपुर में नेमिनाथ के जिन मन्दिर में इनका मुख्य रूप से निवास था। ये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे।

हिन्दी में इन्होंने हंसा भावना नामक एक छोटी सी श्राध्यात्मिक रचना लिखी थी। रचना में ३७ पद्य हैं जिनमें संसार का स्वरूप तथा मानव का वास्तविक कर्ताच्य क्या है, उसे क्या करना चाहिये तथा किसे छोडना चाहिये श्रादि पर प्रकाश डाला है। हंसा भावना अच्छी रचना है, तथा भाषा एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से पढने योग्य है। किव ने इसे अपने गुरु विद्यानिद के उपदेश से बनायी थी।

थे. अमरपाल

इन्होंने 'त्रादिनाथ के पंच मंगल' नामक रचना को संवत् १००२ में समाप्त की थी। रचना मे दिये हुये समय के आधार पर ये १५ वीं शताब्दी के विद्वान, ठहरते हैं। ये खरडेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा गंगवाल इनका गोत्र था। देहली के समीप स्थित जयसिंहपुरा इनका निवास स्थान था। आदिनाथ के पचमगल के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है।

५. श्राज्ञासुन्दर

ये खरतरगच्छ के प्रधान जिनवर्द्ध नसूरि के प्रशिष्य एवं त्र्यानन्दसूरि के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १४१६ मे विद्याविलास चौपई की रचना समाप्त की थी। इसमें ३६४ पद्य हैं। रचना श्रच्छी है। ६. उँदेशम

उदैराम द्वारा लिखित हिन्दी की २ जंखडी घ्रमी उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही जंखडी ऐतिहासिक हैं तथा भेट्टारक अनन्तकीर्ति ने सवत् १७५४ में साभर (राजस्थान) में जो चातुमीस - किया था उसका उन दोनों में वर्गन किया गया है । दिगम्बर साहित्य में इस प्रकार की रचनायें बहुत कम मिलती हैं इस दृष्टि से इनका अधिक महत्वे है। वैसे भाषा की दृष्टि से रचनायें साधारणे हैं। े

७. ऋषभदास निगौत्या

ऋषमदास निगोत्या का जन्म सवत् १८४० के लगभग जयपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम शोभावन्द था। इन्होंने सवत् १८८६ में मूलाचार की हिन्दी भागा टीका सम्पूर्ण की थी। प्रन्थ की भाषा हुटारी हैं तथा जिस पर पं० टोडरमलजी की भाषा का प्रभाव है।

८. कनककीर्त्ति

कनककीर्ति १७ वीं शताब्दी के हिन्दी के विद्वान थे। इन्होंने तत्वार्थसूत्र अतसागरी टीका पर एक विस्तृत हिन्दी गद्य टीका लिखी थी। इसके श्रातिरिक्त कर्मघटावलि, जिनराजस्तुति, मेघकुमारगीत, श्रीपालस्तुति आदि रचनायें भी आपकी मिल चुकी है। कनक्कीर्ति हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। इनकी भाषा ढ़ ढारी हैं जिसमें 'है' के स्थान पर "कैं" का अधिक प्रयोग हुआ है। गुटकों में इनके कितने ही पद भी मिलें हैं।

ह. कंनकसोंम'

कनकसोम १६ वीं,शताब्दी के कवि। थे। 'जइतपदवेलि' इनकी, इतिहास से सम्बन्धित छति है जो सवत १६२४ में,रचीं गयी थी। वेलिं में उसी सवत् में मुनि वाचकद्या ने आगरे में जी चातुर्मास किया थाः उसका वर्णन दिया हुः आ; है,। यह खरतरगच्छ की एक श्रच्छी पट्टावित है कवि, ने इसमे- साधुकीत्ति त्र्यादिः कितनेः ही विद्वानों के नामों का उल्लेख किया हैं। रचना मे ४६ पद्य हैं-।, मापा हिन्दी है लेकिन गुजराती का प्रभाव है। किव की एक श्रीर रचना आपाढाभूतिस्वाध्याय पहिले ही मिल चुकी है। जो गुजराती में है।

११. ग्रुनि कनिकामर

मुनिकनकांमर द्वारा लिखित 'ग्यारह प्रतिमां वर्णन' अपभ्रंश भाषां का एक गीत है। कनकामर कौनसे शताब्दी के कावि थे यह तो इस रचना के आधार से निश्चित नहीं होता है। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं या इससे भी पूर्व की शताब्दी के थे। गीत में १२ प्रतिमाओं का वर्णन है जिसका प्रथम पद्य निम्न प्रकार है।

मुनिवर जंपइ मृगनयणी, श्रंसु जल्लोलीइय गिरवयणी। नवनीलोपलकोमलनयणी, पहुं कण्यंवर्र भणिमि पई। किस्म इह लट्भइ सिवपुर रम्मणी, मुनिवर जंपइ मृगनयणी॥ १॥

१२. कुलभद्र

सारसमुच्चय प्रन्थ के रचियता श्री कुलभद्र किस शताब्दी तथा किस प्रान्त के थे इसके विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं शताब्दी के पूर्व के विद्वान् थे। क्योंकि सारसमुच्चय की एक प्रति संवत् १४४४ में लिखी हुई बधीचन्द्जी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के संमह मे है। रचना छोटी ही है जिसमें ३३: श्लोक हैं। प्रन्थ का दूसरा नाम प्रन्थसारसमुच्चय भी है। प्रन्थ की भाषा सरल एवं लितत है।

१३. किशनसिंह

ये सवाईमाधोपुर प्रान्त के दामपुरा गांव के रहने वाले थे। खर्ण्डेलजाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। इनके पिता का नाम 'काना' था। ये दो भाई थे। इनसे बड़े भाई का नाम सुखदेव था। श्रपने गांव को छोडकर ये सांगानेर श्रांकर रहने लगे थे, जो बहुत समय तक जैन साहित्यिकों का केन्द्र रहा है। इन्होंने श्रपनी सभी रचनाये हिन्दी भाषा में लिखी हैं। जिनकी संख्या १४ से भी श्रांधिक है। मुख्य रचनात्रों में कियाकोशभाषा, (१७५४) पुर्याश्रवकथाकोश, (१७०२) भद्रबाहुचरित भाषा (१०५०) एवं वावनी श्रांदि हैं।

१४. केशरीसिंह

पं० केशरीसिंह भट्टारकों के पंडित थे। इनका मुख्य स्थान जयपुर नगर के लश्कर के जैन मन्दिर में था। ये वहीं रहा करते थे तथा श्रद्धालु श्रावकों को धर्मीपदेश दिया करते थे। दीवान वालचन्द के सुपुत्र दीवान जयचन्द छावडा की इन पर विशेष भिक्त थी श्रीर उन्हीं के श्रमुरोध से इन्होंने संस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्त्त द्वारा विरचित बद्ध मानपुराण की हिन्दी गद्य में भाषा टीका लिखी थी। पंडित जी ने इसे संवत १८०३ में समाप्त की थी। पुराण की भाषा पर दृद्धारी (जयपुरी) भाषा का प्रभाव है। मन्थ भशस्त के श्रमुसार पुराण की भाषा का संशोधन वस्तुषाल छावडा ने किया था।

१४. ब्रह्मगुलाल

व्रह्मगुलाल हिन्दी भाषा के किव थे यद्यपि किव की श्रव तक छोटी २ रचनायें ही उपलब्ध हुई हैं किन्तु भाव एव भाषा की दृष्टि से ये साधारणतः श्रच्छी हैं। इनकी रचनाओं में त्रेपनिक्रया, समवसरणस्तोत्र, जलगालनिक्रया, विवेकचौपई श्रादि के नाम उल्लेखनीय हैं। विवेकघौपई श्रभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में प्राप्त हुई है। किव १७ वीं शताब्दी के थे।

१५. गीपालदास

गोपालदास की दो छोटी रचनायें यादुरासो तया प्रमादीगीत जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भएडार कें ६७ वें गुटके में संप्रहीत हैं। गुटके के लेखनकाल के आधार पर किव १७ वीं शताब्दीया इससे भी पूर्व के विद्वान् थे। यादुरासों में भगवान नेमिनाथ के वन चले जाने के पश्चात् राजुल की विरहावस्था का वर्णन है जो उन्हें वापिस लाने के रूप में है। इसमें २४ पद्य हैं। प्रमादीगीत एक उपदेशात्मकगीत है जिसमें आलस्य त्याग कर आत्महित करने के लिये कहा गया है। इनके अतिरिक्त इनके कुछ गीत भी मिलते हैं।

१६. चंपाराम भांवसा

ये खर्ण्डेलवाल जैन ज ति मे उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम हीरालाल था जो माधोपुर (जयपुर) के रहने वाले थे। चपाराम हिन्दी के श्रच्छे विद्वान थे। शास्त्रों की स्वाध्याय करना ही इनका प्रमुख कार्य था इसी ज्ञान वृद्धि के कारए इन्होंने भद्रवाहुचरित्र एवं धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार की हिन्दी भाषा टीका क्रमशः संवत् १८४४ तथा १८६८ में समाप्त की थी। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचनाएँ साधारए हैं।

१७. छीहल

१६ वीं शताब्दी में होनेवाले जैन किवयों में छीहल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये राजस्थानी किव थे किन्तु राजस्थान के किस प्रदेश को धुशोभित करते थे इसका श्रभी तक कोई उल्लेख नहीं मिला। हिन्दी भाषा के श्राप श्रच्छे विद्वान् थे। इनकी श्रभी तक ३ रचनायें तथा ३ पद उपलब्ध हुये हैं। रचनाश्रों के नाम बाबनी, पंचसहेली गीत, पंथीगीत हैं। सभी रचनायें हिन्दी की उत्तम रचनाश्रों में से है जो काव्यत्व से भरपूर हैं। किव की वर्णन करने की शैली उत्तम है। वावनी मे श्रापने कितने ही विषयों का श्रच्छा वर्णन किया है। पंचसहेली को इन्होंने संवत् १४७४ में समाप्त किया था।

१८. पं जगन्नाथ

पं० जगन्नाथ १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये मट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा सस्कृत भाषा के पहुचे हुए विद्वान् थे। ये खन्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा इनके पिता का नाम पोमराज था। इनकी ६ रचनायें श्वेताम्बरपराजय, चतुर्विशतिसंधानस्वोपज्ञटीका, सुखनिधान, नेमिनरेन्द्रस्तोत्र, तथा मुखेग् चिरित्र तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी है। इनके अतिरिक्त इनकी एक और कृति "कर्मस्वरूप-वर्णन" अभी वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भड़ार में मिली है। इस रचना में कर्मों के स्वरूप की विवेचना की गयी है। किव ने इसे संवत् १७०७ (सन् १६४०) में समाप्त किया था। 'कर्मस्वरूप' के उल्लासों के अन्त में जो विशेषण लगाये गये हैं उनसे पता चलता है कि पिडत जी न्यायशास्त्र के पारंगत विद्वान् थे तथा उन्होंने कितने ही शास्त्रार्थों में अपने विरोधियों को हराया था। किव का दूसरा नाम वादिराज भी था।

१६. जिनदत्त

पं॰ जिनदत्त भट्टारक शुभचन्द्र के समकालीन विद्वान् थे तथा उनके धनिष्ट शिष्यों में से थे। भट्टारक शुभचन्द्र ने अम्बिकाकल्प की जो रचना की थी उसमें मुख्य रूप से जिनदत्त का ही आग्रह था। ये ख्वयं भी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा संस्कृत भाषा में भी अपना प्रवेश रखते थे। अभी हिन्दी में इनकी २ रचनायें उपलब्ध हुई है जिनके नाम धर्मतरुगीत तथा जिनदत्तविलास है। जिनदत्तविलास में में किव द्वारा बनाये हुये पदों एवं स्फुट रचनाओं का सग्रह है तथा धर्मतरुगीत एक छोटा सा गीत है।

२०. ब्रह्म जिनदास

ये भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे। सस्कृत, प्राकृत, एव गुजराती भाषाओं पर इनका पूरा श्राधिकार था। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा मे भी इनकी तीव्र गित थी। किव की अब तक संस्कृत एवं गुजराती का कितनी ही रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं इनमें आदिनाथ पुराण, धनपालरास, यशोधररास, आदि प्रमुख हैं। इनकी सभी रचनाओं की सख्या २० से भी अधिक है। अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर मे इनका एक छोटा सा आदिनाथ स्तवन हिन्दी में लिखा हुआ मिला है जो बहुत ही सुन्दर एवं भाव पूर्ण है तथा प्रंथ सूची में पूरा दिया हुआ है।

२१. ब्रह्म ज्ञानसागर

ये भट्टारक श्रीभूषण के शिष्य थे। संस्कृत के साथ साथ ये हिन्दी के भी श्रच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में २६ से भी श्रधिक कथायें लिखी है जो पद्यात्मक हैं। भाषा की दृष्टि से ये सभी श्रच्छी हैं। भट्टारक श्रीभूषण ने पाण्डवपुराण (संस्कृत) को संवत् १६४७ में समाप्त किया था। क्योंकि ब्रह्म ज्ञानसागर भी इन्हों भट्टारक जी के शिष्य थे श्रतः किव के १८ वीं शताब्दी के होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। इन्होंने कथाओं के श्रतिरिक्त और भी रचनायें लिखी होंगी लेकिन श्रभी तक वे उपलब्ध नहीं हुई हैं।

२२. ठक्कुरसी

१६ वीं शताब्दी में होने वाले किवयों में ठक्छरसी का नाम उल्लेखनीय है। ये हिन्दी के घन्छे विद्वान् थे तथा हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखकर स्वाध्याय प्रेमियों का दिल बहलाया करते

थे। इनके पिता का नाम धेल्ह था जो स्वय भी किव थे। किव द्वारा रचित कृपण्चिरित्र तथा पंचित्द्रिय नेिल तो पिहले ही प्रकाश में छा चुकी हैं लेकिन नेिमराजमितवेिल पार्श्वशक्कनसत्तावीसी श्रीर चिन्तामिण-जयमाल तथा सीमंधरस्तवन श्रीर उपलब्ध हुए हैं जो हिन्दी की श्रम्ब्ही रचनायें है।

२३. थानसिंह

थानसिंह सागानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा ठोलिया इनका गोत्र था। सुबुद्धि प्रकाश की प्रन्थ प्रशास्ति में इन्होंने आमेर, सागानेर तथा जयपुर नगर का वर्णन लिखा है। जब इनके माता पिता नगर में अशान्ति के कारण करौली चले गये थे तब भी ये सांगानेर छोडकर नहीं जा सके और इन्होंने वहीं रहते हुये रचनायें लिखी थी। किव की २ रचनायें प्राप्त होती हैं—रत्नकर अशवकाचार भाषा तथा सुबुद्धि प्रकाश। प्रथम रचना को इन्होंने स. १५२१ में तथा दूसरी को स. १५४७ में समाप्त किया था। सुबुद्धि प्रकाश का दूसरा नाम थानविलास भी है इसमें किव की छोटी २ रचनाओं का संग्रह है। दोनों ही रचनाओं की भाषा एवं वर्णन शैली साधारणत. अच्छी है। इनकी भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव है।

२४. मुनि देवचन्द्र

मुनि देवचन्द्र युगप्रधान जिनचन्द्र के शिष्य थे। इन्होंने आगमसार की हिन्दी गद्य टीका सर्वत् १७७६ में मारोठ गांव में समाप्त की थी। आगमसार ज्ञानामृत एव धर्मामृत का सागर है तथा तात्त्विक चर्चाओं से भरपूर है। रचना हिन्दी गद्य में है जिस पर मारवाडी मिश्रित जयपुरी भाषा का प्रभाव है।

२५. देवाब्रह्म

देवाब्रहा हिन्दी के अच्छे किव थे। इनके सैकडों पद मिलते हैं जो विभिन्न राग रागनियों मे लिखे हुये हैं। सासवह का मनाडा छादि जो अन्य रचनाये है वे भी अधिकांशत पद रुप में ही लिखी हुई है। इन्होंने हिन्दी साहित्य की ठोस सेवा की थी। किव सभवत जयपुर के ही थे तथा अनुमानत १५ वीं शताब्दी के थे।

२६ं. बाबा दुलीचन्द

जयपुर के २० वीं शताब्दी के साहित्य सेवियों में बाबा दुलीचंन्द का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। ये मूलत जयपुर निवासी नहीं थे किन्तु पूना (सितारा) से स्नाकर यहां रहने लगे थे। इनके पिता का नाम मानकचन्दजी था। त्राते समय त्रपने साथ सैंकड़ों हस्तिलिखित प्रन्थ भी साथ लाये थे, जो त्राजकल जयपुर के बढ़े मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संप्रहीत हैं तथा वह संप्रहालय भी बाबा दुलीचन्द भण्डार के नाम से प्रसिद्ध है। इस भण्डार में ५०६-६०० हस्तिलिखित प्रन्थ हैं। जो सभी वाबाजी द्वारा संप्रहीत है।

बाबाजी बड़े साहित्यिक थे। दिन रात साहित्य सेवा में व्यतीत करते थे। प्रन्थों की प्रतिलिपियां करना, नवीन प्रन्थों का निर्माण तथा पुराने प्रन्थों को व्यवस्थित रूप से रखना ही आपके प्रतिदिन के कार्य थे। बड़े मन्दिर के भएडार में तथा स्वयं बाबाजी के भएडार में इनके हाथ से लिखी हुई कितनी ही प्रतियां मिलती है। इन्होंने १४ से अधिक प्रन्थों की रचना की थी। जिनमें उपदेशरह्ममाला भाषा, जैना-गारप्रक्रिया, ज्ञानप्रकाशिवास, जैनयात्रादर्पण, धर्मपरीत्ता भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होंने भारत के सभी तथीं की यात्रा की थी और उसीके अनुभव के आधार पर इन्होंने जैनयात्रादर्पण लिखा था। मन्दिरनिर्माण विधि नामक रचना से पता चलता है कि ये शिल्पशास्त्र के भी ज्ञाता थे। इन सबके अतिरिक्त इन्होंने भारत के कितने ही स्थानों के शास्त्र भएडारों को भी देखा था और उसीके आधार पर संस्कृत और हिन्दी भाषा के प्रन्थों के प्रन्थकार विवरण लिखा था जिसमें किस विद्वान् ने कितने प्रन्थ लिखे थे तथा वे किस किस भएडार में मिलते हैं दिया हुआ है। अपने ढंग की यह अनूठी पुस्तक है। इनकी मृत्यु ता० ४ अगस्त सन् १६२५ में आगरे में हुई थी।

२६. नन्द

ये अप्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। गोयल इनका गोत्र था। पिता का नाम भेंह्रं तथा माता का नाम चंदा था। ये गोसना गांव के निवासी थे जो संभवतः आगरा के समीप ही था। किव की आभी तक एक रचना यशोधर चरित्र चौपई ही उपलब्ध हुई है जो संत्रत् १६७० में समाप्त हुई थी। इसमें ४६८ पद्य हैं। रचना साधरणतः अच्छी है। तथा अभी तक अप्रकाशित है।

२७. नागरीदास

संभवत ये नागरीदास वे ही हैं जो कृष्णगढ नरेश महाराज सांवतिसह जी के पुत्र थे। इनका जन्म सवत् १७४६ में हुआ था। इनका किवता काल स० १७५० से १८१६ तक माना जाता है। इनकी छोटी वही सब रचना मिलाकर ७३ रचनायें प्रकाश में आ चुकी हैं। वैनिवलास एवं गुप्तरसप्रकाश नामक अप्राप्य रचनाओं में से वैनिवलास जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई हैं। इसमे ३० पद्य है जिनमें कुंडिलिया दोहे आदि हैं।

२८. नाथुलाल दोशी

नाथूलाल दोशी दुलीचन्द दोशी के पौत्र एवं शिवचन्द के पुत्र थे। इनके ५० सदासुखजी काशलीवाल धर्म गुरू थे तथा दीवान श्रमरचन्द परम सहायक एवं कृपावान थे। दोशी जी विद्वान् थे तथा प्रंथ चर्चा में श्रिधिक रस लिया करते थे। इन्होंने हरचन्द गगवाल की प्ररेगा से संवत् १६१८ में सुकुमालचरित्र की भाषा समाप्त की थी। रचना हिन्दी गद्य में में है जिस पर ढ़ंढारी भाषा का प्रभाव है।

२६. नाधुराम

लमेचू जाति में उत्पन्न होने घालें नाथूराम हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। ये संभवतः १६ वीं शताब्दी के थे। इनके पिता का नाम दीपचंद था। इन्होंने जम्यूस्वामीचरित का हिन्दी गद्यानुवाद लिखा है। रचना साधारणतः अच्छी है।

३०. निरमलदास

श्रावक निरमलदास ने-पंचाख्यान नामक ग्रन्थ की रचना की थी। यह पंचतन्त्र का हिन्दी पद्यानुवाद है। सभवत यह रचना १७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गयी थी क्योंकि, इसकी एक, प्रति सवत् १७४४ में लिखी हुई जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भएडार में संग्रहीत है। रचना सरलहिन्दी में है तथा साधारण पाठकों के लिये, श्राच्छी है।

३१. पद्मनाभ

पद्मनाभ १४-१६ वीं शताब्दी के किव-थे,। ये हिन्दी एव संस्कृत के प्रतिमा सम्पन्न विद्वान् थे इसीलिये संघपित हूं गर ने इनसे वावनी लिखने का अनुरोध किया था और उसी अनुरोध से इन्होंने सवत् १४४३ में वावनी-की रचना की थी,। इसका दूसरा नाम, हूं गर की वावनी, भी, है। वावनी, में ४४, सवैय्या हैं। भाषा, राजस्थानी है। इसकी एक प्रति अभी, जयपूर के ठोलियों, के मिन्दर के शास्त्र-भण्डार। में उपलब्ध हुई है लेकिन लिखावट विकृत होने से सुपाठ्य नहीं है। वावनी अभी तक अप्रकाशित है।

३२. पन्नालाल चौधरी

जयपुर में होने वाले १६-२० वीं शताब्दी के साहित्यकारों मे पन्नालाल चौधरी का नाम उल्लेखनीय है। ये सस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। महाराजा रामसिंह के मन्त्री जीवनसिंह के ये गृह मन्त्री थे। इनके गुरु सदामुखजी काशलीवाल थे जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे। यही कारण है कि साहित्य सेवा इनके जीवन का प्रमुख उदेश्य हो गया था। इन्होंने अपने जीवन में २० से भी अधिक प्रन्थों की रचना की थी। इनमें से योगसार भोषा, सद्भाषितावली भाषा, पाण्डवपुराण भाषा, जम्बूस्वामी चरित्र भाषा, उत्तरपुराण भाषा, भविष्यदत्तचरित्र भाषा उल्लेखनीय है। सद्भाषितावलि भाषा आपका सर्व प्रथम प्रन्थ है जिसे चौधरीजी ने सवत् १६१० में समाप्त किया था। प्रथ निर्माण के अतिरिक्त इन्होंने बहुत से प्रथों की प्रतिलिपिया भी की थी जो आज भी जयपुर के बहुत से भण्डारों में उपलब्ध होती हैं।

३३. पुएयकीर्त्ति

ये खरतरगच्छ के आचार्य एव युगप्रधान जिनेचद्रसूरि के शिष्य थे। तथा ये सांगानेर् (जयपुर) के रहने वाले थे । इन्होंने पुरायसार क्या कि संवत् १७६६ में समाप्त किया था। रचना साधारणत अच्छी है।

३४. बनारसीदास

कविवर वनारसीदास का स्थान जैन हिन्दी साहित्य में सर्वोपिर है। इनके द्वारा रचे हुये समयसार नाटक, वनारसीविलास, श्रद्ध कथानक एवं नाममाला तो पहिले ही प्रसिद्ध हैं। श्रभी इनकी एक श्रीर रचना मांमा नयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भरडार मे मिली है। रचना श्राध्यास्मिक रस से श्रोत प्रोत है। इसमे १३ पद्य है।

३५. वंशीघर

इन्होंने संवत् १७६४ में 'दस्तूरमाणिका' नामक हिन्दी प्रंथ रचना लिखी थी। दस्तूरमाणिका गणित शास्त्र से सम्बन्धित रचना है जिसमें वस्तुओं के खरीदने की रस्म रिवाज एवं उनके गुरू दिये हुये हैं। रचना खडी बोली में है तथा अपने ढग की अकेली ही रचना है। इसमे १४३ पद्य है। किव संभवत वे ही बंशीधर है जो अहमदाबाद के रहने वाले थे तथा जिन्होंने संवत १७८२ में उदयपुर के महाराणा जगत् सिंह के नाम पर अलंकार रहनाकर प्रंथ बनाया था ।

३६ मनराम

१८ वीं, शताब्दी के जैन हिन्दी विद्वानों में मन्राम् एक अच्छे विद्वान् हो गये हैं। यद्यपि रचनाओं के आधार पर इनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो। सकी है फिर भी इनकी वर्णन शौली से ज्ञात होता है कि मनराम का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार था। अब तक अच्रमाला, धर्मसहेली, मनरामविलास, बचीसी, गुणाच्चरमाला आदि इनकी मुख्य रचनाये हैं। साहित्यिक दृष्टि से ये सभी रचनायें उत्तम हैं।

३७. मन्नासाह

मन्नासाह हिन्दी के अच्छी कवि थे। इनकी लिखी हुई मान बाबनी एवं लघु बाबनी ये दो रचनायें अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भएडार में मिली हैं। रचना के आधार पर यह सरलता से कहा जा सकता है कि मन्नासाह हिन्दी के अच्छे कवि थे। मान बाबनी हिन्दी की उच्च रचना है जिसमें सुभाषित रचना की तरह कितने ही विषयों पर थोडे थोड़े पद्य लिखे हैं। मन्ना साह सभवत १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे।

३८. मल्ल कवि

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक के रचयिता मल्लकवि १६ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इन्होंने कृष्णिमिश्र द्वारा रचित संस्कृत के प्रबोधचन्द्रोदय का हिन्दी भाषा से पद्यानुवाद संवत १६०१ से किया था। रचना

१. हिंदी साहित्य का इतिहास-पृष्ट २८)

सुल्लित भाषा में लिखी हुई है। तथा उत्तम संवादों ये भरपूर है। नाटक में काम, क्रोध मोह आदि की पराजय करवा कर विवेक आदि गुर्णों की विजय करवायी गयी है।

३६. मेघराज

मुनि मेघराज द्वारा लिखित 'संयमप्रवहण गीत' एक मुन्दर रचना है। मुनिजी ने इसे संवत् १६६१ मे समाप्त की थी। इसमे मुख्यत 'राजचंदसूरि' के साधु जीवन पर प्रकाश ढाला गाया है किन्तु राजचन्दसूरि के पूर्व आचार्यो—सोमरत्नसूरि, पासचन्दसूरि, तथा समरचन्दसूरि के भी माता पिता का नामोल्लेख, आचार्य बनने का समय एवं अन्य प्रकार से उनका वर्णन किया गया है। रचना वास्तव मे ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन शैली काफी अच्छी है तथा कहीं कहीं अलंकारों का मुन्दर प्रयोग हुआ है।

४०. रघुनाथ

इनकी श्रव तक ४ रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। रघुनाथ हिन्दी के श्रच्छे विद्वान् थे तथा जिनकी छन्द शास्त्र, रस एव श्रतंकार प्रयोग में श्रच्छी गित थी। इनका गएभेद छन्द शास्त्र की रचना है। नित्यविहार श्र गार रस पर श्राश्रित है जिसमें राधा कृष्ण का वर्णन है। प्रसंगसार एवं ज्ञानसार सुभाषित, छपदेशात्मक एव भिक्तरसात्मक हैं। ज्ञानसार को इन्होंने सबत् १७४३ में समाप्त किया था इससे पता चलता है कि कि १७ वीं शताब्दी में पैदा हुये थे। कि राजस्थानी विद्वान् थे लेकिन राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसके सम्बन्ध में परिचय देने में इनकी रचनायें मौन है। इनकी सभी रचनायें शुद्ध हिन्दी में लिखी हुई हैं। ये जैनेतर विद्वान् थे।

४१. रूपचन्द

कविवर रूपचन्द १७ वीं शताब्दी के साहित्यिकों में उल्लेखनीय किव हैं। ये आध्यात्मिक रस के किव थे इसीलिये इनकी आधिकांश रचनायें आध्यात्मिक रस पर ही आधारित हैं। इनकी वर्णन शौली सजीव एव आकर्षक है। पच मगल, परमार्थदोहाशतक, परमार्थगीत, गीतपरमार्थी, नेमिनाथरासो आदि कितनी ही रचनायें तो इनकी पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं तथा प्रकाश में आ चुकी हैं किन्तु अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में अध्यात्म सर्वेच्या नामक एक रचना और प्राप्त हुई है। रचना आध्यात्मिक रस से ओत्रोत है तथा बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी हुई है। माषा की दृष्टि से भी रचना उत्तम है। इन रचनाओं के अतिरिक्त किव के कितने पद भी मिलते हैं वे भी सभी अच्छे हैं।

४२. लच्छीराम

लच्छीराम सवत १८ वीं शताब्दी के हिन्दी किव थे। इनका एक "करुणाभरणनाटक" श्रमी उलब्ध हुआ है। नाटक मे ६ श्रक है जिनमें राधा श्रवस्था वर्णन, ब्रजवासी श्रवस्था वर्णन सत्यभामा ईपी वर्णन, वलदाऊ मिलाप वर्णन आदि दिये हुये हैं। नाटक की भाषा माधारणतः अच्छी है। नाटककार जैनेतर विद्वान थे।

४३. भद्दारक शुभचन्द्र

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वी शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्त्त की परम्परा में गुरु सकलकीर्त्त के समान इन्होंने भी संस्कृत भाषा में कितने ही प्रन्थों की रचना की थी जिनकी सख्या ४० से भी श्रिधिक है। पट्भाषाचकवर्त्त, त्रिविधविद्याधर श्रादि उपाधियों से भी श्राप विभूषित थे।

संस्कृत भाषा के अन्थों के अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी कुछ रचनायें लिखी थीं उनमें से र रचनायें तो अभी प्रकाश में आयी हैं। इनमें से एक चतुर्विशतिस्तुति तथा दूसरा तत्त्वसारदोहा है। तत्त्वसार दोहा में तत्त्ववर्णन है। इसकी भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। इसमें ६१ पद्य हैं।

४४: सहजकी ति

सहजकीति सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये १७ वीं शंताब्दी के कवि थे। इनकी एक रचना प्रांति छत्तीसी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार, में ६७ वें गुटके में संप्रहीत है। यह सवत् १६८८ में समाप्त हुई थी। रचना में ३६ पद्य हैं जिसमें प्रांत काल सबसे पहले भगवान का स्मरण करने के लिये कहा गया है। रचना साधारण है।

४५. सुखदेव

हिन्दी-भाषा में अर्थशास्त्र से सम्बन्धित रचनार्थे बहुत कम हैं। अभी कुछ समय पूर्व जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर में सुखदेव द्वारा निर्मित विश्वकित्रया की एक हस्तलिखित प्रति उपलेंड्घ हुई है। विश्वकित्रया का मुख्य विषय व्यापार से सम्बन्धित है।

सुखदेव गोलापूरव जाति के थे। उनके पिता का नाम बिहारीदास था। रचना में ३२१ पद्य हैं जिनमें दोहा श्रीर चौपई प्रमुख हैं। कवि ने इसे संवत् १७१७ में लिखी थी। रचना की भाषां साधारणतः श्राच्छी है।

४६. संघार कवि

श्रव तक उपलब्ध जैन हिन्दी साहित्य में १४ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में कवि सधारु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी यद्यपि एक ही रचना उपलब्ध हुई है लेकिन वही इनकी काव्य शिक्त को प्रकट करने में पर्याप्त हैं। ये श्रग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थें जो श्रग्नोह नगर के नाम से प्रसिद्ध हुई थी। इनके पिता का नाम शाह महाराज एव माती का नाम गुरावती था। कवि ने इस रचना को एरछ नगर में समाप्त की थी जो कानपुर मांसी रेल्वे लाइन पर है।

१ जैन सन्देश भाग २१ सख्या १२

किव की रचना का नाम प्रद्युम्न चिरत है जो संवत् १४११ में समाप्त हुई थी। इसमें ६८२ पद्य हैं किन्तु कामा उज्जैन आदि स्थानों में प्राप्त प्रति में ६८२ से अधिक पद्य हैं तथा जो भाव भाषा, अजलकार आदि सभी दृष्टियों से उत्तम है। किवने प्रद्युम्न का चिरत्र बड़े ही सुन्दर ढंग से अकिन किया है। रचना अभी तक अप्रकाशित है तथा शीघ ही प्रकाश में आने वालीहै।

४७. सुमतिकीर्त्त

सुमितिकीर्ति भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में होने वाले भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य थे तथा उनके साथ रह कर साहित्य रचना किया करते थे। कर्मकाण्ड की संस्कृत टीका ज्ञानभूषण तथा सुमितिकीर्ति दोनों ने मिल कर बनायी थी। भट्टारक ज्ञानभूषण ने भी जिस तरह कितने ही प्रन्थों की रचना की थी उसी प्रकार इन्होंने भी कितने ही रचनायें की हैं। त्रिलोकसार चौपई को इन्होंने सवत् १६२७ में समाप्त किया था। इसमें तीनलोकों पर चर्चा की गयी है। इस रचना के स्रातिरिक्त इनकी कुछ स्तुतियां श्रथवा पद भी मिलते हैं।

४८. स्वरूपचन्द विलाला

पं० स्वरुपचन्द जी जयपुर निवासी थे। ये खरडेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा विलाला इनका गोत्र था। पठन पाठन एवं स्वाध्याय ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। विलाला जी ने कितनी ही पूजाओं की रचना की थी जो स्त्राज भी वडे चाव से नित्य मन्दिरों में पढी जाती है। पूजाओं के स्त्रातिरिक्त इन्होंने मदनपराजय की भाषा टीका भी लिखी थी जो संवत् १६१८ में समाप्त हुई थी। इनकी रचनाओं के नाम मदनपराजय भाषा, चौलठऋद्भियूजा, जिनसहस्त्रनाम पूजा तथा निर्वाण्चेत्र पूजा स्त्रादि हैं।

४६. हरिकृष्ण पांडे

ये १८ वीं शताब्दी के किव थे। इन्होंने श्रपने को विनयसागर का शिष्य लिखा है। जयपुर के वधीचन्द्जी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में इनके द्वारा रचित चतुर्वशी-कथा प्राप्त हुई है जो सवत् १७६६ की रचना है। कथा में ३४ पद्य हैं। भाषा एवं दृष्टि से रचना साधारण है।

yo, हर्षकीर्त्ति

हर्षकीर्त्ति हिन्दी भाषा के श्राच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखी हैं जो सभी उत्तम हैं। भाव, भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से किव की रचनायें प्रथम श्रेणी की हैं। चतुर्गित वेलि को इन्होंने संवत् १६८३ में समाप्त किया था जिससे पता चलता है कि किव १७ वीं शताब्दी के थे तथा किववर वनारसीदासजी के समकालीन थे। चतुर्गित वेलि के श्रातिरिक्त नेमिनाथ-

राजुल गीत, नेमीश्वरगीत, मोरडा, कर्माईडोलना पछ्चमगितवेलि छादि छन्य रचनाये भी मिलती हैं। सभी रचनायें आध्यात्मिक है। कवि द्वारा लिखे हुये कितने ही पद भी हैं। जो छमी तक प्रकाश में नहीं छाये हैं।

५१. हीरा कवि

ये बूंदी (राजस्थान) के रहने वाले थे। इन्होंने सवत् १८४८ में 'नेमिनाथ व्याहलों' नामक रचना को समाप्त किया था। व्याहलों में नेमिनाथ के विवाह के अवसर पर होने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। रचना साधारणत अच्छी है तथा इस पर हाडौती भाषा का प्रभाव मलकता है।

४२. पांडे हेमराज

प्राचीन हिन्दी गद्य लेखकों मे हेमराज का नाम उल्लेखनीय है। इनका समय सत्रहवीं शताब्दी था तथा ये पांडे रूपचंद के शिष्य थे। इन्होंने प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के प्रन्थों का हिन्दी गद्य में अनुवाद करके हिन्दी के प्रचार में महत्त्वपूर्ण योग दिया था। इनकी स्त्रब तक १२ रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं जिनमें नयचक्रभाषा, प्रवचनसारभाषा, कर्मकार्यडभाषा, पञ्चास्तिकायभाषा, परमात्मप्रकाश भाषा त्रादि प्रमुख हैं। प्रवचनसार को इन्होंने १७०६ में तथा नयचक्रभाषा को १०२४ में समाप्त किया था। अभी तीन रचनायें और मिली हैं जिनके नाम दोहाशतक, जखडी तथा गीत हैं। रचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि किव का हिन्दी गद्य एव पद्य दोनों में ही एकसा अधिकार था। भाव एवं भाषा की दृष्टि से इनको सभी रचनाये स्त्रच्यों है। दोहा शतक जखडी एवं हिन्दी पद स्त्रभी तक स्त्रप्रकाशित हैं।

उक्त विद्वानों में से २७, ३४, ४०, ४२ तथा ४४ संख्या वाले विद्वान् जैनेतर विद्वान् हैं। इनके अतिरिक्त ४,-६, २४, ३०, ३३ एवं ३६ संख्या वाले रवेताम्बर जैन एवं शेष सभी दिगम्बर जैन विद्वान् हैं। इनमें से बहुत से विद्वानों का परिचय तो अन्यत्र भी मिलता है इसिलये उनका अधिक परिचय नहीं दिया गया। किन्तु अजयराज, अमरपाल, उदेराम, केशरीसिंह, गोपालदास, चपाराम भांवसा ब्रह्मज्ञानसागर, थानसिंह, बाबा दुलीचन्द, नन्द, नाथूलाल दोशी, पद्मनाभ, पन्नालाल चौधरी, मनराम, रघुनाथ आदि कुछ ऐसे विद्वान् हैं जिनका परिचय हमे अन्य किसी पुस्तक में देखने को नहीं मिला। इन कवियों का परिचय भी अधिक न मिलने के कारण उसे हम विस्तृत रूप से नहीं दे सके।

प्रत्थ सूची के अन्त मे ४ परिशिष्ट हैं। इतमें से प्रत्थ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्ति के सन्वन्ध में तो हम अपर कह चुके हैं। प्रंथानुक्रमिण्का में प्रत्थ सूची में आये हुये अकारादि क्रम से सभी प्रत्थों के नाम दे दिये गये हैं। इससे सूची में कौनसा प्रत्थ किस पृष्ठ पर है यह दूं ढने मे सुविधा रहेगी। इस परिशिष्ट के अनुसार प्रत्थ सूची में १७८४ प्रत्थों का विवरण दिया गया है। प्रत्थ एवं प्रत्थकार परिशिष्ट को भी हमने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषाओं में विभक्त कर दिया है जिससे अन्थ सूची में किसी एक विद्वान के एक भाषा के कितने प्रत्थों का उल्लेख आया है सरलता से जाना जा

सकता है। प्रस्तुत प्रन्थ सूची में सस्कृत भाषा के १७३, प्राकृत के १४, स्रपन्न श के १६ तथा हिन्दी के २६२ विद्वानों के प्रन्थों का परिचय मिलता है तथा इससे भाषा सम्बन्धी इतिहास लेखन में स्त्रधिक सहायता मिल सकती है।

प्रनथ सूची को उपयोगी वनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है तथा यही प्रयास रहा है कि प्रनथ एव प्रनथ कर्त्ता आदि के नामों में कोई अशुद्धि न रहे किन्तु फिर भी यदि कहीं कोई बुटि रह गयी हो तो विद्धान पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे आगे प्रकाशित होने वाले संस्करणों में उसका परि-मार्जन किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण-

सर्व प्रथम हम चेत्र कमेटी के सदस्यों एव विशेषत मन्त्री महोदय को धन्यवाद देते हैं जो प्राचीन साहित्य के उद्धार जैसे पवित्र कार्य को चेत्र की ख्रोर से करवा रहे हैं तथा भविष्य में इस कार्य में ख्रोर भी ख्राधिक व्यय किया जावेगा ऐसी हमें ख्राशा है। इसके ख्रातिरिक्त राजस्थान के प्रमुख जैन साहित्य सेवी श्री ख्राराचन्दजी नोहटा एवं वीर सेवा मन्दिर देहली के प्रमुख विद्वान प० परमानन्दजी शास्त्री के हम हदय से ख्राभारी हैं जिन्होंने सूची के ख्राधिकाश भाग को देखकर ख्रावश्यक सुमाव देने का कष्ट किया है तथा समय समय पर ख्रपनी श्रुम सम्मतियों से सूचित करते रहते हैं। श्रुद्ध य गुरुवर्य प० चेनसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ के प्रति भी हम कृतज्ञांजिलया ख्रापित करते हैं जो हमे इस पुनीत कार्य में समय समय पर प्रेरणा देते रहते हैं छौर जिनकी प्रेरणा मात्र से ही जयपुर में साहित्य प्रकाशन का थोडा बहुत कार्य हो रहा है। बधीचन्दजी के मन्दिर के प्रवन्धक बाबू सरदारमलजी ख्राबूजी वाले तथा ठोलियों के मन्दिर के प्रवन्धक बाबू नरेन्द्र मोहनजी डिड्या तथा प० सनन्द्रमारजी विलाला को भी हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने ख्रपने यहाँ के शास्त्र भएडारों की मन्य सूची बनाने की पूरी सुविधा प्रदान की है। ख्रान्त में हमारे नवीन सहयोगी बाबू सुगनचन्दजी को भी धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते जिन्होंने इस मन्य सूची के कार्य में हमारा पूरा हाथ बटाया है।

प्रस्तूरचन्द्रकासलीवाल अनूपचन्द्र जैन

दि० २४-७-४७

२ इहायहाँ देशे वर

रास्त्रपराम्हित्वाकारकिविसेयोजनले है।।बहरिक्षिकसम्पद्धिसे पहले अर्नतानु वैभी काविसेयोजन्त्रहिलेहे। ग्रेसाजाननी गूर्वितामस्यापराप्रमम्बादिग्नन तानुवैधा माविसेयोजनेतेसतानाचानयाचा वहारेबरिमध्यात्व विष्ठजावितान्त्रने तानु वैर्धाकार्वभा करतिबहुरिबाहीसत्ताकामजावहोर।।अरका यिकसम्पद्धि मिष्णातिबिंगः गायेनी हीतातवाकेन्त्रनेतानुवंधीकीमताकशिवत्रहाय॥इहात्रधनोन्त्रनेतानुवंधीताव्यि त्रमोहकीप्रकृतिहेसी चारित्रके क्या व्यक्तिमाकरिक्ष्य सम्मक्कामात्रकेस स्त्रवै॥ ताकाममाधान॥ स्रनेतानुवैभीके उदयते को धारिक प्रविताम रोहे कि छू अतन् स्वन् हातानारीतातेम्मनतानुवधीयास्त्रहीकाभातेहमस्कृको क्यानीहामातह। महितामह रीपर्वअनितानुवैधात्रवस्यते केनेमक्राधादकहार नेसक्राधारक के समार्वहा तेनलेइ स्रेसार्ति मनने मित्तिक प्रतीवा रिष्हें। जे से क्राउटक समयनी की घातकते। इसपनी स्मावरम्ङ्गतिहीहै।। पर्वे वे विकास कि कि दिस ना तिप्रकृतिका नी इस्यन् है इतोतेजपनारकिर पुके दियमकृतिकीनी त्रसपनीका ज्ञातकपनी कि एनी दे। पनि ही। तिसे मम्बक्तीयातकते। विकास मानि द्यनिमाहहै।। मरेबसम्बक्ति तेन्नने तानुवैधीक माम निकानी उर यत हो मताते उपचारक रिम्ने ने तानुवैधी के नी मत्यक्क का प्रातक प्रनीक हिएती ही म्नीरी।।वहरिद्रतम्मनोत्रनेतानुवैधीचीचाम्बिरीकोमातिहेतीयाकेगएकिम्बारिमनयाक हो। श्रम्यमकोटकोकहा हो। ताकाममाधानी क्रियम्बर्ग क्रियम्बर्ग होने स्वयं क्रियम्बर्ग हो। **्त्रसेयतगुलम्बानविधे**ः

मोत्तमार्गे प्रकाश एव चपणासार की मूल प्रतियों के चित्र

धन्त्रीगतेक्रातत्रभासाहोहेछनउपयोगप्रकासायते क्रिक्स हीनहोहकोहा हरूपाय तार्तेप्रगरे के प्रतापापकावीतराग के किया किया किया किया के वित्र क क्य ताते हानाने द्रस्तर् । पाविनिजय र न्त्रमेल नेत्रम् ।। प्रधा ग्रेसे ग्रुम् परम वृद्याय। केयल दर्गन सा नलत्यानास्मुद्दिन्रकेत्रस्थागुनवर्ययलक्णयत्वकापूप्राध्नाकलताकारनक्वनिहर्म्य तातेंसुवीसईबाहायाक्ष्यक्षेत्रेसीद्यासईब्रिहें। क्रव्ह्यांनद्यानिहम्हे।। पह्ने वेहागक्त साराम्ब्रास्यासको।उत्प्रमकलके विकासके पहुँचा निर्माशास्त्र त्राराममहिष्ती प्रलेख महुनी नि।।।। इनकिषु शास्त्रास्त्र निम्मलिया क्रिया स्वारा अवसे प्रमास्य प्रमारी होसी कलिय काराम्याचास्त्रात्वासविषे व्यवस्थावद्योत्राभक्वक्याहानाते इत्वाद्यास्त्रस्त्रे क्रांक्रास्त्रस्त्रे क्रांक्रास् अवगाह॥५५॥अहिन्यो एरतन्ये।क्ष्यत्रास्त्रं सुब्र्यासाह॥अवेनएकत्रस्त्रायायोन्त्रति । आक्षाह्यादाह्य।अपकारीकोमोनिए।नएआपनीकाज॥तातेऽस्त्रवसरिवेशित्रहेन्द्रस् जगद्गाम्माद्भितम्गल्काताळ्क होतकाजहितकार्।। ततिमगलमयनमे। प्रचपरम्गुहृसार ।ह्यासवर्थाश्याभ्यरहेतसिङ्स्रिउपाध्यामसाध्यस्त्रचेकेत्रकाशीमणलीकउपकारियोद्धी रापजिछिक्तिस्तरसिष्ट्यादिन्द्रीयमञ्ज्यस्ते विस्तुप्रजातिरागतैतरहिनकितारेकायकानमापसि कोउनारीहै।।धरमध्याजनजभरतिसवकान नयो क्रियनकोगी दशाजितीज्ञ मानिक करने।रिवारिकार वदनारुमारि । मैगलकल्पान्सुषत्रेसान्त्रवचार्तरो रोडमेरी होसी द्याजिसीत् मधारिह । इत वस्त्रणा श्रीमत्नेष्टस्य लिस्सर्भार्तगामरसार्यम्यास्कीमम्यकानवैदिकानामनाषारीका a Page

[जयपुर के वधीचन्द्जी के मन्दिर के शास्त्र-भएडार में सप्रहीत]

श्री महावीराय नमः

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारी

की

ग्रन्थसूची

श्री दि॰ जैन मन्दिर बधीचन्दजी (जयपुर) के

ग्रन्थ

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

श्चन्तगढदशास्त्रो वृत्ति (श्चन्तछद्दशासूत्रवृत्ति)—श्चभयदेवसूरि पत्र सख्या-७ । साइज-१०४४ई ६য় । साषा-मस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रवनाकाल × । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन न० २६० ।

विशेष—श्रन्तऋत्दशसूत्र श्वे० जैन श्रागम का ⊏ वां श्र ग है।

२ स्त्राश्रव त्रिभगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सल्या-१२। साइज-११३४५६ ६ द्र । माषा-प्राप्टत। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल ×। लेखनकाल-स०१६०६, द्वितीय मादवा सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं०६७६। विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३. इकवीस ठागा चर्चा-पत्र सख्या-६। साइज-११४६ इञ्च। माषा-प्राकृत। विषय-चर्च। रचनाकाल ४। लेखनकाल संवत् १८१३, फागुण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १५४।

विशेष-पं० किशनदास ने प्रतिलिपि की थी।

४. इकोस गिराती का स्वरूप — पत्र सख्या-१३ । साइज-=ई×६ इख । माषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । स्वनाकाल × । लेखनकाल-स० १=२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३=६ ।

विशेष-सुख्यात, श्रसख्यात श्रीर श्रनन्त इनके २१ मेदों का वर्णन किया गया है।

४ एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ-लच्मग्गदास । पत्र सख्या-७१ । साइज-११४७ ई इब । माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चर्चा । रचनाकाल स० १८८४ माघ सुदी ४ । लेखनकाल ४ । पूर्य । वेष्टन न० ४६८ ।

विशेष-प्रारम्भ — स्थ लिखमणदास कृत पाठ लिख्यते । स्रम एक सौ युणतर जीवा की संस्या पाठ लिख्यते ।

दोहा—नृपम श्रादि चीत्रीस की नमी नाम उरघार ।

कछ इक संस्था कहत हू उत्तम नर की सार ॥१॥

प्रममहि जिन चीत्रीस के कहीं नाम सुखदाय ।

कीटि जनम के पाप ते चुणक एक में जाय ॥२॥

छ्द-प्रयम वृषम जिन देव, दूजी श्रनित प्रमानी । तीजी संमव नाम श्रमिनंदन चउ जानी ॥३॥

श्रन्तिम—इनका कथन वसेपते पूरव नगरी श्रादि । प्रंथ माहि तें जानयी जथा जोग श्रनवाद ॥६६॥ पाठ बटन के कारणे कियो नाहि में मिंत । नाम मात्र श्रद्धराग वसि धारि कियो हिर चिंत ॥००॥

छन्द सुन्दरी -- जैनमत के प्रथ लखाय के । कहत ही ये पाठ बनाय के ।

नाम ए चित में छ घरें नरा । होय मिध्या जाल सबें परा ॥७१॥

मूल चूक जु होय सुधारयो । हांसि पंडित नाहि न कारयो ।

करि सिमा मी गुण गहि लीजियो । राम कह किरप तुम कीजियो ॥७२॥

दोहा—ठारासे चौरासिया वार सनीश्चर वार, पोस कृष्ण तिय पचमी कियो पाठ सुम चार ॥७३॥
"इति एक सौ घुणंतर जीव पाठ संपूरण"॥१॥

निम्न पाठ और हैं'-

्र नास्	पत्र संख्या	पद्य संख्या	त्रिशेष
(१) तींस चींनीसी पाठ	६ से २४ तक	२ <i>२७</i>	•
(२) गणधर मुख्य पाठ	र४ से २४	१२	
(३) दसकरण पाठ	२५ से ३४	१ २४	दस बंध मेद वर्णन रामचन्द्र छतं
(४) जयचन्द्र पचीसी	इ४ से ३६	२६	
(५) श्रागति जागति पाठ	२ ६ से ४१	७५	सं॰ १व=४ मंगसिर वदी १९
(६) षट कारिक पाठ	४१ से ४२	१ २	
(७) शिष्य दिंचा वीसी पाठ	४२ से ४३	२७	
(=) सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	४३ से ४४	१ ४	
(१) जीक्मोच बचीसी पाठ	४४ से ४६	₹₹	

सिद्धान्त एवं चर्चा]

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	त्रिशेष
(१०) मोह उत्ऋष्टथित पचीसी	४६ से ४८	ર ર્દ	
(१) प्रथम शुक्ल घ्यान पचीसी	४= से ५०		
(१२) जतर चोबनो	५० से ५१	ς.	
(१३) वधवोल	4 8	¥	
(१४) इकवीस गियाती की पाठ	५१ से ६०	£₹	
(१५) सम्यक चतुरदर्सी	६० से ६१	* R	
(१६) इक ग्रहर म्रादि बत्तीसी	६१ से ६३	३३	
(१७) बावन छद रूपदीप	६३ से ७१	५१	र==४ माघ सुदी ४ मगलवार

६. कर्मप्रकृति—आचार्य नेमिचन्द्रं। पत्र संख्या-११। साइज-११४४ ई इच साषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। रचनाकाल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १६।

विशेष - मूल सात्र हैं तथा गायाचों नी संख्या १६२ हैं।

७. प्रति नं० २--पत्र सस्या-१६ । साइज-१०×५ इञ्च । लेखनकाल सं०-१८६ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष — चंपाराम ने प्रतितिषि की थी। इस प्रति में १६४ गायायें हैं।

- प्त. प्रति नं २ ३ पत्र सक्या १६ । साइज १२×४ है इस्र । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन नं ० १८ । विशेष गावाओं की सक्या १६१ है ।
- ध्राति नं० ४—पत्र सँख्या—१३ । साइज-११×४ दृष्य । लेखनकाल सं० १६०६ श्रषाट सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ । इसमें १६१ गावार्ये हैं ।

विशेष संस्कृत में कहीं २ टिप्पण दिया हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है स० १६०६ वर्षे आषाढ मासे शुक्तपचे प्रतिपदां तियो मोमवासरे श्रीमूलसचे नद्यान्नाये वर्तात्कारगणे सरस्वतीगध्ये कुन्दकुन्दाचार्यान्वये प्राचाये भुवनकीर्तिदेवा तत् शिष्यणी चा० मुक्तिश्री तत् शिष्या चा० कीर्तिश्री पठनार्थ । क्रमरसर्मध्ये राज्यश्री सुजाजी ।

१०. प्रति नं ० ४--पत्र सख्या-४४ । साइज-१-१४४६ इंच । लेखनकाल स०-१८१ सादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं ० ४३ ।

विशेष — हर चन्द ने प्रतिलिपि की थी। प्रंय ग्रटका सोहज में है। १६१ गायायें हैं।

११. प्रति नं ६ र-पत्र सर्या-११। साइज-१०ई-४४ई इख । लेखनकाल-४। पूर्ण । वेष्टन न० १६।

विशेष—प्रति श्रशुद्ध है। संस्कृत टीका सहित है। मूल गायायें नहीं हैं। कर्म प्रकृति का सत्वस्थान मग सहित ग्रंगस्थान का वर्णन है।

जिनदेव प्रयाम्याह मुनिचन्द्र जगतप्रमु ।
सत्कर्मप्रकृतिस्थान सवृणीमि यथागम ॥१॥
यमिक्रण वब्दमाण कृणयणिद देवरायपरिपुट्जं ।
पयडीणसत्तठाण श्रोधे मगे समं वोछे ॥१॥

देवराजपरिपूज्य कनकिम वर्द्धमानमगवद श्रह्द्मट्टारकं नत्वा कम्भीप्रकृतीनां सत्वरथान मगसहित ग्रयस्थानेषु वहा-

१२ प्रति नं० ७---पत्र संख्या-३४। साइज ११-४६ इच । लेखनकाल-१६७६मादवा सुदी १४। पूर्ण । वेष्टन नं०२१। प्रति सटीक हैं। श्रतिम पुष्पिका निम्न प्रकार हैं।

विशेष—इति प्राय श्री गोमदृसारमूलात् टीकाश्च निष्काप्य कमेण एकीकृत्य लिखितां श्रीनेमिचन्द्र सैद्धान्तिक विरचित-कर्मप्रकृतिप्र यस्य टीका समाप्ता ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स० १६७६ वर्षे भादपदमासे शुक्लपचे चतुर्दश्यां तिभो सम्रामपुरवास्तव्ये महाराजाधिराजराजश्रीमावसिंह—
राज्ये श्रीमूलसचे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकु दाचार्यान्वये महारक श्रीपम्ननिन्ददेवातत्पट्टे महारक
श्रुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे महारक श्री प्रमाचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्रीच दकीर्तिदेवा तत्पट्टे म० श्री
श्री श्री श्री देवे दकीतिजी। तदाम्नाये खडेलवालान्वये भींसा गोत्रे सा० गगा तदमार्या गौरादे तयो पुत्र सा० घेव्हा तद मार्या
घेलसिरि तयो पुत्र पच। प्रमम सा० ताल्हु तद मार्या व्होड़ी तयो पुत्रो ह्रौ प्र० सा० वाजू तद मार्ये ह्रौ० प्र० बालहदे, द्वि०
प्रतापदे तत्पुत्रो ह्रौ प्र० पुत्र सा० सावल तद मार्या सहलालदें तयो पुत्र चि० साहीमल, द्वि० पुत्र सा० साकर। साह ताल्हु
द्वि पुत्र सा० वहु तस्य मार्या गाखदे। एतेषां मध्ये साह वाजू तद मार्या वालहदे इद शास्त्र रक्षत्रयव्रत—उद्यापनार्थ महारक श्री
श्री श्री देवेन्द्र कीर्ति तत् शिष्य श्राचार्य श्री रामकीर्तिये प्रदत्तं।

१३ कम्प्रकृति विधान—बनारसीद।स । पत्र सरूया-१३। साइज-१०ई×४ई इच । भाषा-हन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचनाकाल-प० १७०० । लेखककाल-१७६० । पूर्णे । वेष्टन नं० ८६२ ।

विशेष-यह रचना वनारसीविलास में संगृहीत रचनाओं में से है।

१४. प्रति न० २-पत्र संख्या-५१ । साइज-६×६ ई इख । लेखनकाल-४ । पूर्ण । बेप्टन नं० ३६७ । विशेष-कर्मप्रकृतिविधान गुटके में है जिसमें निम्न पाठ श्रीर हैं-शावकों के १७ नियम, सिंदूर प्रकरण- (बनारसीदास) श्रीर श्रनित्य प्वाशिका-(त्रिमुबनचन्द)।

१४. प्रति न ० ३ — पत्र सरुपा-१६ । साइज-६ रू×१ इच । लेखन क्राल-× । पूर्ण । वेष्टन न ० ३६ = ।

१६. कर्मेप्रकृतियों का व्योरा— (कर्मप्रकृति चर्चा) . । पत्र सख्या-१७। साइज-१७३ ×६ इच । माषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० ६३३।

विशेष-मं य वही खाते नी साइज में है।

१७. कर्मस्वरूपवर्णन — श्रभिनव व।दिराज (प० जगन्नाथ)। पत्र सख्या—१०। साइज-१७३ ×६ इच। माषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-स० १७०७ माघ बुदी १३। लेखन काल-स० १७०७। ध्रपूर्ण। वेष्टन न० ६ =४।

> विशेष-१० से २३ तक के पत्र नहीं हैं। रचना का श्रादि श्रन्त माग निम्न प्रकार है-श्रारम्म- कम्में श्रूहविनिम्मुं का, मुक्तवाद्यता त्रिशुद्धित.। भन्यकर्मस्वरूपाख्यो वादिराजेन त्यते ॥१॥

श्रन्तिम पाठ-

1

इति निरवधविधामडनमिडत पिडतमंडलीमिडत महारक श्री नरे द्रकीर्तिजीवाख्यशिष्ये कविगमिववादिधामित्व गुणागणमूत्रणे कणादात्तपादप्रसाकरसहशिवसगतचार्व्याकसाख्यभपुखप्रवादिगणोपन्यस्तदूषणदूषणेस्त्रेविधविधाधिपे पडित जगनाधौरपराख्ययामिनववादिराजैविरिचिते कर्मस्वद्पप्र थे रियत्यनुसागप्रदेशनिरूपणं नाम द्वितीय उल्लास,

वर्षे तत्त्वनमो श्व मूपरिमिते (१७०७) मासे मधी सुन्दरे,
तत्पचे च सितेतरेहिन तथा नाम्ना द्वितीयाह्नये ।
श्रीसर्वे झपदां बुजानित—गलद् ज्ञाना वृतिप्रामवा
स्त्रैितिष्ये श्वरतांगता व्यरचयन् श्रीवादिराजा इम ॥ १ ॥
तावत्केविलिम समः कलिमले र्मुक्ता कलो साधवः ।
तावज्जैनमत चकास्ति विमल तावच्चधर्मोत्सवः ।
तावत्पो इशमावना मवस्तां स्वर्गापवर्गोक्तयो
थावञ्ची परमागमो विजयते गोम इसारामिधः ॥ २ ॥

१८. काल और अन्तर का स्वरूप—. । पन संख्या-१२ । साइज-११४४ १४ । साबा-हिदी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८७३ ।

रचना का थादि अन्त माग निम्न प्रकार है---

ध्यय काल घर श्र-तर का स्वरूप निरुपण करिए है ॥ छ ॥ तिनि निपे ग्राट सांतर मार्गणा है तिनका स्वरूप

सख्या विधान निरूपर्यों के श्रर्थि गाया तीन करि कहे हैं। नाना जीवनि की श्रपेत्ता विवित्तत ग्रुणस्थान वा मार्गणास्थान ने छोडि श्रन्य कोई ग्रुणस्थान वा मार्गणास्थान ने प्राप्त होह। बहुरि उस ही विविद्यत ग्रुणस्थान वा मार्गणास्थान को यावत्काल प्राप्त न हो इति सत्काल का नाम श्रंतर है।

श्चन्तिम—विविधित मार्गणा के मेद का काल विधे विविधित ग्रुणस्थान का श्रतराल जेते कालि पाईए ताका वर्णन है। मार्गणा के मेद का पलटना मए । श्रथवा मार्गणा के मेद का सद्भाव होते विविधित ग्रुणस्थान का अंतराल मथा या ताकी वहुरि प्राप्ति मएं विस अंतराल का श्रमाव हो है। ऐसे प्रसंग पाई काल का श्रर श्रतर कथन कीया है सो जानना ॥ इति सपूर्ण ॥

पोषी ज्ञान वाई की।

१६ त्तपणासार टीका--माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र संख्या-६६ । साइज-१४×६ई इ च । माषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० = ७६ । े

विशेष — आचार्य नेमिचन्द्र कृत चपणासार की यह संस्कृत टीका है। मूल रचना प्राकृत माथा में है।

२०. गुगास्थान चर्चा- । पत्र सख्या-४२ । साइज-१२४७ इब । माषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-४ । सेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६२ ।

विशेष—चौदह ग्रणस्थानों पर विस्तृत चाटे (संदृष्ट) हैं।

- २१ प्रति नं०२--पत्र सल्या-३१। साइज-१२४७ई इख । लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं० =६३।
- २२ प्रति न०३---पत्र सरूया-४१। साइज-१०ई×६ इञ्च∫। लेखन काल--× । पूर्ण। वेष्टन न० ⊏६४।
- २३. गोमटुसार—न्या० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-७२६ । छाइज-१४४६ दे इस । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । त्रपूर्ण । वेष्टन न० ६-६ ।

विशेष-७२६ से छागे पत्र नहीं हैं। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२४. प्रति न० २—पत्र स०-१६३ से ८४८ । साइज-१२३४६ इख । लेखन काल-×। श्रपूर्ण। केष्टन नं० ७८४।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२४. प्रति न० २—पत्र संख्या-११ । साइज-११४५ इञ्च । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । क्षेप्टन नं० ६८७ ।

विशेष--जीवकारङ मात्र है गामाओं पर संस्कृत में पर्यायवाची शन्द हैं।

२६. प्रति नं० ४--पत्र सख्या १७२ । साइज-१३× इस । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न०६६२ । विशेष — हिन्दी अर्थ सहित है । आगे के पत्र नहीं है ।

२७. प्रति तं ४-पत्र संरुपा-४०। साइज-१०४५ इस । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन न ० ६६४।

२८. प्रति न० ६—पत्र सल्या-११ । साइज-११४५ है इस । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ६३१ ।

विशेष-प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है।

्रह. प्रति नं० ७--- पत्र सस्या-२४८ से ४३१ । साइज-२•४७ है इस । ४ । लेखन काल-सं० १७६६ । भपूर्ण । वेष्टन नं० ६=४ ।

विशेष-- २४६ वे २५३, ३७१ से ४४०, ४८८ से ५२८ तक पत्र नहीं हैं।

यित नेथा सागर ने प्रतिलिपि की थी । स० १०६६ में महाराजा जयसिंह के शासन काल में सवाई जयपुर में जीधराज पाटोदी द्वारा उस नि।मत्त (बनवाये हुए) ऋषमदेव चैत्यालय में ग्रलाबचन्द गीदीका ने प्रतिलिपि करवा कर इस ग्रंथ को मेंट किया था। केशवविधि की कर्णाटक वृत्ति के आधार पर संस्कृत टीका दी हुई है।

प्रशस्ति—सन्तरं नन-नारद-मुनिद्धमित १७६६ भादपदमासे शुनलपन्ने पंनमीतिथी सवाईजयपुरनाम्नि नगरे महाराजाधिराजसवाईजयसिंहराज्यप्रवर्तमाने पाटोदी गोशीय साह जोधराज कारित श्री ऋषभ्रदेन चैत्यालय । श्री मूलसंघे नथाम्नाये चलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये महारकजित् श्री जगत्कीतिदेवास्तत्पट्टे प्रमाणद्रयाविष्ठन प्रतिमाधा रक महारकजित् श्री देवेन्द्रकीतिदेवा । तत्पद्टधारक कुमितिनवारक केतुप्रमोदिनवारक सन्नयय-मजक महारकाधिराजित् श्री महेन्द्रकीति देवामाये खंडेलवाल वशोत्पन्न मौबसा गोत्रीयमध्ये गोदीकिति नाम्ना प्रसिद्धा श्रेष्टीजित श्री लूणकरणाख्यास्तरपुत्र श्री मगत्रद्धमें प्रकटनकरणपर साह जी रूपचन्द जी कस्तत्पुत्रः राद्धांतिवत्तरणेविमतानादिमिध्यात्वनिकरेण चिरंजीविजत श्री गुलाब चन्द्रेण इदं गोमदृसार शास्त्र लिखाय्य महारक जित् श्री महेन्द्र कीर्तिये प्रदत्त ॥

३०. गोमट्टसार भाषा—पं० टोडरमताजी (त्विधसार स्वपणासार सहित) पत्र संख्या-१०४६ । साइज-१०४६ है इञ्च । साषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । रचना काल-स० १८१८ माघ सुदी ४ । तेखन काल-४ । पूर्ण । विष्टन न• ७१२ ।

विशेष—कई प्रतियों का सम्मिश्रण है। बहुत से पत्र स्वर्थ पं॰ टोडरमलजी के हाथ के लिखे प्रतीत होते हैं। प्रथ का विस्तार ६०,००० श्लोक प्रमाण है।

३१. प्रति नं० २--- पत्र सख्या-- ११०४ । त इज-१५४५इझ । लेखन काल--स०१८६१ पीष बुदी १२ । भवूर्ण । वेष्टन नं• ७१६ । विशेष - संदृष्टि के धलग पत्र हैं। ११=, १३३ तया २०२ के पत्र नहीं हैं।

- ३२. प्रति नं० ३--पत्र सख्या-१०३५ । साहज-१२ई×६३ इच । सेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ७१७ ।
- २२. प्रति नं०४—पत्र रूल्या-३११ । साइज-१३६ू×८ इश्च । लेखन काल-×। पूर्ण । बेप्टन, न० ८११ ।

विशेष-केवल कर्मकाएड मापा है।

- ३४ प्रति न० ४---पत्र सख्या->२ । साइज-१४×६ ईष्ट्य । लेखन काल-×्र अपूर्ण । वेष्टन न० ८७६ । विशेष -- जीवनागढ नी मापा मात्र है ।
- ३४ गोमहसार कर्मकायह टीका-सुमित कीर्ति । पत्र सख्या-४४ । साइज-११४४ इष । माषा-स्ट्यत । विषय-सिद्धात । रचना नाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० २० ।
- ३६ गोमहसार कर्मकाएड भाषा—पं० हेमराज । पत्र सख्या-२४। साइज-११६४४ देश । मात्रा-हिदी। विषय-सिद्धान । रचना काल-х। लेखन काल-स० १७०६। पूर्ण। वेष्टन नं ३६६।

विशेष - प द सेवा ने सरोजपुर में प्रतिलिपि की थी । अ य का प्रारम्म श्रीर श्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है -

प्रारम्म-पणामय सिरत ार्णेमि ग्रण रयण विह्तसण महावीर । सम्मत्तरयातिलय पयि सम्मक्तरण वोछ ॥ १॥

श्रर्थ — श्रह नेमिचद्राचाय प्रकृती समुत्कीच न वच्ये । श्रह है से नैमिन्द्र ऐसे नाम श्राचार्य सो प्रकृतिसमुन् क्षीच न प्रकृति हु कार है समुत्कीच न कथन जिस विषे ऐसा छ प्र य कर्मवांड नामा तिसहि वच्ये कहूगां । किंकत्त्वा कहा किर् सिरसा नेमिं प्रयाम्य सिरकिर श्री नेमिनाथ को नमस्कार करिके । कैसे है नेमिनाथ ग्रुग्यरत विभूषण — श्रनत झानादिक छ गुण तेई हुत्रे रत्न तेई है विभूषण श्रामरण जिनके । बहुरि कैसे हैं महावीर महासुनट हैं क्म के नासकरण की । बहुरि कैम है सम्यक्त रत्न निलय । सम्यक्त रूप छ है रत्न तिसके निष्य स्थानक है ।

श्रन्तम अरु जिस काल यह जीव पूर्वोक्त प्रत्यनीक श्रादिक किया बिषे प्रवर्ते, तव जैसी दुछ उत्कृष्ट मध्यम जवन्य शुमाशुम किया होई, तिस माफिक कर्ष हूँ का वध करे रियति श्रनुमाग की विशेषता करि। तिस ने ममय समय वध छ वरे सुती स्थित श्रनुमाग की हीनता करि। श्रुरु ज प्रत्यनीक श्रादिक पूर्वोक्त किया करि करें सुस्थित श्रनुमांग की पिशेषता करि यह सिद्धात जायाना। इय मावा टीका पित हेमराजेन कता स्वतुद्ध श्रानुसारेण। इति कर्म काल भाषा टीका सम्पूर्ण। इति सवत्सरे श्रिस्भन् विक्रमा दिस्थराजैससदशसत सतवटोत्तर १७०६ श्रव सरोजपुरे सिष्ठि पुस्तकं लिख्यत पित्रत सेवा स्वपठनार्षं।

३७ प्रति न० २—पत्र सस्या-७६ । साइज-११४४ ई इश्च । लेखन काल-सं० १८२४ ह्यासोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ । विशेष-फोटा में प्रतिलिपि हुई थी।

३८. चर्चाशतक—-द्यानतराय । पत्र संख्या-४३ । साइज-१९४८ इख । माषा-हिन्दी (पघ)। विषय-सिद्धान्त । रनना काल-४। लेखन काल-स० १६२४ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेण्टन न० ७=३।

विशेष-यह प्रति वधीचन्द साहामिका के शिष्य हरजीमल पानीपत वाले की हिन्दी टव्वा टीका सहित हैं।

३६ प्रति नं० २—पत्र सख्या-४७। १४ ई×११ है इंच। लेखन काल-स० १६३= व्येष्ठ घुदी ७ । पूर्ण। वेष्टन नं० ७=४।

विशेष--प्रति बहुत सुदर है-हिन्दी टव्वा टीका सहित है। बीच २ में नक्से आदि मी दिये हुए हैं।

४०. प्रति नं०३--पत्र सख्या-६३। साईज-१२×५ई इंच। लेखन काल-स• १६०६ माघ सुदी ६ । पूर्ण। वेष्टन न० ⊏०⊏।

विशेष--प्रत्येक पत्र पर ३ पितत्यां हैं।

- ४१ चर्चासमाधान-- सूधरदास जी पत्र संख्या-७६। साइज-१०ई×५ इत । भाषा-हिन्दी। विषय-- चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल स० १८५४। पूर्ण। वेष्टन नं० ३६१।
- ४२. प्रति नं० २--पत्र सख्या-११३ । साइज-१०ई-४ ५ इच । लेखन काल-स०१८=३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६२ ।
- ४३. प्रति नं० ३---पत्र सल्या-६३ । प्राइज-११×५ इच । लेखन काल-स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन-३६३ ।
- ४४. चर्चासंग्रह—पत्र सरुया-२०२ । साइज-१२४६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना-काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—गोमष्टमार त्रिलोकसार, चपणासार घादि श्राचों के श्राधार पर धार्मिक चर्चाश्रों को यहाँ सम्रह विया गया है। चर्चाश्रों के नाम निम्न प्रकार हैं चर्चा वर्णन, कर्मप्रकृति वर्णन, तीर्णकर वर्णन, मुनि वर्णन, नरक वर्णन, मध्यलोक्वर्णन, अन्तरकालवर्णन समोसरमवर्णन श्रुतिज्ञानवर्णन। नरकिनगोदवर्णन। मोचसुखवर्णन, श्रन्तरसमाधिवर्णन, कुदेववर्णन श्रादि।

४४. चौचीस ठाणा चर्ची — स्त्रा० नेमिचन्द्र । पत्र सख्या – १६ से १२७ । साइज — १२४६ इख । साषा प्राकृत । विषय – सिद्धान्त । रचाना काल – ४ । लेखन काल – ४ । स्रपूर्ण । वेष्टन न० ३२० ।

विशेष-सस्कृत में टीका दी हुई है।

४६. प्रति नं २ २-- पत्र सख्या- १२३ । साइज-११ई×४ है इस । लेखन काल-सं ० १७८३ । पूर्ण । वेष्टन नं ० १६६ ।

विशेष--प्रति संस्कृत टब्वा टीका सहित है। टीकाकार श्रानन्द राम है।

४७. चौबीसठाणा चर्चा भाषा-पत्र सख्या-४२। साइज-११×५ इस । भाषा-हिदी । विषय-चर्चा। रवना काल-४। लेखन काल-सं० १८८५ माह बुदी ७। पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८।

विशेष---माषायीका का नाम बाल बोध-चर्चा दिया हुआ है।

४८. प्रति नं० २---पत्र संख्या-३०। साइज-६×५ इख । लेखन काल-पं० १८२३ कार्तिक बुदी

विशेष-ख़ुशालचंद ने प्रतिलिपि की थी।

- ४६. चौबीसठागा चर्चा--पत्र सल्या-३३। साइज-१०४ ४ इस । माषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ८६१।
- ४०. चौबीसठाणा चर्चा-पत्र सख्या-१। साहज-११×४१ हम्र। माषा-हिन्दी। विषय चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण । वेष्टन नं० ५४६।
- ४१ चौनीसठाणा चर्चा--पत्र संख्या-२८। साइज-११ई×१६ इस । माषा-हिन्दी । विषय-चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल-सं• १८२०। पूर्ण । वेष्टन न० ४४४।

विशेष—हिंडोली में प्रतिविधि हुई थी।

- ४२ चौबीसठाणा पीठिका—पत्र सख्या- ा साइज-१३×६ इख । भाषा-हिदी । विषय-चर्ची। (चना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ११२७।
- ४३. चौबीसठाणा पीठिका-पत्र सस्या-४३। साहज-११ई×४ इस । माषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पृथा। वेष्टन नं० ४१६।
- ४४. जीवसमास वर्णन-शा० नेमिचन्द्र । पत्र सख्या-१४ । साइज-१२×६ दे इस । भाषा-प्राष्टत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । सपूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष-गोमट्टसार जीवकांड में से गायाओं का समह है।

- ४४ प्रति न २ पत्र सल्या-४५ । साइज-११×५ इख । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३२२ । विशेष-गायाओं पर संस्कृत में धर्ष दिया हुन्ना है ।
- ४६. झानचर्चा—पत्र संख्या-४६ । साहज-६३×५३ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना काल-× । लेखन काल- × । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ३५७ ।

विशेष-गोमहसार, त्रिलोकमार, चपणासार धादि प्र मों के अनुसार मिध ॰ वर्षायों का संगह है ।

४७. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र सख्या-४ । साइज-१०६४४६ इम । मापा-प्राहत । विषय-मिद्धात । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विभेष--- श्रीत शाचीन है।

४८, तत्त्वार्धमृत्र-प्रमास्त्रामि । पत्र सस्या-२३ । साइज-१५४६ इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-सिष्टान्त । रचना माल-४। हैयन चाल-स० १८७३ । पृष्ठे । वेष्टन मं० ४५४ ।

विरोध-आएम में भागामर स्थीय तमा द्रव्य संग्रह की गायायें दी हुई हैं।

- प्रदि नं २ २ -- पत्र संस्था-३३ । साइज-१०ई ×१६व । सेहन यात-४ । पूर्ण । बेहन न ० ४२४ । विशेष-- पत्र साथ रंग में हैं तथा चारों श्रोग बेलें हैं ।
- ६०. प्रति नं ० ३— पप्र सं ०-१४ । सारज-१ ४४३ इच । लेखन फाल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।।
- ६१. प्रति नः ४—पत्र संख्या-७। साहज-१०३४७ इत्र । लेखन पाल-४। पूर्ण । वेष्टन नः० ४६०।
- ६२. प्रति नं ० ४---पत्र मंग्या--१४ । साहज-११ई×४६ इज । सेयन पाल- × । पूर्ण । बेटन मं ० ४६६ ।
- ६३. प्रति नं∘ ६—पत्र सम्या-७ । साहल-१० ६० । लेखन पाल-१६३३ । पूर्व । वेष्टन मं∘६०६ ।
- ६४. प्रति नं ० ७--- पत्र संर्या-३-१६ । साइज-१०४४ दे इच । लेसन पाल-४ अपूर्ण । वेष्टन नं ० ६६६ ।

विशेष-एप पत्र में ४ पितवीं है।

- ६४. प्रति न ६ ६ १ साम्या- । साम्य- १ ९४ १ व । लेक्क पाल- ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन नं ० १०४ । विशेष-- प्रति भाषीन है ।
- ६६. प्रति त० ६-- पत्र गरमा- ७६ । सार्ड-७×५ है इस । सेगरन वाल-×। पूर्ण । बेप्टन नं ० ६४= ।

विरोष-भागानर स्तीय तथा पूजासी या भी समह है।

६८. प्रति तंद १८--पन मर्पा-२०। साइन-१११८४३ इस । त्यान छ छ-४। पूर्व । हे १४१।

भिरोप-सीन बीधीमी भाग सका सानामर स्तीप भी है।

रियः प्रति सेट रिर्म्यय संस्थानशः । साध्यनश्ची तम् । ग्रेस्य बाहनभा पूर्वः । प्रश्ने

किरेय-शिक्षी रहा होता महिल है।

रिक्षा प्रमाण कार्य के ज्ञान कार्य विकास कार्य

我们一点到上礼在此上上上了

७०. प्रति न० १३--पत्र सख्या-५० । साइज-१००४×७३ इच । लेखन काल-×।पूर्ण । वेष्टन न० ०४० ।

विशेष – हिन्दी टव्या टीका सहित है।

७१ प्रति न०१४—पत्र सल्या-१६। साइज-११×५२ इच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं०४६० ।

७२. प्रति न० १४--पत्र संख्या-१४ । साइज-१०×५ इख । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०४।

७३. प्रति नं० १६—पत्र सख्या-१३ । साइज-६×४६ इस । लेखन काल-स० १८१२श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे टन नं० २०४ ।

७४. प्रति तं १७ -- पत्र सल्या-१० । साइज-६×४ ईइझ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन न ० ३०६ ।

७४. प्रति नं १८—पत्र संख्या-६ । साइज-२१ई×६ई इब ×। लेखन काल-×। वे॰टन न० ३०७ । विशेष--प्रायेक पत्र के 'चारों श्रोर सुन्दर बेलें हैं ।

७६ प्रति न०१६ — पत्र सस्या-६६ । साइज-११४५ इंच । लेखन काल - ४ । पूर्ण । न० ४८७ । वेय्टन न०४ ।

विशेष-- सूत्रों पर संचित्त हिन्दी ऋर्ध दिया हुआ हैं। श्रवर मोटे हैं। एक पत्र मे तीन पिक्तयाँ हैं।

७७. प्रति न० २०—पत्र सल्या-६३। साइज-१२×१- देश। लेखन काल-×। पूर्ण। वेप्टन

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है प्रति प्राचीन है।

७८. प्रति न २१ - पत्र सरूया - ६ । साइज - ११ ४५ इच । लेखन काल - सं० १६४६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्यो । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष — यह प्रति सस्कृत टीका सहित है जिसमें प्रभाचन्द्र कृत लिखा हुआ है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है। कहीं कहीं हिन्दी में भी टीका दी हुई है।

प्रश्रास्ति—सवत् १६४६ वर्षे शाके १५१४ कार्तिक सुदी १५ गुरुवासरे मालपुरा वास्तव्ये महाराजाधिराज श्री क्वर मार्घासिंह जी राच्ये प्रवर्तमाने श्री मूलसचे नयाझाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द कुन्दाचार्यान्वये महाराज श्री प्रमाचन्द्देव विरचिता । यह प्रम मीमराज वैद्य ने मनोहर छोका से पदने के लिये मील लिया था।

७६ तत्त्वार्थ सूत्र यृत्ति—पत्र सल्या-२८ । साइज-१०ई×४६ इच । माषा-सम्ऋत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन कार्ल-स० १५४७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

विशेष--टीका में मूल सूत्र दिये हुऐ नहीं है। टीका सिवस है।

प्रशस्ति—संवत् १४४७ वर्षे वैशाख सुदी ७ श्री मूलसंघे रलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये संहला चार्य रलकीति शिष्येण व० रत्नेन लिखापितं ।

ं ८० तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—योगदेव । पत्र सख्या-१११ । साइज-१०४४ ई इंच । माषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६३८ व्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण विष्टन न० ६८ ।

विशेष — मट्टारक प्रभाचन्द्र देव की श्राम्नाय के श्रजमेरा गोत्रवाले साह सातू व उनकी मार्थी सहागदे ने यह अन्य स॰ १६३८ में लिखवा कर षोडषकारण व्रतोधापन में मडलाचार्य चन्द्रकीर्ति को मेंट किया था।

प्तरः तत्त्वार्थसूत्र-पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२४५ इख्र । माषा-सरकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना-काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं∘६७ ।

विशोष--संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा दोनों माषाओं की टीकार्ये सरल हैं।

दर तत्त्वार्थसूत्र भाषा टोका—कनककीर्ति—पत्र सख्या-२०१ । साइज-६×५ है इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । जेखन काल-स० १⊏३६ । वेष्टन नं० ⊏३४ ।

विशेष—नेया सागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की भी । पत्र १७४ से २७१ तक वाद में लिखे हुऐ हैं श्रमवा दूसरी प्रति के हैं।

प्रारम्म-मोच मार्गास्य नेतार मेत्तार कम्ममूखता । हातार विश्व तत्त्वानां वदे तद्युण लब्धये ॥१॥ टीका-ग्रह उमास्वामी मुनीश्वर मूल प्रथ कारक । शी सर्वेह्न वीतराग वदे कहता श्री सर्वेह्न वीतराग ने नमस्कार करूं छू । किसा इक छै श्री वीतराग सवह देव, मोच (ख) मार्गास्य नेतार कहतां मोचमार्ग का प्रकासका करवा वाला छैं । श्रीक किसा इक छै सर्वेह्न देव कम्म मूखतां मेत्तार कहतां ह्यानावरणादिक श्राठ कर्म त्यह रूपि पवत त्यांह का मेदिवा वाला छ ।

श्रन्तिम — के इक जीव चारण रिधि किर सिध छै। के इक जीव चारण विना सिध छै। के इक जीव घोर तप किर सिध छै। के इक जीव श्रघोर तप किर सिध छै। के इक जीव उरध सिध छै। के इक मध्य सिध छै। के इक जीव श्रधो सिध छै। इह माति किर घणा ही मेदा सों सिध हुआ छै। सो सिधात सं समिक लीट्यों। इति तत्त्वार्याधि गये मोत्त शास्त्र दसमीयां पोसतक लिखत नेण सागर का चीमनराम दोसी सवाई उपुर में लिख्यों संवत १८४६ में पुरी कियो।

> परे प्रति नं० २—पन्न संख्या-१२२ । साइज ८×४ इच । लेखन काल- × । पूर्ण । वेन्टन न० ८२३ । विशेष—श्रुतसागरी टीका के प्रथम श्रध्याय की हिन्दी टीका हैं ।

प्रिः प्रति नं० ३---पत्रसंख्या--२१६। साइज-१०×७ इच । लेखन काल-स० १८४० । पूर्ण । वेम्टन नं० ७३४ ।

विशेष — चैन सागर ने सांमर में लिपि की भी । प्रारम्म के पत्र नहीं है यद्यपि संख्या १ से ही प्रारम्म है ।

मध् प्रति न ४— पत्र संख्या-११२ । साइज-१२×१ई इस । लेखन काल-सं० १७३= ट्येप्ठ सदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न ३ ७३ = ।

विशोप---दूसरे श्रध्याय से हैं । वेष्टन नं० ७४७ के समान है ।

न्द प्रति नं ० ४---पत्र सस्या-नः । साइज-११३/४४ ई इस । लेखन काल-४ । पूर्णे । वेष्टन नं ० ७४७ । वेष्टन न ० ६३४ के समान है ।

द७. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-१३१। साइब-दर्दे×४इत । लेखन काल-वेशाख सुदी ५ स० १७७६। पूर्ण । वेष्टन न० द२३।

निरोष--पापद्या में प्रन्थ की प्रतिलिपि की गई भी। लिखितं ऋषि जत्रीराजेशा। जिखापितं श्री संघेन नगर पापखदा मध्ये। दूसरे श्रध्याय से लेकर १० वें श्रध्याय तक की टीका है। यह टीका उतनी विस्तृत नहीं है जितनी प्रथम श्रध्याय की है।

दन. तत्त्वार्थसूत्र भाषा-जयवन्द्र छावडा । पत्र संख्या-४४० । साइज-१०४० इस । माषा-हिन्दी गध । विषय-सिद्धान्त । रचना काल- स॰१८६५ चैत सुदी ४ । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३२ ।

विशेष-महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपो भी मी।

मापा-हि दी गए। विषय-सिद्धान्त। रचना काल सं० १६१४ वैशाख सुदी १०। लेखन काल-स० १६३६ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वेषन नं० ७२१।

विशेष—सदामुख जी कृत तत्त्वार्य सूत्र की यह वृहद टीका है। टीका का नाम 'श्रर्थ प्रकाशिका' है। प्रन्य की रचना सं० १६१२ में प्रारम्भ की गई थी।

६०. तत्वार्थे सूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सख्या-१२३ । साइज-=×५ इत्र । माषा-हिन्दी गय । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-सं० १६१० फाल्ग्रण बुदी १० । लेखन काल-स० १६१६ श्राषाद सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५२ ।

विशेष-सदासुखजी द्वारा रिवत तत्त्वार्थ सूत्र की लघु भाषा वृत्ति है।

- ६१. प्रति न २-पत्र संख्या-१२७ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७५३।
- हर तत्वार्थे सूत्र टोका भाषा--पत्र संख्या-१ से १००। साइज-१५४७ इच । माषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त । रचना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण । वेष्टन न० ७००।

विशेष-- १० • से आगेकेपत्र नहीं है । प्रारम्भिक पद्य निम्न पकार हैं-

श्रीवृषमादि जिनेश वर, अत नाम श्रुम वीर । मनवचकायविशुद्ध करि, वदौं परम शरीर ॥ १ ॥

z.Y

फरम घराघर भेदि जिन, मरम चराचर पाय । धरम बरावर कर नमू, सग्रह परापर पाय ॥ २ ॥

- ६३ तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र सख्या—३१। साइज-१०३४७६ इख । माषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । स्वना काल-४। लेखन काल-४। अपूर्ण । वेष्टन न० ७०३।
- ६४. तत्त्वार्थेपूत्र भाषा पत्र सख्या-७७ से १०० । साइज-६×४६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ०३४ ।
- ८४. तत्त्वार्थबोध भाषा—बुधजन। पत्र संख्या-७७। साइज-१०ई४७ इञ्च। माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-१८७६ कार्तिक सुदी ४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न०७३३।

विशेष - २०२६ पद्य हैं । प्रांत नवीन एव शुद्ध है रचना का श्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

श्रन्तिमपाठ — सुवस वसे जयपुर तहाँ, नृप जयसिंह महाराज ।

बुधजन कीनी ग्रंथ तह निज परिहत के काज ॥ २०२० ॥

संवत् ठारासे विषे श्रधिक ग्रुपयासी वेस ।

कातिक सुदि सिस पचमी पूरन ग्रन्थ श्रसेस ॥ २०२० ॥

मंगल श्री श्ररहत सिद्ध मंगल दायक सदा ।

मगल साध महत, मंगल जिनवर धर्मवर ॥ २०२६ ॥

६६. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचनद्र । पत्र संख्या-१२०। साइज-८४५ दृश्य । माषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४। लेखन काल-स० १७५७। पूर्ण । वेष्टन न० ३०३।

विशेष—तत्त्वार्थ सूत्र की यह टीका मुनि श्री धर्मचन्द्र के शिष्य प्रमाचन्द्र द्वारा विरचित है । मनसूदावाद में महारक श्री दीपकीर्ति के प्रशिष्य एवं लालसागर के शिष्य रामजी ने प्रतिलिपि की थी । १०६ पत्र के श्रागे नेमिराञ्चल गृहमासा तथा राज्जल पचीसी, शारदा स्तोत्र (म० शुमचन्द्र) सरस्वती स्तोत्र मत्र सहित स्तोत्र श्रीर दिया हुश्रा है ।

- ६७. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र संख्या-३ से ११७ । साइज-११४७ई इस । भाषा-सरकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल∙४ । स्रपूर्ण । वेष्टन नं० ६६१ ।
- ६८. प्रति न० २---पत्र संख्या- १ से ५३। साइज-१५×६ इंड । लेखन काल-×। श्रपूर्ण वेष्टर्न नं ० १४७।
- हर. तत्त्वार्थरलोकवार्तिकालकार—आचार्य विद्यानिन्द् । पत्र संख्या-४३२ । साइज-१२४६ इच्च । माषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । स्वना काल-४ । लेखन काल-सं० १७६४ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेण्टन नं० १६४ ।

विशेष-अन्य श्लोक संख्या २२००० प्रमाण है।

- १००. तत्त्वार्थसार-पत्र संख्या-४ । साइज-११×५ इझ । माषा-स्स्कृत । विषय-सिद्धात । रचना काल-× । लेखन काल । पूर्ण । वेप्टन नं० ५१३ ।
- १०१. त्रिभंगी सम्रह-पत्र सख्या-४७ । साइज-२०४५ है इ.च.। माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४। लेखन काल-स० १७२२ श्रावण द्वदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० १२ ।

विशेष—साह नरहर दास के पुत्र साह गंगाराम ने यह प्रति लिखवायी भी।

प्रय में निम्न त्रिमगियों का समह है-

नध त्रिमगी, उदयउदीरणा त्रिमगी (नेमिचन्द्र), सत्ता त्रिमगी, मावित्रमगी तथा विशेष सत्ता त्रिमगी।

१०२ निभंगीसार--श्रुतसुनि । पत्र सख्या-३६ । साइज-११४६ इस । साधा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं ० २०३ ।

- १०३ द्रव्यसग्र६—न्त्रा०नेमिचन्द्र। पर्व सल्या-११। साहज-१०३×७ इच । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-×। तेखन काल-स० १०३३ श्रावण सुदी १४। पूर्ण । वेष्टन न० ७४।

विशेष-हिन्दी धर्य सहित है।

१०४. प्रति नं०२—पत्र सरूपा-१३ । साइज-१२×१२ इश्च । लेखन काल-स० ।१७३६ कार्तिक सुदो ⊏ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६ ।

विशेष-सस्कृत तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

१०४. प्रति न० ३—पत्र सल्या-३६ । साइज-१२४६इझ । लेखन काल-स०१७८६ सावन सुदी ११। पूर्ण । बेप्टन नं० ७७ ।

विशेष-पर्वतथर्मार्गीकृत वालबोधिनी टीका सहित है। लालसोट में मट्ट रतनजी ने प्रतिलिपि की थी।

१०६. प्रति नं ४--पत्र सस्या- ३ । साइज- क्ट्रें ४६ ई इख । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन न० ७८ ।

१०७. प्रति न० ४--पत्र संख्या-३ । साइज-१.१×४ ईह्छ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६ ।

विशेष---पद्मनिद के शिष्य ब्रह्मरूप ने प्रतिलिपि की ।

१०८ प्रति न० ६ — पत्र सख्या-६ । साइज-१०४ रैं इच । लेखन काल-४ । पूर्ण । बेष्टन न० ८० ।

विशेष--इसी प्रकार की ७ प्रतिया श्रीर हैं । वेष्टन नं० = १ से = ७ तक है.।

Ì

۲

१०६. प्रति नं० १४--पत्र सख्या-६ । साइज-१२×५२ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन

विशेष--गायात्रों पर हिन्दी अये दिया हुआ है।

११०. प्रति न०१४---पत्र सख्या-११। साइज-१०६ ४४ ह्व इच। लेखन काल-स० १८२४ व्येष्ठ सुदी १२। पूर्ण । वेप्टन नं० ८६।

विशेष-माधोपुर में प० नगराज ने प्रतिलिपि की ।

१११. प्रति न० १६—पत्र सख्या—६ । साइज-११×५ इन्च । लेखन काल— × । पूर्ण वेप्टन न० ६० । विशेष—लेखक प्रशस्ति—शरिद पशुपतीक्षणाप्त गवस्वन्जांकिते पुण्य समय मासे श्रान्त नेतरपत्ते तिभी त्रयोदश्यां भीम वासरे सवाईजयनगरे कामपालगजे वृषमचैत्यालयपितात्तम विद्वद्वरिजच्छ्री रामकृष्णजित्कतिच्छ्रिष्य विद्वद्वरेण सकलग्रुण निधान जिच्छ्री नगराजे जिचन्छ्रिष्य वाल कृष्णेन स्वपटनार्थं लिखित ।

वित संस्कृत टीका सहित है।

- ११२. प्रति न० १७ -- पत्र सत्या-६२ । साहज-१०२ ×१ इच । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ६१ विशेष- सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुऐ हैं।
- ११३ प्रति न० १८—पत्र सख्या-७ । साहज-दर्भ×१ है हच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।
- ११४ प्रति न०१६—पत्र सरव्या-७। साइज्ञ-१२४५ हुँ इच। लेखन काल-सं• १८२०। पूर्ण।

विशेष--जीवराज छाचडा ने अपने पटने को शतिलिपि कराई।

- ११४. प्रति नं० २०---पत्र सख्या-७ । साइज--१२४६ हच । लेखन काल-स० १६०६ । पूर्ण
- ११६. द्रव्यसंप्रह घृत्ति—प्रहादेव । पत्र सख्या-१७० । साइज-१०४६ इच । माषा-सस्कृत विषय-सिद्धान्त । रचना फाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न• ७४६ ।
- ११७. द्रव्यसंग्रह भाषा पर्वतधर्मार्थी । पत्र सख्या-२६ से ५६ । साइज-१०४४ ई ६ च । मापा-ग्रमाती । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १७६८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेध्यन नं० ७४२ ।

विशेष-- षसुत्रा में प्रति लिखी गई मी। धमरपाल ने लिखवायी मी।

११८. प्रति नं २ २ -- पत्र संख्या - ३४। साइज - ११६ ४४ इंच। लेखन काल - स० १७४३ पीप युदी १०। पूर्ण । बेच्टन न० ७४३।

विशेष—समामपुर नगर में प्रतिलिपि हुई।

११६ प्रति न० २--पत्र संख्या-२१। साइज-१२४६ इ.च । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन नं• ७४४।

विशेष-प्रतियाँ वर्षा में भीगी हुई हैं।

१२०. प्रति न० ४—पत्र सरव्या-४० । साइज-१२४६ इ.च । लेखन काल-४ । पूर्ण । बेप्टन न० ७४६ ।

१२१ ट्राट्यसंग्रह भाषा — जयचन्द्रजी । पत्र सख्या-३० । साइज-१०ई×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । रचना काल-४ लेखन काल-स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न• ७२६ ।

१२२. प्रति न २ — पत्र सख्या – ४६ । साइज – १० ई४७ इञ्च । लेखन काल – स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३० ।

१२३. प्रति न० ३—पत्र संख्या-४० । साइज-१०१४६ इच । लेखन काल-स० १८६८ मादन। सदी १४ । पूर्य । वेष्टन न० ७४१ ।

विशेष—महात्मा देवकर्ष ने लवाय में प्रतिलिपि की । हंसराज ने प्रतिलिपि कराकर वधीचन्द के मन्दिर में ह्यापित की । पहले तथा श्रन्तिम पत्र के चारों श्रोर लाइनें स्वर्ण को रगीन स्याही में है, अन्य पत्रों के चारों श्रोर वेलें तथा व्रैं श्रे अच्छे हैं । प्रति दर्शनीय हैं ।

१२४ द्रव्यसंग्रह भाषा--वंशीधर । पर्त्र सख्या-३० । साइज-१०×६ है इन्न । माषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५७ ।

विशेष-प्रारम-जीवमजीवं दव्व इत्यादि गाया की निम्न हिन्दी टीका दी हुई है।

टीका—ग्रह कहिये में छ हो सिद्धातचकविं थी नेमिचद नामा श्राचार्य सो तं कहिये थादिनाम महाराज है ताहि सिरसा कहिये मस्तक करि सव्वदा कहिये सर्वकाल विषे बंदे कहिये नमस्कार करू हैं।

अतिम--

टीका—भो प्रिणिणाहा कहिये हैं मुन्यों के नाथ ही जूय कहिये तुम छ हो ते इण दव्वं सगहे कहिये इह द्रव्यसंप्रह प्रनथ है ताहि सोधयतु कहिये सौध्यो है मुनिनाभ हो तुम कैसाक हो .. . । १२४. द्रव्यसंग्रह भाषा-पत्र संख्या-८६ । साहज-६×६ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल- × । पूर्ण । वेष्टन नं० ८४१ ।

विशेष-पहिले द्रव्य संमह की गामार्थे दी हुई हैं श्रीर उसके पश्चात् गाया के ऋयेक पद का श्रर्थ दिया हुआ है ।

१२६. द्रव्य का व्योरा—पत्र संख्या-१८ । साइज-४×६२ हमा भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धांत । रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण । वेष्टन न० १०००।

१२७ पंचास्तिकाय—आ० कुन्द्कुन्द् । पत्र सख्या-३३ । साइज-१०६४६ इष । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना वाल-× । तीखन काल-सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

विशेष-मूल मात्र है।

१२८. पचास्तिकाय टीका--श्रमृतचन्द्राचार्य। पत्र सख्या-४३। साइन-१२×५ई इन्प । माषा-संस्कृत । विषय-िद्धान्त । रचना काल-४। लेखन काल-स० १८७२ फाल्ग्रुण बुदी ७। पूर्ण । वेष्टन न० ११४।

१२६ प्रति न० २—पत्र सख्या—=० । साइज-१२४४ हे इख । लेखन काल-स० १=२४ श्राषाढ बुदी ७ । पृथा । वेष्टन नं० ११४ ।

विशेष--सवलसिंह की पुत्री बाई रूपा ने अयपुर में प्रतिलिपि क्राई थी।

१३०. पचास्तिकाय प्रदीप-प्रभाचन्द्र । पत्र सख्या- २२ । साहज-१३×६ हच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ३८६ ।

विशेष--धा० कुन्दकुन्द कत पञ्चास्तिकाय की टीका है। अन्तिम पाठ इस प्रकार है-

इति प्रभाचन्द्र विरचिते पचास्तिक प्रदीपे मूलपदार्थ प्ररूपणाधिकार समाप्त: ॥

१३१. पचास्तिकाय भाषा—पं० हेमराज । पत्र सख्या-१०४ । साइज-११×५ रे इश्र । माषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७२१ श्राषाढ बुदी ⊏ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष—श्रामेर में शाह रिवमदास ने प्रतिलिपि कराई थी। प्रति प्राचीन है। हेमराज ने पञ्चास्तिकाय का हिन्दी गय में श्रर्थ लिखकर जैन सिद्धान्त के श्रपूर्व प्रन्य का पठन पाठन का श्रस्यिक प्रचार किया था। हेमराज ने रूपचन्द्र के प्रसार से प्र थ रचना की थी।

१३२. पंचास्तिकाय भाषा—बुधजन। पत्र सख्या-६२। साइज-११×४ इत्र। मापा-हिन्दी (पध)। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-स० १८६२। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३७५।

बिरोष—सघी श्रमरचन्द दीवान की प्रेरणा से अश्य रचना की गयी थी । प्रन्य में ४८२ पर्ध हैं । रचना का श्रादि श्रन्त निम्न प्रकार है—

मगलाचरण-

वद् जिन जित कम श्राति इन्ट, वाक्य विशद त्रिभुवन हित मिन्ट । अतर हित धारक ग्रन वृन्द, ताके पद बदत सत इद ॥

श्रन्तिम पाठ---

पराकरत कुन्दकुन्द बखानी, ताका रहिस अमृतच क जानि।

टोका रची सहस कत नानी, हेमराज नचिनका आनी॥ ५७०॥

वरें सम्यक्त मिध्यात हरें,' मन सागर लील ते तरें।

महिमा मुख ते कही न जाय, बुधजन नदे मन नच काय॥ ५००॥

सागही अमर चन्द दीवान, मोकू कही दयावर आन।

मुनालाल फुनि नेमिच द सहमिकरत ग्यायक ग्रन वृन्द॥

राव्द अर्थ धन यो में लह्यो, मात्रा करन तने उमगह्यो॥ ५००॥

मिक्त प्रेरित रचना आनी, लिखो पढो बाचो मिन हानी।

जी कहु यामें असुध निहारों, मूलप्र थ लिख ताहि सुधारो॥

रामसिंह रूप जयपुर बसे सुदि आसोज ग्रक दिन दशें।

उगयी सें में घटि है आठ ता दिनस में रचयो पाठ॥ ५००॥

१३३. भाव संप्रह—देवसेन । पत्र सल्या-१ से ३४ । साइज-११×५ इव । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६२१ फाल्ग्रण चुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

विशेष - श्रम श्री सवत् १६२१ वर्षे फाल्गुण चुदी ७ भीमवासरे । श्रम श्री काष्टा सं वे माधुरा वये पुष्परग जिनाये, अमोत्कान्वये गोइल गोत्रे पचमीवत उद्धरण वीर साह ज्ञगरु तस्य भार्या देव्हाही तस्य पुत्र सा० युजोखा तस्य मार्या वाव्हाही फतेहाबाद वास्तव्य । तयो पुत्रा षट् प्रथम पुत्र ""।

१३४ प्रति न० २---पत्र सरुया-६१ । साइज-११× ५ इश्र । लेखन काल-स० १६०१ मांगसिर छुदी १० । पूर्ण । बेष्टन न० ११२ ।

> विशोष—शिरपुर निवासी पाटनी गीत्र वाले साह मलू ने यह शास्त्र लिखा था। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संबत् १६०६ मार्गसरी १० शुक्ले रेवती नक्षत्रे श्री मूखसघे नयाझाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द कुन्दावार्यान्वये महारक श्री पद्मनिद देवा: तत्पष्टे म० श्री शुमचन्द्र देवा तत्पष्टे म० श्री किखचनद्र देवा तत्पष्टे म०

श्री प्रमाचन्द्रदेत्रा तिश्विष्य वसुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्लाये खडेलवालान्वये शेरपुर वास्तव्ये पाटणी गोत्रे साह श्रवणा तदमार्या तेजी तयो: पुत्री द्वी प्र० सघी चापा द्वितीय सघी दूव्हा । स्घी माया तदमार्या श्र गारटे तयो पुत्राश्च चत्वार ।

प्रयम साह ऊथा द्वितीय माह दीना तृतीय साह नेमा चतुर्थ साह मलू । साह ऊथा भार्या उथिसि तित् पुत्र साह पर्वत तदमार्या पोसिरी । साह दीपा मार्या देवलदे । साह नेमा भार्या लाडमदे तयो पुत्र चि॰ लाला । साह मल्लू मार्या महमादे । साह दूलह मार्या वुधी तयो पुत्रास्त्रय प्रयम सघी नान् द्वितीय सघी ठक्करसी तृतीय सघी गुरायदत्त । सघी नान् मार्या नायकदे तयो पुत्र चि॰ कोजू । सघी ठक्करदे रार्या पाटमदे तयो पुत्रों द्वी प्रयम साह ईसर तद मार्या श्रहकारहे, द्वि॰ सेवा । साह गुरावत्त मार्या गारवदे । तयो पुत्रास्त्रय प्रथम चि० गेगराज द्वि॰ चि॰ सुमतिदास तृ॰ चि॰ धर्मदाम पुतेषा मध्ये साह मलू इट शास्त्र लिखा य पचमीवतोद्योतनार्थं श्राचार्य श्री लिलतकीर्ति श्राचार्य थनक राय दत्तं ।

१३४ भावसम्रह--श्रुतमुनि । पत्र रुख्या-१ से १४ । साइब-११९४५ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-पिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-म० १५१० । पूर्य । वेष्टन न० ११० ।

वशेप-कहीं २ सस्कृत में टीका भी है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

मंबत् १५१० वर्षे श्राषाढ सुदि ६ शुक्ले गुरुजरदेशे कल्पवल्ली शुमस्थाने श्री श्रादिनाथचैत्यालये श्रीमत् कान्ठासघे नन्दीतटगच्छे विद्यागर्थे महारक श्रीरामसेनान्वये महारक श्री यश कीर्ति तत्पहे महारक श्री उदयसेन, श्राचार्य श्री जिनमेन पठनार्थ ।

१३६. त्तिच्धसार—न्त्रा० नेिभचन्द्र । पत्र सख्या-६६ । साइज-१०१४४३ डम्र । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । तेखन काल-स० १४५१ स्रापाट सुदी १४ । पूर्णे । वेप्टन न० १०४ ।

विशोष--- ४ स्कृत टीका सहित है। लेखक--- प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १५५१ वर्षे श्रापाद सुदी १४ मगलवासरे च्येष्टानचत्रे श्री मेदपाटे श्रीपुरनगरे श्री ब्रह्मचालुकवशे श्रीराजाधिराज रायश्री सूर्यमेनराज्यप्रवर्तमाने श्री म्लमचे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे, श्री नंदिसचे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्यनदिदेवा तत्पट्टे श्री शुमचन्द देवा पत्पट्टे श्री जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि रक्षकीर्ति तत् शिष्य मुनि लक्ष्मीचन्द्र खडेलवालन्वये श्री साह गोत्रे साह काल्हा भार्या रानादे तत् पुत्र साह वीम्मा, साह माधव, साह लाला, साह ह गा । वीम्मा मार्या विजयश्री द्वितीय मार्या पूना । विजय श्री मार्या पुत्र जिल्दास मार्या जीलादे, तन् पुत्र साह गगा, साह सागा माह सहमा, साह चीहा । सहसा पुत्र पासा साम्रमिट लिव्यसारिमधान निज्ञहानावरणी कर्म जयार्थ मुनि लक्ष्मीचन्द्राय पटनार्थं लिखापित । लिखित गोगा बालण गोड हातीय ।

जयत्यन्वहमहित सिद्धाः स्ट्यु पदेशका ।
माधनो मन्यलोकस्य शरणोत्तम मंगल ॥
श्री नागार्यतन्ज्ञातशातिनायोपरोघत ।
इतिर्भन्यप्रत्रोधाय लिधसारस्य कथ्यने ॥

१३७. लिंधसार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सख्या-६७ । साइज-१४×६ दे इच । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० =७७ ।

विशेष---इस प्रति की स॰ १५=३ वाली प्रति से प्रतिलिपी की गई थी।

१३८. प्रति न० २--पत्र सर्या-२४ । साइज-१४×६ ई इख । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ८७८

१३६. लव्धिसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र सल्या-१ से ४५ । साइज-१२६ ४७६ इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ६६० ।

१४०. पट् द्रव्य वर्णन-पत्र सरूया-११ । साइज-१२×६ है इस । साषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । त्रपूर्ण । वेष्टन न० ६२४ ।

१४१. सर्वार्थसिद्धि-पूज्यपाद । पत्र संख्या-१२२' । साइज-११ई×६ई इच । मापा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२१ चैत सुदी ३ । पूर्ण वेन्टन न० ४० ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति पूर्ण नहीं है । केवल सवत् मात्र है । प्रति शुद्ध है ।

१४२. सिद्धान्तसारदीपक — भ० सकत्तकीर्ति । पत्र संख्या-५ से २१ । साइज १२×५५ इच । माषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० १०७ ।

विशेष-- तृतीय श्रधिकार तक है।

१४३ प्रति न० २---पन्न संख्या-- १२ से ५०। साहज-- १०३×६३ इम । लेखन काल- × । श्रपूर्ण । बेप्टन न० १०८।

१४४. प्रति नं० २---पत्र सख्या-- २ में २७४ । साइज-१०४४ ई इच । । लेखन काल-- ४। अपूर्ण । वेष्टन नं० २०० ।

१४४. सिद्धान्तसारदीपक भाषा—नथमता विलासा। पत्र सख्या–२४५ । साइज-१०ई४७ईइछ । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १८२४ । लैखन काल-स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३९४ ।



धर्म एवं आचार-शास्त्र

१४६. म्रानुभवप्रकाश — दीपचन्द । पत्र सख्या-२२ । साइज-१२ई×= इच । भाषा-हि टी गध । विषय-धर्म । रचना काल-स० १७=१ पीष बुटी ४ । लेखन काल-× । पूर्य । वेष्टन न० =४४ ।

१४७ अरहन्त स्वरूष वर्णन-पत्र सल्या-३। साइज-=×५ इख्न । सापा-हिन्दी (गय)। विषय-धर्म। रचना फाल-×। लेखन काल-×। प्रपूर्ण। वेप्टन नं० ११४४।

१४८ स्त्राचारसार—चीरनिद् । पत्र सख्या—८२ । साइज-११४५ ई इय । साषा—संस्कृत । विषय-श्राचार साहत्र । रचना फाल-४ । लेखन काल-स० १८१६ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १७७ ।

विशेष- मित उत्तम है, क्लिप्ट शान्दों के संस्कृत में अर्थ सी विये हुये हैं।

१४६. स्त्राचारसारवृत्ति—वसुनिष् । पन सख्या-११०। साइज-१२४५ हव । सापा-तस्कृत । विषय-म्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । तेखन काल-सं० १८२४ । पूर्ण । वेप्टन न० २७ ।

विशेष--मूलकर्षा मा॰ वट्टनेर स्वामी हैं। मृल मंश प्राकृत मापा में है।

१५०. खपदेशरत्नमाला-सकलभूषण । पत्र सख्या-६० । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-स० १६२७ श्रावण सुदी ४ । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन न० १४६ ।

विशेष--रचना का दूसरा नाम पटकर्मोपदेशारतमाला भी है। इस प्रंथ की ४ प्रतिया श्रोर हैं वे सभी पूर्ण हैं।

१४१. उपदेशसिद्धान्तरह्ममाला—भडारो नेमिचन्द्र। पन संख्या-११। साइज-१०१×४१ हम्र । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८९१ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १५७ ।

विशेष-महात्मा सीताराम ने नोनदराम के पठनार्थ लिपि क्राई थी।

१४२, उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा। पत्र सर्गा-१०। साइज-११३४४ई ६छ। साषा-ाहन्टी (पष)। प्रिपप-धर्म। रचना फाल-स० २०७२ चैत्र सुदी १४। सेवन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न० ३७६।

विरोप---भाषानार के मतानुसार उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला की रचना सर्व प्रथम प्राष्ट्रत भाषा में धर्मदास गणि में की थी। उसी प्रथ का सिएप्त सार खैनर भड़ारी नेमिचन्द ने प्रय रचना की थी। सापाकार में महारी नेमिचन्द नी रचना की ही हिन्दी की है।

मारम-शुद्ध देव श्ररहत ग्रस्, धर्म पंच नवजार । नमें निरतर नास हिय, धायरती नर मार ॥१॥ पटइन ग्रेग्यहन दानन देहि, तप श्राचार नहु नांहि करेहि। जो हिय एक देव प्ररिहत, ताप त्रय न श्राताप करत ॥२॥

श्रन्तिम पाठ---

इम महारी नेमिचद, रची कितीयक गाह ।
समगरकत जे मिव पठत, जीनतु सिव सुख लाह ॥६१॥
यह उपदेश रतन माला सुम, प्र श रच्यो भगदासगणी,
ता मिह केतक गाह श्रनोपम नेमिचन्द महार मणी ।
जिनवर धरम भगवन काजह साप रच्यो धनुबुद्धि तणी ।
जाके पढत सुनत सबा धारत श्रातम हुइ वर सिव रमणी ॥६२॥
सवत् सतरह से सतिर श्रिवक दोय पय सेत ।
चैत मास चातुरदसी, पूरन मयो सु एत ॥१६३॥

१४३ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला-भागचन्द्र। पत्र सख्या-६०। साइज-१०४४ इञ्च। साषा-हिन्दी। विषय-धम। रचना काल-स० १९१२ आषाढ बुदी २। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ४०७।

१४४. उपासकदशा सूत्र विवरण्--- श्रभयदेव सूरि । पत्र सख्या-१= । साइज-१०६४४६ इज्ञ । भाषा-सस्कृत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—उपासक दशा सूत्र श्वे॰ सम्प्रदाय का सातवां अग है जो दश शध्यायों में विभक्त है। सस्स्हत में यह

श्रीवद्ध मानमानम्य व्याख्या काचिद् विधीयते उपासकदशादीना प्रायो श्रथातरेकिता ॥१॥

१४४ उपासकाचार दोहा — लद्मीचन्द्र । पत्र सख्या-२७ । साइज-१०६४४ दे देख । सापा-अपभ श (प्राचीन हिन्दी) । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८२१ वेशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १७८ ।

विशेष-दोहों की सख्या २२४ है।

१५६ कर्मचरित्र वाईसी—रामचन्द्र । पत्र सख्या-५ । साहज-६×६ई इन्न । मापा-हि दी । विषय-धर्म । रचना क्वाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५७ ।

विशेष--- ३ पत्र से श्रागे दौलतरामजी के पद हैं।

१४७ कियाकोश भाषा — किशनसिंह । पत्र संख्या-११४ । साइज-१०२×५६ इख । भाषा-हिन्दी

वर्म एवं आचार शास्त्र]

ख । विषय—ग्राचार शास्त्र । रचना काल—स० १७८४ मादत्रा सुदी १५ । लेखन काल—म० १८४६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ष । वेष्टन नं० ७७० ।

विशेष - भएडार में प्रन्य की ११ प्रतिया श्रीर हैं जो सभी पूर्ण हैं।

१४८ गुरातीसी भावना — पत्र सस्या-२ । साइज-११ई ४६ इख । भाषा—प्राञ्चत । विषय-धर्म । (चना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष-हिन्दी गद्य में गायाओं के उपर अर्थ दिया हुआ है । गायाओं की संख्या २६ है ।

१४६. गुरोपदेश श्रावकाचार—डाल्राम। पत्र संख्या-१३३। साइज-१२ई×६६ इस्र। भाषा-हिन्दी (पद्य) । त्रिषय-त्राचार शास्त्र । रचना काल-४। लेखन काल-स० १=६६ । पूर्ण । त्रेष्टन न० ==•।

विशेष--पचेत्रर में प्रथ की प्रतिलिपि हुई भी।

१६०. चारित्रसार (भावनासार संग्रह) चामुख्हराय । पत्र सख्या-११० । साइज-१३४४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । त्रिषय-त्राचार शास्त्र । रचना काल-× । तेखन काल-× । पूर्ण । तेष्टन नं० १०४ ।

विशेष-प्रथम खड तक है तथा अतिम प्रशस्ति अपूर्ण दे।

र्रे १६१. चारित्रसार पिजका—पत्र सख्या-⊏। साइज-११×४२ ष्टे ष्टव । भाषा-सस्कृत । विषय-स्त्राचार शास्त्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ३०६।

विशेष-शृति प्राचीन है । चरित्रसार टिप्पण भी नाम दिया हुआ है । टिप्पण श्रुति सिच्दि है ।

प्रारम्मिक मगलाचारण निम्न प्रकार है-

नमीनतसुखझानद्यवीर्याय जिनेशिने ।

ससारवारापारास्मिन्निमञ्जञ्जीवतापिने ॥१॥

चारित्रसारे श्रुतसारं संग्रहे यन्मंदबुद्धे स्तमस्तावृत्त पद ।

पत्रव्यक्तये व्यक्तपदृश्योगत शारम्यते विद्वद्यीष्टपंजिका ॥२॥

१६२. च।रित्रसार भाषा — मन्नालाल । पत्र सख्या-२३४ । साइज-१०५४ ईच ।- भाषा-हिन्दी । दिवय-ध्याचार शास्त्र । रचना काल-स० १८७१ । लेखन काल-स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४४ ।

श्रादि भाग (पर)- श्री जिनेन्ट चन्द्रा । परम मंगलमादिशतु तराम् ।

दोहा ---परम धरम रम नेमि सम, नेमिचन्द्र जिनराय । मगल कर ऋष हर विमल, नमी सुमन-वच-काय ॥१॥ भव श्रयाह सायर परे, जगत जेतु दुख पात ।
करि गहि काढत तिनहि यह, जैन धर्म विख्यात ॥२॥
करत परम पद त्रिदश सुख, बाढत ग्रण विस्तार।
नमों ताहि चित हरष धरि, कहणामृत रस धार ॥३॥

मध्यभाग (गद्य).—(पत्र स० ६४) मदिरा को पीने तथा खीर हू मादिक वस्तु भन्नण करें तब प्रमाद के बबने ते विमेक का नाश होय । ताके नाश होते हित श्रहित का विचार होता नाहीं । ऐसे धर्म कार्य तथा कर्म इन दोउन हुते अष्ट होहि तातें इस मद्यवत तथा मादिक वस्तु का सर्वथा प्रकार त्याग ही करना जोग्य है । ऐसा जानना ।

यथोत्पत्ति वर्णन-प्रशस्ति ---

सर्वीकाश अनन्त प्रमान । ताके बीच ठीक पहचान ॥ लोकाकाश ध्रसंख्य प्रदेश. ऊरिघ मध्य घ्रधो भूमेश ॥१॥ मध्यलोक मे जबू दीप । सो है सब द्वीपनि श्रवनीप ॥ ता मधि मेरु सुदर्शन जान । मानू मूमि दड है मान ॥२॥ ता दिवण दिश भरत सुनाम । चेत्र प्रकट सो है सुरधाम ॥ ताके मध्य द्व दाहड देश । बहु शोमा जुत लसे अशेष ॥३॥ तहां सवाई जयपुर नाम | नगर लसत रचना श्रमिराम ॥ वहु जिन मदिर सहित मनोग्य । मा नू सुर गण वसने जोग्य ॥४॥ जगत सिंह राजा तसु जान । कवत श्रारंगन करे प्रनाम ॥ तेजवत जसवत विशाल । रीभत ग्रन गन करत निहाल ॥५॥ जहां वसे बहु जैनी लोग । सेवत धर्म वमे दुख रोग ॥ तिन मधि सांगा वंस विशाल । जोगिदास सत मनालाल ॥६॥ बालपने ते सगति पाय । विद्याम्यास कियो मन लाय ॥ जैन म य देखे कुछ सार । जयचंद नंदलाल उपकार ॥०॥ हस्तिनागपुर तीर्थ महान । तहि वदन श्रायी सुख धाम ॥ इन्द्रप्रस्य पुर शीमा होइ । देखें मयी श्रधिक मन मोह ॥=॥ तहां राज अंगरेज करत । हुकम क्पनी छत्र फिरंत ॥ वादस्याह श्रकवर सिर सेत । सेवक जननि द्रव्य बहु देत ॥ ॥ हरसुख राय खजाना बंत । तिनके सोहै घरम घरत ॥ श्रगरवाल गोत्री ग्रण नाम । सुगनचन्द्र तसु पुत्र सुजान ॥१०॥ मंदिर तिनि नै रच्यो महंत । जिनवर तनो धृजा लहकंत ॥

बहु विधि रचना रची तस माहि । शोभा वरनत पार न पाहि ॥११॥
ताक दर्शन कर सख राशि । प्रापत मई रंक निधि मासि ॥
कारन एक मयो तिहि ठाम । रहने को भाषू तस नाम ॥१२॥
सत्री जगतसिंह को नाम । अमरचन्द्र नामा ग्रणधाम ॥

भत्री जगतसिंह की नाम । त्रमस्चन्द्र नामा ग्रेग्यधाम ॥ रहे बहुत सज्जन सुखदाय । धर्म राग शोमित प्रधिकाय ॥१३॥

मोतेँ र्थाधक श्रीत मन धरेँ । तिनि श्रटकायो में हित खरेँ ॥ ता कारण विस्ता तिहि पाय । सुगनचंद्र के कहैं समाय ॥१४॥

चारित्रसार प्रथ की भाष । वचन रूप यह करी सुसाख ॥ ठाकुरदास श्रीर इन्दराज । इनि भाइन के चुद्धि समाज ॥१५॥

मदबुद्धितें श्रर्थ विशेष । तहि प्रतिमास्यो होय श्रशेष ॥ सुधी ताहि नीकें ठानियो । पिछपात मत ना मानियो ॥१६॥

श्रनेकात यह जैन सिघंत । नय समुद्र वर किह विलसंत ॥ गुरुवच पोत पाय मिव जीव । लही पार सुख करत सदीव ॥१७॥

जयवंती यह होउ दिनेश । चन्द नखत उडु बजावत शेष ॥

पदो पदावो मच्य संसार । बदो धमें जिनवर सुखकार ॥१८॥

सवत एक सात श्रठ एक । माघ मास सित पंचिम नेक ॥

मंगल दिन यह पूरण करी । नांदी विरधी ग्रण गण भरी ॥१६॥

दोहा:--- प्रम चिंतक जु लेखका दयाचंद यह जानि । लिख्यो प्रंथ तिनि ने एहे बाचो पढो सहसानि ॥

विशेष-म य की एक प्रति श्रीर है लेकिन श्रप्रा है।

- १६३. चिद्विलास-दीपचन्द-पत्र सल्या-४०। साइज-१२१४५ इख । भाषा-हिदी । विषय-धर्म । रचना काल- सं• १७७६ फाल्गुण बुदी ४। लेखन काल-सं० १७८४ वैशाख बुदी १०। पूर्ण । वेष्टन न० ७३६।
- १६४. चौरासी बोल—हेमराज । पत्र सख्या-१४ । साइज-११६ ४४ दे इख । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ⊏७१।
- १६४. चौवीस दंडक-पत्र सल्या-२८। साइज-७×४५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म। रचना काल स० १८५४ श्रावण सुदी ६। लेखन काल-×। पूर्ण वेष्टन नं० १४७।

विशेष-- १४ वें पत्र के आगे बारह भावना तथा बाईस परीयह का वर्णन है। दडक में ११८ पद्य हैं।

- १६६. चौवीस दंढक-दौलतराम । पत्र सख्या-१ । साइज-७×२१ हे इच । मापा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।
- १६७. जिनगुरा पच्चीसी-पत्र सख्या-२२ । साइज-१८६ इच । सापा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० =०१ ।
- १६=. जीवों की संख्या वर्ण न -- पत्र सख्या-= । साइज-७×७ इख्र । माथा-हिन्दी । विषय-धम । स्वना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ११३६ ।
- १६६. ज्ञान चिन्तामिशा—मनोहरदास । पत्र संख्या-१० | साइज-१०३×४३ इस । भाषा-हिदी । विषय-धर्म । रचना काल-स०१७२८ माह सुदी ८ । लेखन काल-स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन न० ८०६ ।
- १७०. ज्ञान मार्गेगा पत्र संख्या-६ । साइज-१०६ ४७६ इस । माषा-हिन्दी । विषय-धम । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६४ ।

विशेष-मार्गणायों का वर्णन सम्रेप में दिया हुवा है।

- १७१ **ज्ञानानन्द आवकाचार—रायम**हा । पत्र सस्या-१११ । साइज-११×= इन्न । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल स० १६२६ । पूर्ण । बेप्टन न० ६४६ ।
- १७२. ढाल गरा-सूरत । पत्र संख्या-६ । साइज-१०३४४ इच । साबा-हिन्दी । विषय-द्याचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।
- १७३ त्रेपनिकयाविधि—प० दौलतराम । पत्र संख्या-१०४ । माइज-१९४६ इश्र । माषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—श्राचार शास्त्र । रचना काल-स० १७६४, मादना सुदी १२ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० ७७० ।

विशेष-कवि ने यह रचना उदयपुर में समाप्त की भी।

१७४. दशल्लासम् वर्णन-पत्र संख्या-२६। माइज-१२४= इस । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । स्वना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेटन नं० ३७६ ।

विशेष—दश धर्मों का हिन्दी गद्य में संसिप्त वणन है।

१७४. द्श्तिपश्चीसी—आरतराम । पत्रसंख्या-११ । साईज-११ दंश १ देन । रचना नाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० ४०३ ।

विशेष-फूटकर सबैया भी हैं। एक प्रति श्रीर है जिसका वेष्टन नं० ४०६ है।

१७६. देहट्यथाकथन-पत्र सल्या-१६ । साइज-१०४४ र इच । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ - । |वरीष-देह को किस २ प्रकार से व्यवा है इसका वर्णन किया हुन्छ। है

१७७. धर्म परीत्ता—आचार्य श्रमितगति । पत्र सख्या-== । साइज-११६४५ इच । माषा-संस्कृतिषय-धर्म । रचना काल-सं० १०७७ । लेखन काल-स० १७६२ पीष शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन न० १८७ ।

विशेष—वृन्दावती गढ (वृन्दावन) में प्रतिलिपि हुई घी । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । स० १७६२ मिति पौषमासे शुक्लपत्ते द्वितीया दिवसे बार शुक्रवार लिखितं गढ वृन्दावती मध्ये श्री राव बुधिसह राज्ये नेमिनायचैत्यालये मट्टारक श्री जगतकीर्ति श्राचार्य श्री शुमचन्द्रेन शिष्य नानकरामेन शुमं भवत् ।

प्र'थ की एक प्रति श्रीर है जो स० १७२६ में लिखित है। वेष्टन न० १८८ है।

१७८. धर्म परीत्ता—मनोहरदास सोनी । पत्र संख्या-१२४। साइज-१•१×१ देश । भाषा-हिन्दी । (पद्य) विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७६३ फाग्रण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

विशेष—हिन्डोन में प्रतिलिपि हुई थी। इसी प्रथ की पांच प्रतियां श्रीर हैं जो सभी पूर्ण हैं तथा उत्तम हैं।

१७६. धर्मविलास—द्यानतराय । पत्र सख्या-२१६ । साइज-१०ई×६ इच । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२३ ।

विशेष-धानतरायजी की रचनाओं का समह है।

१८० धर्मरसायन-पदानित्। पत्र सख्या-१६। साइज-११४५ इख। माषा-प्राकृत । विषय-धर्म। स्वना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं ० २०।

निशेष — म य की एक मित श्रीर है जो सवत् १८५४ में लिखी हुई है। वेप्टन न० २८ है।

१-२. धर्मसार चौपई--पं शिरोमिशादास। पत्र सल्या-३६। साइज-१०४४ इख । माषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-सं ० १७३२ बेंसाख सुदी ३। लेखन काल-१-३६ माघ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन न० ८६६।

विशेष—प्रति सुन्दर है। इसमें हिन्दी के ७६३ छन्द हैं। रचना काल निम्न पिक्तयों से जाना जा सकता है। सबत् १७३२ बैशाख मास उज्ज्वल पुनि दीस।

तृतीया श्रह्मय शनौ समेत मिवजन को मगल सुख देत।

१८२. धर्मपरोत्ता भाषा-वा. दुलीचन्द् । पत्र सख्या- २७२ । साहज-११४४ इच । साषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काख-सं ॰ १८६८ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन नं ॰ ७८६ ।

विशेष-शितम पत्र नहीं है। मूल कर्चा श्राचार्य श्रमित गति हैं।

१८३. धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—चंपाराम । यत्र संस्या-१६० । साइन-१२×६८ इत्व । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-ध्याचार । रचना काल-स० १८६८ मादवा सुदी ४ । लेखन काल-स० १८६० मादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेप्टन न० ७६० ।

विशेष—दीपचन्द के पीत्र तथा हीरालाल के पुत्र चम्पाराम ने सर्वाई माधोपुर में प्रन्य रचना की थी। विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

१८४. वर्मसंग्रह श्रावकाचार-प० मेघावी । पत्र सख्या-४६ । साइज-११×४ देश । मापा-संस्कृत विषय-श्राचार । रचना काल-स० १५४१ । लेखन काल-स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन न० १८६ ।

विशेष-सवाई जयपुर में मीपतिराम ने प्रतिलिप की भी ।

१८४. धर्मोपदेशश्रावकाचार—त्र० नेमिद्त्त । पत्र संख्या-२० । साइज-१०६४४ इ च । माषा-संस्कृत । विषय-श्राचार । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६३३ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वेट्टन नं० १८२ ।

विशेष-चपावती दुर्ग के धादिनाध चैत्यालय में महाराजा।धराज थी मगवतदासजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी भी ।

१८६. प्रति न०२--पत्र संख्या-१७। साइज-११×१ई ६व। लेखन काल-स० १६०६ माह सुदी ४। पूर्ण। वेच्टन नं० १८३।

विशेष—टोडा दुगे (टोडारायसिंह) में महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के शासनकाल में श्रीतिलिपि हुई भी ।

१८७. नरक दु ख वर्गीन-पत्र संस्था-३-१। साइज-१२४६ इन्च। माषा-हिन्दी। विषय-धमे। स्वना काल-४। लेखन काल-४। त्रपूर्ण। वेष्टन न०११=।

१८८. नरक दु स वर्णन-पत्र सल्या-३ । साइज-११६४४६ इंच । मापा-हि-टी । विषय-धर्म । रचना काल-х । लेखन काल-х'। अपूर्ण । वेष्टन न०१०४७ ।

१८. नरक दु.ख वर्णन-पत्र संस्था-६२। साइज-६×४ई इख । माषा-हिन्दी गया विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-पं० १=१६ पौष बुदी ३। पूर्ण । वेपन नं० १०१६।

विशेष—मापा दृ दारी है तथा उर्दू के शब्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। नरकों के वणन के आगे अन्य वर्णन जैसे स्वर्ग, मार्गणायें तथा काल अन्तर आदि का वर्णन भी दिया हुआ है।

१६०. पद्मनिन्द्रपंचिविशति—पद्मनिन्द् । पत्र सल्या-६२ । साइज-१०ईx१ इच । माषा प्राक्त-सस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण वेप्टन न० ३ ।

विशेष-शति शाचीन है।

१६१. प्रति न० २ — पत्र संख्या-६६ । साइज-१०ई×४ इच । लेखन काल-स० १५३२ फाग्रन सुदी १। पूर्ण । वेप्टन न० ११।

विशेष—स॰ १५३२ फाग्रण सुदी प्रतिपदा सीमवासरे उत्तरानक्तत्रे शुभनामजोगे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री महारक श्री प्रमाचन्द्रदेवा तत्पट्टे शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे महारक श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे महारक श्री सिंह कीर्ति देवा तत् शिष्य प्रमाचन्द्र पठनाय दत्तं पुण्यार्थं इच्लाकु वशे श्रश्वपतिना दत्ते शुभं भवतु ।

- १६२ पद्मनंदिपच्चीसी भाषा—मन्नालाल खिंदूका । पत्र संख्या-१६८ । साइज-१०ई×८ इच । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १६१४ । लेखन काल-स० १६३४ माटवा ध्रदी १४ । पूर्ण । वेप्टन नं० ३६७
- ्रह्य. परीषहं विवरण-पत्र संख्या-३। साइज-१२४६ देखा। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। स्चना काल-×। लेखन काल-×। पूर्णी वेष्टन न० १०५५।
- १६४. प्रतिक्रमण-पत्र संख्या-५ । साइज-१० रे×४ रे इच । सापा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६३ ।
- १६५. प्रबोधसार—महा प० यश.कीर्त्ति । पत्र संख्या-२० । साइज-=×३ इञ्च । भाषा-सस्वृत । विषय-श्राचार धर्म । रचना काल-४ । जेखन काल-सं० १५२५ मंगसिर सुटी १४ । पूर्ण । वेप्टन न० १७६ ।

विशेष--रचना में ४७= पद्य हैं। प्रशस्ति श्रपूर्ण हे जो निम्न प्रकार है-

सवत् १५२५ वर्षे मार्गसुदी १५ श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दक्कन्दाचायान्वये म० श्री जिनचन्द्र देवास्तत् शिष्य म० श्री हेमकीतिं देवा. तस्योपदेशात् जैसवालान्वये इच्चाकु वशे सा० " " " " "

१६६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—चुलाकीटास । पत्र सख्या-१४३ । साइज-१२४४ इच । मापा-हिन्दी (पप) । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७५४ कार्निक बुदी ११ । पूर्ण । वेप्टन न०७६४ ।

विशेष--- प॰ नरसिंह ने प्रतिलिपि की भी ।

- १६७. त्रायश्चित्तसमुच्चय-निद्गुरु । पत्र 'मख्या-१०० । साइज-१०४४ दे इच । माषा-संस्तृत । विषय-न्त्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-मं० १८६६ श्रावण बुढी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २६ ।
- १६८. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६२ । साध्य-११४१ इञ्च । मापा-मंस्यत । विषय-श्राचार । रचना काल-४ । लेखन काल-म० १८६१ । पूर्ण । वेच्टन नं० १८४ ।
- १६६. प्रसि न० २—पत्र सम्या-१०८ | साइज-११४४ इच | लेखन वाल-म० १६३२ माघ सुदी ४ | पूर्व | बेप्टन न० १६० |

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रशार है।

सवत्सरेसिम विक्रमादित्य १६३२ वर्षे माघमासै ग्रुक्लवर्षे पंचम्या तिथों ग्रुक्तवासरे मालवटेशे चन्देरागढदुर्गे पार्श्वनाम चेत्यालये श्री मूलसंघे मलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकु दाचार्यान्वये तदाम्नाये महावादवादीश्वर महलाचार्य श्री श्री थी देवेन्द्रकोर्तिदेव । तत्पट्टे मं व्याचार्य श्री त्रिभुवनकीर्ति देव । तत्पट्टे म श्री महस्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे महलाचार्य श्री पद्मनदि देव । तत्पट्टे महलाचार्य श्री यशःकीर्ति: । तत्पट्टे म श्री लिलतकीर्ति लिखित पहित रत्न पठनार्य इटं उपास-काचार प्रत्य लिखितं ।

२००. प्रति र्न० ४३ - पत्र संख्या-१२२ । साइज-११×४ ई इच । लेखन काल-स॰ १६४ = वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० १६१ ।

> विशेष—सहारनपुर नगर नादशाह श्री श्रक्तर जलालुद्दीन के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी। इस प्रथ की मण्डार में ४ प्रतिया श्रीर हैं जिनमें २ प्रतियां श्रवृश्ये हैं।

२०१. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार— सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६२ । साइज-११ई×१ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्राचार । रचना काल-× । लेखन काल-स॰ १=६१ । पूर्ण । वेप्टन न॰ १=१ ।

विशेष-प्रति प्राचीन है प्रथम पत्र नवीन है।

२०२ प्रति न० २--पत्र सल्या-७२ । साहज-११×५ इच । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

२०३. पुरुषार्थसिद्ध-युपाप-श्रमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३८ । साइज-१४४८ इत्त । माषा-सस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-४। तीखन काल-सं० १९२७ वैशाख सुदी ४। पूर्ण । वेष्टन नं० ६३।

निशेष—इसका दूसरा नाम जिन प्रवचन शहस्य कोश मी है। प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीका का नाम त्रिपाठी है। संस्कृत पर्धों पर टीका लिखी हुई है।

२०४. पुरुषार्थसिद्धगुपाय-पिडत टोडरमलजी। पत्र संख्या-१११ । साहज-११४० है इच । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-स० १८२७ । तेखन काल-स० १६३८ माच सदी १ । पूर्ण वे टन नं० ३९६ ।

विशेष-- म म की २ प्रतियां श्रीर हैं लेकिन वे दोनों ही श्रपूर्ण हैं।

२०४. ब्रह्मविलास—भगवतीदास । पत्र संख्या-११६ । साइज १०३४७३ इच । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-१७४४ । लेखन काल-१८८६ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ७२६ ।

विशेष — मैंच्या मगवतीदास की रचनाओं का संग्रह है। विलास की एक प्रति श्रीर है वह अपूर्ण है।

२०६. बाईस परीषह वर्णन--पत्र संख्या-६। साहज-१०ई×६ई इस । स्वनाकाल-×। लेखन काल स० १८६४। पूर्ण । वेष्टन न० १६०।

विशेष-अ म गुटका साइज है।

२०७. भगवती स्त्राराधना भाषा—सटासुख कासलीवाल । पत्र सख्या-५३८। साइज-११×७ ई इच । माषा-हिन्दी । विषय-स्त्राचार शास्त्र । रचना काल-सं० १६०८ मादवा सुदी २ । लेखन काल-सं० १६०८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६२ ।

२०८. मालामहोत्सव — विनोदीलाल । पत्र सस्या-३ । साइज-११×४ है इन्न । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६८ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ५५६ ।

२०६ मृताचार प्रदीपिका-भट्टारक सकत्तकीर्ति । पत्र सख्या-६१ । साइब-११ई×८ई इख । माषा-सस्कृत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३८ ।

विशेष—अंश में वारह अधिकार हैं। सालिगराम गोधा ने स्वपटनार्थ जयपुर में अन्य की प्रति लिपि की थो।

२१०. प्रति न० २—पत्र सख्या—१३७। साइज-१०×५ इख। लेखन काल—स० १५=१ पीष सुदी २।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति स॰ १५=१ वर्षे पोषमासे द्वितीयाया तिथी सोमवासरे ग्रधे ह वीजापुर वास्त्रव्ये मेदपाट झातीय व्योति श्री विलराज सत लीलाधर केन पुस्तिकां लिखितां । श्री मूलसघे बहा श्री राजपाल तत् शिष्य वि० वर्मेश्री पठनार्थे ।

२११ मृ्लाचार भाषा टीका—ऋषभदास । पत्र सख्या-२२७ । साइज-१५४७ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-द्याचार शाह्य । रचना काल-स० १८८८ कार्तिक सुदी ७ । लेखन कार्ल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८२ ।

विशेष-वट्टे कर स्वामी की मूल पर श्राधारित वसुनंदि की श्राचार वृत्ति नाम की टीका के श्रनुसार माषा हुई हैं !

प्रारम्म—वदी श्री जिन सिद्धपट श्राचारिज उवभाय । साधु धर्म जिन भारती, जिन गृह चैत्य सहाय ॥१॥ त्रष्टकेर स्वामी प्रणमि, नीम वसुनदि सूरि । मुलाचार विचार के माखी लिख ग्रण मुरि ॥२॥

श्रन्तिम पाठ—वसुनंदि सिद्धान्त चकविं किर रची टीका है सो चिरकाल पर्य त पृथ्वो विषे तिष्ठहु । कैसी है टीका सर्व श्रयंनि की है सिद्धि जातें । बहुरि कैसी है समस्त ग्रयानि की निधि । बहुरि श्रहण किर है नीति जानें ऐसो जी श्राचारज किरये मुनिनि का श्राचरण ताके सूच्म भाविन की है श्रमुवृत्ति किरये प्रवृत्ति जातें । बहुरि विख्यात है श्रठारह दोप रहित प्रवृत्ति जाकी ऐसा जो जिनपति किरये जिनेश्वर देव ताके निर्देश वचनि किर प्रसिद्ध । बहुरि पाप रूप मल की दूर करण हारी । बहुरि स्टर ।

२१२ मोत्त पैंडो--वनारसीदास । पत्र सख्या-३ । साइज-१०३४४ इञ्च । सापा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५६४ ।

विशेष—एक प्रति श्रीग है।

२१३. मोत्तमार्ग प्रकाश-पं टोडरमल । पत्र सख्या-१६० । साइज-१३१४६ इञ्च । मापा-इन्दी (हूंटारी)। विषय-धर्म । रचना काल-х । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन न०२ ।

विशेष--श्रीत सशोधित की हुई है।

२१४. प्रति नं०२---पत्र सख्या- २२७ । साइज-१०४६ है इख । लेखन काल-४। ऋपूर्ण । वेष्टन न• ७११ ।

विशेष—यह प्रति स्वय पं॰ टोडरमलजी के हाम की लिखी हुई है। इसके श्रांतरिक प्रम की २ प्रति श्रीर हैं लेकिन वे भी श्रपूर्ण है।

२१४. मोत्तसुख वर्णन-पत्र सख्या-१३। साइज-११४१ इख। माषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-४। लेखन काल-४। श्रपूर्ण। वेष्टन न० =७०।

२१६. यत्याचार—वसुनिदि। पत्र सरूया-६७ से २०७। साइज-१४×६ है इडा। मापा-सस्कृत। विषय-श्राचार शास्त्र। रचना काल-४। लेखन काल-स० १८६४ चैत्र सुदी ६। श्रपूर्ण। वेष्टन नं ० ६८६।

विशेष-श्रमरचन्द दीवान के पठनार्थ मंग की प्रतिलिपि की गयी भी।

२१७. रत्नकरड पावकाचार—आ० समंतभद्र । पत्र संस्था-१० । साहज $=\frac{5}{5} \times 8$ हुन्न । माषा- सस्कृत । विषय-त्राचार शास्त्र । रचना काल $-\times$ । लेखन काल-स० १६०० मादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेन्द्रन न० ७१ ।

विशेष-जयपुर में प्रतिलिपि हुई यी। श्रावकाचार की ३ प्रतियां चौर हैं।

२१८. रत्नकर डशावकाचार टीका-प्रभाचन्द्र। पत्र संख्या-४२। साइज-१२४५ इख। माषा-सस्कत । विषय-श्राचार शास्त्र। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ७४०।

विशेष-- प्रारम्भ के २४ पत्र फिर से जिखवाये हुये हैं। टीका की एक प्रति छीर है।

२१६. रत्नकरस्दश्रावकाचार—सदासुख कासलीवाल । पत्र सख्या-४७६ । साहज-१२ई४४ई इस । माषा-हिन्दी । रचना काल-स० ११२० चैत्र बुदी १४ । लेखन काल-४ । त्रपूर्ण । वेप्टन नं० ७७६ ।

विशेष-प्रति उत्तम है। प्र म की २ प्रतियां श्रीर हैं। दोनों ही श्रपूर्ण हैं।

२२०. त्रतोद्योतन श्रावकाचार—श्रास्तदेव । पत्र संख्या-१० । साइज-१२×१ई इंच । माषा-संस्कृत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८३४ भाषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६४ ।

२२१. वृहद् प्रतिक्रमण्-पत्र सल्या-२०। साइज-११२४५ इच । माण्-प्राकृत । विषय-धर्म । स्वना काल-х । लेखन काल-स॰ १७४२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न॰ १४०।

विशेष-मुनिभुवनम्षण ने बाली में प्रतिलिपि की भी।

२२२. श्रद्धान निर्म्य- पत्र संख्या-२८ । साइज-११४५ इञ्च । साषा-हिन्दी गए । विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ३८४।

विशेष—झानाबाई श्रोसवाल कोठ्यारी के पठनार्थ तेरह पंथियों के मदिर में प्रतिलिपि की गई। धार्मिक चर्चाश्रों का समह है। अंथ की एक प्रति श्रीर है।

२२३. श्रावकियावर्णन-पत्र सख्या-१६। साइज-११×४ इश्च। माषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ५५०।

२२४. श्रावक-दिनकृत्य वर्णन-पत्र सल्या-२-=। साइज-१०३×४० इस। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। रचना काल-х। लेखन काल-х। पूर्ण । वेष्टन न० १३२।

विशेष - प्रति दिन करने योग्य कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

२२४. श्रावकधर्म वचिनका-पत्र सल्या-१। साइज-७ई×३१ इंच। माषा-हिन्दी। विषय-धर्म। स्चना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण। वेष्टन न० ६८४।

विशेष — स्वामी कार्तिकेयानुप्रेचा में से श्रावक धर्म का वर्णन है।

२२६० श्रावक प्रतिक्रमण् सूत्र (छाया युक्त)—पत्र सख्या-२ से ३६। साइज-६५×४ इख। भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण । वेष्टन न० ६⊏२।

विशेष -- प्रथम पत्र नहीं है संस्कृत में भी श्रर्थ दिया हुआ है।

२२७. श्रावकाचार-स्वामी पूज्यपाद । पत्र सख्या-४ । साइज-११४५ इस । भाषा-सस्कृत । विषय- श्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १७१ ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२२८. श्रावकाचार—वसुनिन्द् । पत्र संख्या-२४ । साइज-१९४४ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६३० । चैत्र सुदी १२ । पूर्य । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष--- मं की प्रतिलिपि मोजमाबाद (जयपुर) में हुई भी । म भ की एक श्रित श्रीर है वह श्रपूर्ण है ।

२२६. श्रावंकाचार-पद्मनिन्द् । पत्र सल्या-६६ । साइज-११×४३ इच । माषा-सस्कृत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७२ ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२३०. श्रावकाचार--पत्र संस्था-२७ । साइज-१९६×५ इच । माषा-संस्कृत । विषय-धाचार शास्त्र ।

रवना काल-х । लेखन काल-х । पूर्व । वेष्टन न० १७१ ।

विशेष — ग्रं म पर निम्न शब्द लिखे हुये हैं जो शायद बाद के हैं — ये शावकाचार उमास्वामि का बनाया हुना नहीं है कोई जैन धर्म का ब्रोही का बनाया हुश्रा है। सूठा होगा सावत है।

- २३१ श्रावकाचार पत्र सस्या-११ । साइज-१०६×१ इख । मापा-प्रावृत । विषय-द्याचार शास । रचना काल-×। लेखन काल-स० १५३६ । पूर्ण । वेष्टन न० १७४ ।
- २३२. श्रावकाचार- श्रमितगति । पत्र सल्या-६६ । साइज-११४६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६१- । पूर्ण । वेच्टन न० १८१ ।
- २३३. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य। पत्र संख्या-१२। साहज-११×५ द्व । मापा-संस्कृत। विषय-प्राचार शास्त्र। रचना नाल-४। लेखन काल-सं० १७६७ वैसाख बुदी ३। पूर्ण। वेट्टन न० १७०।
- २३४ पोडशकारण भावना वर्णन-पत्र सख्या-=०। साइज-२१×= इच। माबा-हिन्दी। विषय-धर्मे। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्णे। वेष्टन न०३०=।

विशेष-- दशलक्या धर्म का भी वर्णन है।

- २३४ सम्मेटशिखरमहात्म्य--टीन्ति देवदत्त । पत्र सख्या-७= । साइज-=×१ इन । माषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-स० १७=५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०२ ।
- २३६. सम्मेदशिखरमहात्म्य-मनसुखसागर । पत्र सख्या-१६४ । साइज-११४४ इन्त । साबा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । विष्टन न० ४०=।

विशेष—लोहाचार्य विर्धापन 'तीथं महात्म्य' में मे सम्मेदाचल महात्म्य की माषा है। महात्म्य की एक प्रति श्रीर है जो श्रपूर्ण है।

- २३७ सम्यक्त्व पच्चीसी-भगवतीदास । पत्र सल्या-३ । साइज-६ १४१ इछ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न ० ६६४ ।
- २३८. सम्यग्प्रकाश—ढाल्राम पत्र संख्या-४ । साइज-११४८ इन्च । मांबा-हिन्दी (पष)। विषय-धर्म । रचना काल-स०१८५ चेत्र पुदी १५ । लेखन काल-सं० विशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन न०८४४ ।
- २३६ सबोधपचासिका—रङ्घू। पत्र संख्या-३। साइज-११×६ ६च। माषा-श्रपत्र रा। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेप्टन न०१०।
 - विशेष-गायार्थी की सल्या ४६ है। अन्तिम गाया निम्न प्रकार है-

सावण मासम्मिकया, गाहा दश्चेण विर्हं यु सुण्हु । कहियं समुच्चयत्व, पहिंडजतं च सुहस्रोह ॥४६॥

२४०. संत्रोधपंचासिका—सानतराय। पत्र संख्या-४। साइज-द×६ ई इच। माषा-हिन्दी। विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ६१४।

२४१. संबोध सत्तरो सार ""। पत्र सख्या-४। साइज-१० र्-४४ इख । भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म । रचनाकाल-४ । लेखन काल-स० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०६४ ।

विशेष-पत्र ४-५ में सम्यक्त कल वर्णित है। माषा पुरानी हिन्दी है।

सत्तरी में ७० पद्य हैं। श्रन्तिम पद निम्न प्रकार है— ज़े नराः ध्यानम्नानं च स्थिर्चिचोऽर्षप्राहकाः। चीयते श्रन्टकर्माण सारसंवोधसत्तरी॥७०॥

२४२. सागारधमीमृत-पं० स्त्राशाधर । पत्र सख्या-४१ । साहुज-११×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्त्राचार शास्त्र । रचना काल-सं० १२६६ पीष बुदी ७ । लेखन काल-स० १६२४ कार्तिक सुदी = । पूर्ण । वेष्टन न० १८० ।

२४३. सामायिक महातम्य- पत्र संख्या-१ । साइज-७३४६ इ च । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

२४४. सारसमुच्चय-कुलभद्र! पत्र रूख्या-१६। साइज-१०४४ इच। माषा-सस्कृत। विषय-धर्म। रचना काल-४। लेखन काल-सं० १५४५ कार्तिक बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० १०६।

> विशेष — संघी श्री छाजू श्रमवाल ने म य लिखवाया था । तथा श्री मेरोंवक्स ने प्रतिलिपि की थी । सारससुच्चय का दूसरा नाम मंथसार समुच्चय मी है । इसमें ६३० श्लोक हैं ।

शास्म-

देवदेव जिने नत्त्वा मवोदमविनाशन । वह्यहें देशनां काचित् मतिहीनोऽषि मिततः ॥१॥ ससारे पर्यटन् जतुर्वहुयोनि—समाकुलो । शरीरं भानसं दुःख प्राप्नोतीति दारुणं ॥२॥

धन्तिम पाठ--

श्रय तु क्रलमद्रेण मननिन्छित्ति-कारणं। टन्टो वालस्त्रमानेन मंग्र. सारसमुच्चयः ॥३२६॥ ये भक्त्या मानयिष्यन्ति, मनकारणनाशन । श्रिवरेखेंवकालेन, सख प्राप्स्यन्ति शाश्वतं ॥३२७॥ सारसमुद्र्वयमेतेष पठित समाहिता'। ते स्वल्पेनेव कालेन पद यास्यित्यनामयं ॥३२६॥ नमः परमसप्यान विष्ननाशनहेतवे। महाकल्याणसंपत्ति कारिणोरिष्टनेमये॥३३०॥

इति सारसमुच्चयाख्यो मंग. समाप्त. ।

२४४ सारसमुच्चय—दौलतराम। पत्र संख्या-१८। साइज-६ई×६ इच । मापा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० १०८२।

विशेष—सारसमुच्चय के श्रतिरिक्त पूजाओं का समह है। सार समुच्चय में १०४ पद्य है। श्रतिम पद्य निम्न प्रकार है—

> सार समुच्चे यह क्यो गुर द्याज्ञा परवान । द्यानद सुत दोलित नैं मिन करि श्री मगवान ॥१०४॥

२४६ सुगुरु शतक--जिनदास गोधा। पत्र संख्या-७। साइज-६×३ इख। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। स्वनाकाल-स०१=००। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४०२।

विशेष-- १०१ पद्य हैं।



विषय-अध्यातम एवं योग शास्त्र

२४७ श्रध्यातमकमल मार्चाएड—राजमल्ल । पत्र संख्या-१२ । साइज-१०६४४६ इस । मार्षा-संस्कृत । विषय-श्रम्यातम । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६३१ फाल्युण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टम न० २३ ।

विशेष—सं॰ ११८२ में नदकीर्ति ने अर्गलपुर (आगरा) में प्रतिशिषि की थी। अभ ४ अध्यायों में पूर्ण होता है।

२४८. अध्यातम वारहखडी--दौलतराम । पत्र संख्या-६७ । साइज-६ई४५ई इश्च । साया-१६६। (प्रया) । विषय-अध्यातम । रचना काल-सं० १८६८ । तीस्रतं काल-४ । अपूर्ण । वेध्यनं न० ३८७ ।

२४६. श्रष्टपाहुड — कुन्द्कुन्द्।च।र्थ । पत्र सल्या-६ से ५७ । साइज-१०६×६ इच । भाषा-प्राष्ट्रत । विषय-श्रध्यातम । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन नं • ६३ ।

विशेष-- प्र भ की > प्रतिया श्रीर हैं लेकिन वे दोनों ही श्रपृर्ण हैं ।

२४२. श्रष्टपाहुड भाषा — जयचन्द्र छ्।बडा । पत्र सख्या ८१ से १२३ । साइज-११४८ इच । माषा – हिन्दी । विषय – श्रध्यातम । रचना कोल –स० १८६७ । लेखन काल –× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ८१० ।

विशेष-- प्रथ की एक प्रति श्रीर है लेकिन वह भी श्रप्रा है।

४१. आतमसवोधन काठ्य-रइधू। पत्र सख्या-२८। साइज-११×४२ इस । भाषा-श्रपम श। विषय-श्रध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-स० १६१६ द्वितीय श्रावण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन न० २४।

विशेष- अलवर नगर में प्रतिलिपि हई थी।

२४२. श्रात्मानुशासन--श्राचार्य गुणभद्र । पन सख्या-२३ । साइज-१० ४६ दृ इस्र । माषा-१५१ त । त्रिवय-श्रभ्यातम । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७०० मादना सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४ ।

विशेष-साह ईसर अजमेरा ने बून्दी नगर में प्रतिलिपि की थी । प्र'थ की २ प्रतियां शीर हैं ।

२५३. श्रातमानुशासनः टीका—टीकाकार प० प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—७१। साइज-१०×४ई इस । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रध्यात्म । रचनाकाल-४ । लेखन काल-स० १५=१ चेत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन न० ३३ ।

विशेष -- पत्र ३ = तक फिर से प्रतिलिपि की हुई है, नवीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न ध्वार हैं --

स० १५८१ वर्षे चैत्र बुदो ६ ग्ररूवासरे घटपालीनाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवितमाने श्री मृलसघे नद्यामनाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये महारकं श्री पद्मनदि देवा तत्पट्टो महारक श्री शुमचन्द्र देवा तत्पट्टो
स० श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टो म० श्री प्रभाचन्द्र देवा तदाम्नाये खडेलवाला वये साह गोत्रे चतुर्विधदानवितरण कल्पवृत्त साह काधिल तदमार्था कावलदे तयो. पुत्रा: त्रयः प्रथम साह ग्रुजर, द्वितीय सा० राष्ट्रो जिनचरणकमलचचरीकान् दान पृजा समुद्यतान् परोपकारिनरतान् परवरम चिन्तान् सम्यक्तव प्रतिपालकान् श्री सर्वक्षोवत धर्मरे जितचैतसान कुटुम्ब साधारकान रत्नत्रयालकृत दिव्य देहान् घ्रहाराभयशास्त्रदानसम्बद्धान्नतान् त्रयो साह घच्छराज तद्मार्था पतिव्रता पद्मा तस्या पुत्र परम श्रावक साह पचाइण्ड तद्भार्या प्रतापदे तत्पुत्र साह दूलह एतेषां मध्ये सा० चच्छराज इद शास्त्र लिखायित सत्यात्राय मुग्न श्री माघनन्दिने दन्। कर्मवयार्थे। गौरवंश सेठ श्री खेऊ तस्य पुत्र पदार्य लिखित ।

२४४ स्त्रात्मानुशासन भाषा—पं० टोडरमत्त । पत्र सस्या-५६ । साइज १०४७ इच । मापा-हिन्दी गद्य । विषय-श्रध्यात्म । रचना काल-४ । स्रोतक्ति न काल-४ । स्रापूर्ण । वेष्टन न ० ७१०

विशेष—प्रति स्वय प ० टोडरमलजो फे हाथ की लिखी हुई है। इस प्रति के घतिरिक्त = प्रतियां श्रीर हैं।

उनमें से तान प्रतियां श्रपूर्ण हैं।

२४४. स्त्रात्मावलोकन-दोपचन्द कासलीवाल । पत्र संख्या-६४ । साहज-११४१ इच । माषा-हि-दो । विषय-श्रध्यात्म । रचना काल-म०१७७७ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६१ ।

२४६ त्राराधनासार —देवसेन । पत्र सख्या-१६ । साहत-१० रू×४० हच । मापा-प्राकृत । विषय-

विशेष—सस्कृत में सिक्त टिप्पण दी हुई है। दो प्रतियां धोर हैं।

२४७. चार ध्यान का वर्गीन । पत्र सल्या-२३। साइज-६×६ दे इद्य । माषा-हिन्दी। विषय-योग । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेध्यन न० ४३७ ।

२४८. चौरासी श्रासन मेद । पत्र सख्या-११। साइज-=×४३ इव। माधा-सस्तत। विवय-योग। रचना काल-४। लेखन काल-स०१७८८। पूर्ण। वेष्टन न०१३६।

विशेष-प० लूणकरण के शिष्य प० खीवसी ने प्रतिलिपि भी।

ेश्रहः ज्ञानार्योत्र — श्राचार्ये श्रुभचन्द्र । पत्र संख्या-१२८ । साइज-१०६४५ । माषा-सस्कृत । त्रिषय-योग शास्त्र । रवना काल-४ । लेखन काल-सं ० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन न ० ३० ।

विशेष-- प० श्री कृष्णदास ने प्रतिलिप कराई भी । प्रथ की २ प्रतियां श्रीर हैं।

२६० ज्ञानार्णेय भाषा-जयचन्द्र छावडा । पत्र सख्या-३६६ । साइज-१०१×७६ इंच । माषा-१६न्द्रे । विषय-योग । रचना काल-स० १८६६ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४०० ।

२६१ **ज्ञानार्णन भाषा** । पत्र सस्या-१६ । साज्ञ-१३४८ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं ० ५३६ ।

विशेष-- प्राणायाम प्रकरण का ही वर्णन है।

२६२ द्वादुशानुप्रेला । पत्र सक्या-४४। साहब-१९४६ हम। मापा-प्राकृत । विषय-श्रध्यातम । रवना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्ट्रन न० ⊏२⊏ ।

विशेष--प्राकृत भाषा में गाया दी हुई है और फिर उन पर हिन्दी गद्य में धर्ध लिखा हुआ है।

२६३. द्वादशानुप्रेता ' । पत्र सल्या-१ से ४ । साइज-१०४४ई इञ्च । माषा-हिन्दी (पव) । विषय-त्रध्यातम । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१६ ।

२६४. द्वादशातुप्रेचा । पत्र सल्या-१ । साइज-११४= इख । माषा-हिन्दी । विषय-श्रध्यात्मा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १४१ । २६४. प्रमात्मप्रकाश — योगीन्द्र देव । पत्र सख्या- २५६ । साइज-१०३४८ई इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रवना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६५ ।

विशेष-नहादेव कृत संस्कृत टीका तया दोलतरामकृत माषा टीका सहित है।

योगीन्द्रदेव कत रलोक संख्या-३४३, बहादेव कत संस्कृत टीका रलोक संख्या ४४००, तथा दीलतराम कत माषा रलोक संख्या ६ = १ प्रमाण है। दो प्रतियों वा मिश्रण है। श्रतिम पत्रों वाली प्रति में कई जगह श्रवर काटे गये है।

२६६. प्रति न० २---पत्र रुल्या-२४० । साइज-११×५ इच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६

२६७ प्रति न०३—पत्र सल्या-२१६ । साइज-१०३×५ इख । लेखन काल-स० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६७ ।

२६७ प्रति नं २ ४---पत्र सल्या-३०६ । साइज-११ई/४५ई इच । माषा-श्रपञ्च श । लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न०२०३।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। टीका उत्तम है। टीकाकार का नामोल्लेख नहीं मिलता है। इन प्रतियों के श्रतिरिक्त प्रयं की ४ प्रतियां श्रीर है।

२६८. परमातमपुराण-दोपचन्द् । पत्र सख्या-१ से ३६ । साइज-१०४४ ई इच । माबा-हिन्दी । विषय-ष्यध्यास । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपुर्ण । वेष्टन न० ७६८ ।

विशेष - प्रन्य का श्रादि श्रन्त माग निस्न प्रकार है-

शारम्म-श्रथ परमात्म पुराण लिख्यते ।

दोहा—परम श्रखंडित ज्ञानमय ग्रण श्रनत के धाम । श्रविनासी श्रानद श्रग लखत सहै निज ठाम ॥१॥

गथ — अचल श्रत् श्रनत महिम मिंदत श्रविहत त्रैलोक्य शिखर परि विराजित श्रनीपम श्रविधित शित दीप है। तामें श्रातम प्रदेश श्रमख्य देस है। सो एक एक देस श्रनंत ग्रुण पुरुषन करि ज्यापत है। जिन ग्रुण पुरुषन के ग्रुण परणित नारी है। तिस शिवदीप की परमातम राजा है ताकै चेतना परिणित राणी है। दरसण ज्ञान चरित्र ए तीन मन्त्री हैं। सम्यक्त फीजदार है। सब देसका परणाम कोटवाल है। ग्रुण सत्ता मिदर ग्रुण पुरुषन के है। परमातम राजा का परमातम सत्ता महल चएया तही चेलना परणित कामिनी सो केलि करते श्रतें ज्ञिय श्रवाधित श्रानद उपजे है।

श्रन्त में (पृष्ठ ३६)— "परमातम राजा एक है परणित शिक्त माविकाल में प्रगट श्रीर श्रीर होने की है परिवर्त्तन बन काल में व्यक्त रूप परणित एक है सो ही वस राजा को रमावे हैं। जो परणित वत्तेमान की की राजा मोगवे हैं सो परणित समय मात्र श्रात्मीक श्रनत सुख दे किर विलय जाय है। परमातमा में लीन होय है। २६६. प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सस्या—दं से ४४ । साइज-१६४७ई हच । माषा-प्राकृत । विषय-श्रम्यात्म । त्वना काल-४ । लेखन काल-४ । ध्रपूर्ण । वेष्टन नं ० ६८८ ।

२७०. प्रवचनसार भाषा—हेमराज । पत्र सख्या-३४ । साहज-१०६/४६ ई इन्च । माषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-श्रध्यातम । रचना काल-सं० १७०६ । लेखेन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१८ ।

विशेष-पद्य संस्था ४३० है।

२७१. प्रति न० २--पत्र सख्या-११० । साइज-१२४८ इस । रचना काल-स० १७०६ माघ सुदी ४ । लेखन कालं-सं० १७११ श्रासोज सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टर्न नं० ७२७ ।

विशेष - श्री नन्दलाल अभवाल ने प्रतिलिपि कराई भी ।

स॰ १७११ वर्षे श्राष्ट्रितनि मासे शुक्ल पद्ये ग्रहवासरे श्री श्रकवराबाद मध्ये पांतशाह श्री शाहे जहान विजय राज्ये श्वेताम्बर कासीदासेन श्रमवाल झातीय साह श्री न दलाल पठनार्थ । सं० १७६१ शाह छाजूराम बज के पठनार्थ खरीदी थी ।

म ब की ४ प्रतिया श्रीर हैं।

२७२. प्रयंचनसार भाषा—वृन्दावन । पत्र संख्या-११३ । साइज-१३४७ई इब्वें । माषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १६०५ वैसाख र्सुदी ३ । लेखन कोल-स० १६२७ । पूर्य । वेन्टन न० ७२६ ।

विशेष-हीरालाल गगवाल ने लश्कर नगर में प्रतिलिपि कराई भी।

२७३. मृत्युमहोत्सव भाषा—दुत्तीचन्द । पत्र सख्या-१५ । साहज-१२४७ई इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यातम । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ५३८ ।

२७४. योगसार-योगीन्द्र देव । पत्र सख्या- १३ । साइज-१९४६ देख । माषा-मपभ श । विषय-योग । रचना कार्ल-४ । लेखन काल-स॰ १६२१ ज्येन्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेन्टन न॰ १६ ।

> २७४. प्रति नं० २—पत्र सख्या-१०। साइज-१०६४७६ इख । लेखन काल-४। पूर्ण । वेप्टन नं० ६१ विरोध-गोबाधी पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआं है। गायां स० १००। ४ प्रतियां और हैं।

२७६. योगसार भाषा—बुधजन । पत्र संस्था- । साइज-१०४६ इझ । गाषा-हिन्दी । विषय-श्रम्यातमे । रचना काल-स० १८६५ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं ० ३८२ ।

२०० योगीरासा-पार्यंडे जिनदास । पत्र सरूपा-३ । साइज-१३६/४६ इझ । माधा-हिन्दी । विषय-प्रम्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२४ ।

श्रध्यातम एवं योग शास्त्र]

- २७८. वैराग्य पन्न्वोसी-भैया भगवतीदास । पत्र सख्या-४ । साहज-७×४६ हम । माषा-हिन्दी । विषय-अध्यास । रचना काल-सं० १७५० । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० ४५६ ।

२७६ वैराग्य शतकः " । पत्र संख्या-११। साइज-१०४४ इथ । साथा-प्राकृत । विषय-श्रध्यातम । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८१६ वैसाख सुदी ११ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० १४४ ।

विशेष--जयपुर में नाथूराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की भी । गाथाश्री पर हिन्दी में श्रर्थ दिया हुआ है। १०३ गाथायें हैं।

प्रारम्मिक गाया निस्त प्रकार है — ससारंगि श्रसारे यात्मि सह वाहि वेयणापउरे । जायातो इह जीवो याऊयाई जियाँदेसियं घरमां ॥१॥

२८०. षट्पादुर- कुर्न्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-६२ । साहज-६३×४ इंच । माषा-प्राकृत । विषयप्राध्यास । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७३६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२ ।

विरोष—साह काशोदोस श्रांगरे वोले ने स्वपठनार्थं धर्मपुरा में प्रतिलिपि की। श्रवर सुन्दर एवं मोटे हैं। एक पत्र में ४-४ पर्वितया है।

म् १. प्रांत नं २ -- पत्र संख्या-२४। साहज-११४५ इच । लेखन काल-स० १७४४। पूर्ण । वेष्टन न० न६१।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित हैं। प्र'ण की २ प्रतियाँ श्रीर हैं।

२-२. समयसीर केलशा-श्रमृतचन्द्राचार्य। पत्र संख्या-४५ | सोइज-११३% ६च | माधा-सस्कृत | विषय-श्रम्थात्म । रचना काल-४ | लेखन काल-सं० १६०२ श्रावण बुदी ३ | पूर्ण | वेण्टन न० ४३ ।

विशेष -- संस्कृत में कही २ संकेत दिये हुए हैं। अंथ की दो प्रतिया श्रीर है।

२८३. समयसार टीका--श्रमृतचन्द्र।चार्य । पत्र सर्व्या-६४ । साहज-१२४६ इस । भाषा-संस्कृत । विषय- श्रष्यात्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७८८ माँदवा सुदी १४ । पूर्य । वेपन न० ४१ ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति निन्न प्रकार है-

प्रशस्ति—संवत्तरे वसनागधुनींदुमिते १०८८ माद्रपद मासे शुक्त पन्ने चतुदंशी तिथी ईसरदा नगरे राज्ये श्री श्रीजतिस्ति श्रीकृत्वकृत्वाचार्यान्त्रये श्रीमृत्तां भलात्कार गणे सरस्वती गण्डे श्रीकृत्वकृत्वाचार्यान्त्रये श्रनावत्याः महारकजित श्रीसेरेन्द्रकौर्तिस्तत्पट्टे म० श्रीजित् श्रीजगतकीर्ति तत्पष्टस्यः स्वर्गामीर्यह्माग्रणनिर्जितसागरेलादि पदार्थ स्वपचार्तरता-गमांबोचे म० शिरोमणि महारक्ष जित श्री २०८ श्रीमद्दे वेन्द्रकीर्तिस्तिनेयं समयसार्थका स्वशिष्य मनीहर कर्णानार्थं पहनाय

तत्ववोधिनी सुगम निजबुद्धया पूर्व टीकामवलोक्य विहिता। बुद्धिमिद्धः वोधनीया प्रमादात् वा श्रत्पबुद्धया पत्रहीनाधिक मव भवेत् तत् शोधनीयं पाचनेयं कता मया कि बहुक्थनेन वाचकानां पाठकानां मंगलावली समवो मवेत् श्री जिनशमप्रसन्ते।

२८४. प्रति नं०२ - पत्र संख्या-१२७। साहज-१२४६ इख। लेखन कल-४। पूर्ण। वेष्टन

विशेष—सघ ही दीवान श्योजीराम ने भपने पुत्र कु वर धमरचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी । श्योजीराम दीवान के मदिर जयपुर्में प्रतिलिपि हुई ।

२८४. प्रति न० ३--पत्र सख्या-१६ । साइज-१३४७ इख । लेखन काल-स० १८६६ छासीज बुदी ४ पूर्ण । वेप्टन न० ४४ ।

विशेष--- मघही दीवान श्रमरचन्द पठनार्थ पिर.गदास महुत्रा के ने प्रतिलिपि की ।

२८६ प्रति न०४—पत्र संख्या-१००।साइज-१२४५ ई इच । लेखन काल-शक सं० १८००। पूर्ण। वेष्टन न०४७।

विशेष - स० ख ख वसुइन्दुमिते वर्षे शाके माघ मासे शुवल पत्ते तिथो दितीयायां गुरुवारे श्रनेक्वनवार्णकूप-तहाग जिन पैरालयादि विराजधाने बहुविख्याते सक्लनगरमाम मट वादीनां शेखरीमूते पाति साह श्री मुहम्मदशाह तत् सेवक महाराजाधिराज महाराजा श्रीईश्वरसिंहराजय प्रवर्तमाने सवाईजेपुरनामनगरे तत्र श्री पार्श्वनाम चैत्वालये सोनी गोत्रे साह श्री प्रागदास जी कारापिते । श्री मृलसचे नधान्नाये बलात्कार गणे सरस्वति गच्छे श्री ।कुन्दकु दाचार्यांन्वये मट्टारक्जित श्री १० प्रशी महेन्द्रकीर्विजी तस्य शासनधारी बहा श्री श्रमरच दस्तत् शिष्य प० श्री जयमल्लस्तत् शिष्य प० मनोहरदास तत् शिष्य प० श्री छीत्रमलस्तत् शिष्य प० श्री हीरानन्दस्तत् शिष्य ग्रणगरिष्ट चुद्धिवरिष्ट सक्लतर्क मीमांसा श्रष्टसहस्ती प्रमुखादांग्रणानां व्याख्याने निपुण पडितोत्म ५डित जितशीचोलच प्रजीकस्य शिष्य स्वरामेण स्वश्येन स्वपठनार्थं झानावरणीकर्मच्यर्थं लिपिकृता ।

२८७. प्रति न० ४-पत्र संख्या-३६ । साइज-१०४४ ई इम्र । लेखन काल-सं० १७२१ पीव सुदी ७। पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष-सा० जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२८८. समयसार नाटक—बनारसीदास । पत्र सख्या-१०८ । साइज-१०२४४ ई इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-ग्रम्यात्म । रचना काल-स० १६६३ । लेखन काल-स० १८६७ श्रात्रण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७४६

२८. प्रति न०२-पत्र संख्या-१६४। साइज-८-१४४ है इच। लेखन काल-सं० १७०० कार्तिक सुदी ७। पूर्ण । बेष्टन नं० ७४६।

विशेष —श्रीमानुसातम पठनार्थं लिखित । धामेर में प्रतिलिपि हुई । १४२ पत्र के धारो बनारसीदास इत अन्य दाठ हैं । (गुटका) श्रध्यास एवं योग शास्त्र]

२६०. प्रति न० ३—पत्र मंख्या-७६ । साइज-११ई-४४ई इच । सेखन काल-म० १७०३ सावन सुरी १४ । पूर्व । देपन न० ७६७ ।

विर्त्य—सवत् १७०३ वर्ने श्रांवणिसतनतुर्दशीतियो श्रीमलसचे वलात्कारतणे मरस्वतीगच्छे कृन्दकु-दाचार्या न्वये म० श्री चढ़र्दार्तिजी म० श्री नरेन्डकीत्तिजी तदाम्नाये मेच्या गोत्रे साह महेस मार्या धर्मा तया इद समयसार नाम नाटक लिए प्रावृत्यि श्री सक्लकीर्तिये प्रदर्ता।

तिशेष-समयसार नाटक की रुएडार में १६ प्रतियां खीर हैं।

२६१. समयसार भाषा-राजमल्ल । पत्र संख्या-२६६ । साइज-११×५ देख । भाषा-हि दो गर्य । विषय-अध्याम । रचना काल-× । तेखन काल-स० १७४३ पीप ब्रदी ४ । पूर्ण । वेप्टन न० ७६४ ।

विशेष-इति थी समयसार टीका राजमल्लि मापा समाप्तेय ।

२६२ प्रति न०२—पत्र सस्या-२७४। साइज-१९४८ इझ। रेखन यास-स० १७४⊏ श्रवाट युटी ४। पूर्ण । वेण्टन न० ७६६।

२६३. प्रति स० ३---पत्र मरूया-२०२ | माइज-१२४६ दश्व | लेखन याल-सं० १८२० | पूर्ण | वेष्टन त॰ ८१३ |

निर्मय-निग्रसागर ने सवाई जयपुर में श्रतिशिषि की भी । पुट्टी पर बहुत सुन्दर बेल वृटे हैं ।

६४ समयसार भाषा--जयचन्द्र छात्रहा। पत्र सख्या-३२०। साइज-१०६४७६ इख। मापा-१८०। विषय-श्रधास । रचना बाल-म० १८६। लेखन काल-सं० १६०६। पूर्ण । वेष्टन नंव ७२०।

२६४ समाधितत्र भाषा—पर्वतधर्माधी । पत्र मरया-१२० । साइज-१२४१ हे इन्त । मापा-गुजराती । विषय-गोग । रचना पास-४ । लेवन काल-स० १७६३ कार्तिक सुबी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७=६ ।

विशेष-६ प्रतियां चीर है। प्रथ की लिवि देवनागरी है।

२६६. समाधितस्त्र भाषा "। पत्र गल्या-१७२ । साहन-११४७ देख । सापा-ति । । विषय-धोग । रचना गल-४ । हेरान पाल-सन् १९३६ । पूर्ण । वेरान पन ८४६ ।

विरोप-भाष्य में निष हुई थी।

२८७. समाधितत्र भाषा " """। पत्र मेरात-२०। साहत-१४४ छत्। माना-रिल्डी । दिवद-योग । त्राना काल-४ । दोत्रन माल-मच १६३६ वागुल सदी १३ । दुर्व । देशन मच ठा ह ।

न्हनः समाधिनरसः । । १४४ रिला-२० (नाइए-१८०६ण (कणा-१८६) (१८५८ । १९ ना १९ १-४ । तिएत लाए-४ (पूर्व) वेहन में ११३४ ।

- २६६. समाधिमरण ं । पत्र सरूया-१६ । साइज-११×५ इच । मापा-हिन्दी । विषय-अध्यातम । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ७८७ ।
- ३००. समाधिमरण भाषा । पत्र सख्या-२०। साइज-६ रं×४ हुँ इच। माषा-हिन्दी। विषय-श्रध्यात्म। रचना काल-×। लेखन काल-स० १८३४ श्रासोज सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं• ७८८।
- ३०१. समाधिमरण भाषा । पत्र सल्या-१६। साइब-११×१ इन्छ। भाषा-हिन्दी। विषय-म्रध्यातम । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ८७४।
- ३०२. समाधिशतक—स्त्रा० समन्तभद्र । पत्र सस्या-१३ । साइज-१२ई×६ इश्च । माषा-स स्फत । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० १४६ ।

विशेष-हिन्दी में पद्यों पर श्रर्थ दिया हुआ है।

३०३. स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेत्ता—स्वामीकार्त्तिकेय। पत्र सख्या-२८०। साइज-१२४५ इत । माषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न०४८ ।

विशेष --- प्रति स० शुसचन्द्रकत टीका सहित है । टीका सस्कृत में है । प्रथ की ३ प्रतियां श्रीर हैं ।

- ३०४० स्वासीकातिकेयानुप्रेजा भाषा जयचन्द् छाबङा । पत्र सख्या-१५० । साइज-१९४४ इञ्च । विषय-अध्यातम । रचना काल-स० १८८३ श्रावण बुदी ३ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४०३ ।
- ३०४. प्रति नं० २-- पत्र सरूया-११६ । साइज-१०४७ई इञ्च । लेखन काल-सः १८६३ श्रावण बुदी ३ । पूर्णे । वेष्टन नं० ४०४ ।



विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

३०६. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानिन्द । पत्र सरन्या-२६७। साइज-११६४१ इच । माषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचनाकाल-४ । लेखन काल-स० १६२७ चेत्र युदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

विशेष-जयपर में घासीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

३०.७. तर्कसम्रह—श्रात्रभट्ट। पत्र संख्या-४। साइज-११×४ई इच। माषा-संस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-४। लेखन काल-स०१८२६। पूर्ण विष्टन न०१४१। विशेष-सांगानेर में पं० नगराज ने प्रात्लिप की थी । प्रन्य की एक प्रति स्रीर है ।

३०८. देवागमस्तोत्र—समतभद्र। पत्र संख्या-११। साइज-६ र्-१४६ इस । माषा-६स्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न०,२८७।

विशेष---एक प्रति स्रीर हैं।

- ३०६. देवागमस्तोत्र भाषा—जयचन्द्र छाबडा । पत्र सख्या—८४ । साहज-११×५ है इख । भाषा— हिन्दी । विषय-न्याय शास्त्र । रचना कील-स० १८६६ चैत्र बुदी १४ । लेखन काल-स० १६८४ पौष बुदी १४ । पूर्णे । विष्टन न०४६१ ।
- ३१०. नयचक भाषा—हेमराज । पत्र सख्या-१७ । षाइज-१०ई×४ई इञ्च । साषा-हिन्दी । निषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-स० १७२६ । लेखन काल-स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८३ ।
- ३११. न्यायदोपिका—यति धर्म भूषण्। पत्र सख्या—३७। साइज-११४५ इन्च। माषा-सस्कृत। विषय-न्याय शास्त्र। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेप्टन नं० २०१।

विशेष -- प्रन्य की एक प्रति श्रीर है।

३१ . न्यायदीपिका भाषा—पन्नालाल । पत्र संख्या-१०३ । साइज-१२४६ इस । माषा-हिन्दी । विषय-न्याय शास्त्र । रचनाकाल-स० १६३५ मगसिर सुदी ६ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६८ ।

विशेष--- प्रन्थ प्रशस्ति का अन्तिम माग निस्न प्रकार है:---

श्रन्तिम पाठ--

श्रार्य तेत्र मि दू दाहहु में जयपुर श्रदभुत नगर महा।
ताके श्रिवपित नीति नुपण श्रित रामसिंह नृप नाम कहा॥
मंत्री पद में रायबहादुर जीवनसिंह सुनाम लहा।
ताको गृह मित सबी मावह पन्नालाल सु धर्म चहा॥
श्रावक धर्मी उत्तम कम्मी, है ममी जिन वचनन के।
नाम सदासुख नाशित सब दुख दोष मिटावन के॥
तास निकट जिन श्रुत निति श्रित सुनत सुनत मन समता पाय।
न्याय शास्त्र को रहिस ग्रहण हित न्यायदीपिका हमें पदाय॥
तास बचनिका विशद करन की श्रानद हृदय पटायो है।
करी वीनती त्रिभुवन गुरू ते श्र्य समस्त लखायो है।
फतेलाल जित पंडित वर श्रित धर्म श्रीति को धारक है।
शम्दागम ते तथा न्याय ते श्र्य समर्यन कारक है॥

तिनके निकट विशद फुनि कीनो, यर्थ विकल्प निवासन को । '
फरी वचनिका स्व पर हित को पढ़ो भव्य अम टारन को ॥
विक्रम नृप के उगणीसे पर तीस पांच सत चीना है ।
मंगिसर शुक्ता नवमो शांश दिन अन्य सम्पूरन कीना है ॥

चोपई-श्री जिन सिद्ध सूरि उत्रभाय सर्व साधु हे मगलदाय । तिन्के चरण कमल उरलाय, नमन करें निति शीश नवाय॥

३१३. परोत्तामुख-स्थाचार्य माणिक्यनदि । पत्र सख्या-७ । साइज-१०४२ हुँ इस । मापा-सरकृत । विषय-दर्शन । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न ०३४ ।

३१४. परीत्तामुख भाषा--जयचन्द छावडा । ११ सल्या-११७। साहज-१० देर्र७ देश । मार्षा-हन्दी । विषय-दर्शन । रचना काल-स० १६२७ श्रावण सुदी २ । लेखन कालन् । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

३१४. प्रमेयरत्नमालां--श्चनन्तवीर्थ । पत्र सख्या ४४ । साइज-११४८ इब्चं । माषा-सस्कृत । विषय-दशेन शास्त्र । रचना कोल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८ ।

विशेष-माणिक्यनि कत परीचामुख की टीका है।

विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-×) लेखन काल-×) पूर्ण वेष्टन न ० १४३ ।

विशेष— प्रति प्राचीन है ।

प्रारम्म का दूसरा पद्य —

विद्वेशादीन् नमस्कृत्य माधवारय सरस्वत्ती ।

शिवादित्यकृते॰टीकां करोतिः मितमाणिण ॥२॥

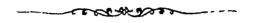
३१७ सातपदार्थी-श्रीभावविद्येश्वर । पत्र संस्त्या- । साइज १०३×४। माषा-सस्छत । विषय-न्याय । रचना काल- × । लेखन काल-म० १६८३ कांग्रुण सदी ४ । पूर्ण । वेष्टन ने० १/३ ।

विशेय--प ॰ हर्ष ने स्व पठनार्थ श्रतिलिपि की थी । श्रतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

अतिम —यमनियमस्वाध्यायधारणासमाधिधोरणी मथानयनपाशुपताचार्य श्री भावविद्योशवरविता वाविद्या विलासविचित्रवाद्यत्वस्वार्थापरायचमत्कार पार्श्वर्यमयाः परापरन्यायवैशेषिकमहाशीस्त्रसमुद्धरणशिलेन विरचिता सन्तपदार्थी समान्ता ॥

३१८. स्याद्वादमंजरी—मिल्लिपेण । पत्र सख्या-३४ । सोइज-१२×६ इच । माषा-सस्त । विषय-उर्शन शास्त्र । रचना नाल-× । लेखन नाल-× । पूर्ण । विषय नं ० ६४० । ३(१८. स्याद्वादमंत्ररो-मिल्लिपेगा। पत्र सख्या-५६। साइज-१०४४ई। भाषा-सस्कृत। विषय-दर्शन शास्त्र। टोका काल-शक स० १२१४। लेखन काल-सं० १७६७ माह सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं०२७१।

विशेष - उदयपुर में प्रतिलिपि हुई । मिलिपेण उदयप्रमसूरि के शिष्य थे ।



विषय-पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

३२०. च्रकृत्रिम चैत्यालयपूजा—चैनसुख। पत्र संख्या-६४। साइज-१०ई×५ इख। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-स० १६३०। लेखन काल-स० १६३५। पूर्ण । वेष्टन नं० ४७८।

विशेष-पूजा की एक प्रति घीर है।

३२१. श्रकृत्रिमचैत्यालयपूजा --पं० जिनदास । पत्र संख्या-३६ । साइज-=ई/४५ इश्व । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-स ० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन न ० ८८६ ।

विशेष-लद्मीसागर के शिष्य पं • जिनदास ने रचना की थी ।

- ३२२. श्रकृत्रिमचैत्यात्तयपूजा '। पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२ई/४=ई इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७२ ।
- ३२३. श्रदाईद्वीपपूजा—डाल्र्राम । पत्र सख्या-१२४ । साइज-१२४८ इच । साषा-हिन्दी । विषय-पूर्जा । रचना काल-सं० १८६६ । लेखन काल-स० १९८७ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७३ ।

विशेष—मं य का मूल्य प दह रुपया साढे पांच श्राना लिखा हुन्ना है।

३२४. श्रदाईद्वीपपूजा : । पत्र संख्या-३१६। साइज-१०ई×४ इच। माषा-सस्कृत। रचना काल-४। लेखन काल-स०१-४२। फागुण सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं०३२७।

विशेष-मं भ के पुट्टे पर १२ तीर्थंकरों के चिन्हों के चित्र है। चित्र सुन्दर है।

- ३२४. श्रदाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण्। पत्र संख्या-१०६। साइज-१०४६ इख । भाषा-सस्त्त । विषय-पूजा । रचना काल-४। लेखन काल-स० १९०६ श्रावण द्वदी ७। पूर्ण । वेष्टन नं० ३१४।
- ३२६ अंकुरारोपण्विधि—इन्द्रनन्दि । पत्र सख्या—६१ । साइज-११×१ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न॰ ६८१ ।

३२७. अभिपेकपाठ " । पत्र संख्या-३१ । साइज-११×१ इञ्च । साषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान ! रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८८८ ।

३२८. श्रष्टाहिकापूजा : । पत्र सख्या-२४ । साहज १२४८ इस । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७६ ।

३२६. श्रष्टाह्निकापूजा-चानतराय । पत्र सल्या-२३ से ३० । साइज-११र्ट्र×५ इंट्रच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३० ।

विशेष--१--२ तक के पत्र नहीं हैं।

३३०. श्रष्टाहिकात्रतोद्यापनपूजा । पत्र संख्या-१=। साइज-११×१। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ई३६।

३३१. श्रादिनाथपूजा - रामचन्द्र । पत्र संख्या-६ । साइज -१०ई ४६ई इख । माया-हिन्दी । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन नं० १४८ ।

विशेष-प्रारम्म में हिन्दी में दर्शन पाठ है।

३३२. श्राद्नाथपूजा-पत्र सख्या-७। साइज-७×६ इश्र। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ११३३।

३३ई. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूपण । पत्र सख्या-२४ । साइज-१०ई×१ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-х । लेखन काल-х । ऋपूर्ण । वेष्टन न० ३२४ ।

विशेष—रूचिकगिरि उत्तर दिगचैत्यालय की पूजा तक पाठ है।

३३४. कमलचन्द्रायगान्नतपूजा । पत्र सख्या-३ । साइज-१३×६ है इब्च । माषा-सरष्टत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन नं० ४५६ ।

३३४ कर्मटहनपूजा । पत्र संख्या-१४। साइज-६×८ इन्द। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेश्टन नं० १०५६।

३३६. कर्मदहनपूजा ' । पत्र सरुगा-२०। साइज-८१४६ इस । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न०६०७।

३३७ कमेंद्हनपूजा । पर्व संख्या-१२। साइज-१३×६२ इख । सापा-हिन्टी। विषय-पूजा। रचना काल-×। तेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ४७४। -

३३= कर्मदह्तपूजा-टेकचन्द्। पत्र संस्या-२०। साहज-११×५१ हम । मापा-हिन्दी। निषय-

पूजा एव प्रतिष्ठादि अन्य विधानं]

पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६३६ । पूर्य । बेष्टन न० ४६० ।

बिशेष-इस पूजां की ५ प्रतियां श्रीर हैं।

३३६. कर्मदहनपूजा । पत्र सख्या-१४ । साइज-१०४४ इच । साबा-सस्वत । विषय-पूजा । रचना नाल-४ । लेखन माल-४ । पूर्य । वेष्टन न० ३५० ।

३४०. कर्मदहॅनव्रतपूजा । पत्र सख्या-११। साइज-१०ई/४५ इन्च । माबा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं॰ २६३४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६२ ।

विशेष-पूजा मन्त्र सहित है। एक प्रति छीर है।

३४२. कर्मदहनव्रनमंत्र । पत्र सल्या-१०। माइज-१०ई×५ इस । माषा-सस्कृत । विषय-पूर्जा । रचनो काल-४ । लेखन काल-सं० १६३५ । पूर्णे । वेष्टन न० ४६१ ।

३४२. गराधरवलयपूजा - सकलकीर्ति । पत्र सख्या-६ । साइज-१०३×१ इन्न । माषा-सरष्टत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टनं न० ३२४ ।

३४३ गिरनारत्तेत्रपूजा ' । पत्र संख्या-४६। साहज-१०ई४८ हल्च। भाष:-हिन्द्री। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-स० १६३८। पूर्ण। वेण्टन नं० ४४६।

विशेष-प्रतिलिपि कराने में तीन रुपये साढे पाच श्राने लगे थे ऐसा लिखा हुआ है।

३४४. चतुर्विशतिजिनपूजा : । पत्र सख्या-११३ । साइज-११४ है इस । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४० ।

३४४ चतुर्विशतिजिनकल्याणकपूजा—जयकीर्ति । पत्र सख्या-५३ । साइज-१०×४५ इब । पाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६८४ चेंत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेप्टन न० ३४१ ।

विशेष—सं० १६८४ वर्षे चैत सदी ७ सोमे वहली नगरे श्री घादिनायचैत्यालये श्रीमत्काष्टाकं नदीतटगच्छे विद्यागयो महारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण म० भुवनकीर्ति तत्पट्टी म० श्री रत्नमूषण, म० श्री जयवीति, श्राचार्य श्री नरेन्द्रकीर्ति, उपाध्याय श्री नेमकीर्ति, न० श्री कृष्णदाय, प्रवमल ब्रह्म श्री हरिजी न० वर्द्धमान, न० वीरजी, प० रहीदास लिखित

३४६. चतुर्विशतिजिनपू जा — घृत्दावन । पत्र संख्या-६६ । साइज-११४८ इस । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स॰ १६३४ । पूर्ण । वेण्टन नं ० ४१८ ।

विशेष - २ प्रतियां श्रीर हैं।

३४७. चतुर्विशतिजिनपूजा—सेवाराम । पत्र संख्या-६३ । साइज-१०३×१ इच्च । सापा-हिन्दी । विषय — पूजा । रचना काल-स० १८१४ । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ४१६ ।

विशेष-श्रन्तिम पत्र नहीं है। २ प्रतिया श्रीर हैं।

३४८. चतुर्विशतिजिनपूजा-रामचन्। पत्र सख्या-६६। साइज-११×६३ इख । माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४२०।

विशेष-तीन प्रतियां श्रीर हैं।

३४६. चतुर्विशतितीर्थकरपूजा । पत्र सख्या-४४ । साहज-१०५ ४६ इख । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन न० ३३८ ।

३४०. चन्द्नपष्टीत्रतपूजा । पत्र संख्या-४। साइज-१२४५ इम्र । साषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न०२७७।

३४१ चतुर्विधसिद्धचक्रपूजा - भानुकीत्ति । पत्र सख्या - २१६ । साइज - ७३४६३ इस । भाषा -रकृत । विषय - पूजा । रचना काल - × । लेखन काल - स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन नं ० ६३२ ।

विशेष--वृहद् पूजा है । मन्यकार तथा लेखक दोनों की प्रशस्ति हैं ।

म॰ मानुकीति ने साधु तिहुणपाल के निमित्त पूजा की रचना की भी। साधु तिहुणपाल ने ही इस पूजा की प्रतिलिपि करवायी भी।

३४२. चारित्रशुद्धिविधान—भ० शुभचन्द्र । पत्र सख्या–६४ । साहज ११ई×१ । माषा-सस्कत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं • २६२ ।

विशेष-'१२३४ वर्तों का विधान' यह भी इस रचना का नाम है।

३४३. प्रति न०२। पत्र संख्या-२ से ३४। साइज १० र्डे ४४ ई इख्च। लेखन काल-स० १४८४ कातिक बुदी ८। अपूर्ण। वेष्टन न० ४१०।

विशेष-प्रथम पत्र नहीं है । जाप्य दिये हुए हैं ।

प्रशस्ति—सनत् १४=४ वर्षे कार्तिक बुदी घष्टमी वृहस्पतिनारे लिखितं प० गोपाल कर्मच्यार्य षात्री (क्त्री) खुलिकावाई सोना पद्मा इद दत्त श्री पार्श्वनाथचैत्यालये दुवलागापचने ।

३४४. चौबीसतीर्थंकरजयमास-पत्र सल्या-ः । साइज-१३४४। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-सं० १६४७ वैसाख सुदी १४। पूर्ण । वेष्टन न० ११४६।

३४४. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरुपचन्द्। पत्र संख्या—३३। साइज-१२४० इम्र। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-सं०१६१० भावण सुदी ७। लेखन काल-सं १६६६। पूर्ण । वेष्टन नं०४१२। विशेष---२ प्रतियां श्रीर हैं।

३५६. जलगालनिकया—ब्रह्म गुलाल । पत्र संरया = ४ । साइज = = ४५ इन्च । मापा = हिन्दी । विषय = विधान । रचना काल = ४ । लेखन काल = सं० १ = १६ वैसाख चुदी । पूर्ण । वेष्टन न० १००६ ।

विशेष—रूडमल मोंना ने नारनोल में प्रतिलिपि की थी।

३५७ जिनसहस्त्रनामपूजा-धर्मभूषण । पत्र रूख्या-६३ । साइज-११४४ इब्च । मापा-संरकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०६ ।

३४८ जिनसहस्रनामापूजा भाषा—स्वरूपचन्द विलाला। पत्र संख्या—= । साइज-११४६ इश्व । भाषा-हिन्दी । वित्रय-पूजा । रचना काल-स० १६१६ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३८१ ।

३४६. जिनसंहिता—पत्र संख्या-७। साहज-१० है×४ है इ च। माषा-सस्कृत। विषय-विधि विधान। रचना काल-४। लेखन काल-सं॰ १४६० सावण सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन नं० २६४।

विशेष—संवत् १६६० वर्षे श्रावण सुदी ४ श्री मृत्तसघे वत्तात्वाराणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये महारक श्री पद्मनिन्दिदेवा: तत्पट्टो म० शुमचन्द्रदेवा. तत्पट्टो म० जिनचन्द्रदेवा: तत् शिष्य सुनि श्री रत्तरीति सुनि श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खडेलवालान्वये सेठी गोत्रे सा० ताल्ह मार्या पर्दा तत्पुत्र साह जील्हा मार्या सुहागिणि इदं शास्त्र सत्पात्राय दत्त । इति जिन संहितायां विमानहोम शान्तिहोम गृहहोम विधि समाप्तमिति ।

नवीन गृह प्रवेश थादि के श्रवसर पर होम विधि श्रादि दी दुई हैं।

३६० र तीनलोक पूजा— टेकचन्द । पत्र सस्या-४०४ । साइज -१२×११ई इन्च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६२० सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६० ।

विशेष-अष का मृत्य २७।) लिखा है।

- ३६१. तीसचौवीसीपूजा भाषा- वृन्दावन । पत्र सख्या- = ४ । साइज १२६४ = ६ इझ । मापा- हि दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १ = ७६ माघ सुदी ४ । लेखन काल- × । पूर्ण । वेष्टन नं० ४११ ।
- ३६२. तीसचौदीसीपूजा भाषा । पत्र सस्या-४ । साइज-१२४८ इस । सापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६०८ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेट्यन न० ४१० ।

विशेष-सपु पूजा है।

- देहरे. तेरहृद्वीपपूजा : ! पत्र सस्या-४२ । साहज-११ई×= दत्व । माणा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । रोधन काल-स० १६९६ । पूर्ण । वेष्टन न० ८३७ ।
- ३६४. दशलक्ण जयमाल रद्धू । पत्र गीतपा— । साइज-११×४ १४ । मारा-धनवंश । धियर -प्जा । रचना सात-४ । धीपन गात-४ । पूर्ण । बेटन नं ० ७ ।

विशेष—सस्कृत में श्रयं दिया हुन्ना है । तीन प्रतियां श्रीर हैं।

३६४. दशलत्त्णजयमाल-भाव शर्मा। पत्र सल्या-६ । साइज-१०४४ इश्व । माषा-प्राकृत । विषय-पूजा। रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४४ ।

विशेष-- एक प्रति श्रीर है।

- ६६६. दशलत्त्रणजयमाल । पत्र सख्या-२ । साहज-११ई्रै×५ हश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४८१ ।
- ३६७. दशलच्रापूजा सुमतिसागर । पत्र संख्या –११ । साइज –१२४६ इस माषा –सस्कृत । विषय पूजा । रचना काल × । लेखन काल सं० १७१६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४७ ।
- ३६८. दशलत्तापपूजा । पत्र सस्या-१४ । साइज-११६८ इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३० ।

विशेष—पूजा में केवल जल चढाने का मत्र प्रत्येक स्थान पर दिया है। श्रन्त में ब्रह्मचर्य धर्म वर्णन की जयमाल में श्राचार्यों का नाम भी दिया गया है।

- ३६६ दशलज्ञाचापन पूजा । पत्र सख्या-२७ । साइज-११×४ इच । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६२६ । पूर्यो । वेष्टन नं० ६४= ।
- ३७०. द्वादशांगपूजा । पत्र सरूया-६ । साइब-७×६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ११४३ ।
- ३७१. देवगुरूपूजा " । पत्र सख्या-३ । साइज-१३×४६ इद्ध । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४७ ।
- ३७२ देवपूजा । पत्र संख्या-७। साइज-१०३×१ इन्न । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×।पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४।
- ३७३. देवपूजा । पत्र सख्या-२ से १४ । साइज-११×५ इत्त । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६५२ ।
- ३७४. देवपूजा । पत्र सख्या- । साइज-१२४५ इंच । सावा-सस्कृत । विषय-पूजा । स्चना काल- । लेखन काल- । पूर्ण विष्टन न० ८३६ ।
- ३७४. देवपूजा : ' । पत्र सल्या-४ । साइज-६ ई×४५ दश्च । मापा-सस्कत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८८२ ।

पूजा एवं प्रतिष्ठादि स्त्रन्य विधान]

३७६. देवपूजा · । पत्र सख्या-७ । साइज-१०ई-४५ इख । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । स्वना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ⊏=३ ।

३७७. देवपूजा : "। पत्र सल्या-४ । साइज-६×४६ इस । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न॰ ==४ ।

३७८. धर्मचक्रपूजा—यशोनंदि । पत्र सल्या-२३ । साइज-१०ई×४ई इश्च । साषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३२६ ।

विशेष - प० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३७६. नन्दीश्वरपूजा '। पत्र सल्या-३। साइज-११४४ इख । भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० १०४२।

विशेष -- जयमाला प्राकृत साषा में है ।

३८०. नन्दीश्वर उद्यापन पूजा '' । पत्र संख्या- १ । साइज ११६ ४७ इब्च । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल- ४ । लेखन काल-स० १८३४ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४३ ।

विशेष-पत्रों के चारों श्रीर सुन्दर वेलें हैं।

३८१. नन्दीश्वरज्ञयमाल टीका : ""। पत्र सख्या-१४ । साइज-६४४३ इन्च । मागा-प्राकृत हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८४१ श्राषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेश्टन न० १४६

विशेष - श्री श्रमीचन्द ने जोवनेर के मन्दिर में श्रतिलिप की थी।

३८२. नन्दीश्वरविधान । पन्न संख्या-२३। साइज-१०४७ इख-। माषा-हिग्दी। विषय-

विशेष-विजेताल लुहाडिया ने प्रतिलिपि कर बधीचन्दजी के मन्दिर चढ़ाई भी।

रूद. नन्दीश्वरत्रतिधान । पत्र सख्या-४०। साइज-११र्×१२ इस । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। स्वना काल-×। लेखन काल-स० १६२६। पूर्ण। वेष्टन न० ५००।

विशेष-पूजा का नाम पश्चमेरू पूजा भी है।

३८४. नवप्रहिनवारणिजनपूजा '" । पत्र सख्या-७। संहज-७३४७२ ६८। साषा-प्रंत्रा । विषय-पूजा । रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ६६७।

्र्यः नांदीमंगलिधान " " । पत्र संरव्या-२ । साइज-११४६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । रचनाकाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेध्टन न० १०६१ ।

३८६. नित्यपूजासंग्रध । पत्र संख्या-१६८ । साइज-११५ \times १६ इच । मापा-हिन्दी सस्कत । विषय-पूजा । रचना काल- \times । लेखन काल- \times । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ६२१ ।

विशेष -- नित्य नैभित्तिक पूजार्थी का समह है।

३८७ , नित्यपूजा । पत्र सरूया-४१ । साइज-१०४४ इञ्च । मापा-सस्हत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७०६ ।

३८८. नित्यपूजा । पत्र सख्या-३७ । साइज-१०६४८ इब्च । मापा-सरकृत । विषय-पूजा। रचना काल-४ । जेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७०७ ।

विशेष--प्रतिदिन की जाने वाली पूजाओं का समह है।

३८ नित्यपूजा - । पत्र सख्या-२१। साइज-१२×१ इस । सापा-प्राकृत । विधय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ४२४।

- ३६० नित्यपूजापाठ । पत्र सख्या-२०। साइज-६ई×१ई इञ्च। माषा-सस्कृत। विषय-पजा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १६४६। पूर्ण। वेष्टन न० ५७०।
- ३६१ नित्यपूजासम्रह । पत्र सरुया-३१। साइज-११ई×५५ इख । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न • ४५६।
- ३६२. निर्वाणपूजा । पत्र संख्या-२ । साइज-६४७ इश्व । साषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन न०११२८ ।
- ३६३. निर्वाण्चेत्रपूजा । पत्र सख्या-२२। साइज-१२३४० इब्च। माषा-हिदी। विषय-पूजा। रचना काल-х। लेखन काल-х। पूर्ण। वेष्टन न० ४४५।
- ३६४. निर्वाणचेत्रपूजा-स्वरूपचन्द । पत्र संख्या-३३। साइज-१२ई×१ इच। माषा-हिन्दी। विषय-

विशेष-- २ प्रतियाँ घीर हैं।

- ३६४. पद्मावतीपूजा '। पत्र संख्या- । साइज-१०×३६ इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । स्वना काल- । लेखन काल- । पूर्ण । नेष्टन नं० १०५० ।
- ३६६ पचकल्याग्यकपूजा-पं० जिनदास । पत्र संख्या-४३ । साइज-१२४४ ई इंच । माषा-सस्कत । विषय -पूजा । रचना काल-सं० १६४२ फागुण सदी ४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।
 - ३६७. पंचकल्याग्यकपूजा सुधासागर। पत्र सख्या-२६। साहज-११×५ इन्न। मावा-सस्कृत।

विषय-पूजा । अचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३४२ ।

३६८. पचकल्याग्रकपूजा—पत्र सख्या—३६। साइज-११४४ई इंच। माषा—हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-स० १६३८। लेखन काल-४। पूर्ण । ब्रेष्टन न० ४६७।

३६६. पंचकुमारपूजा — जवाहरताता । पत्र सख्या-३ । साइज-१०ई×४ई इव । सापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४००. पचपरमेष्टीपूजा--यशोनिन्द् । पत्र संख्या ११४ । साइज-६×६ इत्र । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं १४१ ।

विशेष—तीन प्रतियां धीर हैं।

४०१. पचपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र संख्या-३४ । साइज-१०४४ ई इन्च । साषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १८६० । लेखन काल-४ । पूर्णे । वेण्टन न० ४४३ ।

विशेष--महात्मा सदास्रवजी ने माधोराजपुरा में अतिविषि की भी । पूजा की ६ अतियां श्रीर हैं ।

४०२. पंचमंगलपूजा—टेकचन्द् । पत्र संख्या-२१ । साइज-११×४ई इन्च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना क्राल-× । लेखन काल-सं० १६३४ । मूर्या । चेंद्रज्ञ नं० ४४८ ।

४०३. पंचमेरुपूजा—टेकचन्द् । पत्र संख्या-४३ । साहज-११४७ई इख । माषा-हिन्दी । विषयु-पूजा । रचना काल-सं० १६१० । लेखन काल-४ । पूर्ण ब्रेडिन नं० ४७७ ।

४०४. पंचमेरुपूजा-भूधरदास । पत्र संख्या-४ । साइज-११×१ हुन्त । साषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ इ ।

विशेष-चानतराय कृत श्रष्टाहिका पूजा मी है।

४०४. प्रतिष्ठासार संप्रह-वसुनंदि । पत्र संख्या-१३४ । साझ्ज-१३४५ इच् । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्ट्रन नं० ३१६ ।

विशेष--हिन्दी अर्थे सहित है। प्रन्य का प्रारम्मिक माग निम्न प्रकार है-

प्रारम्म — विद्यानुवादसन्सूत्राद्वाग्देवीकत्यतस्तथा ।

चन्द्रप्रह्मप्तिसंह्याच्च सूर्यप्रह्मप्तिमं यतः ॥४॥

तथा महापुराणार्था छावकाष्ययनश्रुतान् ।

सार संगृद्ध चन्नयेहं प्रतिष्ठासार संग्रहे ॥४॥

हं वसनंदि नामा त्राचार्य हूं सो प्रतिष्ठासार संग्रह नामा जो ग्रंथ ताहि कहूं गो-कहा करिके सिद्धे श्रिरिहेत

शेस जो वर्द्ध मान पर्यन्त जिन प्रवचन कहतां शास्त्र ग्रुष कहतां सर्व साधु यातें नमस्कार करि के केंसे छहें वे सिद्ध, सिद्ध भयो है श्रात्म स्वरूप जिनकें ""।

४०६. पल्यविधानपूजा-रत्ननंदि । पत्र संख्या-६ । साइज-१३४६ ई इन्च । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेथ्टन नं० ४३१ ।

विशेष-पूजा की एक प्रति श्रीर है।

४०७. पार्श्वनाथ पूजा : "। पत्र संख्या-२। साइज-१२×५ ई इ छ। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ११४१।

४०८ पुष्पांजलित्रतोद्यापन : । पत्र सस्या-११। साइज-६×६५ इन्च। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ५४२।

विशेष--- बृहत् पूजा हैं।

४०६. पूजनिकयावर्णन—वाबा दुलीचन्द् । पत्र सख्या-२०। साइज-१२×०ई इम्च। मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ५१८।

४२०. पूजासंग्रह : । पत्र सख्या-१०० । साइज-७३ ४५ ई इच । भाषा-हिदी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

विशेष--चतुविशति तथा अन्य नित्य नेमिचिक पूनाओं का संमह है। पूजा समह की तीन प्रतियां श्रीर है।

४११. पूजासंग्रह । पत्र सरूया-३८ । साइज-१२×६ दे इस । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । स्वना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ६०२ ।

विशेष-इसमें देव पूजा तथा सरस्वती पूजा है।

४१२. पूजासंग्रह " " " " । पत्र सख्या-६ | साइज-१२× दश्व । माषा - सस्कत-हिर्दा । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० =१४ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, दशलक्षण, रतश्य, सोलहकारण, पचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीप पूजाएँ हैं। पूजा समह की ४ प्रतियां श्रीर है।

४१३ पूजासंग्रह " ' । पत्र सख्या-२७१ | साइज-६×६ इश्व । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ३७ पूजाऐं तथा निम्न पाठ है—
(१) तत्वार्थ सूत्र (२) स्वयम् स्तोत्र (३) सहस्त्रनामस्तोत्र ।

४१४. पूजा सम्रहः ः ः । पत्र सख्या-३३। साइज-१३×६ई इम्ब। माषा-संस्कृत । विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ४३२।

विशेष—इसमें पल्यविधान, सोलहकारण, कंजिका व्रतीधापन श्रादि पूजार्ये है ।

४१४. पूजासंग्रह " " । पत्र संख्या-२६ । साइज-११४६ इस । साषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३७ ।

सुखसपत्तिपूजा, जिनगुणसंपत्तिपूजा, लघुमुक्तावलीपूजा का समह है।

- ४१६. ३ क्तामरपूजा—उद्यापन—श्री भूषण् । पत्र सख्या-२४ । साइज-११४६ इख्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८७८ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं २४६ ।
- ४१७. रत्नत्रयज्ञयमाल "" । पत्र सल्या-२ । साइज-१२४५ ई इच । माषा-हिन्दी (गघ)। विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८८७ ।
- ४१८. रत्नत्रयज्ञयमाल । पत्र सल्या-३। साइज-६×५ इख । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० ८६८।
- ४१६. रत्नत्रयपूजा : : । पत्र सख्या-१० । साइज-११×६ ई इब्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ४२१ ।
- ४२०. रत्नत्रयपूजा " "। पत्र संख्या-४ । साइज ८१० हुँ ४४ इख्च । माषा-सस्कृत । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं ० १०४३ ।
- ४२१. रत्नत्रयपूजा भाषा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२२ । साइज-११×१० । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । केलन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन म० ४३६ ।
- ४२२. रत्नत्रयपूजा भाषा ' ' । पत्र सख्या-३६ । साइज-११४७ है इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १९३७ मादबा सुदी ३ । पूर्ण । वेण्टन नं० ४१४ ।
- . ४२३. रत्नत्रयपूजा भाषा—पत्र सख्या-३ से ५४। साइज १०४६ इख । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६३७ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन न० ४२४ ।

विशेष--- प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं। एक प्रति श्रीर है किंतु वह भी श्रपूर्ण है।

४२४. रोहिणोत्रतोद्यापन--कृष्णसेन तथा केसबसेन । पत्र संख्या-३१ । साइज-१०ई×४३ इद्य । साषा-संस्कृत । विषय-पूजा ! रचना फाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६३ ।

४२४. जिंचिचिधानच्यापनपूजा ' "। पत्र संख्या-७।साहज-८४६ इत्र । भाषा-सस्कृत। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं० ४३४।

४२६. बृहत्शांतिकविधान "। पत्र संख्या-१३। साइज-१०ई/xx इच। मापा-सस्कृत। विषय -विधान। रचना काल-x। सेखन काल-स० १६११। पूर्ण। वेष्टन नं० ४४०।

बिरोष--- मुघालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४२७. विद्यमान वीस तीर्थंकर पूजा । पत्र सल्या-७। साहज-१०ई×१ ईच। माषा-हिन्दी। रचना काल-×। खेलन काल-×। खपूर्ण। वेष्टन न० ८६८।

े ४२८ विद्यमान वीस तीर्थंकर पूजा—जौंहरीलाल । पत्र संख्या-४६ । साहज-१४ई-४०ई हम । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६४६ श्रावण झदी १४ । । लेखन काल-सं० १६७१ । पूर्ण । बेप्टन ने०४०० ।

४२६. विमलनाथपूजा । पत्र सल्गा-१। साइज--×६ इस । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६२ ।

४३०. विमलनाथपूजा । पत्र संस्था-११। साइज-१०५८६ इख। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं• १०६=।

४३१ शांतिचकपूजा । पत्र सस्या-३ । साइज- १३×४ई इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा | रचना काल-× | लेखन काल-× | पूर्ण | वेष्टन न० ४८५ ।

४३२. शास्त्रपूजा—द्यानतराय । पत्र सख्या-३ । साइज-१३×६६ इन्च । माषा-हिदी । विषय-पूजा । रचना कोल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । बेप्टन नं० ६६२ ।

४३३. श्रुतोद्यापनपूजा । पत्र संख्या~⊏ । साइज-१०ई×७ई इख । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४१४ ।

विशेष-लिपि बहुत सुन्दर हैं।

४३४. घोडशकारणमंडलपूजा—श्राचार्य केसबसेन। पत्र रूख्या-४०। साइज-११×५ इझ। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-सं० १८७८ व्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन न० ३३३।

४३४. पोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा-विश्व झानसागर । पत्र सल्या-३२ । साइज-१०४४ दे इस । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं ० ३३४ ।

४३६. षोडशकारगाजयमाल - '। पत्र सस्या-१०८। साइज-११×७६६६। भाषा-हिन्दी।

विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७७ ।

विशेष--रतनत्रयज्ञयमाल (नथमल) तथा दशलचणजयमाल मी हैं।

४३७. घोडशकारगाजयमाल—रइधू । पत्र सख्या-२२ । साइज-११४५ इख । माषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८७६ मादना सुदी ४ । पूर्ण । नेष्टन नं० ४ ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने इसी मन्दिर में प्रतिलिपि की थी । गायाओं पर संस्कृत में उल्या दिया हुन्ना है । एक प्रति श्रीर है ।

४३८. षोडशकारणजयमाल "। पत्र संख्या-७। साइज-१०३×५ इच। मापा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । नेष्टन न० ४३४।

विशेष-- रतत्रय तथा दशलक्य जयमाल भी है।

४३६. षोडशकारगाजयमाल । पत्र संख्या-२०। साइज-१०ई ४४ई इञ्च। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ३३०।

विशेष-दो प्रतियां श्रीर हैं।

४४०. **पोडशकारणपूजा : ।** पत्र सख्या-१६ । साइज-१४४७ ई इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३६ ।

४४१. षोडशकाररापूजा । पत्र संख्या-२ । साइज-११ई×५ इश्व । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना नाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४८२ ।

विशेष-प्रति एक श्रीर है।

४४२. सम्मेदशिखरपूजा-रामचन्द्र। पत्र सख्या-७। साइज-११ई-४५ई इष्ट्य। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं० १७१।

४४३. सम्मेदशिखरपूजा । पत्र संख्या-३१। साहज-=ई×६ई इंच। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-х। लेखन काल-स०१६२४। पूर्ण । वेष्टन नं०४४२।

४४४. सरस्वतीपूजा · · · · । पत्र संख्या-१० । साइज-५×१० इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । स्वना काल-× । त्रिवन काल-× । पूर्य । वेष्टन न • ११२३ ।

विशेष-अन्य पूजाएँ भी हैं।

४४४. सरस्वतीपूजा भाषा-पन्नाताल । पत्र संख्या- १ । साइज-१४×- रे इध्य । मापा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६२१ व्येष्ठ सुदी । लेखन काल-х । पूर्ण । वेपन नं० ४०६ ।

४४६. सहस्रगुरापूजा - भ० धर्मकीर्ति । पत्र संस्था-७३ । साइज-११६×१६ १वा । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७६५ वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेन्टन न० ३४८ ।

विशेष-सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई भी ।

४४७. संहस्त्रनामगुणितपूर्जा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सर्व्या-१०४ । साहज-=×१ इन्न । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७१० कार्तिक बुदी = । पूर्ण । विष्टन न० ३२ = ।

४४८. सिद्धचकपू जा—धानतराय । पत्र संस्था-६ । साईज-१२४५ ई इच । मापा-हिन्दी । विधय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३२ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

४४६. सुगन्धदशमीपूजा '''। पत्र संख्या-=। साइजं-१२ं×६५ देश। मापा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० ६२६।

४४०. सोत्तहकारणपूजा - टेकचन्द् । पत्र सस्या-७० । साइज-१०४६ १६व । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६३४ मादना द्वदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ११४ ।

विशेष—यो प्रतियां श्रीर हैं।

४४१. सोलहकारणपूजा """ '। पत्र सल्या-१३। साहज-११४६ इच । मापा-हिग्दी। विषय-पूजा। रचना काल-४। सेखन काल-४। पूर्ण। वैष्टन नं० ४३४।

विशेष-चानतराय कत रत्नत्रय, दशलक्षण, पचमेर तथा श्रदाई द्वीप की पूजा भी है।

४४२. स्रोतहकाररापूजा—द्यानंतराय । पत्र संस्थानः । साहज-६४६ ईच । माषा-हिन्दी । विवयन पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्ठन न० ४३६ ।

विशेष — दशलक्या पूजा भी है।

४४३ सोलहकारण भावना """ । पत्र सख्या-१४ । साइजे∸११४५ है इत्र । साधा-हिन्दी (वर्ष) । विषय -पजा । रचता काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्ठन नं० ⊏२० ।

४४४. सोलहकारगा जयमास ' "। पत्र सस्या-२। साइज-६४० इस। भाषा-प्रास्ति। विषय-पूजा। रचनाकास-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वैष्टन नं० ११५०।

विशेष-एक प्रति और हैं।

४४४. ्सोलहकारण विशेष पूजा ' '। पत्र संख्या-१२ । साइज-११४५ इखा माषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३४ ।

४४६. सौख्यत्रतोद्यापन-प्रात्तयराम । पत्र संख्या-१४ । साइज-६८१ इच । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन न० २७४ ।

विशेष-जयपुर में श्योजीलालजी दीवान ने प्रतिलिपि कराई ।

विषय-पुराण साहित्य

४४७. श्रीदिपुराण-जिनसेनाचार्थ। पत्र संख्या-३४६। साइज-१२४५ इश्व। माषा-संस्कृत। विषय-पुराण। रचना काल-४। कोखन काल-सं० १७८६ मंगसिर सुद्दी १०। पूर्ण। वेष्टन न० १३३।

विशेष—तीन तरह की प्रतियों का मिश्रय है। श्राचार्य पद्मकीर्ति के शिष्य छाजू ने प्रतिलिपि की घी। एक प्रति श्रीर है लेकिन वह श्रपूर्ण है।

४४८. श्रादिपुराग्-भिं सकलकीर्ति। पत्र सख्या-२०६। साइज-१९४५ इंच । भाषा-सस्कत। पिष्प-पुराग् । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८६० श्रासीज पुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ ।

षिरोष-श्री मोतीराम जुहाडिया ने प्रतिलिपि कराई थी । १ से १३१ तक के वत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं।
एक प्रति भीर है।

४४६. प्रति नं० २। वत्र सरूया-२४१। साहज-१९%६ इञ्च। लेखन काल-सं० १६७६ चैत सुदी ४। पूर्ण | वेष्टन नं० २५३।

विशेष-चंपावती (चाफसू) में प्रतिलिपि हुई थी।

४६०. झादिपुरास भाषा—दौलतराम । पत्र सस्या-६०६ । साइज-१२४७ इच । भाषा-हिन्दी गण । रचना काल-स॰ १८२४ । लेखन काल-सं० १८१४ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । नेष्टन नं० ६४३ ।

विरोष-४ प्रतियां श्रीर हैं लेकिन वे अपूर्ण हैं।

ì

४६१. प्रति नं०२। पत्र संख्या-२०१ से १३१०। साइज -१०३४७ इच । लेखन काल-सं० १६२४ भासोज मुदो ११। अपूर्य । वेष्टन न० ७१३।

विशेष-प्रित स्वयं ग्रन्धकार के हाथ की लिखी हुई प्रतीति होती हैं, नगह नगह संशोधन हो रहा है।

४६२. उत्तपुराण-गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-३२४ । साहज-१२४७ इस । मापा-स्रत । ।वषय-पुराण । रचनाकाल-४ । लेखन काल ४ । पूर्ण । वेष्टन न० २५८ ।

विशेष-- २ प्रतियां श्रीर हैं।

४६३. उत्तरपुराण—खुशालचन्द् । पत्र सख्या-५४४ । साइज-१२६५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-स॰ १७६६ । लेखन काल-सं० १८३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४२ ।

विशेष — दूसरी २ प्रतियां श्रीर हैं श्रीर वे दोनों ही पूर्ण हैं।

४६४ नेमिन थपुराण — ब्रह्मनेमिद्त्त । पत्र सख्या-१७४ । साइज-११×४ दे श्व । माषा-सस्कत । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६४४ मादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १२= ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति श्रपूर्ण है । ३ प्रतियां श्रीर हैं । प्रन्य का दूसरा नाम हरिवश पुराण भी है ।

४६४. पदापुराण भाषा- खुशालचन्द् । पत्र संख्या-३४४। साइज-१०ई/४५ इब । भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण । रचना काल-सं० १७८३ । लेखन काल-स० १४५२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है लेकिन वह श्रव्णे हैं।

४६६ पद्मपुराग भाषा--पं० दौलतराम । पत्र सल्या-२ से ४१७ । साइज-१४×६ई इञ्च । माषा-हि दी । रचना काल-स० १⊏२३ । लेखन काल-× । ऋपूर्ण । वेष्टन न० ६४० ।

विशेष - २ प्रतियां धौर हैं लेकिन वे मी अपूर्ण हैं।

४६७. पागडवपुरागा—बुलाकीदास । पत्र सल्या-२०२ । साइज-११×६ ई इम्र । माषा-हिन्दी । विषय-पुरागा । रचना काल-स० १७५४ । लेखन काल-х । पूर्गा | वेष्टन नं० ६४४ ।

विशेष--- एक प्रति श्रीर लेकिन वह श्रपूर्ण है।

४६८. पायडवपुराण-भ० शुभचन्द्र । पत्र सख्या-२६४ । साइज-११ई×४ इख । माषा-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १६०८ । लेखन काल-स० १७६७ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन नं० ११८।

विशेष — हंसराज खंडेलवाल की स्त्री लाही ने प्रन्य की प्रतिलिपि करवाकर प० गोरघनदास को मेंट की थी।

४६६. पुराणसारसमह—भ० सकत्तकीर्ति । पत्र सख्या २११ । साइज-१२×६ई इस । माया-सस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८२३ चैत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न∙ २४६ ।

४७०. भरतराज दिग्विजय वर्णन भाषा-पत्र संख्या-४६ । साइज-१२४४ है इन्त । मापा-हिन्दी गध । निषय-पुराण । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७३८ श्रासोज सदौ ८ । पूर्ण । वेट्टन नं० ६८० ।

विशेष—जिनसेन। चार्य प्रणीत श्रादि पुराण के २६ वें पर्व का हिन्दी गद्य है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है। है देव तुम्हारा विहार कें समय जाणुं कर्म रूप वैरी को तर्जना कहता हर करतो संतो ऐसी महा उद्धत सबद करि दिसां का मुख्य पूर्या है। जाने ऐसी परगढ़ नगांश को टकार सबद मगवान के विहार समय पग पग के विषे हो रहे। (पत्र सख्या २३)

४७१. वद्ध मानपुराण भाषा—पं० केशरीसिंह। पत्र सख्या—२०३। साइज-११६४५६ ईच। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १८७३ काग्रण सुदी १२। लिखन काल-स० १८७४ चेत वदी १४। अपूर्ण। वेष्टन न०६७८।

विशेष—७५ से ६४ तक पत्र नहीं हैं। प्रन्य का आदि अन्त माग निम्न प्रकार है—
प्रारम्म —जिनेश विश्वनाथाय धनतग्रणसिंधवे।
धमेचकभृते मूर्डा श्रीमहावीरस्वामिने नम.॥१॥

श्री चर्ड मान स्वामी कू हमारी नमस्कार ही । कैसेक हैं वर्ड मान स्वामी गणधरादिक के ईस हैं, श्रर ससार के नाम हैं श्रर श्रनन्त ग्रणन के समुद्र है, श्रर धमें चक्र के धारक हैं ।

गद्य का उदाहरण-

मात्र ही विकिया कू नहीं प्राप्त होय है ॥७॥ तहां पोछे वह रूद्र जिनराज कूं श्रचलाकृति जाणि करि लब्जायमान सयायका श्राप ही या प्रकार जिनराज की स्तुति कि वे कूं उद्यमी होता सया।

श्रन्तिम प्रशस्ति-

नगर सवाई जयपुर जानि ताकी महिमा श्रिषक प्रवानि ।
जगतिसंह जह राज करेह गीत कुछाहा सुन्दर देह ॥६॥
देस देस के श्रावे नहीं, मांति मांति की वस्ती तहां ।
जहां सरावग वसे श्रनेक केईक के घट मांही विवेक ॥०॥
तिन में गीत छावडा मांहि, बालचद दीवान कहाहि ।
ताके पुत्र पांच ग्रेणवान, तिन में दोय विरुगत महान् ॥=॥
जगवंद रायचद है नाम स्वामी धर्मवती क्षीने काम ।
राजकाज में परम प्रवीन, सधर्म ध्यान में शुद्धि सुचीन ॥६॥
सघ चलाय प्रतिष्ठा करी, सब जग में कीर्ति विस्तरी ।
धोर श्रधिक उत्मव करि कहा रामचंद संगही पद छहा ॥१०॥
त दीवान जयचंद के पांच, सबकी धरम करम में सांच ।

तव रूचि उपजी यह मन माहि, वीर चिरत की मापा नाहि॥१२॥ जो याकी श्रव मापा होय, तो यामे समुक्ते सहु कोय । यह विचार लिखके दुधिवान, पिटत केशरीसिंह महान ॥१३॥ तिन प्रति यह प्रार्थना करी, याकी करी वचिनका खरी। तव तिन श्रर्थ कियो विस्तार, प्रथ संस्कृत के श्रद्धसारी॥१४॥ यह खरहो कीनी तव तिने, ताकी महिमा को किव मने । पुनि व्याकरण मोध दुधिवान, वसतपाल साहवडा जान ॥१४॥ ताने याको सोधन कीन, मूलप्रंथ श्रधुसारि सुवीन । दुधि श्रद्धसारि वचिनका मयी, ताकू ग्ररजन हिसयो नहीं॥१६॥

इति श्री मट्टारक सक्लकीर्ति विरचिते "श्री वर्द्ध मान पुराण संस्कृत ग्रंथ की देस माषा मय की वचनिका पित केश्वासीसिंह कृत संपूर्ण"। मिती चैत चुदी १४ शनिवार स० १=७४ का मैं प्रथ लिख्यो।

४७२ वर्द्धमानपुराग्रसूचिनका । पत्र संख्या-१०। साइज-१०४५ इस्र । माषा-हिन्दी। विषय-पुराग्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६७६ ।

४७३. बद्धिमानपुराण भाषा । पत्र सख्या-७ । साइज-११×७५ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं ० ८४६ ।

४७४ शान्तिनाथपुरागा-- श्रामा । पत्र सख्या-६८ । साइन-१०४४ है इच । माषा-सस्कृत । विषय-पुरागा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८३४ श्रापाद सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १२६ ।

४७४. शान्तिनाथपुराग — सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१६६ । साहज-११४५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराग । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं ० १३० ।

विशेष--- मन्य सस्या श्लोक प्रमाण ४२७५ है। एक प्रति स्वीर है।

४७६. हरिवंशपुरागा-जिनसेनाचार्य। पत्र सल्या-२४४। साइज-११ई४५६ इस्र। मापा-सस्कृत । विषय-पुरागा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष-प्रति नवीन है। २ प्रतियां श्रीर है।

४७७. हरिवंशपुराण-पं० दौलतराम । पत्र सख्या-५३० । साइज-११×ँ६ है इस्र । माण-हिन्दी । रचना काल-स०१=२६ । लेखन काल-स०१=३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

-विशेष — रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी । दो प्रतियां श्रीर हैं ।

४७८. हरिवंशपुराग्-खुशालचन्द्। पत्र सख्या-१६१। साइज-११र्द्रे×४र्द्र इस्र । भाषा-हिन्दी। विषय-पुराग् । रचना काल-स० १७८० वैशाख सुदी ३। लेखन काल-स० १८३१ फाग्रग् बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन् न० ६४४।

विशेष—तीन प्रतियां श्रीर हैं।

विषय-काव्य एवं चरित्र

४७६. उत्तरपुराण—महाकिव पुष्पदंत । पत्र सख्या-३२४ से ८३८ । साइज-१२४५ इश्व । भाषा-श्रपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-х । लेखन काल-सं० ११५७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ११७ ।

विशेष-३२४ से पूर्व श्रादि पुराग है।

प्रशस्ति—स० १५५७ कृर्तिकमासे शुक्लपचे पूर्यामास्यां तिथी ग्रुक्ति श्रधो श्री घनौषेन्द्रगे श्री चन्द्रप्रम चैत्यालये श्री मूलसंघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनिद्देवा तत्पट्टे म० श्री देवेन्द्रकीर्ति देवा तत्पट्टे म० श्री विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे म० श्री मिल्लभूषण देवा तस्य शिष्य म० महेन्द्रदत्त, नेमिदत्त तैः मट्टारक श्री मिल्लभूषणाय महापुराण पुस्तकं प्रदत्तः।

- ४८०. फलावतीचरित्र—भुवनकीित्त । पत्र सख्या-४ । साइज-१०५×४६ इञ्च । माषा-हिन्दी। विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्व । वेष्टन न० १०६४ ।
- ४८१. गौतमस्वामीचरित्र-श्राचार्य धर्मचन्द्र । पत्र सख्या-१२ । साइज-१२×६ ई इझ । माधा-संस्कृत । त्रिषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६२२ । लेखन काल-सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २१३ ।
- ४८२. चर्द्रप्रभचरित्र किंव दामीद्र । पत्र सल्या-१२३ । साइज-११४६ इध्च । माधा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १३१ ।

विशेष-- ५२३ से धारो के पत्र नहीं हैं। प्रति नवीन है। प्रत्य की पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति महलस्रिशीभूषण तत्पट्टे गच्छे मट्टारक श्री धमचन्द्र शिष्य किव दामोदर विरचिते श्री चन्द्रप्रमचित्रि चन्द्रप्रमक्तेवलज्ञानोत्पत्ति वर्णनो नाम द्वाविशतितम सर्गः।

४८३ चन्द्रप्रभचरित्र — वीरनदि । पत्र संख्या-११२ । साइज-११४१ इष्च । मापा-सस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८६६ माघ बुढी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० २३० ।

विशेष -- फतेहलाल साह ने प्रतिलिपि कराई भी । काव्य की १ प्रति श्रीर है ।

४८४. चेतनकर्मचरित्र—भैया भगवतीदास । पत्र सख्या-१४ । साइज-१०४४ हु इच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३७ ।

विशेष-- प्रन्य की ३ प्रतियां श्रीर है।

४८४. जम्बूस्वामीचरित्र—महाकिव वीर । पत्र सख्या-११४ । साइज-१२×४ है इस । माषा-श्रपत्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-सं० १०७६ माह सुदी १० । लेखन काल-सं० १६०१ झसाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० २२६ ।

्विशेष—ग्रन्थकार एवं लेखक प्रशस्ति दोनों पूर्ण है। राजाधिराज श्री रामच द्रजी के शासनकाल में टोहागढ में आदिनाथ चैत्यालय में लिपि की गई थी।

खंडेलवाल वशोत्पान साह गोत्र वाले सा० हेमा भागी हमीर दे ने शतिलिपि करवाकर मडलाचार्य धर्मचन्द्र को श्रदान की थी । लेखक प्रशस्ति निम्न हैं।

सवत् १६०१ वर्षे श्राषाद सुदी १३ मोमवासरे टोडागदवास्तव्ये राजाधिराजरावश्रीरामचन्द्रविजयराव्ये श्री ध्रादिनायचेत्यालये श्री मूलस चे नधाम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये महारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पष्टे म० श्रुमचन्द्रदेवा तत्पष्टे म० श्रुमचन्द्रदेवा तत्पष्टे म० श्रमाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मडल श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे जिनपूजापुरन्दरान गुणाश्रयोग्नपति. साह महसा तद्मार्या सहागदें तत्पुत्र साह मेघच द्र द्वि० कीजू। साह मेघचन्द्र मार्या मार्याकदे द्वितीय नवलादे। तत्पुत्र साह हेमा द्वि० साह होरा तृतीय साह छाजू। साह हेमा मार्या हमीर दे तत्पुत्र वि० मीखा। साह हीरा मार्या हीरादे। साह कीजू मार्या कीतुकदें तत्पुत्र साह पदारण द्वि० खीवा। सा० पदारम मार्या पारमदे तत्पुत्र सा० धनपाल। साह खीवा मार्या खिवसिरी तत्पुत्र द्वं गरसी एतेषा मध्ये सा० हेमा मार्या हमीर दे एतत् जन्द्रस्वामीचिरित्र जिखाप्य रीहिणांव्रत उद्योतनार्थं मडलाचार्या श्री धर्मचन्द्राय प्रदत्तं।

४८६ जम्बूस्वामीचरित्र-जि जिनदास । पत्र संख्या-३१ । साइज-११ई×४ई इश्च । माषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २२७ ।

विशेष-- प्रशस्ति श्रवूर्ण है । एक प्रति श्रीर है ।

४८७. जम्बूस्वामीचरित्र - पाँडे जिनदास । पत्र संख्या-३० । साइज-१०२४४ इब्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६४२ मादवा बुदी ४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८० ।

विशेष-- अकवर के शासनकाल में रचना की गई थी। दो तरह की लिपि है।

४८८. जिनद्त्तचरित्र - गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-४८ । साइज-१०१ ४४१ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन न० २२० ।

विशेष-- प॰ नगराज ने प्रतिलिपि की थी । २ प्रतियां श्रीर हैं ।

४८६. जिएयत्तचरित्त (जिनद्त्तचरित्र)—पं० लाखू । पत्र संख्या-१०० । साइज-११३ ४५ इस । माषा-श्रपश्चंश । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १२७४ । लेखन काल-स० १६०६ मंगिसर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२१ ।

विशेष—स॰ १६०६ मंगिसर सुदी ४ आदित्यवार को रणथमीर महादुर्ग में शान्तिनाथ जिन चैत्यालय में सलेमशाह श्रालम के शासन के अर्न्तगत खिदिरखांन के राज्य में पाटनी गीत्र वाले साह श्री दूलहा ने प्रतिलिपि करवाकर श्राचार्य लिखत कीर्ति को भेंट की थी।

४६०. गायकुमारुचरिए (नागकुमारचरित्र)—महाकिव पुष्पदन्त । पत्र सख्या-६६ । साइज-५१ ४५ देहन । भाषा-ग्रपमंश । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १५१७ वैसाख सुदो ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१२ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सं० १५१७ वर्षे वंसाख सुदी ५ श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे मट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभवन्द देवा तत्पट्टालकार मट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा । शिचणी वाई मानी निमित्ते नागकुमार पंचमी कथा लिखाप्य कर्मक्य निमित्ते प्रदत्तं ।

४६१ प्रति नं०२। पत्र सरूया-६०। साइज-१०ई×१ इख। लेखन काल-सं० १५२ प्रावण युदी १। पूर्ण । वेप्टन नं० २३४।

प्रशस्ति—सवत् १५२ वर्षे श्रावण युदि १ युघे श्रवणनत्तत्रे सुमनामायोगे श्री नयनवाह पत्तने सुरत्राण श्रलाव-दीनराज्यप्रवर्ष माने श्री म्लासंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पणनिद देवा तत्पट्टे म० श्री शुमचन्द्र देवा तत्पट्टे मट्टारक जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य जैनन्दि श्रात्म कर्म स्पार्ध निमित्ते ६८ णायपुमार पंचमी लिखा-पितं । सटेलवाल वंशोत्पन्न पहाद्या गोत्र वाले श्ररजन मार्या वेल्ई ने प्रतिलिपि क्साई ।

४६२. द्विसंधानकाव्य सटीक-मृलकत्ती-वनंजय, टीकाकार नेमिचन्द्र। पत सन्या-१८६। साहज-१४४६ ई इन्च । साया-मंस्टन । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेवन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १४ ।

अतिम पुष्पिका—इति निरवधविद्यामंडनमंडितपिडितमडलीमंडितस्य पटतम्चकवितेन शीमत्विनयचन्द्र— पिडितस्य ग्रुरोरतेनासिनो देवनदिनाम्न शिष्येण सक्लक्लोद्भवचारुचातुरीचिद्भकाचकेरेण नेमिच हेण विरिचतायांद्विसंघान कविर्धनजयस्य राघव पांडवीयापरानमकाव्यस्य पदकोमुदीनां दधानायां टीकायां श्रीरामव्यावर्णे नाम श्रष्टाटश सर्ग ।

टीका का नाम पदकीपुदी है।

४६३ धन्यकुमार चरित्र--सकलकोत्ति । पत्र सख्या-४६ । साइज-११३४४ई इन्च । मापा-सस्तत । विषय-कान्य । रचना कोल-४ लेखन काल-सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन न० २३७ ।

प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे कार्तिक चुदी ७ रिववासरे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दा चार्यान्वये भट्टारक जशकीतिंदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री लिलत कीर्तिदेवा तत् शिष्य "व०" श्रीपाल स्वयं पठनार्थं गृहीत । लिलत चन्देरीगढ्दुर्गे वास्तव्य श्रक्वर पातिसाहि राज्ये प्रवतंते ।

४६४ धन्यकुमार चारित्र—न्न०नेमिद्त्त । पत्र सख्या-२० । साइज-१०ई×१ इस । मापा-सस्त्र । विषय- चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २३८ ।

विशेष-पारम्भ के पत्र जीर्थ हैं।

४६४ धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द्। पत्र स्ल्या-४०। साइज-१०४५ इञ्च। माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न० ६१६।

विशेषा-तीन प्रतियाँ श्रीर हैं।

४६६. प्रद्युम्नचरित्र-पत्र सरूया-१६० । साइज-६×८ इख । भाषा-हि दी । त्रिषय-चरित्र । रवना काल-×। लेखन काल-×। त्रपूर्ण । वेष्टन न० ११११ ।

४६७ प्रद्युम्नचरित्र -- पत्र सख्या---३४ । साइज-११ई×५ई इच । माषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-स॰ १४११ मादवा बुदी ४ । लेखन काल-स॰ १६०४ श्रासोज बुदी ३ मगलवार । पूर्णे । वेष्टन नं॰ ६१२ ।

विशेष—प्रद्युम्न चारेत्र की रचना किसी श्रम्रवाल व धुने की थी ! रचना की मापा एवं शैली श्रच्छी है । रचना का श्रादि श्रन्त माग निम्न प्रकार है—

प्रारम—सारद विशु मित किततु न हो ह, सर श्रासर पित वृक्तई को ह ।
सीस धार पणमई सरहती, ति हि कहुँ बुधि हो ह कत हुती ॥१॥
सबु को सारद सारद करह, तिस कउ अतु न कोऊ लह है।
जियावर मुखह लुणि गाय वाणि, सा सारद पणवहु परियाणि ॥१॥
श्रुटदल कमल सरीवरु वाहु, कासमीर पुरल (हु) निकाह ।
हस चढीकर लेखिण देह, कि सधार सरसई पमणे है॥३॥

सेत बस्त्र पदमवतीया, क्राह श्रलात्रिया वाजिह वीया। श्रागम जाणि देहु वहुमती पुखु दुइ जे पणवई सरस्वती ॥४!। पदमावती दड कर लेइ, जालामुखी चक्सरी देइ। अत्रमाइ रोहिणी जो सारु, सासण देत्री नवइ सधार ॥४॥ जिणसासण जो विषन हरेड, हाथ लकुटि लें ऊमो होइ। मवियहु दुरिउ हरइ श्रसरालु श्रगिवाणीउ पणउ खित्रपाल ॥६॥ चउवीसउ स्वामी दुख हरण, चउवीस के जर मरण। जिया चउवीस नउ धरि मोउ, करउ कवितु जह होइ पसाउ ॥७॥ रियमु श्रजित समउ तहि मयउ, श्रमिनदन चउत्यउ वर्च यउ । समति पदम प्रभू श्रवर सुपास, चंदणउ श्राठमउ निकास ॥=॥ सुविधु नवड सीतलु दस मयड, श्रर श्रेयसु ग्यारह जयड । वासपूज श्रक विमल श्रनतु, धमु सति सोलहउ पहू पहू त ॥ ॥ कु धु सतारह श्रव सु श्रत्यार, मल्लिनाय प्राणासी वार ! मुिषासुनत निमनिम वावीस, पास चीर महुदेहि असीस ॥१०॥ सरस क्या रसु उपजई घराउ, निस्याहु चित्त पज्सह तयाउ । सवतु चौदहरी हुई गये, ऊपर श्रधिक ग्यारह भये। मादव दिन पचह सो सारू, स्वाति नचन्न सनीरचर वारु ॥१२॥

मध्यमाग—प्रयुक्त रुक्मणी के यहा श्रापहुचे हैं किन्तु यह प्रकट न हो पाया कि रुक्मणी का पुत्र श्रागया। पुत्र श्रागमन के पूर्व कहे हुए सारे संकेत मिल गये हैं किंतु माता पुत्र की देखने के लिये श्रधीर हो रही है —

पण परा रूपिया चढह श्रवास, परा परा सो जोवह चोपास।
मोस्यो नारद क्याउ निरूत, श्राज तोहि घर श्रावह पूत ॥३८४॥
जे मुनि वयण कहे प्रमाण, ते सवई पूरे सहिनाण।
च्यारि श्रावते दीठे फले, श्रक्याचल दीठे पीयरे ॥३८४॥
स्की वापी मरी मुनीर श्रपय खगल मरि श्राये षीर।
तउ रूपिया मन विमंड मयंड, पते श्रह्मचारि तहां गयंड ॥३८६॥
नमस्कार तब रूपिया करह, धरम विरिध खूडा उचरह।
कारे श्रादरु सो विनंड करेह, कृष्य सिंघासणु वैसण देहु ॥३८७॥
समाधान पूछई समुभह, वह मूखंड २ बिललाई।
सखी बूलाह जणाह सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥३८८॥

जीवण करण उठी तिखिणी, सुहरी मयण श्रमी यमीणी। नाज न चुरह चून्हि धुधाह, नाह भूखउ २ चिललाह ॥२८१॥

श्रतिम-महसामी कउ कीयउ वखाणु, तुम पञ्चन पायउ निरवाणु ! श्रमाखाल की मेरी जात, पुर श्रमारी ए मुहि उत्तपाति ॥६७५॥ सध्यु जगगी गुगवह उर घरि सा महाराज घरह श्रवति । एख नगर वसते जानि, सू िपाउ चरित मह रचिउ पुरागः ॥६७६॥ सावय लोय वसहि पुर माहि, दह लक्षा ते धर्म कताइ। दस रिस मानइ दुतीया भेउ भावहिं चितह जीग्रेसरु देउ ॥६००॥ एह चित्तु जो वाचइ कोइ, सो नर स्वर्ग देवता होइ। हलु वह धन्में खपह सो देव, मुकति वरगण मागह एम्व ॥६०=॥ तो फुणिएणइ मनह धरि माउ, श्रमुम कर्म ते दूरिहि जा६। जो र वलागर माणुस क्वणु, ताहि कहु तू सह देव परदमणु ॥६ ७६॥ श्रह लिखि जो रि रिवयानइ साधु, सो सर होइ महा गुणरधु । जो र पदावइ ग्रुण किउ निलंड, सो वर पावइ कंचण सलंड ॥६८०॥ यहु चित्तु पु न मडारू, जो वर पदह सु नर महसार । र्ताह परदमणु तुही फल देह, सपित पुत्र अवर जसु होह ॥६=१॥ हउ बुधि ही सु न जायों केम्बु, श्रवर मातह ग्रयह न भेउ। पहित जखह नमु कर जोहि हीए। अधिक जए। लावह खोडि ॥६८२॥

॥ इति परदमरा चरित समाप्त ॥

४६८. पार्श्वपुराग्य—भूधरदास । पत्र सख्या-१०४ । साइज-१०३४४ इख । भाषा-हिन्दी (पदा)। विषय-कान्य । रचना काल-स० १०८६ । लेखन काल-स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४७ ।

विशेष- १६ प्रतियां श्रीर हैं।

४६६. प्रीतिंकरचरित्र--व्र० नेमिद्त्त । पत्र सख्या-२४ । साइज-१०१४५ इख । माषा -सस्कृत । विषय-चर्त्त । रचना फाल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० २१० ।

विशेष - अन्य प्रशस्ति अपूर्ण है।

४००. वाहुवित्तिदेव चरिए (वाहुवित्ति देव चरित्र)—पं० धनपात्त । पत्र सख्या-२६७ न साहज-११ई×४६ इस्र । माषा-ग्रपत्र श । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १४५४ वैसाय सुदी १३ । लेखन काल-स० १६०२ श्राषाद सुदी १ । पूर्ण । वेण्टन न० २५२ । विशेष—म थकार व लेखक प्रशस्ति पूर्ण है । लेखक प्रशस्ति का चित्तिम भाग इस प्रकार है —

एतेवां मध्ये हू दाहड देशे कछुवाहा राज्यप्रवर्तमाने श्रमरसर नगरेतिनामस्थितो धनधान्य चैत्यचैत्यालयादि सोभालकृत तत्रेव राज्य पदाश्रितौ राजशी सूजा उधरणयो राज्ये वसन सघही लाखा तेनेद बाहुविल । चरित्र लिखाप्य ज्ञानपात्र श्राचार्य धर्मायदर्च ।

४०१. भद्रवाहुचरित्र - स्त्राचार्य रत्ननिद् । पत्र संख्या-४३। साइज-१०४४ई ६०व। साषा-' संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७२० । पूर्ण । वेप्टन न० २५० ।

विशेष - एक प्रति श्रीर है ।

४०२. भद्रवाहुचरित्रभाषा—किशनसिंह । पत्र सख्या-२०२ । साइज-११×४२ इस्र । माषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १७८० । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन नं ० ६०८ ।

विशेष-पत्र ४५ के बाद निम्न पाठों का समह है जो सभी किशनसिंह द्वारा रचित है-

विषय-सूची	क्ती	रचना संवत्
एकावली वत कथा	किशन सिंह	×
श्रावक पुनि गुण वर्णन गीत	93	×
चौबीस दंडक	"	१७६४
चतुर्विशति स्तुति	77	×
गमोकार रास	77	₹ ७६ [,] ०
जिनमित गीत	"	×
चेतन गीत	"	×
गुरूमिक गीत	"	×
निर्वाण कांड भाषा	;;	, १७⊏३ समासपुर में रचना की
चेतन लौरी	.37	×
नागधी कया (रात्रि सोजन त्याग	ाकया) 🤧	१७७३ . च
लन्धि विधान कथा	77	१७८२ श्रागरे में रचना की गयी थी
		,

४०३. भविसपत्तपचमीकहा—धनपाल । पत्र सख्या—१३१ । साहत—११×४ ई इब्च । माषा— प्रपन्न रा । विषय—चरित्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेप्टन न०२१७ ।

श्लोक संख्या ३२०० ।

विशेष-- प्रन्थ की ३ प्रतियां श्रीर हैं । दी प्राचीन प्रतियां हैं ।

४०४ भविसयत्तचरिय-(भविष्यद्त्तचरित्र) श्रीधर । पत्र सख्या-१४४ । साइज-११ई४६ इच । माषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६६१ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २१४ ।

विशेष — राजमहल नगर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रथ रलोक संख्या १५०७ प्रमाण है।

४०४. प्रति न०२ -- पत्र सल्या-द१ | साइज-११४४ इञ्च | लेखन काल-स०१६४६ चेत्र सुदी ११ पूर्ण | वेष्टन न०२१४ |

प्रशस्ति—सवत् १६४६ वर्षे चेत्र सुदी ११ मगलतार अवावती नगरे नेमिनाथ चेत्यालये श्री मूलरांचे नद्यामाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकु दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनदिदेवा, तत्पट्टे महारक श्री श्रुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री धमेचन्द्रदेवा, तत्पट्टे महारक लिलतकीर्तिदेवा समस्त गोठि अवावती " खडेलवालान्वये मौबसा गोत्रे इदं शास्त्र घटापितं ।

४०६. प्रति न० ३—पत्र संख्या-७७। साइज-११×५ इस्च । लेखन काल-सं० १६०६। पूर्ण। वेष्टन नं० २१६।

विशेष--- कहीं २ कठिन शब्दों के श्रर्थ भी दिये हुए है।

४०७. भोजचरित्र—पाठक राजवल्लभ । पत्र सख्या-३८ । साइज-११×४ दे इस्र । माषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-गं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन न० २३४ ।

विशेष-प्रथ की श्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

श्री धर्मघोषगच्छे श्री धर्मसूरि स ताने स्वाच्वी पट्टो श्री महीतिलक सूरि शिष्य पाठक राजवल्लम कृते मोज विश्वि समाप्त । स॰ १६०७ वर्षे फागुण मासे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां तियो ग्रुक्तवासरे श्रलवरगढ मध्ये लिखितं ।

४०८ महीपालचरित्र—मुनिचारित्र भूपण्। पत्र संख्या-५४। साइज-१०१४४ ईच। माषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचनाकाल-४। लेखन काल ४। पूर्ण। वेष्टन न० २११।

विशेष--श्लोक सल्या-८६४ प्रमाण प्रन्य है।

५०६. यशस्तिलकचम्पू - सोमदेव । पत्र रुख्या-५६ । साइज-१२६४४ इच । मापा-६ंस्ट्रत । विषय-काव्य । रचना क्ल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेप्टन न ० ६६३ । विशेष-- पेज तक टीका दे खी है।

४१०. यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति। पत्र संख्या-१७। साइज-११×४६ इद्घ। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० २४२।

विशेष-- १७ से श्राये पत्र नहीं हैं।

४११. अशोधरचरित्र —ज्ञानकीति । पत्र संख्या-६६ । साहज-१४४५ इब्च । माषा-सस्कृत । विषय-चित्र । रचना काल-सं॰ १६६६ माच सुदी ६ । लेखन काल-स॰ १६६४ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० २४१

े (बरोष — महाराजा मानसिंहजी के शार्सन काल में मौजमाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

४१२. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र संख्या-२-३४ । साइज-११६ रख । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७४६ भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं०२४० ।

विशेष-अयम पत्र नहीं है। पं ॰ 'पेमराज ने प्रतिलिपि की थी।

४१३. यशोधरचरित्र — भ० सकताकीर्ति । पत्र सख्या – ३४ । साइज – १२४५ दृ इञ्च । माषा – १ं €३० । विषय – चरित्र । रचना काल –× । लेखन काल –× । पूर्ण । इष्टन चं० २३६ ।

विशेष-चार प्रतियां श्रीर है।

्र ४१४. यशोधरचरित्र — परिहानन्द । पत्र सख्या – ३४ । साइज – ११×६ है इस । भाषा – हिन्दी (पद्य) । विषय -चरित्र । रचना काल – स० १६७० । लोखन काल – स० १८३६ । पूर्ण १ वेष्टन न ● ६१८ ।

विशेष-श्रादि अत माग निग्न प्रकार है-

मारम्म—सुमर देव घरहत महत, गुण श्रवि श्रगम लहे को अंतु ।
जाके माया मोह न मान, लोकालोक प्रकासक हान ॥
जाके राग न मोह न खेद, वितिपति रक न जाके मेद ।
राधे हरप न विरचे बक्क, सुमरत नाम हरे श्रव चक्क ॥
धलख श्रगोचर श्रन्तुक श्रंतु, मगलधारि सुकति की कन्तु ।
गुण वारिध मो रसना एक, श्रलप वृद्धि श्रर तुच्छ विवेक ॥
द्वे कर जोडि नक सरस्वती, वहें छुद्धि उपजे शुम मती ।
जिन बानौ मानी जिन श्रानि, तिनकी बचन चढ्यो परवान ॥
विद्युध विहंगम नव घन वारि, कवि कुल केलि सरोवर मार ।
मव सागर तू तारन माव, कुनय कुरग सिंघनो माव ॥
वे नर सुन्दर ते नर वली, जिनका पुहमि क्या बहु चली।

जिनकी तें सारद वर दीयों, सुखसुरितास श्रमल जल पीयो ।।
समिर समिर गुण झान गंमीर, वहें समित श्रम घटहिं सरीर ।
जिनसुद्रा जे घारण धीर, मव श्राताप बुक्तावन नीर ॥
तिनके चरण चिच महि धरें, चिर श्रनुसार किवत उच्चरें ।
गुरु गणधर समरो मन माहि, विघन हरन किर किर त्ं छाह ॥०॥
नगर श्रागरो वसे स्वासु, जिहपुर नाना भोग विलास ।
वसीह साहु वहु धनीं श्रसित, वनजिह वनज सारर हिनिह्य ॥
गुणी लोग छत्तीसों कुरी, मथुरा मडल उचम पुरी ।
श्रीर वहुत को करें वछाउ, एक जीम को नाहीं दाउ ।
नृपति नूरदीसाह सुजान, श्रीर तम तेज हर नमो मान ॥

मध्य माग—सुनिरी माइ क्हों हो एह, जो नर पाने उत्तम देह।
सत पंडित सज्जन सुखदाइ, सन हित करिह न कोपे राइ ॥
जो नोलें सो होइ प्रमान, जह नेंठे तह पाने मान।
नेर मान मन धरें न कोइ, जो देखें ताकों सुख होइ ॥७४॥
यह सन जानि दया को अग, उत्तम कुल श्रक रूप श्रनग।
दीरच श्रान परें ता तनी, सेनहि चरन कमल यह गुनी ॥७४॥

श्चित्तम माग—संवत् सोलह से श्रधिक सत्तरि सावण मास।
सुकल सोम दिन सप्तमी कही कथा मृद्ध मास।।
श्रप्रवाल वर वंस गोसना गांव को।
गोयल गोत प्रसिद्ध चिह्न ता ठांव को।।
माता चदा नाम, पिता मेरू मन्यो।
परिहानद कही मनमोद अंग न गुने नो गंन्यो।।४६६॥

श्वि श्री यशोधर चौपई समाप्ता।

दात जा परावर पात्रव तत्राताः ।

सवत् १८३६ का में घटती पाना पुरी कियी पुस्तक पहेली लिख्यो छै। पुस्तक लूटि मैं श्रायी सो यी निछराविल देर यो गाजो का थाणा का पचा वाचे पछै त्याह मच्य जीवाने पुन्य होयसी।

४१४. यशोधरचरित्र — खुशालचन्द् । पंत्र सरूया-४१ । साइज-६ हुँ×६ इच । मापा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७=१ । लेखन काल-×ं । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१४ ।

विशेष--- २ प्रतियां श्रीर हैं ।

४१६. यशोधरचरित्र टिप्पण " । पत्र सख्या-२६ । साइज-११×४६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० १०६० ।

विशेष — प्रति प्राचीन एवं जीर्थ हैं, पत्र गल गये हैं । चतुथं संधि तक है ।

४१७. यशोधर चौपई—म्प्रजयराजं। पत्रं सख्या १२ से ५१। साइजं-६ रूर्श्व इस्र । माषां-हिन्दी। विषय-चारत्र। रचना काल-स० १७६२ कार्तिक बूदी २। लेखन काल-स० १८०० चैत बुदी ११। श्रपूर्ण। वेष्टन न० ६६६।

विशेष - चृहडमल पाटनी बस्सी वाले ने श्रामेर में प्रतिलिपि कराई थी।

४१८. वर्डमाणकहा (वर्द्धमान कथा)---नरसेन । पत्र सख्या-२७ । साइज-४४ इस । भाषाप्रथमंश । विशय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १४८४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६१ ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संबंत् १४=४ वर्षे चैत्र संदी १४ शनिवारे पूर्वानचत्रे श्री चंपावतीकोटे राणां श्री श्री श्री संप्रामस्य राज्ये, राइ श्री रामचन्द्र राज्ये, श्री मूलवंचे वलात्कारगंणे सरस्वंतीगंच्छे कुंन्दकुन्दाचार्यान्वये महारक श्री पर्चानेन्दिदेवा तत्पृष्टं महारक श्री श्रुमचन्द्रं देवां तत्पृष्टं महारक श्रीजिनंचन्द्रं देवां, प्रमाचन्द्रदेवा ॥ श्री खंडेलवालान्वये श्रुजमेरा गोत्रं साह लोल्हा मार्था धनपृष्ठ तस्य पुत्र साह व्यौराज मार्था रतना तस्य पुत्र शान्तुं तस्य मार्था संतिश्री तस्य पुत्र स्योन् द्वितीयं साह चापा मार्था सोना तस्य साह होला तस्य मार्था

४१६. वंब्ह्रमार्ग्यकव्य (वंद्ध्रमानकाव्य)--पं० जयिमत्रहत्त । पत्र सख्या-२ से ४६ । साइज-६५×४६য় । माषा-श्रपम्र श । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५५० वैशाख सुदी ३ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० १३८ ।

विशेष-- प्रथम पत्र नहीं है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संवत् १५५० वर्षे वैशांख संदी ३ रोहिणी शुर्मनाम योगे श्री गैणोली पत्तने राजाधिराजं श्रीरमानमर्दनराजश्री चापादेव राज्यप्रवत्तमाने श्री म्हासंघे वहात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्दिदेवां: तत्पट्टे म० शुमचन्द्र देवा तत्पट्टो म० जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति देव : ।

४२०. वद्धं मानचरित्र— सकलंकीर्ति । पत्र सर्ल्यां-१२४ । साइज-११ \times १५ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल $-\times$ । लेखन काल $-\times$ । पूर्ण । विष्यन न० १२६ ।

४२१. वरागचरित्र—वद्धिमान भट्टारक देव । पत्र सख्या-६० । साइज-११ई×१ इछ । माषासस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६३१ फाग्रुण युदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २४७ ।

विशेष-सागानेर में महाराजाधिराज मगवतिसहजी के शासनकाल में खडेलवालवशोत्पन्न मींसा गोत्र वाले साह

नानग आदि ने प्रतिलिपि कराई थी।

विशेष- २ प्रतियां श्रीर है।

४२२. विद्ग्धमुखमंडन—धर्मदास । पत्र सख्या-२२ । साइज-१०३४४२ इन्च । मापा-सस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८२४ चेत्र सुदी ३ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन न० १५२ ।

विशेष-नगराज ने प्रांतलिपि की थी।

४२३. पट्कर्मोपदेशमाला-अमरर्किति । पत्र संख्या-८ । साहज-१०३४४ ई इस । मापा-ध्रपश्रंश विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १४८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४८ ।

विशेष - प्रति प्राचीन है --

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १४४६ वर्षे चैत्र बुदी १३ शनिवासरे शतिमखानचत्रे राजाधिराज श्रीमाणविजयराज्ये मीलोहा मामे श्री चन्द्रप्रम चैत्यालये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये महारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे महारक श्री शुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० सिंघकीर्ति देवास्तत् शिष्य बहाचारी रामचन्द्राय ह् वड जातीय श्रेष्ठी हारा मार्थी ईजा सत श्रुतश्रेष्टी देवात आतृ श्रेष्टी नाना मार्थी ह्वी द्वतीय मार्थी रूपी तयो सत श्रुतश्रेष्टी लाला मार्थी बानू तत् आतृ श्रेष्टी वेला मार्थी वीली षटकर्मीपदेश शास्त्र लिलाय प्रदत्तं ।

४२४ शालिभद्र चौपई-- जिनराज सूरि । पत्र सख्या-१४। साइज-१०×४ इञ्च। साषा-हिन्दी। विषय-चरित्र । रचना काल-६० १६१ = । लेखन काल-६० १७६४ भादना सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० १०७५ ।

४२४. श्रीपालचरित्र—त्र० नेमिद्त्त । पत्र संख्या-४४ । साइज -१२×६ ई इख । माषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १४८४ श्राषाद सुदी ४ । लेखन काल-स० १८६१ सावन युदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २२४

विशेष--मालवा देश में पूर्णाशा नगर में श्रादिनायजी के मन्दिर में प्र ध रचना हुई थी।

छाजूलालजी साह के पिता शिवजीलालजी साह ने झानावरणीचयार्थ श्रीपाल चरित्र की प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति श्रीर है।

४२६. श्रीपालचरित्र—किव दामोद्र । पत्र सख्या-५७ । साहज-११४४ है इस । माषा-अपमंश । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६०६ श्रायण मुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२४ ।

४२७. श्रीपालचरित्र—दौलतराम । पत्र संख्या-४६ । साइज-=१×६ इस्र । माषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स॰ १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२० ।

विशेष-श्राराधना क्या कोष में से कथा ली गई हैं।

काव्य एव चरित्र]

- ४२८. श्रेशिकचरित्र—भ० विजयकीति । पत्र संख्या-२५० । साइज-१०ई४७ इस्र । माषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १८२० । लेखन काल-सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१४ ।
- ४२६. श्रेणिकचरित्र-जयिमत्रह्त । पत्र रूल्या-६०। साइज-१०३×५३ इच । माषा-अपभंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २३६ ।
- ४३०. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र सख्या—१३६ । साइज-१०३४५३ हल्च । माषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन न० ६०४ ।

विशेष-- १ प्रतिया श्रीर हैं।

४३१. श्रीपाताचरित्रः "। पत्र सस्या-३१। साइज-१३×६ई इख । माषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १०५६ श्राषाढ बुदी १। पूर्ण । वेष्टन न०६२७।

विशेष-- प्रथ के मूलकर्ची स॰ सकलकी ति थे। २ प्रतियां श्रीर है।

४३२. सीताचरित्र—किव बालक । पत्र सख्या–१६१ । साइज-६२४५ हु इञ्च । माषा–िह दी (पदा) । विभय-चरित्र । रचना काल-स० १७१३ । लेखन काल-स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२३ ।

विशेष--चपावती (चाक्सू) में प्रतिलिपि हुई भी । सीता चरित्र की मएडार में ४ प्रतियां श्रीर हैं ।

४३३. सिद्धचक्रकथा — नरसेनदेव । पत्र संख्या—३८ । साइज-१०४४ है इच । साबा—श्रवभ्र श । विषय—कथा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १५१४ । पूर्ण । वेष्टन न० २७८ ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १५१६ वर्षे ज्येग्ठ सदी १५ रवी नैयावाहपत्तने सरत्राया श्रलावदीन राज्ये श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा: तत्पट्टे जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य सुनि श्रनंतवृति लंबकचुकान्वये जदवंसे काकिलमरच्छगोत्रे साह सीथे मार्या दीपा तस्य पुत्र साह साम्हिर मार्था जसंवरूप काराइण लघु झाता कान्ह एतेषु मध्ये नाराइण पठनार्थं लिखापित ।

- ४३४. सुदर्शनचरित्र भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या ३० । साइज ११४५ इस । माषा सस्कृत । विषय चरित्र । रचना काल ४ । लेखन काल ४ । पूर्ण । वेष्टन न० २३२ ।
- ४३४. सुद्शीनचरित्र—विद्यानंदि। पत्र सख्या-४० । साइज-११४६ इब्च । भाषा-सस्कृत । वित्रय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स ० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३३ ।

विशेष—र्शेक निवासी गंगवाल गोत्र वात्ते सा० राजा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४३६. हरिवंशपुराण-महाकिव स्वयंभू । पत्र सल्या-१ से ४०६ । साहज-१३४५ इन्च । भाषा-षपभंश । विषय-फाव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १४=२ फाग्रण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३ । विशेष-प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है । पुराण की श्रन्तिम पुष्पिका निस्न प्रकार है-

इय रिट्ठणे।मचरिय धवलइयासिय सयभुएवउच्चरए तिहुयणसयभुइए समाणिय वन्हिकित हिरिवस ॥ ग्रुक्प ववा-सम्बर्ग सुयणणाणुक्कम ज्हाजायासयेमिकदुद्दहश्राह्य रुधिश्रो परिसन्मितिश्रों ॥६॥ सिघ १११२ ॥ इति हरिवंस पुराण समाप्त ॥६॥ प्रथ संख्या सहस्र १००० पूर्वोक्त ॥ ६ ॥ प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

सबत् १४८२ वर्षे फाल्यण बुदी १३ त्रयोदशीदिवंसे शुक्रवासरे अवणनतत्रे शुभजोगे चपावतीगंढनगरे मेहाराज श्री रामचन्द्रराज्ये श्री पार्श्वनाम चैत्यालये श्री मृलसघे नंधाम्राये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकु दाचार्यान्वये महारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्वृहे माहरक श्री शुमचन्द्रदेवा तत्वृहे महारक श्री जिनचन्द्रदेवा तन्पृहे महारक श्री प्रमाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवाला वये साहगोत्रे जिनपूजापुरदरान बहुशास्त्रपरिमालित सुन्दरो, जिनचरणारविंद पट्पदनीतिशास्त्रपरिगत, विशदजिनशासन-पचाळुत्रतपालनैकघीर, सम्यवत्वालकृतरारीराभेदामेदरतत्रयराधनात्रिपचासकियाप्रतिपालक संवेगायगुण युक्ति दुरियतजनिवश्राम, परम शावक साह काघिल, मार्या कावलदे त्रया पुत्रा । द्वितीय पुत्र जिनचरणकमलचचरीकान, दानपुजाश्रयान् इव समुद्यतान् परीपनारनिरतान् प्रशस्तिचित्तान् सम्यक्त्वग्रयप्रतिपालकान श्री सर्वज्ञीकर्षमानर बितचेतसान् कुट्ट वसारधुरधरान् रत्नत्रयालकृतदिव्यदेहान् ब्राहारसेषजशास्त्रदानमदाविनीय पूरितचित्तान् श्रावकाचारप्रतिपालननिरतान् सा राघी साधी (साधी) मार्या रैनदे तस्य चतुर्थ पुत्र. द्वितिय पुत्र. जिणविवचैत्यविहारउद्धरणधीरात् चतुर्विधसघमनो स्पर्णान, विन्तामणि सपूर्णीन् वहुलचणलित्तिद्य्यदेहान् स्वजनानदकारी देवशास्त्रग्ररूया (णा) मिक्तवतान् त्रिकालसामायिकपूत प्रतिपालकान परमाराधकपुरन्दर, निजकुलगगनधोतनदिवाकर व्रतनियमसजमरलवयरलाकर कृष्णाविलप्रस्तरन्तम्लखंडन चतुर्विध-मुखम्बन, निजकुलक्मलिकासनैक्मार्चायद्वान्, मार्गस्थक्ल्पवृत्तान् सर्रखितकेठामरंणान् त्रेपनिकियाप्रतिपालकान् ग्रुणस्युक्तान् परम श्रावक विनयव्तं साधु सा० हाथु मार्यो श्रीमती इव साध्वी हरिषदे तस्य द्वी पुत्री प्रथम पुत्र जिणशासन− उद्धरणधीर राजप्रागनारिवतरणप्रवीण सा॰ पासा भार्या हो प्रथम लाडी द्वितीय बाली तस्य पुत्र चिरजीव वालधवल सा॰ हरराज । सा० हाथु द्वितीय पुत्र देवगुरूशास्त्रशासनविनयवत सा० श्राशा मार्या हर्कारदे । सा० राधी-तृतीयं पुत्र सा० दासा मार्या सिंदूरी तस्य हो पुत्री प्रमम पुत्र सा० मिनसी मार्यामावलदे द्वितीय पुत्र सी ० नीनू सी ० कार्दू । सा० दीसी तस्य द्वितीय पुत्र घाट पत्र हो, सां॰ सा । धर्मसी मार्यो दारादे । सा । राधौ चतुर्ध पुत्र सा । घाट तस्य मार्या राखी मानमाधनदाय दत्त म्। हेमराज

४३७. हो लिकाचरित्र—छीतर ठो लिया। पत्र संख्या-५। साइज-१०४५ इच। माषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-स० १६६० फाग्रण सुदी १५। लेखन काल-सं० १८७४। पूर्णे। वेष्टन न० ५७०।

४३८ होलीरेगुकाचरित्र—जिनदास । पत्र सख्या-३१। साईज-११३४५ हे ईब्चे : माषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-×। लेखन काल-स० १७५६ । पूर्ण । वेष्टन न०६०८ ।

विशेष-पाडे जसा ने स्वयं प्रतिलिपि की भी ।

विषय-कथा एवं रासा साहित्य

४३६ त्रप्राहिकाकथा--भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या-१० । साइज-१० ४६ इथ । माषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २७४ ।

विशेष-कथा की रचना जालक की प्रेरणा से हुई थी । कथा की तीन प्रतियां श्रीर हैं ।

४४० त्राद्त्यवारकथा—भाऊ कवि । पत्र संख्या-१७ । साहज-१० र्रे×४ र्रे इस । साषा-हिन्दी । विषय-कथा । रवनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

४४१ त्र्यादित्यवारकथा — सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र संख्या - ४६ । साइज - ४३ ४४ इन्च । माषा - हिन्दी । विषय - कथा । रचना काल - स०१७४४ । लेखन काल - स०१ ४४६ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६६ ।

निशेष--कामा में प्रतिलिपि हुई थी। पत्र २० से सूरत की वारहखडी दी हुई है।

४४२. कवलचन्द्रायगाञ्चतकथा " । पत्र सस्या-६ । साइज-१०ई×४ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना कील-× लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० ४६७ ।

४४३ कर्मविपाकरास--- ज्ञ० जिनदास । पत्र सख्या-१०। साइज-१०३×४३ इब । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा साहित्य । रचना काल-×। लेखन काल-स० १७७६ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण । वेष्टन नं० ३६६ ।

विशेष - माषा में गुजराती का बाहुल्य है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १७७६ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पत्ने एकादशी गुरुवासरे श्री रत्नाकर तटे श्री खमातवदरे गीसाई कान्हड-गिरेण लिखिनेमिदं पुस्तक व॰ सुमतिसागर पठनार्थ।

४४४. गौतमप्रच्छा । पत्र सख्या-३४। साइज-२०४४ इख। माषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४८।

विशेष---

,

प्रारम्भ — वीरजिनं प्रयान्यादी बालानी सुखबीधकी ।
श्रीमद गीतमपृच्छायाः कियते वृत्तिमंद्गुता ॥१॥
निम ऊष तित्यनाह जाणती तहय गीयमी मयवं ।
श्रवुहाण वीहणत्यं धम्माधम्मफलं बुच्छे ॥२॥
नत्वा तीर्यनाथ जाणन् तथा गीतमः मगव ।
श्रवीधान् बीधनार्थं धम्माधम्मफल प्रवहे ॥३॥

यित्त पाठ — पाठक पद सयुवते कता चेय कपानिका। श्रीमद गौतमपुच्छा सखमासखवीघका॥ लिखत चेला हमार विजय । इति गोतमपुच्छा सपूर्यो.।

४४४. चन्द्नपष्टिन्नतकथा—विजयकीर्ति । पत्र सल्या-६ । साइज-११३४६३ इस । माया-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-४ । लेखन पाल-सं० १६६० । पूर्ण । वेप्टन नं० ५०१ ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवांड ने प्रतिलिपि कराई थी।

४४६. चन्द्रह्सकथा—टोकम । पत्र सख्या-४४ । साहज-११ई x४ इछ । मापा-हिन्दी । त्रिपय-कथा । रचना काल-सं० १७०८ । लेखन काल-स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७६ ।

विशेष --रचना के पद्यों भी संख्या ४५० है। रचना का प्रारम्भ श्रीर श्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है।

प्रारम्म—श्रोंकार श्रपार गुण, सब ही श्रवर श्रादि । किंद्ध होय ताको जप्यां, श्राखिर एह श्रनादि । जिन वाणी मुख उत्तरे, श्रों सबद सर्वप । पिडत होय मित वीसरो, श्राखिर एह श्रनूप ॥२॥

यन्तिम पाठ—सांमरि स्यो दश कोसा गांव, पूर्व दिशा कालख है उाम ॥४४०॥
ता माहे व्यापारी रहे, धर्म्म कर्म सो नीति को कहें।
देव जिनालय है तिहां मली, श्रावग तिहां क्या सांमली ॥४४१॥
विधि सो पूजा करे जिन तनी, मन में प्रीति स राखें वर्णा।
मगइ तहांतणो हुजदार, वस लुहां में पिरदार ॥४४०॥
मोज राज साहिव को नांव, देई वडाई सींपों गांव।
सव सो प्रति चलावें साह, दोष न करें कदें मन माहि ॥४४२॥
पुत्र दोइ ताके घरि मला संजािण, पिता हुकम करें परवान।
वालु छोर नराईनदास, ईहगातणीय जोव खास ॥४४४॥
माई वधु कुटव परिवार, विधि सो करें सबन को सार।
साहमी तणी विनी श्रात करें,सित बचन मुख उचरें ॥४४४॥
जिती मलाई है तिहि माहि, एक जीम वरणन नहीं जाई।
सब ही की दिल लीया हािण, जिमें बैठि ध्यापने सािण ॥ ४४६
असी छगति खेंचियो मार, जाणें ताको सब संसार।
संवत श्राठ सतरासे वर्ष, करता चींपई हुवो हर्ष-॥ ४४०॥

_पंडित होइ हसी मित कोई, बुरा मला आखरू जो होइ।
जेठमास श्रर पिख अधियार, जाणे दोईज अररिववार ॥ ४४६ ॥
टीकम तणी बीनती पृष्ठु, लघु दीरघु सवारे छ लेह।
सुणत कथा होई जे पास, हो विन के चरनण को दास॥
मनधर ऋषा पृह जो कहै, चन्द्र-हस जोमि सुख लहै॥
रोग विजोग न व्यापे कोई, मनधर कथा सुनै जे सोई॥ ४५०॥

॥ इति चन्द्रहंस कथा सपूर्ण॥

्र प्रमृत्ति धरमात्मा साह जी श्री डालूराम॥

ं ४४७. चित्रसेनपद्मावतीकथा—पाठक राजवल्लभ । पत्र सख्या-१६ । साइज-६३८४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रेचना काल-८ । लेखन काल-स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७४ ।

४४८. दशनकथा-भारामल्ल । पत्र संख्या-६८ । साइज-८४६ हे इन्च । माषा-हिन्दी । विषय-क्या । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६२७ श्राषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

विशेष - एक प्रति श्रीर है।

४४६ दानकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५ दे इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कया । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६⊏ ।

विशेष—मूल्य १॥) तिखा हुआ है।

४४०. नागश्रीकथा (रात्रिभोजनत्यागकथा) — त्र० नेमिदत्त । पत्र सख्या-२० । साइज-११×४ई इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-४ । तेखन काल-सं० १६७४ फाल्युन बुदी ४ । पूर्य । वेष्टन न० १६०

विशेष — बाई तेजश्री वैजवाड में प्रतिलिपि कराई । पहला पत्र बाद का लिखा हुआ है । एक प्रति श्रीर है ।

४४१. नागश्रीकथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)—िकशनसिंह । पत्र संख्या-२० । साइज-११४५ है इस । साषा-हिन्दी । विषय-क्या । रचना फाल-स० १७५३ सावन सदी ६ । लेखन काल-х । पूर्ण । वेन्टन न० ५६० ।

विशेष-३ प्रतियां श्रीर हैं।

४४२ नागकुमारचरित्र—नथमलं विलाला । पत्र संख्यां-१०३ । साइज-११६ ४५ हव । मापा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-स० १८३७ मार्घ सुदी ४ । लेखन काल-х । श्रपूर्य । वेष्टन नं० ६१३ । विशेष —श्रन्तिम पत्र नहीं है । ४४३. निशिभोजनत्यागकथा—भारामल्ला । पत्र संख्या-२० । साधज-=×६ई इञ्च । मापा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कया । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६२७ आवण सुदो ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

४४४. ने मिन्याहलो — हीरा । पत्र संख्या-११ । साइज-१३×४ इन्च । मापा-हिन्दी । विषय-क्या । रचना काल-स० १८४८ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन मं० ११४० ।

> विशेष—इसमें नेमिनाथ के विवाह की घटना का विस्तृत वर्णन है—परिचय निम्न प्रकार है— साल घटारासे परमाण, तापर घटतालीस वखाण । पोप कृष्णा पनि तिथि घाणि, वारबहरपित मन में घाण ॥=०॥ वूदी को छै महासुधान, ती में नेम जिनालय जान । ती मध्ये पहित वर माग, रहे क्वीश्वर उपमा गाय ॥=१॥ ताको नाउ जिनण की बास, महां विचक्ण रहत उदास । सिख हीरो छै ताको नाम, ती करया नेम गुण गान॥=२॥ इति श्री नेमि व्याहलो सपूर्ण । लिखत-चम्पाराम । छन्द सख्या =२ है ।

पत्र ४ से श्रागे वीनती सम्भाय, रतन साहकृत, झानचीपडसभाय, मायकच द कृत, धृतिट के श्र्यम देव का पद-तथा पेमराज कृत राज्जल पच्चीभी -श्रीर है।

४४४. नेमिनाथ के दश भव । पत्र सख्या-४। साइज-१०३४४३ इक । भाषा-हिदी। विषय-कथा। रचना काल-४। लेखन काल-स० १८७४। पूर्ण विष्टन न० ४७४।

४४६ पुरायाश्रवकथाकोष —दौलतराम । पत्र संख्या—२६६ । साइज-११×१ई इन्त । भाषा-हिन्दी । विषय-क्या । रचना काल-स०५७७७ मादवा बुदी ४ । लेखन काल-सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६३ ।

विशेष-श्लोक संख्या =००० है। म म महात्मा हरदेव लेखक से लिया था। ४ प्रतियां धौर हैं।

४४७. पुरन्दर चौपई - न्न० मालदेव । पत्र सर्ल्या-१४ । साइज-१३४ इंच । माषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

विशेष---

श्रन्तिम पद्य—सील वही साँव धम मै व्रत पाली रे.।
श्रन्तक कोठ प्रधान । सी०
गतनागरी कञ्च पाईये । चिंता रतन समान । सी० ॥ ७३ ॥
माव देव सूरी गुण नीलो । व्र० । वह गछ कमल दिणंद ॥ सी० ॥
तास सीस इम कहा । व्र० । मालदेव श्राणद ॥ सी० ॥७४॥
श्रम्मार्था मील तो जे कहो । व्र० श्रनुमोदीजे तेय । सी० ॥७४॥
दो विरुद्ध किंपी कहो व्र० । मीछा दुक्कह तेय । सी० ॥७४॥

४४८. राजाचन्द्र की चौपई : " । पत्र सस्त्या-४१। साइज-४×१० १ व । माषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-४। लेखन काल-स० १८१२ आवण बुदी १२। पूर्ण। वेण्टन न० ६६८।

विशेष---प्रारम्म, के पत्र नहीं हैं । पत्र ३५ से फुटकर पद्य हैं ।

४४६. राजुलपच्चीसी " । पत्र संख्या-७ । साइज-६×५ इन्चं । साबा-हिन्दी । विषय-

विशेष-- ७ से श्रागे पत्र नहीं है।

४६०३ व्रतकथाकोशभाषा—खुशालचन्द् । पत्र' सख्या–६७ । साइज-१२३४६ इस्र । माषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कमा । रचना काल-सं० १७०३ । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष-निम्न क्यायें है।

- (१.). जेष्ठजिनवरव्रतकथा (२.). श्रादित्यवारव्रतकथा (३.) सप्तप्रसंश्यानव्रतकथा (४) मुक्कट सप्तमीव्रतकथा (५) श्रक्तयनिधिव्रतकथा (६) वोद्दशकारणव्रतकथा (७) मेघमालाव्रतकथा (६) चन्दनवष्ठीव्रतकथा (१) लिध-विधानव्रतकथा (१०) पुरन्दरकथा (११) दशलक्ष्यव्रतकथा (१२) पुष्पांजलिव्रतकथा (१३) श्राकाशपंचमीव्रतकथा (१४) मुक्तावलीव्रतकथा (१५) निर्दोवसप्तमीव्रतकथा (१६) सुगधदशमीव्रतकथा ।
- ४६१. रोहिग्गी कथा : । पत्र संख्या- १ । साइज- ५ ९४१। सावा-संस्कृत । विषय-कथा। स्वना काल- ४ । लेखन काल- ४ । पूर्ण । वेष्टन न ० १०४१।
- ४६२. वैताल पश्चीसी " ' । पत्र सल्या-६-६२। साइज-७×६ इब्च। माषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-कषा:। त्वना काल-×। लेखन-काल-×। श्रपूर्णः। वेष्टन-न० ६७४-।

विशेष-श्रवस्था जीर्ण हैं। आदि तथा श्रन्तिम पाठ नहीं है। छठी कथा का प्रारम्भ निम्न प्रकार है।

श्रम छठी बारता लिखंत ॥ तब राजा वीर विक्रमांदीत फेरि जाये सीस्यों के रूख जाये चढयों श्रर व्रतग ने उतारि करि ले चल्यों ॥ तब राह मैं। व्रतग वेताल बोल्यों ॥ हैं राजा रात्रि को समी राह दुरि ॥ वैडी कटे ही ॥ कथा बारता कहयास्या राह कटें सो हूं येक कथा कहूँ छू ॥ त स्थि ॥

४६३ श्रानिश्चरदेषं की कथा"" ""। पत्र संख्या-१३। साइज-६ र् ४६ हे इन्च। मापा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-×। लोखन काल-स० १८५२ माघ सुदी २ । श्रपूर्ण। वेण्टन न० १०३६।

विशेष-सेवाराम के पठनार्थ नन्दलाल ने प्रतिलिपि कारवाई थी ।

४६४. शीलकथा—भारामल्ला। पत्र सस्या-३३। साइज-७×६ इत्र । मापा-हिन्दी (पघ)। विषय-कमा। रचना काल-×ा लेखन काल-१६८१। पूर्ण । वेष्टन नं० ६००। विशेष—सं० रूट= ६ की प्रति की नकल है । कापी साइज है । दो प्रति श्रीर है ।

४६४. शीलतरंगिनीकथा-त्र्रखेराम लुहािंडया। पत्र सल्या-=२। सार्ज-६×६६ इन्न । मापा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १०२५ माघ सुदी ४। पूर्ण । नेप्टन नं० ६०१।

विशेष-- श्रारतराम गगवाल ने प्रति लिपि की घी।

४६६ सप्तपरमस्थान विधान कथा--श्रुतसागर। पत्र संख्या-६। साइज-१२×६ इन्च। माषा-सस्कृत। विषय-कथा। रचना याल-×। लेखन काल-स॰ १८३० वैशाख बुदी ८। पूर्ण। वेप्टन न० ६८।

विशेष--- प० गुलावचन्द ने प्रतिलिपि की । सस्कृत में कठिन शब्दों के धर्य भी हैं । एक प्रति श्रीर है ।

४६७ सप्तव्यसन कथा—श्रा० सोमकीर्ति । पत्र संख्या-७६। साइज-१०ई x४ई इर्च। मापा-

४६८ सम्यक्त्वकौमुदी—मुनिधर्मकीर्ति । पत्र संख्या-१२ से ६२ । साइज-११४५ इस । माषा-सस्हत । विषय-कथा । रचनाकाल-४ । लेखन काल स० १६०३ श्रावण सुदी ४ । श्रपूर्ण । वेप्टन न० १३६ ।

विशेष--किशनदास अभवाल ने प्रतिलिपि कराई थी। शकरदास ने प्रतिलिपि की थी।

४६६ सम्यनत्वकौमुदो कथा भाषा । पत्र संख्या-४०। साइज-६ र्-रे×६ र्-रे इंच। माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण। वेष्टन नं० १८३।

विशेष-४० से श्रागे पत्र नहीं है।

४७०. सम्यक्त्वकोमुदी कथा—जोधराज गोदीका। पत्र संख्या-५६। साइज-१०४६ इम्र । माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-स० १७२४ फाल्गुन बुदी १३। लेखन काल-सं० १८३० कार्तिक बुदी १३। पूर्य। वेष्टन न • ४८२।

विशेष--हरीसिंह टोंग्या ने चन्द्रावतों के रामपुरा में प्रति छपि की । एक प्रति श्रीर है ।

४७१. सम्यग्दर्शन के आठ अगों की कथा " । पत्र सख्या- ह । साइज-१०×४ है इस । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८० ।

४७२ सुगन्धदशमीव्रत कथा— नयनानद् । पत्र संख्या— । साइन-१०×४० इन्च । माधा-ध्रपभंश । विषय-कथा । रचना क्षाल-× । लेखन काल-स० १५२४ मादवा द्वदी ६ आदित्वार । पूर्ण । वेप्टन न० ५८१ ।

विशेष-इति सुगषदशमी दुजिय सिघ समाप्ता ।

४७३ सिद्धचक्रव्रत कथा--नथमल । पत्र सल्या-११ । साइज-१२४७ इश्व । माषा-हिन्दी ।

विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ५२१।

४७४. हनुमंत कथा—इ० रायमल्ल । पत्र सख्या-७१ । साइज-११×४ई इच । माषा-हिन्दी । त्रिषय-कथा । रचना काल-स० १६१६ । लेखन काल-х) पूर्ण । तेष्टन न० ६०६ ।

विशेष-- २ प्रतियां श्रीर हैं ।

` ***>>> €€**€€

विषय-व्याकरण शास्त्र

४७४. जैनेन्द्र व्याकरण—देवनन्दि । पत्र सख्या-४६४ । साइज-११४४ हु इस । साषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० २०८ ।

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है। प्रारम्भ के ३० पत्र जीर्थ हैं। एक प्रांत और है वह भी अपूर्ण है।

४७६. प्रक्रियारूपावली-पं रामरत्न शर्मा। पत्र संख्या-६। साइज-११×१३ इश्व। माषा-संस्कृत । विषय- व्याकरण । रचनाकाल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० १५।

० ४७७. महीमट्टी—भट्टी। पत्र संख्या-२ से २८ । साइज-१०४४ दे इञ्च । साबा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना कोल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ७०० ।

४७८ शब्द्रूपावली । पत्र संख्या-१६। साइज-६ १४४ इन्न । साषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०४ ।

४७६ सारस्वतप्रकिया—श्रमुति स्वरूपाचार्य । पत्र सख्या-४६ । साइज-१०३×६ इञ्च । माषा-सस्धत । विषय-व्यावरण । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

४८०. श्रमरकोश — श्रमरसिंह । पत्र संख्या-२४ । साइज-११४४ इश्व । भाषा-सस्कृत विषय-कोष । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूणे । वेष्टन नं० १३४ ।

४८९. एकात्तर नाममाला—सुधाकलश । पत्र संख्या-४८। साइज-११४६ इख । माषा-सस्कृत । विषय-कोष । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५६ ।

४८२ छन्दरत्नावली-हिर्राम । पत्र संख्या-२१ साहत-११×५ इख । मापा-हिन्दी । विषय-छन्द शास्त्र । रचना काल-स०१७०⊏ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन न०१११।

विशेष-कुल २११ पद्य हैं-

अंतिम-अ य छद रत्नावली सारय याको नाम ।

भूचन मरती तें मयो कहे दाश हरिराम ॥२११॥

इति श्री छद रत्नावली सपूर्ण।

रागनम्निधीचद कर्सो समत् समजानि । काष्ट्रण चुदी त्रयोदशी मांछलिखी सो जानि ॥

४८३. छन्दश्तुक-क्वि,बृन्दावत । पत्र संख्या-२१ । साहज-४३४७ हस्र । माषा-हिन्दी । विषय-छन्द् शास्त्र । रचना काल-सं० १८६८ माघ बुदी २ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०३ ।

४८४. नाममाला—धनंजय । पत्र सख्या-१६ । साइज-१०४४ इन्च । माषा-सस्छत । विषय-कोष । स्वना काल-४ । लेखन काल-स० १८४१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३७ ।

विशेष--खीवसिंह के शिष्य खुशालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई भी।

४८४. रूपदीपपिंगल — जैकृष्ण । पत्र संख्या-१० । साइज-१०४५ इख । माषा-हिन्दी । विषय-छन्दशास्त्र । रचना कालु-एं० १७७६ मादवा सुदी २ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन न० ५७३ ।

विशेष—रचन का आदि अन्त माग निम्न प्रकार है—
प्रारंम—सारद माता तुम नहीं सुधि देहि दर हाल ।
पिगल की छाया लिये बरनू नावन चाल ॥१॥
युक गणेश के चरण गहि हिये धारके निच्छ ।
क नर भनानीदास का स्त्रगत करें जै किच्छ ॥२॥

रूप दीप परगट करूं भाषा बुद्धि समान । बालक कू सुख होत हैं उपजें श्रवर झान ॥२॥ प्राकृत की वानी कठिन भाषा सुगम प्रतिच । हपाराम की कृपा सूं कंठ करें सब शिष्य ॥४॥ पिगल सागर सम कह्यों छदा भेद श्रपार । लघु दीरव गण श्रगण का बरनू सुद्धि विचार ॥४॥

अतिम -- दोहा -- गुण चतुराई गुधि लहे मला कहे सब कोह। रूप दीप हिरदे धरे सो श्रवर किव होय ॥

सोरठा—निज पुहकरण न्यात तिस में गीत कटारिया। सुनि भाकत सों नात तैसे ही माना करी ॥

दोहा—वांवन वरनी चाल सब, जैसी उपजी बुद्धि ।
भूल भेद जाको कद्यो, करो ववीश्वर सुद्ध ॥
सवत सन्नहसे बरसे श्रीर छहत्तर पाय ।
मादों सुदी दुतिया गुरू मयो ग्रंथ सुखदाय ॥५६॥

॥ इति रूपदीप पिगंल समाप्त ॥

४८६. श्रुतवोध-कालिदास । पत्र संख्या-४ । साइज-६४४६ इख । माषा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । स्वना काल-४ । लेखन काल-स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०१ ।

विषय-नाटक

४८७. झानसूर्योद्य नाटक—वाद्चिन्द्रसूरि। पत्र सल्या—२६। साइज-११×४ई इञ्च। साधा— संस्कृतं। विषय—नाटक। रचना काल—सं० १६४८ साध मुदी ८। लेखन काल—सं० १६८८ जेष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वेप्टन मं•१६४। विशेष - मधृक नगर मे प्रथ रचना हुई । जोशो राधो ने मौजमाबाद में प्रति लिपि की ।

४८८. ज्ञान सूर्योद्य नाटक भाषा-पारसदास निगोत्या । पत्र सख्या-४४ । साइज-००ई×७ई इस ।। भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । रचना काल-स० १६१७ । लेखन काल-स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४०२ ।

४८. प्रवोधचन्द्रोद्य—मल्ल कांव,। पत्र सख्या-२४। साइज-द×६। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक रचना काल-सं० १६०१। लेखन काल-×।पूर्ण। वेष्टन न० ८६६।

विशेष—इस नाटक में ६ श्रक हैं तथा मोह विवेक युद्ध कराया गया है। श्र त में त्रिवेक की जीत है। बनारती-दास जी के मोह विवेक युद्ध के समान है। रचना का श्रादि श्रात माग इस प्रकार है—

प्रारंभिक पाठ- श्रमिनदन परमारय कीयो, श्रव हैं गलित ज्ञान रस पीयो।
नाटिक नागर चित में नरयों, ताहि देख तन मन हुलस्यों ।।१॥
कृष्ण मट्ट करता है जहां, गगा सागर मेटे तहां।
श्रमुमें को घर जानें सोइ, ता सम नाहि निनेकी कोई ॥२॥
तिन प्रबोधचन्द्रोदय कीयो, जानी दीपक हाथ ले दीयो।
कर्ण सूर सुपाने स्नाद, कायर श्रीर करें प्रतिवाद ॥३॥
इन्द्री उदर परायन होइ, कन्नह् पे नहीं रीभी सोइ।
पच तत्न श्रनगित मन धारयो, तिहि माप'नाटिक निस्तारयो ॥४॥

काम चयाच —जो रिं तू बूमित हैं मोहि, ब्योरो समें सुनाक तो है।

वे विमात मैया है मेरे, ते सब सुजन लागें तेरे ॥

पिता एक माता हैं गाऊँ, यह न्योरो श्रागे सममाक ।

ज्यो राघो श्रक लक्पित राऊ, यो हम ऊन भयो छघ को चाऊ ॥

श्रि विवेक सैन्याह कराई, महावली मिन कही न जाई !

ग्याय शास्त्र वेगि खुलाया, तासीं कहीवसीठ पठायो ॥

तव वह गयो मीह कै पासा, योलन लागे वचन उदासा ।

मयुरादासनि रित जो कीजी, मागे ते विरला सो जीजी ।

राह विवेक कही समभाई, ए व्योहार तुम छोडो माई ।

तीरय नदी देहुरे जेते, महापुक्य के हिरदे ते ते ॥

या र तुम न सतावों काही, पश्चिम खुरामान को जाही ।

न्याय विचार कही यो बाता, श्रितसै कोघ न अग समाता ॥

) ¥

-

श्रंतिम पाठ--

पुरुष उनाव-तन श्राक्तस सयो जेनारा, श्रीर सभै मिटि गयी निचारा।

पुरुष प्रकट परसेश्वर श्राहि, तिसौं निवेक जानियो ताहि ॥

श्रव प्रभु सयो मीर्खि तन धरिया, चन्द्र प्रवोध उठै तन करीया।

सुमित निवेक्त सरधा सांति, काम देन कारन की काति ॥

इनकी कृषा प्रसन्न मन मुनो, जोहो श्रादि सोह फिरि हुनो ।

निच्छा मिक्त तेरे पर सारा, कृत कृत सयो मिल्यो श्रनुवारा ॥

श्रव तिह संग रहेगो पही, ही सयो नहा निस्तीयो देही ।

निच्छा मिंच तू पहुँची श्राह, कीयो श्रनद ज्ञु सदा सहाइ ॥

श्रव चिरकाल के मनोरथ पूजे, गयो शत्रु साल है दूजे ।

जो निरविच नासना होह, ताते प्यारा श्रीरन कोइ ॥

श्रद्धेत राज श्रनेम पदलयो, श्रवित चितवत श्रवित सयो ।

जा सिर ऊपर सनक सनंदा, श्रव निसष्ठ नेदे ताहि नदा ।

कृष्ण मट्ट सोह रस गाया, मथुरादास सारु सोई नाता ॥

वंदे श्रह गोनिद के पाह, मित उनमान कथा सो गाइ ।

इति श्री मन्तकवि विश्चिते प्रवीधचन्द्रोदय नाटके षष्टमां अक समाप्त ।

४६०. मदनपराजय भाषा — स्वरूपचन्द् चिलाला । पत्र सख्या—६३ । साइज-११×७६ इब्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । रचना काल—स० १६३ = सगिसर सुदी ७ । लेखन काल—सं० १६१ = । श्रपाट सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७१ ।

विशेष—संवत शत उगणीस श्रह श्रधिक श्रठारा माहि ।

मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी दीतवार सुखदाहि ॥

तादिन यह पूरण करयो देश वचनिका माहि ।

सक्ल सघ मंगल करो ऋदि वृद्धि सुख दाय ॥

इति मदनपराजय अ थ की वचिनका सपूर्ण । स० १६१८ का मिती अमाद सुदी ७ शुक्रवार सपूर्ण । लेखन काल संमवत. सही नहीं हैं ।

४६१. सद्नपराजय नाटक — जिनदेव । पत्र सख्या-४१ । साइज-१२ द्रे ४ इझ । मापा-सरस्त । विपय-नाटक । रचना काल-х । लेखन वाल-सं० १७=१ । साह सुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन न० २४ ।

विशेष-वसवा नगर में श्राचार्य ज्ञानकीर्ति तथा प० त्रिलोकचन्द्र ने मिलकर प्रतिलिपि की ।

४६२. मोहिविवेक युद्ध-वनारसीदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१०४५ इन्च । मापा-हिन्दी । विषय-नाटक । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८७२ ।



विषय-लोक विज्ञान

४६३ त्राकृत्रिम चैत्यालयों को रचना । पत्र संख्या-१०। साइज-११४७ इस । माषा-हिन्दी । विषय-लोक विम्नान । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

४६४. त्रिलोकसार वध चौपई--सुमितकीर्ति । पत्र सख्या-१० । साइज-१०१४५ है इस । माषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८१३ । पूर्ण । मेप्टन नं० ८०७ ।

विशेष---

न अतिम - श्रतीत श्रनागत वर्तमान, सिद्ध श्रनंता गुणना धाम ।

माने मगित समरु सदा, सुमित कीरित कहित श्रधतरु कदा ॥३०॥

म्लसध गुरु लद्दमीचद सुनीदत्त सपाटि बीरजचद ।

सुनिन्द ज्ञानमूषण तस पाटि चग प्रमाचन्द यदो सलरंगि ॥३१॥

सुमित कीरित सूरि वर किहसार त्रैलोक्य सार धर्म ध्यान विचार ।

जै मणि गणि ते सुलिया थाय एयशा रूपधरी सुगति जाय ॥३४॥

४६४. त्रिलोक दर्पण कथा — खड्ग सेन । पत्र सख्या – २१८ । साइज – र्द्र ६ इत्र । माषा – हिन्दी (पद्य) । विषय – लोक विज्ञान । रचना काल – सं० १७१३ । लेखन काल – स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७४ ।

विशेष - यह प्रति संवत् १७३६ की प्रति से लिपि की गई है।

४६६. जिलोकसार—श्राचार्य नेमिचन्द्र । पत्र संस्था-१८७ । साहअ-१०ई४६ इच । साधा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन न० १०२ ।

विशेष— टीकाकार माधनचन्द्र भैविधाचार्य है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई । एक प्रति श्रीर है ।

४६७ त्रिलोकसार भाषा : । पत्र सस्या-२ से ४०। साइज-१२ई×६ इछ । मापा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-×। लेखन वाल-×। श्रपूर्ण । वेष्टन नं ० ६३५।

४६८. त्रिलोकसार भाषा — उत्तमचन्द । पत्र सख्या-२२८ । साइज-१४ई×७ इन्न । साषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रवना काल-सं० १८४१ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८१ ।

विशेष -दीवान श्योजीरामजी की प्रेरणा से प्रथ रचना की गयी थी जैसा कि प्रथ कर्ता ने लिखा है-

अंतिम दोहा-सवत् श्रन्टादश सत इकतालीस श्रधिकानि ।

च्येन्ठ कृष्ण पत्त द्वाद्वशी रिववारे परमानि ॥

त्रिलोकसार माषा लिख्यो उत्तिमचन्द विचारि ।

मूल्यो होऊ तो क्छ लीज्यो सुकित सुधारि ॥

दीवाण श्योजीराम यह कियो हृदय में ज्ञान ।

पुस्तग लिखाय श्रवणा सुग्रु राखो निस दिन घ्यान ॥

॥ इति ॥

गय- प्रथम पत्र — "तहा कहिए हैं।" मेरा ज्ञान स्वमाव है शो ज्ञानावरण के निमित्त तें हीन होय मित श्रुत पर्याय रूप मया है तहा मित ज्ञान किर शास्त्र के अन्तरिन का ज्ञानना मया। बहुरि श्रुतज्ञान किर श्रन्तर श्र्युर्ध के वाच्य वाचक सम्बन्ध है। ताका स्मरणतें तिनके श्रर्थ का ज्ञानना मया। बहुरि मोह के उदयतें मेरे उपाधिक भाव रागादिक पाइये हैं ।

४६६ चैलोक्यद्रपेश '' । पत्र सरूया-२६ । साइज-११३×६ इन्च । साषा-सरहत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ६७= ।

विशेष-भीच २ में चित्रों के लिए बगह छोड़ी हुई है।

६०० द्वेलोक्यदीपक-वामदेव । पत्र संख्या-८ । साइज-११४५ इस । सापा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८१२ साघ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०० ।

विशेष- १० खुशालचन्द्र ने लालसीट में प्रतिलिपि की।

६०१. प्रत न० २। पत्र सरूया-६४। साइज-१९४५ है इच । तेखन काल-सः १४०६ ध्रपाट स्दी ४। पूर्ण । वेष्टन न० १०१।

विशेष--पत्र सं० २७ तक नवीन पत्र है इससे श्रागे प्राचीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

स्वित्त स॰ १४१६ वर्षे स्रावाढ सुदी ४ सौमवासरे भुः भुत्यः शुन स्थाने शाकीनूपति प्रजाप्रतिपालक सम-सरवानविजयराज्ये ॥ श्रीमूलान्वये चलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये स० पद्मनदि देवा स्तत्पट्टे स० श्री शुम- चन्द्र देवास्तत् पट्टालकार पटतर्कचूढामणि मट्टारक श्री जिनच व्यदेवास्तत् शिष्य प्र'न सहस्रवीर्ति. तत्शिष्य व्रव तिहुणा खंडेलवाला वये श्रीष्ट गोत्रे स मोरना मार्या माहुस्तत्पुत्र संव मारधों रेव सचत्री पदमानद आता रुल्हाच्या. संव पदमा मार्या पद्म श्री पुत्रा त्रयो हेमा, यूजर, महिराज। रूल्हा भार्या जाजी पुत्र घोराज पूतपाल एते पचमी उद्यापन निमित्तं इं व त्रैलोक्यदी कि नामा कमंत्रय निमित्ते सदस्वे प्रवत्ता ।

8333 6668

विषय—सुभाषित एवं नीति शास्त्र

- ६०२ उपदेशशतक—वनारसीदास । पत्र सरया-२४ । साइन-=×४३ । माषा-हिन्दी । विषय-सुमाषित । रचना वाल-स०-४ । लेखन काल-४ । ऋपूर्ण । वेण्टन न० १५३ ।
- ६०३. गुलालपच्चीसी—ब्रह्म गुलाल। पत्र संख्या-४। साइज-१०४४ इब्र। माषा-हिन्दी। विषय-सभाषित। रचना काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं० ५७४।
- ६०४. जेनशतक भूधरदास । पत्र सस्या-२० | साइज-१×४९ इस । साषा-हिन्दी । विषय-समापित । रचना काल-स०१००१ । पौष बुदी १३ लेखन काल-स०१४१४ । पूर्ण । वेष्टन नं०५११ ।

विशेष-उत्तमचन्द्र मुशर्फ की मार्था ने चढाया।

६०४. नन्दबत्तीसी--मुनि विमलकीति । पत्र सख्या-११ । माइज-१०४४ दृ इव । माषा-हिन्दी । (पद्य) । विषय-नीति शास्त्र । रचना काल-स० १७०६ । लेखन काल- सं० १७६० । पूर्ण । वेष्टन न० ६१२ ।

विशेष-- २ श्लोक तथा १०१ पद्य है।

- ६०६ नीतिशतक चाराक्य । पत्र संस्था-२१ । साइज-६×६ । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति शास्त्र । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्यो । वेष्टन नं० ११३० ।
- ६०७ बुधजन सतसई— बुधजन । पत्र सख्या-५१ | साइज-८६४६६ इख । माषा-हि दी । त्रिषय-सुमाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन नं० ५४३ ।

६०८. भावनावर्णन '। पत्र सख्या-३। साइज-१३×६। माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सुमाषित । न्वना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । त्रेष्टन न०११३६।

निशेष - हेमराज ने प्रतिलिपि की थी

६०१. रेखता-बचीराम । पत्र सराया-६ । साइज-६×३ई इब्च । माषा-हिन्दी । विषय-सुमाषित । स्वना काल × । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० ११४२ ।

विशेष—स्फूट रचनांऐ हैं।

६१०. सद्भाषितावली भाषा " । पत्र सख्या-३० । साइज-१२५४४ दृ इश्च । माषा-हिन्दी । विषय-सुमाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न०७०६ ।

विशेष-- लेखक की मूल प्रति ही है, प्रांत संशोधित है। पद्य संख्या ४०५ है। प्रांच के मूल कर्जा मं ० सकलकी र्चि हैं।

६११. सुद्धाद्धप्रकाश-थानसिंह । पत्र सल्या-१४६ । साइज-१३१४६ इस । मापा-हिन्दी (पद्य) विषय-समाधित । रचना काल-ए०१=४७ फागुण बुदी ६ । लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं० =३० ।

रवना का श्रादि श्रन्त माग निम्न प्रकार है-

प्रारम्भ केवल ज्ञान।नद सय पर्स पूज्य अरहत।

समोसरण लच्नी सहित राजे नमूं महत।।१॥

श्रष्ट कर्म श्रीर निष्ट कर श्रष्ट महाग्रण पाय।

सिष्टि इण्ट श्रष्ट धरा लही सिद्ध पद जाय।।२॥

पनसार श्राचार मुखि ग्रण छत्तीस निवास।

सिसा दिन्ना देत हैं श्राचारज शिव वास।।३॥

श्रन्तिम पाठ-श्रीमित सांति सुनाय जी सांति करी निति श्राप ।

विघन हरी मंगल करी तुम त्रिभुत्रन के वाप ॥६०३

सांति सुमुद्रा रावरी सांति चित्त करि तोहि ।

पूजी वदी माव सी खेम कुसल करि मोहि ॥६०४॥
देस प्रजा भूपित सकल ईत मीत करि दूर ।

सुख संपति घन घाम जस किया माव रख पूर ॥६०६॥

फागुन वदि वष्टी सुगुर ठारासत सैताल ।

पूर्ण अंथ सुसांति रिख विषे कियो गुनमाल ॥६०६॥

पिटेमी सुनिसी वांचसी करसी चरवा सार ।

सन विखत फल पायसी तिनकी करी छहार ॥६०७॥

इति श्री सबुद्धि प्रकास मापा वध जिनमेवक थानसिंह विरचित मपूर्ण ।

कवि श्रवस्था वर्णन-मरत मेत्र में देस हु दारि । तामै वन उपवागि रसाल ॥ नदी बावडी कृप तडाग । ताको देखत उपजै राग ॥ कुकुट उद्धि वैठे जिहि ठाम । यो समवरती तामें गाम ॥ धन कन गोधन पूरत लोग । तपसी चौमासे दे जोग ॥ ता मधि श्रवावति पुरसार । चौगिरदा परवत श्रधिकार ॥ वस्ती तल उपरि सांघनी । ज्यौ दाहिम वीजन ते वनी ॥ ताको जैसिंघ नामां भूप । सूरज वस विषे 🕊 श्रनुप । न्यायवत बुधिवत विसाल । परजापालक दीन दयाल ॥ दाता सूर तेज जिम मान । सप्ति श्रहला दीज्यौं जसरवानि ॥ हय गय स्थ सिवकादि अपार । अत मत्री प्रोहित परिवार ॥ हदि सौ विभी कुवेर भटांर । वदु समूह तियां वहवार ॥ प इत कवि भाटादि विसेख । पट दरमन सवही की मेप ॥ अपने अपने धर्म सुचले । कोक काह पे नहीं मिले ॥४१॥ पणि सिव धर्मी भूपति जान । मंत्री जैनी मुखि श्रधिकाहि ॥ जैनी सिव के धाम उत्तग । सिखर धुजा जुत क्लस सुचग ॥ राग दोष श्रापस में नाहि । सबके श्रीति माव श्राधकांहि ॥ सव हो मुपन मैं सिरदार । छत्रपती चलि इन श्रनुसार ॥ दुत्य पुरी सांगावति जानि । दिशय दिसि षट कोस प्रमान ॥ पुरी तले सरिता मनुहार । नाम सुरसती सुध जलघार ॥४४। नगर लोक धनवान अपार । विविध माति करि है व्योहार ॥ कचे सिखर कवास धुज जहां । पंच जैन मन्दिर हैं तहां ॥ धर्म दया सञ्जन गुन लीन । जैनी वहीत वरी पखीन ॥ वस खराडेलवाल मम गीत । ठोल्या बहु परिवारी गीत ॥ यारी वास इमारी सही । हेम(ज दादो मम कही ॥ पुनि श्रनुसारि सकल घर मध्य । सामग्री दीषे सव रिद्धि ॥

> दोहा - बड़ी मलूक एचद एत, दूजी मोहन राम । लूगकर्ण तीजी कही चौमी साहिव राम ॥ सबके एत पुत्री धना मोहन राम सुतात । मेरी जन्म संगावर्ति माहि मंगी श्रवदात ॥

सुभाषित एवं नोति शास्त्र]

अवावति सागावति नगर बीच जै भूप । श्राप बसायो चाहि करि जेपुर नाम श्रनूप ॥ सूत वंध सवही किये हाट सुघट बाजार । मिंदर कोटि सुकांगरे दरवाजे श्रिवकार ॥ सतखमी ज बनाहयो, अपने रहने काज । विंव महल रचना करी, वाग ताल महाराज ॥ साहकार मुलाइया लेख मेज वह देस । हासिल बांध्यी न्याय जुत लोम श्रधिक नहिं लेस ॥ सुखी मये सबही जहां श्रविक चल्यों व्यीपार (सांगावती श्रांवावती उजरी तब निरधार ॥४४॥ श्राय वसे जेपुर विषे कीन्हें घर श्रव हाटि । निज पनि के चनुसार तें सुवित मयी सव ठाठ ॥४४॥ पोडश संवत्सर मयौ सव ही की सुख आत । जैसिंह लोकांतर गयी पिछली सनि अब बात ॥ सब ईसुर मुख भूपती ईसर सिद्ध सु नाम । श्रति उदार प्राक्रम बडी सब ही की श्राराम ॥ न्यायवंत सबही सुखी डड मूल कछ नाहिं। काहु की दीन्हें नहीं छगलाचार न रहाय ॥ काल दोष ते नीच जन समराखि वछवारि । तीन वर्ण के ऊच जन तिनकी मानधराय ॥ श्राप हठी काहू तनी मानी नाहीं वात । पिछले मंत्र यकी जिके कियो मूप को घात ॥

श्रहिल्ल —

!-- .-

ţ

दिखिणी लियो बुलाय गांव वाहिर रहे।

मिंल के जांहि दिवान दाम देने कहे।।

लघु भ्राता माधव कूं वेगि मिलाय के।

लेख मेजियो राज करी तुम ध्राय के।।

माधव श्रागे सिव धरमी मुखियो मयो।

जैन्याकों करि द्रोह वच में ले लियो।।

देव धर्म ग्रह श्रुत की विनय विगारियो।

कीयो नांहि विचारि पाप विस्तारियो।।

दोहा---

भूप श्रर्थ समभगो नहीं मत्रों के विति होय। उड सहर में नाखियों दुखी मये सब लोय॥ त्रिविध मांति धन घटि गयों पायों बहुत कलेस। दुखा होय पुर की तजो तब ताबों पर देस॥

सारठा---

मस्मप्र में श्राय क्लू काल बैठे रहे।
पुनि जयपुर में जाय विग्रज गणि रहवो करें।।
माधव के दरवार विग्रज कियो सुस्त सी रहे।
श्रामें सुनि चित धारि माधो की जो वारता।। ११।

श्रहिल्ल-

दुखी रोग धन होन होय परगित गयो।
जास पुत्र पृथ्वी होर राजा पद गयो।।
हन्या करि लघु श्राप वृतात उद लेगयो।
श्रवजराज परतापिमघ पाछ मयो॥
भिवमत जिनमत देवधन वित्र श्रातिष जो कोय।
श्रहण कियो वित लोम ते पाप पुरुष नहिं जोय॥
ई' श्र-पाय के जोग तो दुखी लोग हम जोय।
हो उदाप पुर छाँ वियो मुख इ छ-या उर होय॥

सोरठा --

जादों वंस विसाल नगर करोरी को पती ।
नाम मूप गोपाल, विराज हमारो थो सदा ॥
पीछ तुरछमपाल वैटमो वास इहां कर छो ।
राल्यो मान विमाल, हाटि सुघट उद्यम कियो '।
मानिकपाल नरेस तुरसमपाल सुपद लयो ।
मद कथाय महेस, राग दोस मध्य रत है ॥
जाक शत्रु न कोय, सबसी मिलि राज छ करें ।
रेत खुसी कछ जोय, थिरता पातें इन करी ॥
पिता रक्षी इहि थान, हम जेपुर में ही रहे ।
लघु आता सत जानि, तिन व्योपार कियो चनों ॥
नैन सुख है नाम, नानिग राम छ तन्ज हैं ।
बहु स्थानी अभिराम, राजदुवार में अगट है ॥
गत्यातर में तात, गयो छ टीको करण को ।

श्राये तव तें आत, इहा रहे थिरता करी ॥७६॥
देवल साधरमी जहां पूजा धर्मक थान ।
प'रयन खांन सुपान की, थिति सगति विद्वान ॥
असी अछ या रूप जो कीजे सुबुधि प्रकास ।
माषामय श्रर वहु रहिस रहेसि यामें मासि ॥००॥
नैना को लघु आत, नाम ग्रलाव सु जासु को ।
श्रत सुनि के हरषात सुबुधि देन को श्रुत रूपो ॥

६१२ सुभाषित । पत्र संख्या-६ । साइज-४×५ इब्न । विषय-सुमाषित । रचना काल-×। खेखन काल-×। श्रपूर्ण । वेप्टन न० ११५४।

६१३. सुभाषितरत्नाविल-भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१० । साइज-१०४४ है इस्र । भाषा-संस्कृत । विषय सुमाषित । रचनाकाल-४ । लेखन काल स० १४०० वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६० ।

वीच २ में नये पत्र भी लगे हैं।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

विशेष—संवत् १५८० वर्षे वैसाख सुदी ६ ग्रुरो श्री टोडानप्रमध्ये राजाधिराजमुकुटमणिसूर्यसेनराज्ये श्री सोलंकी वशे श्री प्रमाचन्द्र देवा तदाम्नाये खडेलवालान्यये वाकुलीवालगोत्रे साह नेमदास तस्य मार्था सिंगारदे तत्पुत्र पासा तस्य मार्था दुर्तिय पुत्र साह जैला तस्य मार्था गौरादे तत्पुत्र गिरराज । इद शास्त्र लिखापितं वाई माता कर्म चयनिमित्त ।

विशेष--सात प्रतियां श्रीर हैं । सभी प्रतियां प्राचीन हैं ।

६१४ सुभापितार्णव । पत्र सल्या-१ से ४८। साइज-११४५ इञ्च। माषा-सस्कृत। विषय-सुमाषित। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं० १०।

विशेष - मित प्राचीन है। संस्कृत में संकेत भी दिये हुए हैं। पत्र २३ वां बाद का लिखा हुआ है।

६१४ सुभाषितावित भाषा । पत्र सख्या-०० । साइज-६२०६५ इच । माषा-हि दी । विषय-सुमाषित । रवनाकाल-х । लेखन काल-х । श्रपूर्ण । वेष्टन न० १०२४ ।

विशेष —६७६ पर्धों की माषा है श्रन्तिस पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ--

श्री सरवज्ञ नम् चितलाय, ग्ररू सुमुरू निरम म सुमाय । जिन वाणी ध्याउ निरकार, पदा सहाई भवि गण तार ॥१॥ प्रन्य समापित जिन वरणयी, ताकी श्रर्थ कछ इक लगी।
निज पर हित कारिण ग्रण खानि, मालू मापा संगह सजान ॥
सीख एक सदग्रक की सार, सिण धारी निज चित्तमभारि।
मज्ञिष जनम सुख कारण पाय, एसी किया करह मन लोग ॥३॥

६१६ सूक्तिमुक्ता बली - सोमप्रभसूरि । पत्र सख्या-१४ । साइज-१०×४६ इख । मापा-सस्कृत । विषय-सुमानित्। रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । विष्टन न० ३०८ ।

विशेष - = प्रतियां श्रीर हैं।

६१७ सूकि मग्रह " " | पत्र सख्या-२० | साइज-११×५ इख | माषा-सस्कृत | विषय-सुमाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण | वेष्टन नं० १४५ |

विशेष — जैनेतर अन्यों में से सूक्तियों का समह है।

६१८ हितोपदेशवत्तीसी—बालचन्द्। पत्र संख्या-३। साइज-६×४३ इश्व। माषा-हिदी। विषय-सुमाषित। स्वना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६३।



विषय-स्तीत्र

- ६१६. श्रकलंक स्तीत्र ' ' । पत्र संख्या-४ । साइज-८ र्ह् रख । मार्था-संस्कृत । विषयः स्तीत्र । स्वना काल-४ । लेखन काल-सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४६ ।
- ६२० स्त्रकलकाष्टक भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५६ इन्व।
 साषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । रचना काल-सं० १६१४ आवय सुदी २ । लेखन काल-स० १६३४ माघ बुदी ७ । पूर्व।
 वेष्टन नं० ५०५ ।
- ६२१. स्नाराधना स्तवन —वाचक विनय सूरि । पत्र संख्या-५ । साइज-१०३४४ई इन्व । मापार हिन्दी । विषय-स्तीत्र । रचना काल-स० १७२६ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष-अन्य प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

श्री विजयदेव स्रिंद पटघर, तीरम जग मह इशि जिगि । तीं गच्छपति श्री विजयप्रमसूरि सूरि तेजह भगमगई ॥रे॥ श्री हींर विजय सूरी सीस वांचक श्री कीचिविजय सुर ग्रह समी । र्तस सीस वाचक विनय विषायह, घरयो जिन चोत्रीस मी ॥३॥। संद सत्तर संवत् उगर्यासीयङ रही राते रचर्ड मास ए । विजय दसमी विजय कारयां कीउ ग्रेण अभ्यासए ॥४॥ नर्मव श्रराधना सिद्धि साधन सुकृत लीला विलासए । निर्जरा हेत इठवन रचिउ नामइ पुगय प्रकासए ॥४॥

६२२. आलोचना पाठ " ु । पत्र संख्या-१ से १२ । साइज-१०१४४६ इच ।, माषा-प्राकृत 🗈 विषय-स्तवन । रचना क्षालं-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं ० ६१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन हैं। एक एक प्रति स्त्रीर हैं। - -

६२३. इप्टंब्रत्तीसी " । पत्र सर्व्या- । सीइन- १ है×४ ई - इब्ब । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना कार्ल-×। लेर्खनं कार्ल-×। पूर्णं । वेष्टनं नं० १०६३।

६२४. इष्टक्षेत्तीसी—बुध्जन । पत्र संस्था-६ । साइज-१२×= इश्व । माषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र क्षे रचना कोल-रं। लेखनं काल-रं। पूर्ण । विष्टेन नं० ५२३।

६२४. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतम गर्गाधर । पत्रे संख्या-७ । साइज-४×४ई इथ । माषा-संस्कृत् हा रंचना काल-×। लेखने काल-सं० १६२६ । पूर्ण । वेप्टन नं ० ६६० ।

विशेष-एंक प्रति श्रीर है।

६२६. एक सौ आठ (१०८) नामी की गुणमाला—द्योनते । पत्र संख्या-३ । साहज-=×४ ई इस । माष!-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-🗙 । लेखन काल-स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टम न • हे १ = ।

६२७. एकीभावस्तीत्र—वादिराज। पत्र संख्या-१। साइन-१०४४ई इन्च । साधा-सस्कत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २१४ ।

विशेष—संचित्त संस्कृतं टीका संहित है। ४ प्रतियी श्रीर है।

६२५. कल्याणमन्दिरस्तोत्र-कुमुद्चन्द्राचार्य। पत्र सख्या-६। साइज-११% इब । माषा-र्संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना कास-× । खेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६७ ।

विशेष-टोंक में प्रतिलिपि हुई भी । अन्त में शान्तिनाम स्तोत्र मी है । ७ प्रतियां श्रीर हैं।

s ş

ऽ) े दिरहा कल्याग्रमन्दिरस्तोत्र भाषा — वनारसीदास । पत्र सख्या ११ से २६ । साइज-=×६ इस । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-×। लेखन काल-सं० १==० ज्येष्ठ बुदी १३ । प्रपूर्ण । विष्टन नं० ६=० ।

विशेष—नानूलाल बज ने प्रतिलिपि की १६ से २६ तक पत्र नहीं हैं। २७ से २६ तक सोलह कारण पूजा जयमाल है।

- ६३०. कल्याणमन्दिरहतोत्र भाषा—श्रखयराज । पत्र संख्या-७ से २६ । साइज ६×४ इम । ' माषा-हिन्दी गर्थ । विषय-स्तोत्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण । वेष्टन न०११०४ ।
- ६३१. चौवीस महाराज को विनती—रामचन्द्र । पत्र सल्या-७ । साहज-१०ई×०ई इस । माषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४ ।
- ६३२. ज्वालामालिनी स्तोत्र '। पत्र सख्या-ः। साइज-ः×४५ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना कालः ×। लेखन काल-×। पूर्णं। वेष्टन नं० ६५७।
- ६३३. बिन द्शीन । पत्र सख्या-३ । साइज-१ ई×४ इस । माषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । सेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२७ ।

ं विशेष-श्रात हिन्दी श्रर्थ सहित है।

- ६३४. जिनपजरस्तोत्र-कमलप्रभ । पत्र संख्या-३ । साइज-=×४० दश्च । माषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना कालं-× । लेखंन काल-स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६५६ ।
- ६३४. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्थ। पत्र सख्या-१२। साइज-११×१६ इत्र । माषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४७६।

विशेष - लच्मीस्तोत्र मी दिया हुआ है । दो प्रतियां श्रीर हैं ।

६३६. जिनसहस्रनाम-प० श्राशाधर । पत्र सख्या- ६ साइज-१०६४६ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८६ ।

विशेष-एक प्रति और है।

६३७. जिनसहस्रनाम टीका — प० आशाधर (मृल कत्तां) टीकाकार श्रुतसागर सूरि। पत्र सल्या-१२१। साइज-१२×५ दे इन्च। माषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-४। लेखन काल-स० १८०४ पीष सदी १२। पूर्ण। वेष्टन न० १२।

विशेष---प्रति स्न्दर एवं शुद्ध है।

६३८. जिनसस्त्रनाम भाषा-वनारसीदास । पत्र संख्या-७ । साहज-११×५ है इन्च । माषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स॰ १६६० । लेखन काल-सं॰ १६७४ । पूर्ण । वेष्टन नं॰ ५६० ।

६३६. जिन स्तुति " " पत्र संख्या-४ । साइज-१२×४ है इच । माषा-हिन्दी गद्य । विषय-

६४० दश्रेन दशक — चैनसुख । पत्र संख्या-२ । साइज-११४= इख । माषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नर्ण ४ १२ ।

बिशेष-- एक प्रति भीर है।

६४१. द्शीन पाठ । पत्र सरूया-४ । साइज-१९४४ इम्च । सामा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७७ ।

विशेष--दर्शन विधि भी दी है।

६४२. निर्वाणकायस्य गाथा ''। पत्र सख्या-१२ । साइज-४४४ इझ । माषा-प्राष्ट्रत । विषय-स्तीत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष-- गुटका साइज है। तीन प्रतियां श्रीर हैं।

६४३. निर्वाणकायड भाषा—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या-२ । साइज-- ×६ इक्ष्र । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-×्। लेखन काल-सं० १८२८ । पूर्य । वेष्टन न० १०४६ ।

६४४. पद व भजन संग्रह । पत्र संख्या-७६ । साइज-१९४७ई इख । मामा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६३ ।

विशेष -- जैन कवियों के पदों का सम्रह है।

६४४. पद व भजन संग्रह ' '। पत्र संख्या-२०६ । साइज-११×५ हुझ् । माषा-हिन्दी । विषय-पद समह । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६२ ।

विशेष — निम्न रागिनियों के भजन हैं—

राग मैंर, मैरवी, रामकली, लिलत, सारग, विलावल, टोडी, पत्र — १-६ १६-२२ २३-४० ४१-४६ ४०-७१ ७२-१०४ १०६-११४ पूरवी, मल्हार, ईमण, सोरठ, स्नासावरी, ११४-२१⊏ ११६-१३१ २३१-१४० १४६-२०४ २०६

इनके श्रतिरिक्त नेमिदशमवर्णन मी दिया हुन्ना है।

ं ६४६. पद संग्रह ं । पत्र संरुपा-४ । साइज-=×४ इंख । मांवा-हिन्दी । विवय-पर (स्तवन) । रचना काल-× । लेखन काल-स० १=४४ । पूर्ण । वेष्टेन न० १०४४ ।

६४७. पद संग्रह ' " । पत्र संख्या-४७ । साइज-७×६ इस । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । स्वना काल-× । लेखन काल-स० १७६= । पूर्ण । वेष्टन न० ११३ ।

६४८. पद संग्रह ' । पत्र सस्या-१ से ६ । साइज-१०ई×६ई इस । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-×। लेखन काल-×। अपूर्ण । वेष्टन न० ६३३ ।

६४६. पद् संग्रहें । पत्र संख्या-१ (लंबा पत्र) । साइज-१४र्ड्र ४६ इस्र । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६२ ।

विशेष - किशनदास तथा चानतराय के पद है।

६४० पद संग्रह-जहादयाल । पत्र संख्या-द । साइज-४३४६% इख । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । त्वना काल-Х । लेखन काल-Х । पूर्ण । वेष्टन न० १६९ ।

्रद्भर. पद संग्रह " । पत्र संख्यां-१ । साइज-१४×२७६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ६६७ ।

विशेष--लंबा पत्र है।

६४२. पद संग्रह " | पत्र सख्या-१० | साइज-६३×६३ इच । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रवना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

६४३. पद समह " " । पत्र सख्या-३४ । साइज-४×४ इच । मापा-हिन्दी । विषय-स्तर्वन । सीवन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १११७ ।

६४8 पर संग्रह " प्र मंख्या-१४। साइज-६×४ इन । मापा-हिन्दी। विषय-स्तवन । लीखन काल-×। पूर्ण । वेण्टन नं० १११४।

द्रथर. पद्मावती ष्मष्टक द्वित : " "। पत्र सस्या-१६ । सार्ब-१२×५६ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं • ⊏१३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत-टीका सहित है।

६४६. पद्मावतीस्तोत्र "" " " पत्र सस्या-६ । साइज-= १४४ । स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न॰ १५४ ।

६४७. पद्मावतीस्तोत्र । पत्र सख्या-४ । साइज-१०ई४६ इस्र । साषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । स्वना काल-४ । लेखन काल-सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६७ ।

६४८. पंचमंगल- ह्वचन्द् । पत्र सख्या-२ से १२ । साइज-६ ई×४ ई इश्व । माषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन नं • ६६२ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

६४६. पार्श्वनाथ स्तोत्र ''। पत्र संख्या-१० । साइज-८४६ इख । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ५४४ ।

६६०. पार्श्व लघु पाठ · · । पत्र संख्या-३ । साइज-१०४४ इस्र । ! माषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

६६१. बृडा दर्शन "। पत्र सख्या-६। साइज-११ई-४५ई इख। साषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। स्वना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न० ४०७।

विशेष- पत्र ३ से श्रागे रूपचन्द इत पच मंगल पाठ हैं।

६६२ विनती सम्रह । पत्र संख्या-४ । साइज-६×४ इन्च । माष्।-हिन्दी । विषय्-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन नं० ११३४ ।

६६३. विनती — किशनसिंह। पत्र संख्या-१। साइज-६×६ इन्च। माषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १०१४।

६६४. भक्तामर स्तोत्र —मानतु'गाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-१०४४ ई इन्तु । भाषा -६६६त । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६७४ । पूर्य । वेष्टन न० ४८६ ।

विशेष-- १० प्रतियां घीर हैं।

६६४. भक्तामरस्तोत्र भाषा—हेमराज् । पत्र संख्या-१०। साइज-१०३×६३ इस । माषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० ४२४।

६६६. भक्तामर स्तोत्र सटीक-मानतुगाचार्य टीकाकार । पत्र संख्या-४ । साइज-११र्द्र ४४ इब । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६६ ।

विशेष—श्वेताम्बरीय शिका है, ४४ पद्य हैं तया शिका हिन्दी में हैं। एक प्रति श्रीर है जिसमें मत्र श्रादि भी दिये हुए हैं ६६७. भक्तामर स्तोत्र टीका '। पत्र सक्या-१२। साइज-= र्डे×६३ इच। मापा-सस्क्त। विषय-रतोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण। वेष्टन नं ० ६४६।

विशेष - १२ से धारी पत्र नहीं हैं।

६६८. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—प्रह्मरायमल्ल । पत्र सरया-४४ । साइज-१०×८ई इन्द । मापा-संस्कृत । विषय-रतोत्र । रचना काल-स० १६६७ श्रपाढ सुदी ४ । लेखन काल-स० १६८१ । पूर्ण । वेप्टन न० ६५ ।

विशेष-शाचार्य भुवनवीर्त्ति के लिए चारपुर मे लालचन्द ने यह पुरतक प्रदान वी।

६६६. भूपालचतुर्विशति-भूपाल कवि । पत्र संख्या-६ । साइज-१०४४ इन्च । मापा-सस्कृत । विपय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २८ ।

विशेष-- १ प्रति श्रीर है।

६७० मगलाष्टक । पत्र संख्या- । साइज-१३×४६ इख्र । माषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० ११४५ ।

६७१ तघु सामायिक पाठ । पत्र सल्या-१ । साइज-१०४५ इस । सापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४४ ।

६७२ तद्मीस्तोत्र —पद्मनिद्। पत्र सस्था-२ । साइज-६×१ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० ११२१।

६७३ विपापहारस्तोत्र — धनजय । पत्र संख्या-६ । साइज-१०४४६ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष —तीन प्रतियां श्रीर हैं, जिनमें एक सस्कृत टीका सहित है।

६७४ विषापहारस्तोत्र भाषा— श्रचलकीत्ति । पत्र सस्या-४ । साइज-=×४६ इटच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० ४४४ ।

६७४. वृहद्शान्ति स्तोत्र । पत्र सख्या-१४ । साइज-१०४४ इञ्च । साषा-सस्कृत प्राकृत । विषय-रतोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । बेप्टन न ० ३०१ ।

विशेष-प्रारम्म में मयहार स्तोत्र, श्रजित शाति स्तोत्र, व भक्तामर स्तोत्र हैं।

६७६ वीरतपसङमाय "। पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४-१ इब्च । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन नं० १०४⊏ । माषा गुजराती है। ६४ पद्य हैं प्रारम्म में ३४ पद्य में क्रमति निघटिन श्रीमधर जिनस्तवन है।

६७७. शान्तिस्तवनस्तोत्र । पत्र संख्या- । साइज- ५ १ इन्च । साषा-हिन्दी । विषय- - स्तोत्र । रचना काल- × । लेखन काल- × । पूर्ण । वेप्टन नं ० ६४३ ।

६७८. सरस्वतीस्तोत्र—विरचि । पत्र स्ल्या-२ । साइज-१०४५ दे इन्च । माषा-सरकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ५२६ ।

विशेष-सारस्वत स्तोत्र नाम दिया हुआ है । ब्रह्माड पुराण के उत्तर खड का पाठ है ।

६७६. स्तोत्र पाठ संत्रह । पत्र संख्या-४०। साइज-११×५६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० २००।

(१) निर्वाण काएड

(२) तन्वार्थ सूत्र उमास्वाति

(३) भक्तामर स्तोत्र मानतुं गाचार्य

(४) लच्मीस्तोत्र पद्मप्रसदेव

(५) जिनसहस्रनाम जिनसेनाचार्य

(६) मृत्यु महोत्सव

(७) द्रव्य संग्रह गाथा नेमिचन्द्राचार

(=) विषापहार स्तोत्र धनजय

६८०. स्तोत्र संग्रह '। पत्र सख्या-२१ से ६६। शाइज-११२८८ इब्च। माषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। लेखन काल-सं० १६२६। श्रपूर्ण। वेप्टन व ० ६२४।

६ स्तोत्रों का संप्रह हैं।

६८१. स्त्रोत्र ' । पत्र सख्या- । साइज-१२×५६ इछ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना फाल- × । लेखन काल- × । पूर्ण । वेष्टन न० १०७२ ।

विशेष-श्रवर मोटे हैं तथा प्रति प्राचीन है।

६८२. स्वयंभूस्तोत्र —समंतभद्र । पत्र सस्या-४ । साइज-११ई×४६ इद्य । मापा-मस्कृत । विषय∽ स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन न० २६७ ।

विशेष-विसर्जन पाठ सी है। दो प्रतियां श्रीर है।

६८३. समतभद्रस्तुति (गृहद् स्वयभू स्तोत्र) — समतभद्र । पत्र संख्या-१४ । साहज-११ई×५ई इन्न । मापा-सस्टत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन नं० २६४ ।

६८४ साधु वदना । पत्र सख्या-४। साइज-१०३×४ इत्र मापा-हिन्दी। विषय-स्तवन। स्वना काल-४। लेखन काल-स० १७६१। पूर्ण। वेष्टन न० १०७३।

६८४ सामायिक पाठ । पत्र सख्या-२६ । साइज-७८१ इन्च । मापा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न॰ १४ ।

विशेष—गुटका साइज है तथा निम्न समह श्रीर है

निरजन स्तोत्र—पत्र सख्या ३

सामायिक—पत्र सख्या

चौनीस तीर्यंकर स्तुति—पत्र सख्या–२४ से २४

निर्वाण काण्ड गाथा—पत्र सख्या–२४ से २६

६-६. सामायिक पाठ । पत्र संख्या-६१। साइज-११×४ इख । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-पौष घदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० १४८ ।

विशेष—जोशी श्रीपति ने प्रतिलिपि की भी।

६८० सामायिक पाठ भाषा-त्रिलोकेन्द्रकीर्ति । पत्र सख्या-६४ । साइज-६४१ इन्छ । मात्रा-हिन्दी , विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १८३२ वैशाख बुदी १४ । लेखन काल-स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८२२ ।

प्रारम्म — श्री जिन वदौँ माव धरि जा प्रसाद शिव बोध ।
जिन वाणी श्रव जैन ग्रव वदौँ मान निरोध ॥
सामायिक टीका करी प्रमाचन्द मुनिराज ।
सस्कृत वाणी जो निपुण ताहि के वो काज ॥२॥
जो व्याकरण विना लहे सामायिक को श्रर्थ ।
सो माषा टीका करू श्रव्यमती जन श्रर्थ ॥३॥

श्रन्तिम—घटरासे श्रीर वर्त्तास सवत् जाणो विसवा वीस ।

मास मली वैसाख वखाण किसन पत्न चोदिस तिथि जाण ॥

शुक्रवार शुम वेला योग पुर श्रजमेर वसे सिव लोग ।

मृल सव नंदास्नाय बलात्कार गण है सुखदाय ॥

गच्छ सारदा श्रन्वयसार कुन्दकुन्द मुनिराज विचार ।

श्री भट्टारक कीर्ति निधान विजयकीर्ति नामें ग्रण खान ॥ तिन इह भाषा टीका करी प्रमाचन्द टीका श्रनुसरी ।

दोहा—संस्कृत शन्द नहीं लिख्यों सन थानक इया माहि।

किहां किहां लिखियों कठिन घयी नधाई नाहि॥

यू मानारथ सूचिनी इह टीका को नाम।

जायों वांचो उर धरों ज्यूं सीभी शिव काम॥

प्रभाचन्द की मित कहां किहा हमारी खुद्धि।

रिव की कान्ति किहों श्रर दीपक की शुद्धि॥

पे हम मित माफिक करी हया में श्रर्थ विरुद्ध।

जो प्रमाद विस होय सो सुमित कीजिये शुद्ध॥

सोरठा -- माषा टीका पह कौई जिनेसर मिक्त वर्सि । जो चाहो शिव गेह इया को पाठ करो सदा ।। ।।

इति श्रीमद्मट्टारक श्री तिलोकेन्द्रकीर्ति विरचिता सामायिक टीका मावार्धसूचिनी नाम्नी छिद्धमगमत् ।

राच का उदाहरण—मलो है पार्श्व कहता सामधि जैह को असा हे सुपार्श्वनाय मंगवन् घाप जय कहता बार बार जयवता रही । त्रापने म्हारी वारवार नमस्कार होनो । (पत्र ३८)

६८८. सामायिकं वचितका—जयचन्द् छ्।बङ्गं। पत्र संख्या-१०। साइज-१२×१ई इख । माषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्णं। वेष्टन न० ४०१।

विशेष-एक प्रति-श्रीर है।

६न्धः सिद्धित्रियस्तोत्र—देवनन्दि । पत्र सख्या-३ । साइज-११×५ दे इव । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन नं० ५५ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ श्रीर हैं जिसमें एक हिन्दी टीका सहित है ।



विषय-संग्रह

६६०. गुटका न० १। पत्र संख्या-१६६। साइज-१०४७ इख्र । माषा-प्राकृत-सस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण । वेण्टन न० ३१८।

मुख्यतय। निम्न पाठों का संग्रह है-

विषय सूची	कर्चाकानाम	साषा	विशेष
षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	शकत	
श्राराधनासार	देवसेन	"	
तत्त्वसार	देवसेन	"	_
समाधि शतक	पूर्वयपाद	सस्हत	
त्रिमगीसार	नेमिचन्द	प्राकृत	
श्रावकाचार दोहा	लस्मीचन्द	77	

६६१. गुटका न०२। पत्र सल्या-१२६। साइज-८र्४६ इम्रा भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-स०१८१४ माघ सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन न०३१६।

विशेष — पूजा पाठ तथा सिंदूरप्रकरण छादि का समह है। करौली में पाठ समह क्ये गये थे। श्री राजाराम के पुत्र मौजीराम लुहाडिया ने प्रति लिखनाई थी।

६६२ गुटका न०३। पत्र संख्या-६= । साइज-६×६ इच । माषा-हिन्दी । विषय-चर्च । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न०३६०।

विशेष - धार्मिक चर्चार्घों का समह है।

६६३ गुटका न०४। पत्र सरूया-१६६। साइज-⊏१४६ इस । माष:-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। खेखन काल-×। श्रपूर्ण। वेष्टन नं०३७३।

विशेष — सप्टकर्भ - प्रकृति वर्णन तथा तीनलोक वर्णन है।

६६४ गुटका न० ४। पत्र सख्या-१=१। साइज-१०१्रै×७ इख। माषा -(हन्दी-संस्कृत। लेखन -व्यल-स० १=६४। पूर्ण। वेण्टन न० ४३३।

निम्न पाठों का सम्रह है-

विषय सूची	कर्ची का नाम	माषा	विशेष
पार्श्व पुराण	मूधरदा स	हिन्दी	पत्र १-७२
चौवीस तीर्घंकर पूजा	· शमचन्द्र	"	७३ -१ २६
देवसिद्धपूजा एवं		हिन्दी	१२६-१८१
भन्य पाठ संग्रह		93	

६६४. गुटका नं० ६ । पत्र सस्या-१४२ । साइज-७×६ हु इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । रचना काल-×। लेखन काल-× , पूर्ण । वेष्टन नं० ४२७ ।

निम्न पाठों का संप्रह है-

विषय सूची	कती का नाम	माषा	विशेष
चाषक्य नीति शास्त्र	चाग्यक्य	संस्कृत	×
वृन्दविनोद सतसई	वृत्द	हिन्दी	७१० पद्य हैं।
विहारी सतसई	विहारी	हिन्दी	७०६ पद्य हैं।
कोक्सार	त्रानद कवि	हिन्दी	४४४ पद्य हैं।

६६६. गुटका न० ७ । पत्र संख्या-१५२ । साइज-१र्दे×६र्दे इच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन काल-सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

मक्तामर श्रादि पत्रच स्तोत्र	-	सस्कृत
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्त्राति	33
सुदर्शनरास	नहारायम ्स	हिन्दी
भविष्यदत्ता चौपई	33	,,

६६७. गुटका नं० म । पत्र सल्या-१८७ । साहज-८३ँ×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्वृत । लेखन काल-सं० १७२७ श्रासीज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४४८ ।

विशेष-निम्न मुख्य पाठों का सन्रह है-

प्रवचनसार मापा	हेमराज	हिन्दी	
पद	रूपचन्द	11	
परमार्घे दोहा शतक	"	57	लेखन काल १७२६
पम्च मगल	71	"	

मक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	77	
चिन्तामिया मान बावनी	मनोहर कवि	"	२० पद्य है। श्रपूर्ण
कलियुग चरित		יל	१० पद्य हैं।

६६८. गुटका न० ६ । पत्र संख्या-१३८ । साइज-६×६ इञ्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८१० पूर्या । वेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष-सामायिक पाठ हिन्दी टीका सहित तथा श्रन्य पाठों का सम्रह है।

६६६ गुटका नं० १०। पत्र सख्या-४४। साइज-६×४ इब्च। माषा-हिदी। लेखन काल-सं० १८८४ श्रवाद सुदी ⊏। श्रवूर्ण । वेष्टन नं० ४५०।

विशेष-पूजा पाठ सर्मह है।

७००. गुटको ने० ११ । पत्र सस्या-२६४ । साइज-६×६ ई इख । माषा-सस्कृत-हिन्दी-प्राकृत । सेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ४५१ ।

विषय-सूची	कर्चा	माषा	विशेष
मक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	_
कल्याणमदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	37	
कर्मकायड गाथा	नेमिचन्द्र	प्राकृ त	_
द्रव्यसम्रह् गाथा	"	"	_
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	सस्कृत	
नाम माला		"	
चौरासी बोल	हेमराज	हिन्दी	
निर्वाण कार्यड	_	সান্তর	
स्वयमू स्तीत्र 🕏 🕏	समतमद	संस्कृत	
परमानद स्त्रोत्र	-	77	_
दर्शन पाठ	_	"	
कर्णाष्टक		77	
पार्श्व स्तोत्र	पद्मप्रमदेव	77	-
पाश्वस्तीत्र		"	_
चौबीस तीर्यंकर पूजा	रामच•द	हिन्दी	
पूजा संमह	_	,, संस्कृत	****

स्तुति — हिन्दी

पदसंग्रह - रुपचन्द्र, दीपचन्द, टेकचन्द, ह्र्णचन्द, धर्मदास, मूधरदास श्रीर वनारसीदास श्रादि कवियों के हैं।

७०१. गुटका नं० १२ । पत्र सख्या-७२ । साहज-१०×७ ई इस्र । माषा-हिन्दी । रचना काल-×। स्रपूर्ण । वेण्टन न० ४८६ ।

विशेष-पूजाश्रों का संग्रह है।

७०२. गुटका नं०१३। पत्र संख्या-६४। साइज-६×६ ई इख। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-स० १८४२। पूर्ण। वेष्टन नं० ५८८।

विशेष--

स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३५ ।

विषय-सूची कर्त्ता का नाम माहा विशेष चौवीस ठाणा चर्चा — हिन्दी छदेन स्वरूप वर्णन — ,,

७०३. गुटका न० १४। पत्र सख्या-४३। साइज-७×४ है इब्च। माषा-हिन्दी। लेखन काल-×। श्रपूर्ण। वेन्टन न० ४८६।

विशेष — पूजा संम्रह, करूयाणमन्दिर स्तोत्र समयसार नाटक भाषा-(बनारसीदास) श्रादि पाठों का सम्रह है।

७०४. गुटका नं० १४। पत्र संख्या-२६२। साइज-=×६ इस्र। माषा-हिन्दी। लेखन काल-

सूची कर्चा का नाम पत्र विशेष माषा श्रीपाल्सस नहारायमल्ल 39-58 हिन्दी रचनाकाल १६३० श्राषाढ सुरी १३ प्रघुम्नरास २६-४४ १६२८ मादवा सुदी २ " 57 नेमीश्वररास 8**%-**48 १६१५ श्रावण सुदी १३ " " सुदर्शनरास १६२६ नैशाख सुदी ७ 30-31 " शीलरास विजयदेव सूरि マニース " घठारह नाता का वर्णन लोहट **55-83** 17 धर्मरास ६२-१६४ रविवार की कथा माऊ कवि १०४-११३ 77 श्रध्यात्म दोहा रूपचन्द १०३ दोहे हैं। ११३-११७ "

सीताचरित्र	कविवालक	११७–२ई७	44	
पुरन्दर चीपई	मालदेव सूरि	२३७—२५६	"	लेखनंकाल १७५६
यीगसार	योगचन्द्र	रे४७–२६२	44	-

७०४. गुटका नं० १६ । पत्र संख्या-३७६ । साइज-६×४६ इम । माषा-सस्कृत-हिन्दी । लेखनं काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६३१ ।

निस्न पाठों का सम्रह है-

जिनसहस्रनाम पूजा धर्मभूषणं र्रास्कृतं 'पत्र १-१५६ समवशरण पूजा लालच द विनोबीलाल हिन्दी १५७-३७६ रचना काल-१⊏३४

७०६. गुटेका नं० १७। पत्र सख्या~ २० से ४१०। साइज→६×६ इञ्च। सापा—हिग्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन नं० ६३६।

मुख्य पाठों का संप्रह निम्न प्रकार हैं -

क्री का नाम रचना का नाम विशेष - संबा पंथीगीत छीहल हिदी परमात्म प्रकाश योगी-द्रदेव भपभ श बनारसी विलास के कुछ ग्र श बनारसीदास हिन्दी सीताचरित्र कवि वालक रचना काले १७१३ विभिन्न कवियों के पदों का संप्रह है पद समह मांगी तु गीतीर्थ वर्णन परिखाराम ij दोहा शतक हेर्मराज घष्यातम, र० का० स० १७२४ 35 कार्तिक सदी ४, १०१ वद्य हैं। श्रध्यातम १०१ पर्च है। दोह शतक रुपचन्द 17 'सिन्द्र प्रवरण वनारंसोदास 7) स्तोत्र अतिम पद्य हेमराज कृत है। --सक्तामर स्तोत्र टीका श्रवयराजं श्रीमाल सवोध पचासिका त्रिभुवनच द j, **प्यणुवत को जखडी** 17 श्रकृत्रिम चैत्यालय की जयमाल " 'पद - चेतन यो घर नाहीं तेरी मनराम "

पंद-- जिय तें नर भिव यों ही खोयो मनरामें हिन्दी

रोगापहार रतोत्र ,, ,,

पंद-- मुख घडी कब श्रावली नहीं हो हैं भी विं ,, रेर अंतरे हैं।

ससार मम्मार--

७०७. गुटका तं० १८ । पत्र संख्या-१६४ । साइज-७४६ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६३७ ।

विषय-सूची	कर्चा का नाम	साषा	त्रिशेष
क्हेंयाणमन्दिरस्तोत्र माषा	बनारसीदास	हिन्दी	
भक्तामर भाषा	हेमराज	"	-
कमें वसीसी	श्रचलकी चि	"	र० का० १७७७
		पावा नगर में रच	ना की गयी भी।
ज्ञान पच्चीसी	चनारसीदा स	77	***
मेघ कुमार गीत	पूनो	7;	
सिन्दूर प्रकरण	धनारसीदा स	"	-
चनारमी विलास के पद एवं पाठ	**	"	
बि म्बूस्वामी पूजा	पाडे जिनराय	,,	ि का० १७४६
	0	ò	गोष सुदी १०

विशेष—जनलपुर में प्रतिलिप की गई थी। विशेष—१२० पत्र से श्रागे की लिपि पढने में नहीं श्राता।

७०८ गुटका नं०१६। पत्र कल्या-२२। साइज-४×४ई इख। माषा-हिदी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० =०४।

विशेष-जीवों की संख्या का वर्णन है।

७०६ गुटका स० २० । पत्र सख्या-१३५ । सीइज-६३×१० इच । साषा-हिन्दी । लेखन काल-से० १०८८ । पूर्ण । बेप्टन न० ६३८ ।

निम्न पाठों का सम्रह है --

समयसार नाटक	वनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६१
चनारंसी विलास	"	3)	
क्से प्रकृति वर्णन	33	*7	

७१० गुटका न०२१। पत्र संख्या-२४१। साहज १४६ हन्च। मात्रा-हिन्दी-सस्कृत। लेखन काल-सं० १८१७ माघ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन न० ८५८।

निम्न पाठों का सम्रह है।

चौदह मार्गणा चर्चा		हिन्दी विशेष
स्वर्ग नर्क श्रीर मोन		72
का वर्णन		"
श्रन्तर काल का वर्णन		77
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	 संस्कृत

७११. गुटका नं०२२। पत्र सख्या—३१। साइज-६ ईं×७ इच । मात्रा-हिन्दी। खेलन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ⊏६५।

विशेष-हिन्दी पदों का समह है।

७१२. गुटका न०२३। पत्र संख्या-१२। साइज-८×५५ इख । सापा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेण्टन न० ६६४।

विशेष —सम्मेद शिखर पूजा एव रामचन्द्र कत समुच्चय चीवीसी पूजा सम्रह है।

७१३. गुटका न०२४। पत्र सख्या-३४। साइज-६३४८ ई दश्व। साषा-हिदी। लेखन काल-४। अपूर्ण । वेष्टन नं०६७०।

विशेष--

विषय-सूची	क्ती का नाम	माषा
दशलक्ष जयमाल		हिन्दी
मोच पैंडी	- ननारसीदास	55
सबोध पचासिका	घानत	"
पंचमंगल	रुपचन्द	"
पद	परमानन्द) 7
योगसार	योगीन्द्र देव	श्रपञ्च श

७१४. गुटका नं० २४। पत्र सख्या-२५३। साइज-६×५ इश्व। माषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । विषय-सम्रह । तीखन कात-×। पूर्ण । वेष्टन न० ६७९।

विशेष-गुटके में लगमग ३३ से श्रविक पाठों का संप्रह है जिनमें मुख्य निम्न पाठ है-

नाम ग्रथ	कर्ची	माषा	विशेष
नेमीश्वर जयमाल	सहारी ने मचंद	श्रपभ्र श	पत १४
गीत ~	वूचा	हि-दी	पद्य ४
नेमीश्वर गीत	वील्हव	हि दी	पत्र २०
शांतिनाथ स्तोत्र	गुरुमद	सस्ऋत	सरल यस्कृत में है।
		} नाम मिल्	नद्र की जगह ग्रुणमद्र भी ता है। स्तोत्र एन्दर हैं।
जिनवरस्वामी वीनती	सुम तकोिर्चा	हिंन्दी	
मुनिस्त्रतासुत्रेच।	प० योगदेव	श्रपभ्रंश	
हसा भावना	नझ ग्रजित	हिन्दी	पत्र १६० तक
•			कुल ३७ पद्य है
मेध कुमार गीत	पूनो	हिन्दी -	पत्र २१४
जोगीर।सर	बियादास	17	77
ग्यारह प्रतिमावणन	नि कनकामर	71	> ₹
पट —रेमन काहे को भूलि रह्यो	छीहल	19	= ? \$
विषया वन मारी			४ पद्म हैं
नेमिराजमित वेलि।	ठक्कु(सी)	27	224
ानए लाहू गीत	वहार।इमझ	59	૨ ૨ <i>٢</i>
पचेद्रिय वेलि	ठक्कुरसी	55	२ २७
सार मनोरयमाला	साह श्रवल	-,	२ - ₹
विव्जुच्चर श्रणुपेहा	*****	श्रपभंश	२४०
मरतेश्वर वैराग्य	Vieren ,	19	₹४₹
रोष (कोध) वर्णनः	गीयस	77	२४२
श्रादित्यवार कथा	भाक	हिन्दी	
पट्टाविस मदवाहु से पद्मनंदि तक		सस्कृत	

७१४. गुटका न० २६ । पत्र सख्या-२७६ । साइज-५४ इष्च । माषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७८४ । पूर्णी वेष्टन न० ६७२ ।

विनय सूची कर्चा का नाप भाषा विशेष

पचमगितविति हिन्दी रचना काल-म॰ १६=३ |

तेखन काल सं॰ १७४४ | मधुपुरा में चूहहमल ने प्रतितििष

की'थी | श्रंत में इसका नाम चहुंगितविति मी दिया है ।

समयसार नाटक	वनारसीदास	हिन्दी	
कृष्ण रूवमणी केंग्नि	पृथ्वीराज राठौड		ने वा स० १०४४। रचनाकाल स० १६.४। ले० वाल स० १०५४।
विशेष—हिन्दी टीका स ३ नुसखे	माहत ह ।	हिन्दी	
(१) शिलाजीत शुर	इ करने की निधि।	12 30	
(२) फोडे फु सियों	<u> </u>		
	तद' रोग की श्रीपध ।		
सिंद्रप्रकरण	बनारसीदास	हि-दो	रचना काल सं० १६६१। लेखन सं० २७४२।
विशेष — राजसिंह ने मध्	पुरा में प्रतिलिपि को भी।		लखन राज १७१२ ।

७१६. गुटका नः २७। पत्र सरुया-३४६ । साइज-११४६ इसः मापा-हि दी शहत। पूर्ण। वेष्टन

विषय-सूची	कर्ता	सापा	विशेष
श्राराधनासार	न्वसे न	प्राकृत	११४ गाया हैं।
सनोधपंचासिका	99	77	<u> ۲۰</u> ,,
यसमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	श्रपम्र श	₹४ १ ,,
यीगसार	"	37	१०८ पद्य हैं।
सुप्पय दोहा	-	प्र ा कृत	٠٤ ,,
द्वादशानुप्रेचा	सदमीच द	75	૪७ _{,,}
नयमाल ६ मह		"	
समयसार	बनारशीदास	हिंदी	-
अना सावि स ास	77	77	ले० का० सं० १७०३ _, मगसिर श्रुदी ६
त्रिसोक्सार चींपाई	सुम तिकीचि	11	रचनाकाल स० १६२७

प्रारम्म सुमितनाथ पचमी जिनराय। सरसित सदगुर सेवहपाय॥

त्रिलोकसार चौपाह कहु । तेहि विचार सुखी तम्हें सह ॥।॥

श्रुलोकाकास माहि छै लोक। श्रुखोमध्य उर्द्ध छै यौक॥

छ द्रश्ये मयो लोकाकास। श्रुलोक माहि केवल श्राकास ॥।॥

घन घनोद्धि तन्तु श्राधार । यातें वेधे त्रिणि प्रकार ॥ छा।ल वेड्यो तर वर जेम । लोक।कास कहें ब्रॅ जेम ॥२॥

श्रा तम—श्री म्लक्ष गुरु लक्ष्मीचन्द । तास पाटि वीरचन्द ग्रेणिद ॥

श्रानभूषण तस पाटि चग । प्रमाचद वादी मनरंग ॥५०॥

समितकी ति सरोवर कि सार । त्रिलोकसार धर्म ध्यान विचार ॥

जे मणे ग्रेणे ते सुखिय धाय । रयण भूषण धरि मुगति जाई ॥५ =॥ ,

वीर वदन विनिगत वाक । स्थाता पायि संसारा नाक ॥ ,

भावक जन मांव ज्यो जोय । समितकी ति सख सागर होय ॥५६॥

सिहपुरी बंसी श्रुगार । दान सील तप भावन श्रपार ॥

ताहता माइ सिंघा धिपसार । कुश्ररजी कुयेर श्रर दातार ॥६०॥

सवत सोलिन सचावीस । माघ शुक्ल ने वारसि दिस ॥

कोदादी रचिये ए सार । सिव मगत मावो भासार ॥६१॥

इति श्री त्रिलोकसार धर्मध्यान विचार चउपई वद्धे रासा समाप्ता ।

मान वावनी	मनीहर	हि दी	१३ प घ है।
लघु नावनी	9 >	"	77
जोगी रासो	जि य दास	"	४० पय हैं।
द्वादशानुप्रेश	-	**	~~~
निर्वाण कोड गाया		प्राकृत	Entypeon
द्वादशानुमेचा	श्रीधृ	हिन्दी	·
चेतन गीत	जिणदाम	73	५ पद्य हैं।
उदर गीत	छीहल	"	४ पद्य हैं।
ं भी गीत	***	***	६ पद्य हैं।
पंचेदिय नेलि	ठ कुरसी	"रचना काल स	० १५ ५ स कार्तिक सुदी १३
थिरचर जखडी	जिणद्,स	"	
गुण गाषा गीत	नस वद्धे मान	***	३७ पद्म
जखडी	रूपचन्द	53	Press
परमार्थ गीत	"	"	
नखरी	दरिगह	"	
दोहा शतक	रूपचन्द	"	९०१ पद्य हैं।

सुदशन जयमाल		या रुत	1
दशस्य नयमाल		4	
मेघकुमार गीत	पूनो	हि दा	२ १ पद्य
पंच कल्याणक पाठ	रूप च न्द	33	
द्वादशानुप्रेना		"	_

७१७ गुटका न० २८ । पत्र सस्त्रा-२६०। साइज-६३ ×६३ इछ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८२३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७४ ।

विशेष-पूजाओं तथा पदों का वृहद संग्रह है । वनारसीदास कृत मांभ्या भी है जो खहात रचना है ।

७१८. गुटका नं० २६ । पत्र संख्या-२७ । साइज ६६४५६ इख । मापा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८४९ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ६७६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	मापा
पद	जगजीवन	हि ⁻ दी
नेमिनाय का व्याहला	नाथ्	***
निर्वाण काग्ड भाषा	भगवतीदास	55
पद	मनराम	17
साधुस्रों के श्राहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	भगवतीदास	रचना काल स० १७५०

विशेष सतीप राम श्रजमेरा सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की भी।

७१६ गुटका न०३०। पत्र सख्या-२४१। साइज~⊏×६ इख । माषा -(हन्दी । लेखनः काल-×। पूर्या । वेच्दन न०६७७।

निम्न पाठों का मंग्रह है-

विषय-सूची	कर्ताका नाम	भाषा	विशोष
समयसार	बनारसीदास	हि दी	
वनारसी विलास	55	***	
पचमगल	रूपचद	77	
योगी रासो	जि यादास	77	

७२०. गुटका न०३१ ' पत्र सख्या-७५ । साइज-१०३४७ इख । माषा-हिन्दी (पद्य)। लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० ६८६ । त्रिपय-सूची बाणिक प्रिया कर्चा का नाम

पत्र संख्या

कवि सुखदेव

१-१७ रचना काल सं० १७६० लेखन काल सं० १६४४

विशेष - इसमें ३२१ पद्य हैं । व्यापार सम्बन्धी वातों का वर्णन किया गया है ।

स्नेहसागर खीला

वसी हंसराज

१८ से ७०

विशेष—विशव प्रिया का श्रादि श्रन्त माग निम्न प्रकार है—
प्रारंम — सिध श्री गनेसाय नमः श्री धरसते न्मः जानुकी बलमाइ नमः श्रथा लिखते वनक श्रिया ॥
चौपई—गुर गने [स] कहै सुखदेव, श्री सरसती चतायो भेव।
वनिक प्रिया वनिक वाचयो, दिया उजियार हाथ के दयो ॥ ॥

दोहा--गोला पूरव पच विसे वारि विहारीदास ।
तिनके सत सुखदेव किह, विनक शिया प्रकास ॥२॥
विनकिन को विनक पिया, मडसारि की हेत ॥
श्रादि अत श्रोता सनो, मतो मत्र सौ देत ॥३॥
गाह मास कातक करे, संवतु सौधे साठ ।
मते याह के जो चले कवह न श्रावे घाट ॥२॥

चौपई--फागुन देव दलज श्राहयो सक्ल वस्तु सुरपति चाहयो ॥ चार मास इहिरेहे श्राह पुन पताल सुता हो जाह ॥ ॥ ॥

मप्य माग-श्रया जेठ वस्तु लीवे को विचार ।

दोहा—तीन लोक दसऊ दिसा, सुरनर एक विचार ।
जेटे वस्तु निकात है पावस की दरकार ॥१४०॥
घटे घटी सो घटि गई, वस्तु वैच पतकार ।
निको को दिन नाहरों कीजे नाच निचार ॥१४१॥
जेठी निकों जेठ की सन जेठन मिल मास्त ।
सक्त वस्तु पानी मई जो पानी लो राख ॥१४२॥

चौपई—प्रीम ऋतु वस्ते लिखमी वैच वस्तु न खावे कमी।
यहि मत जो न मान हे कोइ, बीधे सारे व्याज गये साँइ ॥१ दशा
जेठे वस्तु न धरिये धाइ, धपने होइ हो बेची जाइ।
साहु सन्हारे रहियो बाधी, जलमे बस्ते दुलम गहनी ॥१४४॥

कतिग माग-

दोहा — देखी सुनी सो में कही, मन्नी जो मित, मान ।

कानी जाति जो न सब को छागे की जान ॥३१७॥

चौपई — मेसी हिम्याक हाम ले जोर, साहु सुमकरन करत कब्र मीर ।

मारगहान हर मन मानिया, दिल क्रसाद हरेष न वानियो ॥३१८॥

मारगहान हर मन मानिया, दिल कुसाद हरेष न वानियो ॥३१ किन सोधे सन्तर साठ, इह मत चलै परे निह घाट। इहि मित अन्तु पेट मर खाई, एडी चीरन को पहराई ॥३१६॥

॥ दोइ। क्त बनर्फ प्रिया में सुम श्रासुम सवही गयो वताइ ।
जिहि जैसी नीकी लगे तैसी की, जो जाइ ॥३२,०॥ प्राप्त सत्रह से सत्रह बूरस, संवत्सर के नाम.।
किवि करता सुखदेव कह लेखक मायाराम ॥३२१॥
इति वनिकु प्रिया सपूर्ण समाप्ता ।

भादी सुदी १२ शुक्तवासरे २१० १८१५ मुकाम छिरारी लिखतं लाली उदैतसिध राजमान छिरारी बारे जो वाचे वाको राम राम ।

> दोहा—ि लिखी जथा प्रत देखके किह उदेत प्रधान । जो वाचे अवनित सुने ताको मीर प्रनाम ॥

७२१ गुटका नं० ३२। पत्र संख्या-१६६ । साइज-६ रे×४ है इस । माषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । तेखन काल-×। पूर्ण । वेन्टन न० ६६७ ।

विषय-सूची	कर्त्ताकानाम, "	भाषा	विशेष
लघु सहस्रनाम			
	i l'y (· सस्कृत	पूर्ण
योगीरासी	जियदास ।	। हिन्दी	5)
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुसुदचन्द्र	* ' । संस्कृत	99
• भाषा	,	्र हिन्दी	म्रपूर्ष
वैराग्य गीत	देवीदास नन्दन गणि ा		पूर्ण
पद सम्रह	जिण दास	"	,, जैठ बदी १३
	18 111	सं ० १६७१ में लाहीर में रच	नातभा लि।प हुई।
द्रव्य समृह	श्रा० मेसिचन्द्र 🔧 🛴	, प्राकृत	1)
	1.	ं - ं लेखन	काल सं० १६६६

दादशातुर्भेका - प्राचीन हि'दी

धर्मतकगोत जिएादच हिन्दी पुर्श (सव तक सींचे हो मालिया ") हिन्दी रुपचन्द ** (जिय पर सौं कत प्रीति करीरे) पद संग्रह श्रादिनापजी की श्राती वालचन्द हिन्दी लेखन काल १७६६ नोमिनाथ मंगल हिन्दी 77 चीस तीर्पकरों की जयमाल 77

विशेष--"पद समह जिणदर्ग" का नाम "जिणदत्त विशास" भी दिया है।

७२२. गुटका नं० ३३। पत्र सरूया-४१। साइज-३×३ इख। मावा-हिन्दी। खेलन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ६८८।

विषय-सूची कर्जा का नाम माषा जिनदर्शन - सस्कृत संवोध पचासिका पानतराय हिन्दी पंच मगल क्पचन्द

७२३. गुटका न० ३४। पत्र सख्या-७। साइज-४×६ इख। सापा-संस्कृत। लेखन काख-×। अपूर्ण। वेप्टन नं० ६८६।

षिरोप-नित्य पूजा का समह है।

७२४. गुटका नं० ३४। पत्र सस्या-२१। साइन-६×४ र्रे इन्च । भाषा∽हिन्दी। लेखन काल-×। सपूर्ण। बेप्टन नं० ६६४।

विशेष-पूजा पाट समह है।

७२४. गुटका न० ३६ । पत्र सस्या-४६ । माहज-४४४ इच । मापा-हिन्दी-मस्कृत । सेवन काल-संव १७३६ । पूर्व । बेप्टन नव ६६४ ।

विशेष-निम्न पाठी का समह है-

संबोध पंचानिका गोतम स्वानी प्राकृत संस्कृत टीजा सन्ति हैं। एकोभाव स्वोण वादिसान सस्तत्र अ ७२६. गुटका नं० ३७ । पत्र संख्या-१८८ । साइज-८×६ इञ्च । मापा-हिन्टी । लेखन कास-४ । अपूर्ण । वेध्टन न० १००१ ।

विशेष-केवल पूजाधों का संमह है।

७२७. गुटका न० ३८। पत्र संख्या-४४० । [साइज-७३×६ है इस । मापा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १००२ ।

श्र ⁻ य-नाम	क्र्जी का नाम	मावा	र० का० स०	लै॰ का॰	विशेष
यशोधर चरित्र मापा	स्तुशालचन्द	हि दी	१७६१	स० १⊏२३	
विशेष—छीत्रसम् सेठी	ने प्रतिलिपि की ।				
चौवीस तीर्थकरों के नांव व	र्गाव वर्षोन	हिन्दी	-	स० १=२३	
विशेष-नरहेड़ा में प्रतिवि	त्रेपि हुई।				
षट्द्रव्य चर्चा		हिन्दी	-	स०१⊏२३	
विशेष—छीतरमल सेठी	ने नरहेडा में प्रतिलिप की	1			
तीन लोक के चैत्यालयों व	ना वर्णन —	हिन्दी			
निश्चय व्यवहार दर्शन	-	77		सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेढी व	गासी लूणूटको ने लाडखार	ों के रामगढ	में खेतसी काला कं	ी पुस्तक से उतारी	1
कवित्त पृष्वीराज चौहाणका		हि-दी			

महाराज प्रथीराज लेख परघान पठायी।

त्तेय काजि लाखीक वडम चवाय सवायो।

दाहिमैंक वासि लाख श्रखु मालिन लीना ।

देखि स्यंघ गाडरी कोट का श्रारम्म कीना।।

म्यारा सी पंदरोत्तरे गढ नागौर अजीत गिर।

सम लगन तीज वैसाख सुदि नींव देय थाप्पी नगर ।।

ऐसी श्रष्ट उपासना खान पान पैरान।

ऐसा सो मिलिनो सही तो मिलिन वो प्रमाण ॥

ववापहार माषा	श्रचलकीर्ति	हिन्दी	रचना काल १७१५
			नारनील में रचना हुई ।
भक्तामर माणा	- September 1	59	
हत्याया मन्दिर माषा	मनारसीदास	11	र्सं० १८३३

विशेष-छीतरमल सेठी ने लिखा ।

पाशाक्वेवली (श्रवजद केवली) — हिन्दी — पुरुपाश्रवकथाकोश किशनसिंह , रचनाकाल सं० १७०३ सम्यक्तवकोंमुदीकथा बोधराज गोदीका , —

७२८. गुटका नं० ३६। पत्र संख्या-५१। साइज-६×६ई इख। साषा-हिन्दी। खेखन काल-४। पूर्ण। वेण्टन न० १००३।

विशेष---पत्र २६ तक रूपचन्द के पदों का संप्रह है इसके ख्रागे जगतराम तथा रूपचन्द दोनों के पद हैं। करीच २०० पद एवं भजनों का समह है।

७२६ गुटका नं० ४०। पत्र सख्या–१६। साइज-६×६ ई इख। माषा–हिन्दी। लेखन काल-स० १८२३ व्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन नं० १००४।

विशेष-मृगीसंवाद वर्णन है। २५७ पद्य संख्या है। रचना का स्रादि स्रन्त माग निम्न प्रकार है-

श्रादि पाठ-सक्ल देव सार्द नमी प्रणमी गीतम पाय ।

कथा करूं र त्यामणी सदगुरु तणी पसाय ॥१॥ जबू द्वीप सुहामणी, महिधर मेर वर्तंग । जिहेंथे दिल्या दिसि मली, मरत तेत्र सुर्चन ॥२॥

श्वन्तिम पाठ-एषि समें श्रायो केवली, वंद्या चरण वचन मुनि भणी। तीनि प्रदल्यणा दीधी सार, धरम उपदेस सुख्यो तिण वार ॥२४६॥

दोहा-दोह मेद धरमा तणा मुनी श्रावक करि हेत ।

मन वच काया पालता, दोइ लोक सुख देत ॥२५०॥

इति श्री मृगीसंवाद चौपइ कथा संपूरण । लिखितं सेवाराम राघोदास रूयाधू ा। पोथी पडित रायचन्दजी सिख प० चोखचन्दजी वासी टौंक का की सू देउरा रूथोंधूका मये । मिती जैठ सुदी २ सोमवार समर्त् १८२३ का ।

७३० गुटका त० ४१। पत्र सरूया-२३४। साइज-६×४। माषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। बेष्टन नं० १००४।

विशेष-मुख्य २ पाठों का संमह निम्न प्रकार है।

विषय स्वी कर्त्ता का नाम माषा विशेष नवतत्व वर्णन - प्रास्त हिन्दी श्रर्थ दिया हुन्ना है ।

पद संग्रह	-	ीहन्दी	्र्रिश्वताम्बर जीन कवियों के पद है।
शान सूखडी	शोमचन्द्र	57	(चनाकाल सं० १७६७
मकामरस्तो त्र	मानतु गाचार्य	सस्रुत	
कन्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	11	
त्तमा वचीसी	समयसु दर	हिन्दी	-
शत्रु नयोद्धार	पं॰ मातुमैरु का शिष्य नयप्तुन्दर	57	सं० १७७० वेशास सुदी ६

७३१. गुटका नं० ४२। पत्र संस्था-६०। साइज ६×६६ १०च। माया-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १००७।

विषयं-सूची	क्जी का नाम	माया
पद	धानतराय	हि दी
पंद	रूपचन्द	11
पद	रामदास	17
जसदी	रूपचन्द	**
मकामरस्तीत्र मापा	गगाराम पींच्या	; 11

तिशीय—इसमें संस्कृत को ४= वी काव्य का ४७ वें पर्य में निम्न प्रकार अनुवाद है I

है जिन तुम्हारे गुर्ण "कंयन पहुप मालं,
भिक्त प्रतीति भावधरि कै बनाई है।
प्रेम की सुरुचि नाना वरन सुमन धरि,
गुर्णगण उत्तम अनेक सुखदाई है॥
जेई भव्य जन कठ धारि है।उछाह करि,
फुलकित, अग है के आनद सो गाई है॥
तीई, मानतु ग करि सुकति वधू सो हेत,
गगन सरित राम सोमा सुख धाई है॥

हुक्ता निर्वेष श्रूथरमछ हिन्दी विनती (प्रभु पाइ लांगू करू सेव धारी) जगतराम गुजराती, लिपि हिन्दी । विवापहारस्तोत्र माषा अचलकीर्ता हिन्दी रचना काल सं• १०१४ नारनील

समरी संकर दीय कर जोडि, हमरी सुर तेतीसी कीटि। सदग्रर कैंद् लागी पाय, अली श्रस्तिर घी सहम्माय ॥४॥ सोलासेर तीडीतरें जाणि, चंद कया ड्यी वर्ट परमाणी। से म्हारी मति साद कहु, श्रस्तिर मात्र पदा सी लहु ॥४॥

दोहा-फाग्रण मास वसंत रिति, दुतिया सुरु गुरु रीति । चंद कथा श्रारम्म कीयी धूरी बुधि तुरंत ॥६॥ श्रामानपुरी श्रपि दिसि पिछम दिसा गिरनारी । वेह सजीग श्रसी रच्यी चद परमला नारी ॥०॥

अन्तिम—अरध रेखा श्रवपता जोगि । तीजी घोर परमता भोग । याके सत्य सारचा सब काज, विलंते चद श्रापणी राज ॥ ॥ इति श्री राजा चद चौपई संपूर्ण ॥

मीस विरहमान तथा तीस चीवीसी के नाम		हिन्दी	पूर्ण
तीन लीक कथन नेलि के विषे कथन (चतु गति की नेलि)	 हर्षकीति	n पत्र सै० २३२	से ३६४ तक पूर्ण
कमें हिंडोल्या		"	
विशेष—इस गुटके की प्रति	लिपि महाराम च	ो की पुस्तक से जैपुर में स० २७६४ में हुई	થી !
सम्यक्त के बाठ श्रंगों का	ध्या सहित वर्णन	,, गद्य	***
चेतनशिका गीत	-	,, पद्य	
पद-उडु तेरो मुख देखू नामि जिन दा	टोस्र	77	

५३३. गुटका नं० ४४ । पत्र सख्या-२४ । साइज-४×३ इम्च । माषा-हिदी । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० १००६ ।

विशेष---नरक दोहा पून पद संग्रह है।

७२४. गुटका न० ४४ । पत्र संख्या-२४ । साह्म-४५ ४४६ १म । माषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्य । वेष्टन न० १०१० ।

निशेष--- निनती सप्रह है।

७३४ गुटका न० ४६। पत्र सख्या-२४। साइज-१९४५ ई. इत्र । माषा-हिन्दी । लेखन काल-४। पूर्ण । वेण्टन नं० १०११.

विशेष ---शिखर विलास, निर्वाणकांड एव श्रादिनाथ प्ता हैं।

७३६. गुटका न० ४७। पत्र संख्या-३८। साइज-८ र्थः माषा-मस्कृत । लेखनकाल-स० १८८१ पूर्णः । वेष्टन न० १०१३ (क) ।

विशेष--पूजा समह है।

७३७ गुटका नं० ४८। पत्र संख्या-१६६ । साइज-७×६ इछ । माषा-हिन्दी सस्कृत-प्राकृत । लेखन काल-×। पूर्य । वेण्टन १०१२ (ख)।

विशेव-पूनार्थी, यशोधरचरित्र रास (सोमदत्तस्रि) तथा स्तीत्रों का संग्रह है।

७: इ. गुटका नं० ४६ । पत्र हरूया-१६७ । साइज-८×६ इथ । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-स० १७६४ । पूर्ण । वेण्टन नं० १०१३ (ग) ।

विशेष पुरूयतः ।नत्य नैमिशिक पूजाओं का समह है।

७३६. गुटका नं० ४०। पत्र संख्या-२००। साइज-४३४४५ इथा। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेखन काल-×।पूर्ण । वेष्टन नं० १०१४।

विशेष—कल्याण मन्दिर स्तीत्र को सिद्धसेन दिवाकर कृत लिखा है। स्तीत्र एव पूजाओं का सग्रह है। सजयराज पाटणो कृत पत्र १३१ पर एक रचना स्वत् १७६३ की है जो पाक शास्त्र सम्बन्धा है। रचना का चादि श्रंत माग निम्न प्रकार है।

प्रारंस-श्री जिनजी की कहू रसोई। ताको सुणत बहुत सुख होह॥
- तुम रूसो मत मेरे चमना। खेली बहुविधि घरके खगना॥
देव धनेक बहोत खिलावै। माता देखि बहुत सुख पावै॥१॥

मध्यमें — छिमक चणा किया द्यांत मला। हलट मिरच दे घृत में तला॥

मेसी रोटी द्यांवक कणाई। आरोगो त्रिभुवन पति राई॥२४॥

अतिम—श्रजैराज इह कियो क्लाणा मूल चूक मित हसी सुजाण॥

सवत सन्नासे नेगानै। जेठ मास पूरणा हमै॥४३॥

जिनजी ना रहीई में सब प्रकार के व्यंजनों एवं मीजनों के नाम गिनाये हैं। मगवान की बाल लीला का श्रव्छा वर्णन क्या है। मोजन के बाद वन बिहार श्रादि का वर्णन भी है।

रमोई वर्णन दो जगह दिया हुछ। है । एक में ३६ पद्य हैं वह अपूर्ण है । दूसरे में ४६ पद्य हैं तथा पूर्ण है ।

पद-सेवग पर महर करो जिनराइ	श्रनयराज	१२ अंतरे हैं। पत्र १०४-१/३
मेघ कुमार गात	पून)	२ ९ पद्य हैं।
शांतिनाम जयमाल	श्रजयराज	र्ध पदे हैं।
१द-प्रभु हस्तनागपुर जनम जा य		
,, श्री जिनपूज सुहावणी	"	१४ पद हैं।
,, मन मनरकट चनेक बातम जापवादे ।	99	१४ पद्य हैं।
चोनीस तार्थेनर स्तुति	77	२० पंद है।
त्रहो सिवगामी खेलै हो ग्रानजन राचि छुध राजम फार	ा सुहावणी ,,	७ पद
धाल्य वर्णान	1 77	४' पद
श्री सिरियांस सकल गुण घार	77	⊏ पद
नदीश्वर पूजा	11	६ पद
श्रादिनाथ पूजा	11	पूर्ण
चतुविशति तीर्थेकर पूजा	59	
पार्वनायजी का सालेहा	77	'रचेंना सं• १७६३ ज्येष्ठ सुदी १४
पचमेरु प्जा	***	
महावीर, नेमीश्वर आदि समी	93	give.
तीर्यंकरों के पद		
सिद्ध स्तुति	n	صبه
वीसतीर्थकरों की जयमारा	77	
वदना	, 33	

७४०. गुटका न० ११। पत्र संख्या-२६६। साइज-६३×६ इस्र। मार्षा-हिन्दी-सस्कत। तेसन काल- स०१०२३ कार्तिक बुदी ७। पूर्य । वेष्टन ००१०१७।

विषय-सूची	केर्ती का नाम	ं ''माषा	′ विशेष
श्रायुर्देद के तसर्हें	~~	ेहिन्दी (पद्म)	-
≖ शिहा की बार्ते	1	**************************************	~ " in
र्चम गति की बेलि	ह र्भकि र् सि	₇₇ (वद्य)	रैचना काल सं० १६=३

	चेतन शिक्षा गीत	किशनसिंह	हिन्दी	Virtue
	यमोकार सि।द्ध	श्रजयराज	7)	. ******* (
	पद	ऋषसना य	7)	;
	(मोहि त्यारो जी सरणे	तुम श्राइयो)		
	म धावा		"	, Lan e
	(जहां जन्मे हो स्वामी	नामकुमार)		
	राञ्चल पच्चीसी	शालचद विनोदीलाल	75 .	10
	पद	विश्व भूषण	9)	, ,
	(जिख जिप जिया जिप	जीयडा)		
	विनती	पूर्नी	(हन्दी	₩1ddah
	-सहेलीगीत	सु'दर	"	
	विनती	कनककीर्चि	"	-
	भगल	विनोदीलाल	זל	,
	न्नान चिन्तामणि	मनोहरदास	, 33	कुल १२ = पद्य हैं।
	पंच परमेष्टि ग्रुण	_	हिन्दी गर्ध	·
	तूतक मेद	******	13	-
	जोगी राषा	जिणदास	🗽 पद्य	४१ पद्य हैं।
	- धर्मरासा	, 	7)	
	सुदर्शन शील रासी	न॰ रायमल्ल	3)	-
\mathcal{C}	जम्बूस्वामी चौपई	जियदास	ຸ ງ ງ	Process
	विशेष	। पूर्ण परिचय दिया हुआ	है । जयचृद्ध साह ने लिपि की	मी ।
	• • •	म ० राइमल्ल	51	•
	विशेष—जयचंदं साह	ने चाकसू में सं∙ेर⊂३२	में प्रतिविषि की।	
	विषापहार माषा	त्रचलकीर्ति	हिन्दी	tree.
फाल−सं ०	७४ १. गुटका न ४ १५ ७० । पूर्ण । वेष्टन		== । साइजर्−६×६ इऋ । स	ाषा-प्रोकत श्रंपमंशा । लेखन

ं विशेष १५=६ नै० मुदी १३ प्रन्य-मूची कची का नाम माषा मुनिस्रवतातुप्रेसा प० योगदेव भैपभ श

"

धोगमार दोहा षोगीन्द्रदे ।

-चपासकाचार	पूच्यपाद	संस्कृत	
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अपम्र'श	1
षट्पाहुड सटीक	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	
श्राराधनासार	देवसेन	**	टीका सहित है।
समयसार गाया	कुन्दकु न्दाचार्य	"	77
ज्ञानसार गाया		37	1

७४२. गुटका न० ४३ । पत्र सस्या-११३ । साइज-६५ ४४ है इच । माना-इिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२० ।

निशेष---प्रथम संस्कृत में पच स्तोत्र आदि हैं फिर उनकी मावा की गई हैं।

७४४. गुटका नं ० ४४ । पत्र संख्या-३२ । साइज-६×१ इया । भाषा-हिन्दी । लेखन काल -× । पूर्य । बेप्टन न० १०२२ ।

विशेष-देवनस कृत विनती शंप्रह हैं।

७४४. गुटका न० ४४ । पत्र संस्था-६ = । साइज-६×४ इत्र । माषा-हिन्दी -सस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण । बेष्टन नं • १०२१।

विशेष —स्तोत्र एवं पूजा पाठों, का समह हैं।

७४६. गुटका नं ४६। पत्र संख्या-४३। साइज-६ र्-४६ इच । माना-हिन्दी। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न० १०२३।

विशेष—चार्ते गति दुः स वर्णन, रास्त्व पच्चीसी, जोगी रासो, श्रठारह नाता का चौदाल्या के श्रतिरिक्त वृन्द, दीपचन्द, विश्वभूषस, पूनो, रामदास, श्रवयराम, मूधरदास के पद मी हैं।

७४७. गुटका न० ४७ । पत्र सस्या-१६० । साइज-७४५ र इद्य । माषा--हिन्दी । लेखनकाल-स० १७६० च्येष्ठ बुदी = । पूर्ण । वेष्टन नै० १०२५ ।

विशेष---मट्टारक जगतकीर्नि के शिष्य बालूराम ने प्रतिलिपि की बी।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	, नावा	विशेष
प्रचुम्न रासी	त्र० रायमस्त	हि दी	रचना सं० १६२८
नेमिकुमार रातो	77	77	ल १६१ ४
धदर्शन रास्रो	77	ູ່າາ	,, १६३३
इनुमत कथा	9)	n	₉₉ १६१६

७४८. गुटका न० ४८। पत्र सल्या-४८। साइत्र-६ रे×४३ इन्च। माषा-हिन्दी-सस्कृत। लेखन कारू-×। पूर्णी वेष्टन नं०१०२६।

विषय—सूची	कर्ताका नाम।	भाषा ,
तीर्यमाला स्तोत्र		संस्कृत
जैन गायत्री	-	71
पाश्व ^र नाय _ा स्तोत्र		प्राचीन हिन्दी
पद	श्रनयराम	हिन्दी
कत्रका वत्तीसी	39	17
पद संत्रह	"	79
सिन्द्र प्रकरण	बनारसीदास	77
परमानन्द स्तोत्र	-	सस्कृत

७४६. गुटका न०४६। पत्र सल्या-४७। साइज-४×५ इख। माषा-हिन्दी। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं० १०२७।

विषय-सूची ।	कर्ताका नाम	माषा	1	विशेष
नेराग्य प न्चीसी	भगवतीदास	हि दी		
चेतन कर्म चरित्र	7)	3 5	रचनाकाल स० १	७३६
वज्रदन्त चक्रवर्ति की मावना	-	"		
स्फुट पद		7)		

७४०. गुटका नं० ६०। पत्र हरूया २००। साइज-६४५ इस । साधा-हिंदी-६स्क काल-४। पूर्ण । वेव्टन नं० १०२०।

विशेष--मुख्यत. पूजाश्रों का सम्रह है ।

७४१. गुटका न०६१। पत्र सख्या-२१६। साइज-६×४६ इस । माषा-संस्कृत-हि दी। लेखन याल-× 1 अपूर्ण । वेण्टन नं०१०२६।

विशेष — मुख्यत पूजा समह है । कुछ जगतराम वृत पद संग्रह मी है ।

७५२. गुटका न०६२। पत्र सख्या-३४। साइज-६×४६ इख । माषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ध। वेष्टन नं०१०३०।

विशेष-स्तोत्र संप्रह भाषा ए। निर्वाणकारङ माषा श्रादि हैं।

७५२ गुटका नं०६२। पत्र संख्या-२०। साइज-४×४५ १म । माबा हिन्दी। लेखन काल-स०१=१६। पूर्ण। वेष्टन न०१०३१।

विशेष - शनिश्वर देव की कथा है।

७५४ गुटका न० ६४ । पत्र सल्या-५७ । साइज-६×३ई १व्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-х। पूर्ण । ते टन न० १०३२ ।

विषय-सूची	कचीका नाम	भाषा	विशेष
चरचाशतक	चानतराय	हि:दी	
दाल गण	·	,, ६२ पद्य	
स्तु ^{र्} त	धानतराय	77	

७४४ गुटका नं० ६४। पत्र संस्था-२१०। साइज-६×४६ इन्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १०३३।

विशेष — षड्मिक्ति पाठ, श्राराधनासार, जिनसहस्रनाम स्तवन श्राशाधर ऋत, तथा श्रन्य स्तीत्र समह है।

७८६. गुटका नं २६६। पत्र संख्या-७४। साइज-४२्रै×१ ६०व। मारा-हिन्दी। लेखन काल-स० १८८० श्राषाद बुदी १। पूर्ण । वेष्टन न० १०३४।

विषय–सूची	कर्ताका नाम	साषा		विशेष
जैनशत क	भूघरदास	हिन्दी	(चना काल स० १७二१	
धर्म विलास	चानतराय	71		

७५७. गुट का नं० ६७ । पत्र संख्या-१११ । साइज-५२/२४४२ इख । माषा-हिन्दी-संस्कृत । लेख्न काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न०१०३५ ।

विरोष- स्तोत्र समह है।

७५८ गुटका न० ६८ । पत्र स्ल्या-४६ से १४३ । साइज-७२४२ हुँ इठच । माषा-हिन्दी । लीखन काल-स० १८१२ सगिसर सुदी १४ । अपूर्ण । वेन्टन न० १०३७ ।

विषय-सूची	कर्ताका नाम	माषा	विशोध
निहारी सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	त्रपूर्ण
नागदमन कथा		5)	पूर्णें

श्रादि अत माग निम्न प्रकार है-

श्रारम्म — वलतो सारद वरणउ, सारद पूरो पसाय ।

पवाडो पत्रग तणौ जादुपति कीशों जाय ॥

प्रमु श्राणये पाडीया देत वडा चादन्त ।

केइ पालण पौढीया केई पय पान करत ॥

श्रान्तम — सुणौ सुणौ समवाद नद नदम श्रहि नारी ।

समभा पार संभार हुवो द्रोपत श्रनहारी ॥

श्रनत श्रनंत के सम्ख श्रह वधाई रमीयो स्त्ररत राधा रमण दहूं कर मुज काली दवरा । त्रिमुवन मुणण महि रख तन गमण'तास श्रावो गमण ॥

७४६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-४२ । साइज-६×४ इन्च । साषा -संस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० १०३ = ।

विशेष---मक्तामर स्तोत्र एवं तत्वायं सूत्र है।

७६०. गुटका न० ७०। पत्र संख्या-६४। साइज-७३८६ इस्र। माषा-प्राकृत-सस्कृत। लेखन काल-×।पूर्ण। वेष्टन नं० १०३६।

विशेष--कर्म प्रकृति गाया-नेमिचन्द्राचायं कृत एव द्रव्य समह तथा स्तोत्र समह है।

७६१. गुटका नं० ७१। पत्र संख्या-७१। साइज-४६ ४४६ इञ्च। माषा-हिन्दी। लेखन काल-स० १८३४। पूर्णी वेष्टन नं० १०४०।

विशेष - पद संग्रह, मक्तामर स्तीत्र माषा चौपई वंध ऋद्धि मत्र मूलमत्र ग्या सयुक्त षट् विधान सहित है ।

७६२. गुटका न० ७२ । पत्र सख्या-२०६ । साइज-६४६ इब । माषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०७६ ।

विशेष-पूजाओं का संमह है अवस्था जीर्ण है।

७६२. गुटका नं० ७३। पत्र सख्या-६३। साइज-६३ ×४३ इम्र । मापा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-×। ऋपूर्ण । त्रेष्टन नं० १०७७।

। वशेष — पूजा पाठों का संग्रह है । कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७६४. गुटका नं० ७४। पत्र सस्या-१०। साइज-६×५ इश्रः मात्रा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-×। श्रवूर्यो । वेन्टन नं० १०७⊏।

विशेष-पूजा तथा पद समह है।

५६४ गुटका नं० ७४ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६ई×४ इब्च । साषा-हिन्दी । लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० १०८० ।

विशेष-सामान्य पाठौं का समह है।

७६६. गुटका नं० ७६ । पत्र सख्या-६२। साहज-६३४४ १म्च । माषा-परकृत-हिन्दी । लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं० १०८१।

विषय-सूची चतुर्विशति ज्ञिन स्तुति बहत्तारि जिनेन्द्र जयमाल स्वयम् स्तोत्र द्रव्य समह	कर्ता का नाम पद्मनदि —— श्रा० समन्तमद	मावा संस्कृत ?? ११ प्राकृत हिन्दी	ৰি স্থ
-	*****	प्राकृत हिन्दी	
तपोद्योतन श्रविकार सत्तावनी		संस्कृत	

प्रा । वेष्टन न० १०=३।

विशेष-श्रायुर्वेदिक तुसस्तों का समह है।

७६८. गुटका नं० ७८। पत्र संख्या-६४! साइज-६×५१ इन्छ। माषा-रहन्दी-संस्कृत। विषय लेखन काल-×। अपूर्ण विष्टन नं० १०८४।

फुटक्त कविच		हिन्दी	अपूर्य
कवित्त	कवि पृथ्वीराज	49	संगीत सबधी कवित्त है।
कविच	गिरघर	79	_
कवित्त खुणस (कमी) श्रीर खुशी के	—	55	६ किंबिच है।
सर्वेप्रखजी के पुत्र श्रमयचन्दजी की पुत्री-की जन्म पत्री (चां	 (बाई)	1)	जन्म स० १६१०
चिट्ठी चांदवाई की सर्वसुखजी क दसोचरा (पहेलियां)	गदिको	"	सं॰ १६१६
पहेलियां		13 22	्२४ पहेलियां उत्तर सहत है।
दोहे	बृन्द	77	" " श्रृर्ण
कु हिल्यां (गिणत प्रश्नोतर)	-	9)	पूर्या

कुरका दोहे तथा कुँ हलिया।	'गिरधरदास	[।] "हिन्दी	ı	श्रपूर्ण
कवित्त	खेमदास	57		t ,
भावों का कमन	,	"	~ ~ *	म्रपूर्ग
छह दाला	चानंतराय	77		लिस० १६१६
7 ~ 3 7 3 1			चंदी के पंठनार्थ ने हि	तेखा गया था।
मध्यमलोक चैत्यालय वणन	,,,,,,	77	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	(7
बघाई	बालक-म्यभीत्र-द	⁵ 2 37	t	पूर्य
जख़डी	भूधरदा र	17	- r,	77
उपदेश जखंडी	ेर्गमेकृष्ण	77	•	· ? ?

७६६. गुटका नं० ७६। पत्र सख्या—७६। माःज्ञ-१०४८ इश्र। माषा—संस्कृत प्राकृत। लेखन काल-×। स्रपूर्ण। वेष्टन नं० १०८४।

विशेष—ग्रेणस्थान चर्चा, कर्म प्रेकृति वर्णन, तथा तीर्यंकरों के कल्यायकों के दिनों का वर्णन है। कृत्यायक वर्णन अपश्रंश में हैं। रचनाकार मनस्रल हैं।

७७०. गुटका नं ० ५० । पत्र संख्या-३१ । साध्ज-=×६ इम्ब । माषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । विष्टन नं ० १०६६ । निर्मा के रिक्ट के रिकट के रिक्ट के र

विशेष—नवलराम, जगतराम, हरीसिंह, मूधरदास, धानतराय, मलजी, बखतराम, जोधा आदि के पूर्वी का

'छेंछ१. गुटका नं ० म१ । पत्र संख्या-६६ । साइज-हें ई×६ हु इख । माषा-हिन्दी । लेंबंन काल-×। 'पूर्ण । विष्टन नं ० १० मर्ज ।

विशेष-पदों का संग्रह है। इसके श्रितिरिक्त परमाथं जखडी तथा जीगी रासा भी है। मूधरदास, जगतराम, धानत, नवलराम, बुधजन श्रादि के पद हैं।

्र ७०२. ज्युटका नं० ६२ । पत्र सख्या–६० । साहज-६×४६ हञ्च । मापा–हिन्दी । खेखेन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

विशेष-जिन सहस्र नाम माया, प्रश्नोत्तर माला, कवित्त, एव बनारसी विलास आदि हैं।

७७६ . गुटका नं० द३ । पत्र सरूया-६० । साइज-५×४६ इंच । सापा-हिन्दी । होसन काल-×। पूर्ग । वेष्टन नं० १ •=६

विशेर-पदी। भा मजनीत पंत्रह है।

७७४. गुटका नं० मठ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६ई×८इम्च । साषा-हिन्दी (लेखन काल-×) पूर्ण । वेण्टन नं० १०६० ।

विशेष-षट द्रव्य श्रादि की चर्चा, नरक द स वर्णन, द्वादशानुप्रेचा श्रादि है।

७७४. गृटका नं ० ५४ । पत्र सख्या-१४ से १४६ । साइज-६×६ इत्त । गाषा-हिन्दी-सर्वहत । सेखन काल-× । अपूर्ण । बेप्टन नं ० १०६१ ।

विशोष — सामान्य पाठों के श्रतिरिक्त कुछ नहीं हैं। बीच के बहुत से पत्र नहीं है।

७७६. गटका न० ६६। पत्र संख्या-१३१ । साइज-६×४ इस्च । मापा-संस्कृत । खेबन काल-× १ पूर्ण । बेस्टन ने० १०८२ ।

विशेष-स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह हैं।

७७७ गुटका नं ० ८०६ । पत्र सरूया-१६ । साहज-१०३×४ इख । माषा-हिन्दी । निषय-संग्रह । खेसन काल-४ । ै। वेध्दन नं ० १०६३ ।

विशेष- िक चर्चाओं का संगह है।

७७८. गुटका नं० ६८ । पत्र संख्या-१८ । साहज-६×४३ हम्स । माषा-हिन्दी । विषय-समर्ह । वीसन काल-×। पूर्य । वेष्टन न० १०१४ ।

विषय-सूची	क् रा	भाषा	विरोध
दीतवार कथा	माठ	् हिन्द <u>ी</u>	१५७ पद्य
शनीश्चर देव की क्या	****	5, (ग ध)	ते का॰ सं १ १ ६ द चैत सदी २
तारातंवील की वार्छी		<i>5</i> 7	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
पार्यनाम स्तवन		19 ,	-
निनती		, 53	Gradus
नेमशील वर्षन वद		1)	ले० का० सं० १⊏११

७७९. गुटका नं० मधा पत्र संस्था-६६। साइज-६४६ इन्दा। साया-संस्कृत हिन्दी। सेसन काल-४। पूर्या। वेप्टन नं० १०६४।

विशेष---गुटके में पूजा संग्रह तथा स्वग नरक का वर्ष्यन दिया हुआ है ।

७८०. गुटका २०६०। पत्र संख्या-११०। साहज-४×३३ इन्त्र । साषा-हिन्दी-संस्कृत । सीकन काल-×। पूर्ण । वेंथ्टन म॰ १०६६ ।

विषयं-सूची	का नाम	भावा	विशेष
श्रवनद केवली	-	हिन्दी	
मक्तामर स्तोत्र	मान्तु गाचार्य	संस् कत	
_{>>} माना	द्रेमरान	हिन्दी	
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमद चन्द्र	संस्कृत	
श्रध्यात्म काग	-	हिन्दी	,
साधु बंदना	पनारतीदास	99	
बारह भावना		"	t
संबोघपंचासिका		श्राकृत	
स्तोत्रंसंमह		संस्कृत	

७८१. गुटका नं ६१। पत्र संस्था-२०४। साहज-६४६६ हजा। साबा-हिन्दी। लेखन कास-सं ० १७८६। अपूर्य। वेण्टन नं ११०६८।

निंग्न पाठों का संग्रह है---

कर्जी ना नाम	भाग	े विशे	4
	`हिन् द ो	४६ पष	है।
•	٧,	१५ पद्य	₹1
	77	लेखनकाल	१७८७
-	n	,	
	**	7)	90=0
photons,	77		
-	7)		
quant	. 11		
नंददास	n	מ	१७⊏६
लालदास	**		
· andress	57	77	१७६६
general .	77		
		हिन्दी '' '' '' '' '' '' '' '' '' '' '' '' '	ि हिन्दी ४६ पर्य - ११ पर्य - ११ पर्य - ११ पर्य - ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११

७८२. गुटका नं ०६२। पर्त संस्था-१३१। साइज-८४६ ६वा। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-रंभह । तेसन काल-×। पूर्व । वेष्टन क० १०६८।

विषय-सूची	कर्ची	माषा		विशेष	
श्रजितशान्ति स्तीत्र	उपाप्याय मेरनंदन	हिन्दी		¹ ३२ पद्य	
सीमधरस्वामी स्तवन	उपाध्याय भगतिलाम	· 133		~ १= पद्य	
पार्श्वनायस्तोत्र ,	जिनराज सूरि	सस्कृत	ı	,	
विध्नहरस्तोत्र -	-	प्राकृत	, r	-१४ गाथा	,
मक्तामरस्तोत्र ्	, मानतु ग	सस्कृत	, ,	Į į	
शनिश्चरस्तोत्र	दशरम महाराज	57	d,	t-	
पार्श्वनाव जिनस्तवन				१७१६ पौष मदी २	
जिनकुराल सूरि का छुन्दुर	चित्र है और चित्रकार	जग जीवन है।	راد يا،	true de la company de la compa	
र्धमण पार्श्वनाथ स्त्वन		ू हिन्दी		लिपि-की भी । १८ पद्य	
चिंतामणि पाश्वेनाय स्त		"		१ ६ पद्य	
राज्जलें को बीरेहें मासी -	ं पदमराज	77	7 (- 1		ij
श्री जिनकुराल सूरि स्तुति	व उपाच्याय जयसागर	"	, ,	ि १६ पंच पूर्वी	
पार्श्वनायं स्तवन	रगवल्लम	ກຸ	ţ	, F	
श्रादिनाय स्तवन	बिजय तिलक	"		२१ पद्य	
श्री श्रजिप्तशांति स्तोत्र		श्रीकृत	f	दे ष्टि गामा	
सयहर पार्श्वनाम स्तोत्र	*****	~ 97		२१ माधा पूर्ण	
ृसर्वोधिष्टायक स्तोत्र		5 5	1(२६ गामा	
	द्यानद किव	् हिन्दी	1 4 5	of the same	
नैस्सी (नैनसिंहजी)	_	77		सं• १७२६	
के व्यापार का प्रमाण		مدهو	ŧ	•	
पार्श्वना अ स्तोत्र	्रकमल ला म	57		७ पद्य वर्ष	
,, खप्रस्तोत्र द		<u>,</u> 57	,	पूर्ण	
संखेशवर पार्श्वनाय स्तवन	•	17			
चिंतामणि पार्श्वनामस्तो	त्र मुवनकीरी '	1)	- 1	~ <u>~</u>	
पाइवनाम स्तोत्र	मनरग	, 55	t c	~ ₁	
"	े जिनरंग	77	1	ੰ <i>ਾ=ਾ=ਵਾਬ ਬ</i> ਨ ੈਪਨਨ	
ऋषभदेव स्तवन	(77	!	्रचनाकाल स० १७०० लेखनकाल रा ० १७२०	
	पदमराज	37		लखनकाल राज रणरव 	•
फलनघी पाएर्वनाय स्तवन	7441101	<i>71</i>	n		
ZUMA					

पार्श्वनाथ स्तवन	विजयकीर्ति	हिन्दी	पूर्ण
महावीरस्तवन	जिनवल्लम	संस्कृत	वृर्ग ३० इलोक
प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	हिन्दी	
चतुर्विशति जिनस्तोत्र	जिनर गसूरि	17	
वीस विरहमान स्तुति	प्रेमराज	77	
पंचपरमेष्ठि मंत्र स्तवन	33	"	
सोलहसती स्तवन	53	> 7	
प्रबोध बावनी	जिनर्ग	5 7	रचना सं० १७३१, ४४ पद्य हैं।
दानशील संवाद	समयसुन्दर	<i>7</i>)	पूर्ण
प्रस्ताविक दोहा	जिनर गसूरि	77	

इसका दूसरा नाम ''द्हा वध बहुत्तरी" भी हैं। ७२ दोहा हैं। लेखनकाल स० १७४५ । नापना नयणसी के पठनार्थ कृष्णगढ में प्रतिलिपि हुई घी।

श्रखयराज बाफना के पुत्र की कु डली 💝

स० १७७२

७८३ गुटका न ०६३। पत्र संख्या- द से ५८ तक। साइज-५५ ×५३ इस। साषा-हिन्दी। लेखन फाल-×। श्रपूर्ण। नेप्टन न ०१०६६।

> विषय-पूची फर्चा भाषा विशेष जैन राक्षो - हिन्दी तेखनकाल स० १७६ = जेठ हदी १५

विशेष - दौलतराम पाटनी ने करना मनोहरपुर में लिखा था। प्रााम्स के १८ पध नहीं हैं।

सिद्धित्रिय स्तोत्र देवनदि सस्कृत २६ पण, इसे लघु स्त्रयम्मृ स्तोत्र भी कह तीर्थंकर बीनती पन्याणकीरिं। हिन्दी रचनाकाल सं० १७२३ चेंत बुदी ३ ।द विश्वमृषय ,,

विशेष--शारम्म के ७ पत्र तथा ६, १० छीर १२ ना पत्र नहीं हैं। ५४ मे श्रागे पत्र खाली हैं 1

७८४. गुटका न० ६४। पत्र सस्या-२६। साइज-५४७ इच। साषा-हिन्दी। लेखन काल-४। पूर्व । वेप्टन नं० ११००।

विशेष---

नारहखडी ध्रत हिन्दी पत्र स०१ से १६ नाईस परीवर — १७-२६ ऋष् ७८४. गुटका नं २६४। पत्र सम्या-२२। साइज-१४७ इत्र । माषा-हिन्दी । लेखन काल-४। श्रपूर्ण । वेष्टन नं ०११०१.

विशेष—कोई उल्नेखनाय पाठ नहीं हैं।

प्रम् गुटका नः ६६। पत्र संख्या-१६४। साइज-६×४ ६८। माषा-सस्कृत । लेबनकाल-×। पूर्ण । वेष्टन नः ११०२।

विषय-सूची	क्ती वा नाम	मावा	ं विशेष
शावकनी सङ्भाय	जिनह र्ष	हिन्दी	
श्रजितशांति स्तवन		77	
पचमी स्तु।त		संस्फृत	-
चतुर्विशतिस्तु।त	समयसुन्दर्	हिन्दी	d anna
गौडीपार्श्वस्तवन	_	हिन्दी	
बारहखडी		-	'अपूर्ण
देराग्य शतक	मतृ हिर	सस्ऋत	लेखनकाल सु० १७७३

विशेष— ५ मामपुर में प्रतिलिपि हुई भी । प्रति हि दी टीका सहित है, टीकाकार ६ वजीत है ।

श्रतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्री सकलमौलिमडनमनिश्रीमधुकरनृपतितत्तुज श्रीमदिन्द्रजीतिवरिवतार्या विवेकदीपकार्या वैराग्यशतं समाप्तं ।

> नाकौडा पारवेनाथ स्तवन समेंयसुन्दर हिन्दी पूर्ण पद (श्रक्षियां श्राज पवित्र सई मेरी) मनराम हिन्दी

प्राचिम नं ११०३। पत्र स्ल्या-१०। सींडज-६×४ इत्र । माना-हिन्दी। लेखन काल-×।

ें विशेष--पद, चन्द्र ग्रुप्त के सोलह स्वप्न (मावभद्र) जखड़ी, सोलह कारण मावना (कनककीर्चि) क्षप्रह है।

्राह्म गुटका नं० ६८। पत्र सस्या-६४। साइज-१-१४४ इच। माया-हिन्दी-सस्कृत। लेखन काल-×।पूर्ण। वेन्टन न० ११०४।

विशेष—स्तीत्र एव पूजा समह है।

्रें उद्ध. गुटका नं० ६६। पत्र संख्या–६४ । साँको–४४० इख । माषा–संस्कृत । ुलेखनकाल~४ । पूर्ण । वेप्टन नं० ११०६ ।

विशेष--नित्य पाठ पूजा श्रादि का श्रंपह है।

७६० गुटका नं० १०० । पत्र सरूया-१८ । साइज-६×४ इन्छ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण । वेग्टन नं० ११०७ ।

ब्रिशेष-पद व स्तोत्रभंत्रह है।

७६१. गुटका तं० १०१। पत्र संख्या-२००। साइज-६×६ इत्र । माषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्व । बेष्टन न० १९०८।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रादित्यवार कथा	भाक	हिन्दी	
चतुर्विशति स्तुति	शुभचन्द्र	לל	
श्रीपाल स्तोत्र	, manufacture of the state of t	77	
पद समह	•	, 77	
न्नेसठ शलाका पुरुषों का वर्णन	प्र० कामराज	77	कामराज का परिचय दिया हुन्ना है।
श्रीपाल स्तुति	कनकर्ग सि	"	ι *
श्रजित जिननाथ की विनती	घन्द्र	"	पूर्य
(मोई प्यारी लागैजी)			

७६२ गुटका न०१०२। पत्र संख्या-१००। साइज-६×६३ इन्च। माषा-संस्कृत-हिन्दो। होसन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न०११०६।

विशेष — निस्य नैमिश्तिक पूजा पाठों के श्रतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं —

नाम	्र कर्ता	, सावा	शिशीष
त्रादित्यवार कथा	माऊ	्हिन्दी	Manager
श्रीपाल दर्शन		• 55	-
षटमाल वर्णन	श्रुतसामर	77	ू 🐱 पूर्वी

प्रारम—दोहा—प्रथम जिनेसुर घंद करि मगति मान उर लाय ।

कर वर्षीन षटमाल कछुः " " ।

चौवाई--एक समें श्री बीर जियाद, विपलाचल आये ग्रुग नद। श्री जिनजी के श्रतिसे माय, सम जीवन की बेर पलाय। वटरित बन ते फल फुलत मये, माली लिख इचरज लहुये। समीसरण कि महमा माल, ऐसे मन चितवे बनपाल।

अंतिम-ए षटमाल वर्ण महान, पुरिव वरन कियो गुणघाम।
तिन वाणि सुणि वरणन कियो, श्रीर व्याकरण निह देखियो।
तिसे वर्ज किण मोही विधियो सुतसिमलता पै गम कियो।
तैसे बुध जन वाणि भास वरण कियो मावा गुण माल।

दोहा-देस काठहड विराज में बदनस्थ्य राजान । ताकै पुत्र है सली सुरिजमल ग्रणधाम ॥ तेज पुंज रवि है भलो, न्याय नीति ग्रुणवान । ताको सुजस है जगत में, तपे दूसरी मान ॥ तिनह नगर ज नसाइयो, नाम मस्तपर तास ! सा राजा समकिटिष्ट है मला, परवि च्यारि उपवास ॥ जिन मदिर तह नणत है, जिन महमा प्रकास । इन्ड पुरि श्रमिराम है सोमा सुरग निवास है ताहा नगर को चौधरि, विवहरि वेणिदास । तिनकें मदर उपरो, श्री जिन मदिर घवास ॥ श्री जिन सेवग है मलो श्री जिनहि को वास । वाह के बार गोत्र है भलो, हम मया जिखदास ॥ वाहि समिपे आय करि वर्श कियो हर विलास । बासि सांगानेर को जाति ख अभवाल ॥ मगिल गीत उदीत हैं सगही रामसघ की नाल । उत्तर दिसम वैराठि है नम मलो, काहलो करू बखान !) पांडव से पुनिवान नर विस्ती कादियो स्नान । ताहि नगर को बाषिकवर संगही पदारण जानि ॥ वाके पैसी सानि को ऐ दोष जिये सानि । महत्त्वन्द्र मटारग मन्द्रे सरचद्र के पाट ॥ कासटासंगा गच्छ में वत धन्या घठाट 1 निज गुरु सु विनति करि, पाप हरण के काजि ॥ स्वामी तुम उपदेस दोइ, तारे धर्म बिहाब ।

तन ग्रहमूख वाणि खिरी, सुणी वात ग्रुणवान ॥ सिध पेत्र बंदन करो, पुरि वर्म : तब गुरु के उपदेस ते चतुरिविध संग ठानि ॥ सजन झाता संग ले श्राये उजत मिलान । जिन बाईस मों पूजि करि, मली मगति वर श्रानि । प्रष्ट द्रव्य ले निरमला हरे करम वसु खानि । चतुर संग निज श्राहार दे अंग प्रमावना सार ॥ सर्व संग की भगति स भयो सं जै जै कार ! सब आता निज हेत करि, धरी ज संगहि नाम ॥ ताते संगहि कहत सब नहि कियो पतेसटा धाम ॥ संवत श्रठारा से मला उपरि एकाइस जानि । जेठ सुक्ल पंचमि मली श्रुतसागर बखािए।।। सुवाति निषत्र है मलो बत हो रविवार। फिरचंद उपदेस ते रच्यो माल विस्तार ॥ हमारी मित्र है सही जाति छ पलिवाल । वह वसतु हैं हींडोएा में खबे रहे मरतपुर रसाल ॥ तिनस हम मेलो भयो शुम उदे के काल। उनहि का सजीग ते करि सापा पटमाल ॥

इति पटमाल वर्णन सपूर्ण · · · विलास श्रमवाल वांचे तीने छहार वच्या।

७६३. गुटका नं० १०४ । पत्र सल्या-६४ । साइन-४×४३ इच । मापा-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन नं० १११२ ।

विशेष-हिन्दी पदों का समह है।

प्रदेश गुटका न० १०४ । पत्र सरुगा-१३ से ४० । साइज-६४४६ इन्च । सापा-हिन्दी । लेवन पाल-४ । चपूर्ण । वेप्टन न० १११६ ।

प्रदेश मुद्रका नं १०६। पत्र संस्था-११६। साइज-१४४ इम्च। मादा-हिन्दी। ऐतवन वारा-४।

विरोप-पद समर है।

प्रदेश संविद्या नं० १०७। पत्र मेंस्या-४३। साहद्य-६×४ इद्या माना-हिन्दी। असन करू-संविद्याले १११६। ७६७. गुटका नं० १०८ । पत्र सख्या-१६० । साइज-६×४ इञ्च । माषा-हिन्दी ॗ! विषय-संग्रह । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेण्टन न० १११८ ।

विशेष-मुख्यत निम्न पाठ हैं-

श्रीपाल की स्तुति		हिन्दी	पूर्ण	
राञ्चलपचीसी	जलचचद विनोदीलाल	"	•	
उपदेश पचीसी	वनारसीदास	"	"	
कर्म,घटावलि	क्नक्की चिं	3)	"	
पद तया त्रालोचना पाठ	_	"	"	
पद	हरीसिंह	" "	31	
पंच म गल	रूपचंद	27 29	» श्रृण	
विनती-बद् श्री जिनसई	कनक्कीर्ति।	,, ,,	नर्थ ,, ले०का०१७⊏०	
क्त्याणमदिर भाषा	बनारसीदास	37	श्रारांदा चांदनाड ने प्रतिलिपि की । पूर्ण	
भस्रदो		"	"	ę
रविवार क्या		5 7	93	

प्रध्यः गुटका नं० १०६ । पत्र संख्या-२४० । साइज-⊏×६ इम । मापा-हिन्दी-सरऋत । लेखन

विशेष-- स्तोत्र तथा पदों का समह है। श्रव्य बहुत मोटे हैं। एक पत्र में तीन तथा इंचार पिक्तयां हैं।

७६६. गुटका न० ११०। पत्र संख्या-७२ । साइज-६×४ इम्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० ११२०।

विशेष-निम्न पाठों का समृह है।

सामायिक पाठ — संस्कृत रजस्वला स्त्री के द्रोप — " स्तक वर्णन — " स्तोत्र समह

८००. गुटका नं० १११ । पत्र संस्था-१३ । साहज-६×६ इन्च । मापा-संस्कृत-हिन्दी । लेसन क्ल-×। पूर्ण । वेण्टन नं० ११२२ ।

निशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

८०१ गुटका न० ११२ । पत्र संख्या~८ । साध्ज-७×६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ११२६ ।

विशेष-दर्शन तथा पार्श्वनाथ स्तोत्र श्रादि हैं।

८०२. गुटका नं० ११३ । पत्र सल्या-४ । साइज-१४४८ । माषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वैष्टन न० ११४० ।

विशेष-सिद्धाष्टक, १२ श्रनुप्रेचा-बालूराम कत, देवाष्टक, पद-डालूराम, ग्ररू श्रष्टक श्रादि हैं।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र संख्या-१० । साइज-४४४ । माषा-संस्कृत । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष-दर्शन शास्त्र पर समह है।

५०४. गुटका नं ११४। पत्र संख्या-४। साइज-४×४। माषा-हिन्दी। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं ०११४६।

विशेष-शीस तीर्थंकर नाम य निर्वाण काल है।

५०४. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६×४ । साषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४४ ।

विषय-सूची	कर्चा का नाम	सावा	विशेष
चैत्री विधि	श्रमरमणिक	हिन्दी	-
पार्र्व भजन	सहजकीर्ति	,,	
पचमी स्तवन	समयसुन्दर	;;	
पोसा पिकस्मण उठावना विधि	******	77	
चउवीस जिनगणधर वर्णन	सहजकीर्चि	"	
वीस तीर्थंकर स्तुति	") 7	
नन्दीश्वर जयमाल	-	99	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजक ति	93	
सीमधर स्तवन	described in the second	**	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्भ	53	
चौबीस तीर्गकर स्तुति	-	17	
सिद्धचक स्तवन	जिनहर्ष	9 7	

ग्रह विनती		हिन्दि
सुवाहु रिषि सिघ	माणिक सूरि	"
अंगोपांग फुरकन वर्णन		"
ब्रह्मचर्य नव वाडि वर्णन	पुर्यसागर	"
लघु स्नपन विधि		"
श्रष्टाहिका स्नपन विधि		"
मुनि माला		33
चेत्रपाल का गीत		**

प्रवास न०११७। पत्र सल्या-२० से ३१। साइज-१०×४२ । भाषा-हिन्दी। लेखन काल-× अपूर्ण। वेष्टन गं०११८४।

विषय-सूची	कर्रा	माषा	विशेष
नूरकी शकुनावली	न्रर ं	हिन्दी	म्रपूर्ण
त्रायुर्वेद के नुसखे		"	"
वायगोला का मत्र तथा श्रम्रक मारण विधि	-	**	"
नूरकी शकुनावली	त्र्र	57	
विशेष—माईछद में लिखा है।			
मातृका पाठ	More	37	
मत्र स्तोत्र	-	"	
श्रायुर्देद के नुसखे		"	

८०७. गुटका न० ११८ । पत्र सरूया-४३ से ८६ । साइज-६४६ ई इन्च । साषा-प्राकृत-हिन्दी । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ११८४ ।

विषय-सूची	कर्चा	माषा	वशेष
समाधि मरण		प्राकृत	५३ से ६२ पत्र त क
मोडा	हर्षकीर्ति ः	हिन्दी	६४ से ६७ पत्र तक

प्रारम्म - राग सोरढी:-

म्हारो रे मन मोडा त् तो गिरनार-या उठि श्रायरे । नेमिजी स्यों युं कहिन्यो राजमती दुक्स ये सौसे ॥म्हारो०॥ े श्रातम— मोद्य गया जिया राजह त्रभु गढ गिरनारि मम्मार रै। राजल तो सुरपात हुनो स्नामी हर्षकीर्ति सुनारो रै॥ म्हारो० ३०॥॥ इति मोडो समाप्ता॥

भिक्त वर्णन पद पद हिंदी द्रिपत्र पर

शारम्भ-जय घरहत सत भगवत देव तू त्रिभुवन भृप।

पर्गा | वेष्टन नं० १२१६ | पत्र सरुया-२० | साइज- ८४६ इन्च | साषा-हिन्दी | लेखन काल-४ | पूर्गा | वेष्टन नं० १२१६ |

विषय-मूची कर्जा माषा विशे पद महमंद हिन्दी —

शारम्म-भूलो मन समरा रे काई समें

श्रतिम माग-महमद कहै वसत बोरीये ज्यों क्यू श्रावे सामी ! लाहा श्रापण उगाहीलें लेखो साहिव हामी ॥

सर्वेया बनारसीदाय नववा**ट**सञ्काय जिनहर्ष

हिन्दी

"

निशेष—अतिम—रूप कृप देखि की रे मीहि पड़े किम अध।
दुख मारी जारी नहीं हो कहें जिनहर्ष प्रबंध।
सुग्रुण रे नारि रूप न जोइये रे ॥ १०॥

इति नववाडसङ्भाय सपूर्ध।

राज्ञल नारहमासा — हिन्दी अपूर्ण। प्राश्नेनाय स्तुति मानकुराल ग्रजराती पूर्ण

श्रीतस—सिव मिन दीन्यो देन सेन इक ताहरी।

भिर सिर तुम्ह सी श्राण श्रास ए माहरी।।

पदम सुन्दर उनभाय पसाय गुण मधी।

सान कुशल सरपूर सुख सपति घरो।।

इति पाश्व[े] जिने स्तुति ॥

सस्रेश्वर पाश्वंनाय स्तुति रामविजय

पूर्ग

लें० का० स० १७६० चैत सदी ४

अतिम—सेव्यो शी जिनराज । छापे श्रविचल राज ॥
रामविजय भणीरए । सु प्रमन त् धणीए ॥

इति थी सखेरवर पार्श्वनाय जिन स्तुति । इमें लिम्बिता भाव कुणलेन । श्री केंमरि वाचन रुते ॥ नद क्रतीसी — सस्रुत श्रपूर्ण

शृगार लेव काव सव १५६३ पोप नदी व

विशेष -- केवल १० से ३६ तक पद्य है। वाई फेमर के पठनाय लिपि की गई थी।

नेमिनाथ बारहमासा

हि दी

(गु०) १४ पद हैं।

विशेष—रागमरा राजीमती लिधो सजम मार । कहै जाण मेहर जसमालीया मुगत मंभार ॥१४॥ वियोग ऋ गार का श्रद्ध वर्णन है ।

बुधरास

हिन्दी

त्रपूर्ध

विशेष-प्रारम्भ के पत्र गल गये हैं।

श्रितम—गाठि गरम मत लूखो खाय । भूखो मत चालै सियाले । जीमर मत चालै उन्हाले ॥

> बांमण होय श्रणन्हायो । कापथ हो पर लेखो भूले । ए तित्र किण हीने तोली ॥१२०॥ एह बुधसार तणोर विचार । श्रालन श्राटी इण ससार ॥ मणी पालय रोषम युता । राज करो पसार सञ्जता ॥२१०॥

तमाख़ की जयमाल

श्राणद मुनि ।

॥ इति बुधरास सपूर्ण॥

हि दी

पूर्ण

विशेष--- प्रारम्म --- प्रीतम सेती बीनकी प्रमदा ग्रंग विज्ञान । मोरा लाल मन मोहण एके चिती त् समाल ॥ चतुर सुजाण ॥

आनम-द्या धरम जाणी करी सेवो सदग्रह साथ मोरा लाल । श्राणद मुनि इम उच्चरे जग मोही जस वाथ मोरा लाल ॥

चतुर तमाखु परिहरी । ॥ इति तमाखु जयमाल सपूर्ण ॥ ॥ लिखतं ऋषि हीरा॥ प्तृहरू । प्रतिका न० १२० । पत्र सख्या-२२ । साहज-५ई×७ इख । माषा-हिन्दी । लेखन काल-। प्रपूर्ण । बेपन नं० १२१७ ।

विशेष - जीवो की सल्या का वर्णन दिया हुआ है।

्र प्रदक्ता नं० १२१ । पत्र सख्या-५६ । साइन-६×४ हे इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण । नेष्टन न० १२१८ ।

विषय-सूची	क्री	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	श्रजयराज	हिन्दी	
पढ	वारी हो शिव का लोमी	"	-
नारी चरित्र		"	•
मनुष्य की उत्पत्ति		"	
पद	दीपचद	"	
श्री जिनराजे झान तर्णे	श्रधिकार ॥		
विनती	श्रजयराज	77	
श्री जिन रिखन महत ।	गाङ ॥	77	
उपदेश नचीसी	राज	"	

न११ गुटका नं० १२२ । पत्र सख्या—३५ । साहज-४५ ६५ इन्च । माषा-हिन्दी । रचना काल -× । सेष्प्रे । वेप्टन नं० १२१६ ।

विशेष--मितसागर मेठ की कथा है । पद्य सख्या १ = १ है । प्रारम्भ में मत्र जत्र भी दिये हुए

प्रा । वेट्टन न० १२२०। पत्र मरूया-=६ । साइज-=ई×६ई इञ्च । मात्रा-हिन्दी । लेखन काल-×।

विशेष — गुणस्थान की चर्चा एवं नवलं तथा भूधरदास के पद श्रीर खंडेलवाल गोत्रोत्पत्ति वर्णन ! ।

प्रिं । गुटका नं० १२४ । पत्र सस्या-४० । साइज-६ र्×४२ हन्च । माषा-हिन्दी । लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० १२२१ ।

निस पाठों का संग्रह है --

विषय-स्ची	क्ती	भाषा	विशेव
राज्जल परवीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	
नेमिकुमार बारद्रमासा	-	••	

नेमि राजमित जखडी हेमराज ,, जखडो का अतिम—नीस दिन श्रह निर्धारजी । हेम मणे जीन जानिये । ते पानै भन पार जी ॥

दिल्ली में प्रतिलिपि हुई थी।

तिलोकचद पटवारी गोधा चाकसू वाले ने स॰ १७८२ मे प्रतिलिपि की थी। फल पासा (फल चिंतामणि) तीर्थकरों की जयमाल एवं पार्श्वनाय की विनती श्रादि श्रोर हैं।

म१४ गुटका न० १२४ । पत्र संख्या-३२ । साइज-६×४ इझ । माषा-हिटी । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन न० १२२ ।

विषय-सूची	कर्चा	मावा	विशेष
जिनराज स्तुति	कनक्कीर्त्ति	हिन्दी (ग्र	नराती) ले० का० स० १७४६ फागुण सुदी ६
			सांगानेर मे प्रतिलिपि हुई ।
चिन्तामणि स्तोत्र		"	
पार्श्वनाथ स्तोत्र		**	र० मा० स० २७०४ त्रावाह सुदी ।।
			रो० साः स० १७६०
नेमीश्वर लहरी		हिन्दी	
पचमेर पूजा	विश्वभूषण	"	
श्रष्ट विधि पूजा	सिद्धराज	5 7	-
श्रादित्यवार कषा (छोधी)	-	"	
फुटकर कवित्त-		"	
क्रान पच्चीसी'	य नारसीदास	4•	 -
मिक्तमगल	"	"	
नित्यपूजा	****	हिन्दी	पूर्व
जिनस्तुत <u>ि</u>	रूपचन्द	"	27
श्रादीश्वरजी का वधावा	क्ल्याणकोर्ति	"	"
सम्यक्त्वी का बधावा		"	श्रपूर्ण

=१४. गुटका न० १२६ । पत्र संख्या-१०२ । साइज-६×४ इश्च । माषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७०४ श्रषाट सुदी ४ । श्रपूर्ण । वेप्टन नं० १२२४ ।

निशेष-पूजाओं के श्रतिरिक्त निम्न मुख्य पाठों का समह है-

विषय-सूची	क्ची का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिर स्तोत्र माषा	चनारसोदास	हिन्दी	
सहेली सवोधन		57	,
बहा क्वका	मनराम	73	
ज्ञानचिंताम णि	मनोहर	"	

दश्क गुटका न० ४२७ । पत्र सख्या-६२ । साइज-६×६ इखा माषा-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्व । वेष्टन न० १२२६ ।

विषय -सूची	क्ती	भाषा	विशेष
कर्म प्रकृति वर्णन सापा		हिन्दी	•
चौवीस तीर्थंकर पूजा	श्रजयराज	> >	ले० का० स० १८ ⁵३ श्रवाट बुदी २
ध्यान चत्तीसी	वनारसीदास	33	ı
पद	दीपचद	3.	
जोगोरासा	जिनदास)7	
जिनराज विनती		"	१४ चरण हैं।

प्तर्थ । युटका नं० १२८ । पत्र सङ्गा-१०२ । साइज-६×६ रे इख । माषा-हिन्दी । लेखन काल-×। खपूर्य । तेष्टन न० १२२८ ।

विषय-सूची विशेष कर्चा मावा ले॰ का॰ सं॰ १८२३ कार्त्तिक सुदी ४ कक्का बत्तीसी गुलावराय ' हिन्दी विशेष — हीरालाल ने प्रतिलिप की। र० का० १७४⊏ कार्त्तिक बुदी १३ । संबोध पचासिका साषा विहारीदास " विशेष-विहारीदास श्रागरे के रहने वाले थे। श्रादिनाय का बधावा (वाजा बाजीब्रा घणा जहां जनस्यां हो प्रमु रीखबद्धमार) पच भगल रुपचन्द " पद (मस्तग श्राजि हो पवित्र मोहि मयो) षाठ द्रव्य की मावना जगराम जैन पच्चीसी नवसराम पद संग्रह जोधराज बनारतीदास द्यादि ने पद है। चार मित्रों की कमा र० का॰ १७२१ जैठ सुदी १३। श्रजयराज त्ते का व सं व १८२१ अवाद बुदी ह ।

वजनामि चकवर्रि की भूधरदास हिन्दी वैराग्य मात्रना

म्थन. गुटका न० १२६। पत्र सस्या-१६ । साइब-८२्रै×६६ इत्र । मावा-हिन्दी । लेखन काल-×। अपूर्ण । बेष्टन नं० १२३० ।

विशेष-पूजा पाठ संप्रह है।

प्रदेश । पत्र संस्था-७३ से ११४ । साइज-४ हुँ दश्च । माषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-×। श्रपूर्ण । वेष्टन न० १०३२ ।

विशेष---नित्य नैमिचिक प्जाधों का समह है। प्रारम्म के ७१ पत्र तथा ७४, ७५ पत्र नहीं है।

्र पर०. गृटका नं० १३१ । पत्र सख्या-१६ । साइज-६×३० इञ्च । माषा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन काल-स० १६३६ मादवा सुदी ११ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० १०३८ ।

विशेष-सामा य पाठों का समह है। जयपुर नगर स्थित चैत्यालयों की सूची दी हुई है।

म्दरि. गुटका न० १३२ । पत्र परुया-१४६ । साइज-६ ई×४६ इन्च । माषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । स्रपूर्ण । वेप्टन नं० १२३६ ।

विशेष-- 'नत्य नैमिचिक पूजा, साधु बदना, मक्तामर माषा श्रादि पाठ हैं बीच में कही २ पत्र नहीं हैं।

प्रका न० १३३ । पत्र संख्या-१७० । साइज-४३×२६ हल्च । माषा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन नं० १२३= ।

विषय-सूची	कर्ता	मावा	विशेष		
धादित्यवार कथा	माऊ	हि दी			
चतुर्दशी वधा	हरिकृष्ण पारखे	77			
पंच मंगल	रुपचन्द	77	_		
नित्य पूजा पाठ	-	सरकत			
निन वाणी स्तुति		99			
स्तुपन पूजा, चेत्रपाल पूजा त्राटि नैमिनिक पूजा-सप्रह मी है ।					

=२३. गुटका न०१३४। पत्र संख्या~१७०। सास्ज-६×३ है। मापा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण। लेखन नं०१२३६।

विषय-सूची	क्ली	भाषा	विशेष
नेमीश्वर निनती	-	हिन्दी	७ पद्य हैं ।
पुरुय पाप जग मूल पच्च	ीसी मगवतीदास	55	२७ पद है।
४६ दोष रहित श्राहार व	र्णन —	99	-
जिन धर्म पच्चीसी	सगवतौदास	79	श्रपूर्ष
पद समह	जगतराम	"	
पद	शोमाचन्द	1)	-gausse
(मज थी रिषव जिनिद	कृ [*])		
पद	जि णदास	17	
(जैन धर्म नहीं कीना न	ररदेही पाई)		
पद	जीवनराम	19	-
(श्रश्वसेन राय कुल महर	न उम वंश श्रवतारी)		
सप्त व्यसन कविच	•••	11	-
जिनके प्रभु के न	ाम की मई हिये प्रतीति ।		
विस्नराय ते नर	भजे नरक बास मयमीत ॥		
सोलह स्वप्न (स्वप्न वर्च	ोसी) भगवतीदास	37	_
विशेष—अस्तिम—निः	ज दौलत पांचे भया हरे दोव	दब रास ॥	
मरत चकवर्ची के १६	•		
पद	हृष्य गुलाष	11	glassia,
(सर्मार जिनद समरना	हैं निदान)		
बहदाला	पु घजन	77	सि॰ का॰ सं॰ १८१७३
शमूराम ने प्रतिलिपि व	ोभी ।		
ननद भीजाई	धानंदवर्षन	n	-
का भगदा			
चतुर्विशति स्तुति	विनोदीलाल	n	ap , mande
पद समह	बनारमीदास एव मूधरदास	97	Security
बाईस परोपह	प्याय	23	graniu
चरला चउपर	वयपान	77	
भार्यही		n	-

प्तर ४.	गुटका नं० १३४	पत्र सरुया-७४	। साइज−ः 🖁 🗙 ४ दे 🕏 व्य	। भाषा-प्राकत-संस्कृत।	लेखन
काल-× । पूर्श I-वेष्टन	न ६ १२४० ।				

विषय-सूची	कर्ची	साषा	विशेष
दुर्शन सार	देवसे न	সান্তর	४२ गाथा है है।
त्रिलोक प्रहाप्ति		99	۹۹٤ ,,
सामुद्रिक श्लोक	_	स ँ स्कृत	
सोलह कारण पायडी		5.	२० ३लोक [,] हैं ।
सप्त ऋषि पूजा		"	
राज पट्टावली	—	"	
राजाओं के वंशों की पट्टा	वित्ति संवत् ⊏२६ से १	६०२ तक की दी हुई है।	
सञ्जन चित्ता वल्लम	म ल्लिषेगाचार्य	77	
त्रिलोक प्रहस्ति		शकृत	_
विशेष—गुटके के चन्त	के ४ पृष्ठ श्राघे फटे हु ^र	में हैं।	-

=२४ गुटका न० १३६ । पत्र सख्या-१४८ । साइज-७×६ । माषा-हिन्दी-संस्कृत⊤प्राकृत । लेखन काल-× । पूर्या । वेष्टन नं० १२४१ ।

		•	
विषय-सूची	कर्रा	माषा ्र	विशेष
आदित्यवार कथा	माक्	हि दी	१५४ पद्य है।
मावना 'भचीसी	श्रमितिगृति	सस्कृत	_
अनादिनिघन स्तोत्र		57	
कर्म प्रकृति वर्चन		77	
१४८ प्रकृतियों का वर्णन	है तथा ४ ग्रणस्थान	। तक सात मोहनीय की प्रकृतियों	का व्योरा मी है।
त्रिमुवन विजयी स्तोत्र	_	संस्कृत	
गुणस्थान जीव संख्या		हिन्दी	
समृह वर्णन			
•		***	• •

उ वें गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तक एक समय में कितने जीव श्रधिक से श्रधिक व वम से कम ही सकते है इसका व्योरा हैं।

चीवीस, ठाणा चर्चा	_	हिन्दी ्रे	
त्रेषटशलाका पुरुषों की	-	>>	1
नामावलि			

त्रिनती सम्रह

बारह सावना

वज्रनामि चक्रवर्ती

	परमानद स्तोत्र	-	संस्कृत	
	नेमीश्वर के दश मवांतर	व्रह्म० धर्म ६ चि	हिन्दी	
	श्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार बूदी गढ में मासज कीथी श्री संघ मगल कारणि की	मणिसी जे नर ना		
	निर्वाण काएड गाया		শাহ্ন	No. appell
	लचु सहस्त्र नाम	****	सस्प्रत	
	विषापहार स्तोत्र	धनजय	5 7	_
	वडा क्ल्याण		हिन्दी	Minus Maria Ma
	तीर्थंकरों के गभे जमादिन	व वस्याणों की तिथि	ग्यांदी हैं।	
	पल्य विधान		"	
	गुरुमक्ति स्तीत्र		সান্তর	-
	यमोकार महिमा	-	हिन्दी	-
	पल्य विधान कथा		संस्कृत	
् पूर्णा । वेष्टन	म२६. गुटका नं ० न० १२४२ ।	१३७। पत्र सङ्ख	ग-८४ । साइज-६ ^२ ४४ ^२ ६०च ।	माषा-हिन्दी । लेखन काल-×।
	विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
	पच मगल	रूपचन्द	हिन्दी	
	तीन चौवीसी एवं वीस तीर्येक्रों की नामाविल		>>	

की वैराग्य मावना

=२७. गुटका नं० १३८ । पत्र संख्या–६ से ४१ । साइज–६×४६ इम्च । माषा–हिन्दी–सस्कृत ।
लेखन काल–×। पूर्यो । वेण्टन न० १२४३ ।

मूधरदास

"

77

विषय-सूची कर्चा माषा विशेष पूजा समह — सस्कृत — विशेष—देव पूजा वीस विरहमान सिद्ध पूजा ग्रादि का समह हैं। समुख्यय चौवीस तीर्थंकर पूजा श्रजयराज हिन्दी पूर्ण

पचमेर प्जा		हि-दी	धर्ण
्तीन चौवीसी तीर्थ वरों की		"	पूर्या
नामार्वाल			
समुच्चय चौवीस तीर्थ कर	-	**	
जयमाल			

न्रम. गुटका न० १३६ । पत्र सरूपा-२३ से ७० । साइज-६ रूँ×६ । शावा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-×। अपूर्ण । बेप्टन न० १२४४ ।

_विषय-सृची	कर्ता	माषा	विशेष ्
पद्मावती प्जा	-	सर्ऋत	श्रपूर्ण
चद्रप्रमस्तुति		हिन्दी	पूर्य
(-चन्द्रप्रभु जिन ध्यायः	ग्यों। मिव हो चद्रप्रभु जि	ान ध्यायज्यौ ॥ टेक	
पंच वधावा		"	
घादिनाय स्तुति		> >	त्रपूर्ण
घारती विनती		- ,, खे	० वा० स० १७७७ मंगसर सुटी ४
पद		,, বী	न का० स० १७७४ मीष सुदी १०
विनती	_	1)	
ধুরা	_	"	
दर्शनपाठ		सस्कृत	
मक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	3)	
सीख गुरुजनों की		हिन्दी	
कत्याणमदिर मापा	ननारसीदास	,, खे॰	का० स० १७६५ घासोज सुदी ४
देवपूजा		,, ঐ৹	का० स० १७६६ श्रात्रण मुदी २

विशेष---गुलामचन्द पाटनी की पोशी है । सांगानेर मे शतिलिपि की गई थी ।

भर्ध. गुटका न०१४०। पत्र संख्या-१० से १२०। साइज-४×६ इख। मात्रा-हिन्दी-सस्तत। सेखन काल-×। श्रार्थ। वेष्टन न०१-४४।

विषय-सूची	करी	भाषा	विशेष
समयसार माया	बनारमीदास	हि दी	
क्ष्मतामर स्तोत्र एवं पत्रा		सस्कत	

सिद्धि प्रिय स्तोत्र	देवनिदः	संस्कृत	*
कल्याणमंदिर स्तोत्र	कुमुदचद	"	********
विवापहार स्तोत्र	धनजय	77	- Carlon
नेमीश्वरगीत	जिनहर्प	हिन्दी	
जखर्धी	धनतकोर्ति	" रचना काल सं	 १७५० सादचा सुदी १०
नेमीश्वर राजमति सीत	विनोदीलाल	13	
मेघकुमार गीत	पूनी	57	
मुनिवर स्तुति	-	7)	-
ज्येष्टजिनवर क्या		n	

ग्टके के प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं है।

म३०. गुटका नं० १४१। पत्र स्ल्या-१२। साहज-७×६ इञ्च। मापा-हिन्दी। लेखन काल-×। मर्गा । वेण्टन न० १२५३।

विशेष-सामान्य पाठा का समह है।

प्रदेश गुटका न० १४२ । पत्र संख्या-१४ मे ४८ । साइज-६×१ इ॰च । सापा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन पाल-सं० १८११ । सपूर्ण । वेष्टन न० १२१४ ।

विषय-सूची	फर्ता	मापा	विशेष
पार्र्वनाय जयमाल		संस्कृत	
कलिकुंड पूजा	ter-aic	***	-
वितामणिपूजा	-	77	****
शान्ति पाउ	·	**	
सरस्वती पूजा	-	27	लेंच का० नं० र⊏११ जेठ पुदी १
चेत्रपाल पूजा		93	double
सहाबीर विनती	******	हिन्दी	****

विशेष—चौँदननांव के महाबीर की बिनतों है। इसमें ११ अतरे हैं। ध्रन्य पाठ भी है।

मन्दरः गुटका न० १४३। पत्र मक्या-६० । साहन-४६ै×६६ हद्य । माया-हिन्दी-संस्टन । सेवन काल-सं० १=१३। धपूर्णी विकास न० १२४४।

विशोप-निग्न पाटों का संप्रह है।

र्मगह

- (१) निर्वाण काण्ड, भक्तामर माषा, पच मगल, कल्याण मदिर ब्रादि स्तीत्र ।
- (२) ४ = यंत्र विधि सहित दिए हुए हैं एव उनके फल भी दिये हुए हैं । ये मक्तामर स्तोत्र के यत्र नहीं हैं ।
- (३) गज करणादि की स्रोपिध, हितोपदेश मापा, लाला तिलोकचद की स० १८० मी जन्म कु डकी भी दी

हुई है।

(४) कवित्त-केई खड खड के निरदन कू जिति श्रायो ।

पलक में तौरि डार या किलो जिन धारको ॥

म्हा मगरूर कोऊ सूमत न सूर।

राहु केत सो गरूर हैं वहीया बढ़े सारको।)

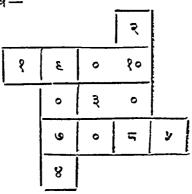
मीर है हजार च्यारि श्रसवार और ।

लगी नहीं वार जोग विरच्यो वजार को ॥

माधव प्रताप सेती जैपुर सवाई मांभा ।

मारि कडारचो मगज महाजना मलारको ॥

् (५) नौ कोठे में बीस का यत्र —



र्यंत्र का फल भी दिया हुआ है।

प्तर्थ । वेष्टन न० १२४६ । पत्र संख्या-२२ । साइज-६×४ई इच । मापा-हिदी । लेखन काल-х ।

विशेष —सामान्य पाठों का संप्रह है ।

दर्थ. गुटका नं० १४४। पत्र सख्या-७५। साइज-६×४ इन्च। माषा-हिन्दी-। लेखन काल-×। अपूर्ण। वेन्टन न० १२५७।

विशेष-नखतराम कत आसावरी है पर्य सख्या ३६ है।

प्रदेश. गुटका न० १४६ । पत्र सरूया-३ से २७ । साइज=६४४ इन्च । सापा-हिन्दी । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेप्टन न० १२६⊏ । विरोप-पच मंगल पाठ तथा चांबीस ठाणां का च्योरा है।

च३६. गुटका न० १४७। पत्र सस्था-१४ मे ६१। साइज-६×४ इन्च । साथा-हिन्दी । लेखनकाल-स० १=३८ श्रापाढ युदी ७। श्रपूर्णी । वेष्टन न० १२४६ ।

विशेष--सामान्य पाठों का समह है तथा स्रत की बारह खड़ी है जिसके ११३ पर्घ हैं।

द्र गुटका नं० १४८ । पत्र सख्या-२७६ । साइज-७२४६ इस । मापा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७६६ व्येष्ठ युदी ११ । स्रपूर्ण । वेष्टन नं० १२६० ।

विषय-सृची	कर्ता	मात्रा	विशेष
हतुमत क्या	वधा रायमल्ज	, हिन्दी	
मनिप्यदत्ता कथा		,, ले० का० स० १ ७२।	9 फाल्गुग सुदी ११
जैनरासो	- Carriera de la Carr	"	Assessed to the second
साधु वदना	बनारसीदास	••	gassan-0
चतुर्गति चेलि	हर्षकीर्ति	37	- Production of the Contract o
श्रठारह नाता का चोढाला	साह लीहट	33	(Married)
स्फुट पाउ		33	

पदेम गुटका न० १४६ । पत्र मख्या-२० । साइज-६र्-४४६ डञ्च । माया-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-४ । पूर्ण । देध्दन न० १२६१ ।

विरोप-सामान्य पाठों का समह है।

मदेह. गुटका नं० १४० । पत्र संख्या-११२ । साहज-१६ ४४ है इल । मापा-हिन्दी । सेपन काल-४ । सपूर्ण । वेथ्टन न० १२६६ ।

विशोप-पूजाओं पा समह है।

म४०. गुटका नं १४१। पत्र हेल्या-१६४। माहज-६ दे×६ है इन्द्र । माया-रिटी जीवनहाप-४। पूर्ण । वेप्टन नं ०१२६७।

विशेष-पद व स्तीयां का समह है।

मप्तरे सुद्रका नेव १४२ । पत्र सम्पा-१३० । साहज-६३९६६ १ म । सापा-स्विश-संस्तर-प्रापृत । रोसन पास-संव १०६३ । पूर्व । वेप्टन २० १२६६ ।

विदेव-निम्न रोति व दृश्यों, रस्तात हवा सार वांव तृत स्राहि एया वया स्राट का स्टब् र ।

=४२. गुटका न० १४३ । पत्र सख्या-०४ । साइज-६ ४४४ ई ६ व्च । माषा-हिन्दी-सस्हत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२७० ।

मुख्यतः निम्न पाठों का समह है —

मकामर स्तोत्र मानतु गाचार्य सस्कृत — बारह खडी श्रीदतलाल हिन्दी —

प्रारम्म-कना केत्रल कृष्ण भन्न, जन लग रहे शरीर । नहोर न श्रेसा दान है, श्रान पढेगी भीड ॥१॥

श्रन्तिम — हा हा इह भव हसत हो, हरजन हरे ने वोड़ । वेसे हॅस खाली गये ए जर रहे छुम जोय ॥ जे जर रहे छुम जोय होय तीत रे पुरकु । होनहार थी रहे छुरापन गए ज धरकु ॥ छुरग मृत पाताल काल मह वाली । माइदतलाल वह साहिव खाली ॥

॥ वाराखडी सपूर्ण ॥

=४३ गुटका न०१४४। पत्र सख्या-१७। सा≰ज-६४५ इब्च। मापा-हिन्दी। लेखन काल-४। ऋपूर्ण । बेप्टन न०१२७१।

विशेष — जगराम, नत्रल, सालिंग मागचद, श्रादि कवियों के पद हैं तथा बनारसोदास कत कुछ विन्त श्रीर सबैंगे मी हैं।

म्४४. गुटका नं २१४१ । पत्र संस्था-६४ । माइज-६ रै×४ रै १०व । माषा-∫हन्दी । लेखन काल-५०१६०४ त्रासोज सुदी १२ । त्रपूर्ण । बेष्टन न०१२७२ ।

विषय-सूची सुगुद्ध शतक	कर्ची जिनद।स	मावा हिन्दी	विशेष र०का०स० ९⊏५२ चैत बुदी ⊏
मोच पेंडी	वनारसीदास	"	
वारह मावना	भगवतीदास	1)	-
निर्वाण काएड भाषा	1)	55	र० वा॰ सं॰ १७४३ श्रासोज सुदी १०
जैन शतक	भूधरदास	"	र० चा० सं० १७=१ पीप बुदी १३

=8४ गुटका न० १४६ । पत्र सस्या-४४ । साइज-७×४ इन्न । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४। पूर्गी । वेन्टम नं० १२७३ ।

विशेष—नित्य नैमिन्तिक पूजादि का सम्रह एवं ६३ शलाका पुरुष तथा १६६ पुरुष जीवों का व्योरा दिया हुआ है।

८४६ गुटका नं० १४७ । पत्र संख्या-२३४ । साइज-११३४४ हुँ इब्च । माषा-हिन्दी-सस्कृत । क्षेखन काल-х । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन नं० १२७४ ।

रचना का नाम कर्चा भाषा विशेष समयसार वचनिका — हिन्दी ले. का. सं०१६६७ चैत्र सुदी ७।

प्रशस्ति—सं० १६६७ चैत्र शुख्ल पर्चे तिथी सन्तन्या अवावती मध्ये राजा जैसिंघ प्रतापे लिखाइतं सहि देव-सी जी । लिखतं जोसी ऋखिराज प्रसिद्धा ।

पद सम्रह	बनारसीदास, रुपचद	77	-
धर्म धमाल	धर्म चद	"	से का. सं० १६६६ श्रावण बुदी व ।
श्रात्म हिंडोलना	केशवदास	17	
विणजारो रास	स्पवद	"	ले. का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ⊏।
झान पच्चीसी	चनारसीदास	"	
फर्म छत्तीसी		"	
ज्ञान बतीसी	घनारसीदा स	हिन्दी	
चद्रगुप्त के सोलह स्वप	न ब्रह्मर।यमल्ल	"	-
द्वादशा तु प्रेचा	श्रालू	77	
ग्रुमाषितार्यव	-	सस्कृत	_

=४७. गुटका नं० १४= । पत्र संख्या-१२६ । साइज-६×४ इच्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-×। अपूर्ण । नेप्टन न० १२७४ ।

बिरोष-पुरुष रूप से निम्न पाठों का सम्रह है-

पूजा स्तोत्र एवं पद समह		हिन्दी	-
जिनगीत	धजयराज	99	Section.
शिवरमपी स्रो विवाह	77	"	१७ पदा है ।

क्शिनसिंह, श्रजयराज, चानतराय, दीपचद श्रादि कवियों के पदों का समह है।

५४८. गुटका न० १४६ (पत्र सस्या-१४ से ६४ । साइज-६×६३ इत्र । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-। मपूर्ण । वेष्टन नं० १२७६ । विशेष—चन्द्रायण वृत कथा है। पद्य संख्या १ ८ मे ६३७ तक है। कया गद्य पद्य दोनों में ही है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है—

जदी सारा लोगा कही । श्राप तो जाणी प्रवीण छो । जसा वल ग्यान कुला सो तो काम को नहीं । श्रर पीहर सासर श्रादर नहीं श्रर जमारो श्रधीको मीसर होई । जीस काइ कहवाम श्राव । श्रर वको तो तीलीध लीखो छो । जीस श्रापका मनम श्रावतो कवर ने मुलाह लोनावो ॥

प्रष्ट. गुटका नं० १६० । पत्र सस्या-१३ से १४४ । साइज-६४५ इस । मात्रा-हिन्दी । लेखन काल-रां० १७२८ कार्तिक 'बुदी १३ । श्रपूर्णे । वेप्टन नं० १२७७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है ---

विषय-सूची	कर्ची	माषा	विशेष
• सट्टारक देवेन्द्रकीर्ति की	पूजा —	सस्कृत	पन १३ से १४
सिद्धि प्रिय स्तोत्र टीक	T -	हिंदी	१४ से ३२
योगसार	योगचद्र 🧎	? ?	३३ से ४६
			लै॰ को॰ स॰ १७३४ चैत्र सुदी ४।
			सांगानेर में लिखा गया।
श्रनित्य पचासिका	त्रिभुवनचद	55	पत्र ४७ से ४६, ४४ पण हैं।
श्रष्टकर्म प्रकृति वर्णन	_	"	ं ६० से ६≔
मुनीश्वरों की जयमाल	जियदास	77	६⊏ से ७२
प चलन्धि		सस्कृत	७२ से ७३
धमाल	धर्मचद	हिन्दी	७३ से ७४
जिन विनती	सुमतिकीर्ची	"	पत्र ७४ से ७८, २३ पद्य हैं।
ग्रणस्यान गीत	नसवद्द [°] न	77	७८ से ८१
समकित मावना	_	"	≖१ से
परमार्थ गीत	रुपचट	"	=४ से ⊏ १
पैच मधावा	-	"	⊏ १ से ⊏=
मेघकुमार गीत	पूनो	,	म्ब्य से म 8
मक्तामर स्तोत्र माषा	हेमराज	97	⊏६ से ६४
मनोरय माला		"	हथ से ६६
पद ३	(यामदास जिनदास स्त्रादि	"	६६ से १०१

मोह विवेक युद्ध	बनारसीदास	हिन्दी	१०१ से २१●
योगीरासो	जिनदास	39	१११ से ११ ^३
जखडी	रुपचद	3>	११४ से १२४
पचेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	"	११४ से १२६
			र० का० स० १४=४
पंचगति की वे ले	हर्पकीर्ति	73	१२६ से १३२
पथीगीत	छीहल	55	१३२ से १३४
पद	रुप्चद	37	१३४ से १३६
द्वादशानुप्रेना	Name of Street, or other Desiration of Street, or other Desira	77	१३७ से १४४

= ५०. गुटका न० १६१ | पत्र रंख्या-१५० | साइज-=र्रे×१र्ट्र इन्च | साषा-हिन्दी । लेखन काल-× । त्रपूर्ण | वेप्टन नं० १२७= ।

निम्न पाठों का संग्रह है-

विषय-स्वी	कर्चा	साषा	विशेष
सर्वेया	केशवदास	हिन्दी	अपूर्ण ।
सोलह घडी जिन धर्म पूजा की		>>	-
क-हीराम गोधा ने लिपि की ।			
पंच मधाना	प० हरीवेस	**	ले. का १७७१
पार्श्वनाथ स्तुति		"	र. का. स १७०४ श्रावाद सुदी ४।
पद	हर्षकांति	>>	१३ पच हैं।

प्रारम्म—जिन जपु जिन जपु जीयडा भुनण में सारोजी।
अतिम—सुभ परणाम का हेत स्यों उपजे पुनि श्रनतो जी।
हरष कीरतो जीन नाम सुमरणी दोनी मित चुनो जी।
जिन जपु जिन खुपि जीवडो।

श्रादिनाथ जी का पद	कुशलसिंह	हिन्दी	ले. ना. स १७७१	
मयाचद गगवाल ने रीभड़ी र	र्विषि की भी।			
नेमिजी की लहर	पं• इगो	77	_	
सुगुर सीख	मनोहर	27		
साह हरोदास ने प्रतिलिपि की भी ।				

राञ्चल पच्चीसी विनोदीलाल ले. का स १७६३ " श्रठारह नाता का चौदाला लोहट " नेमिनाय का नारहमासा श्यामदास गोधा से मं. १७६६ श्रापाद सुदी १४। " श्रातम-वाराजी मासी नेम को राजल सीलैंहगी गाइ जी। नेम जी पुकर्ता पहुत्रण श्यामदास गोघा उरि लानो जादुराहतो । इति बारहमासा सपूर्य । कक्का हिन्दी से॰ का॰ सं॰ १७७४ यंत्र २० का = कोष्ठकों क'---8 8 G १० नारह मावना मगवतीदास सें॰ का॰ सं॰ १८५० हिन्दी मानमल ने प्रतिशिति की भी। कर्म प्रकृति " मध्र. गुटका न० १६२ । पत्र सरुया-४ १ से २१२ । साइज-म×३र्दे इच । माषा-हिन्दी । लेखन काल-x | पूर्ण | वेष्टन नं० १२७६ | विशेष--निम्न पाठों का सम्रह है---विषय-सूची कर्त्ता विशेष माषा माली रासा जिणदास हिन्दी पत्र ६३ नेमीश्वर राजमित गीत ξX 7 नेमिनाम राजुल गीत हर्षकीर्ति ξ⊏ 77 प्रारम्भ-म्हारो रै मन मोरडा गिरनारयों उठि वैसो रै।

77

לכ

ξĿ

अन्तिम-मोषि गयो जिख राजह गट गिरनारि मभ्जारे ।

हर्पकीचि

राजमित सुरपित हुई हरण कीरति सुख करारे ।

नेमीश्वर गीत

श्राचार रासा

严重管理费

भंदतान जयगान	g _{in} election.	संस्कृत	पद ७२
गीत	है गरास	हिदी	47
चीबीम तीर्चेका स्मृति	ा के २ पद है।		
सीयहा गीत	Merchan	† 7	OX
रिशेषनु मेरी पीर	। साझना रें हुं तेरी वर	नारि मेरा जीवटा ।	
	•	नुभने त्रेग पियार मेरा जीवन	1
	णी बीनउरिकाल ॥१॥		६ पव है।
प्ता वगर	nationals.	संस्कृत हिन्दी	£=
भी स्निस्तुति	५० तेश्यात	97	**
भाजिन नगरना	यशोनदि) 3	ररेक, रश पच है।
भग सर्ली	मनगग	77	१६३, २० पद्य है।
मेपर्मार गीत	पूर्न।	73	१६६, २१ पप हैं न
पद	कवि सुन्दर	73	१६०, १० पप हैं।
भीवश्य भावना	******	57	१७२, ६ पप रे।
भारमनाम भेति	-	71	*93
नेमि राहत गीत	प्रायो स्नाहा	17	१७ १
वंशीहर शि॰	ट∓∄ (सी	71	रहर द. था. में, १४५)
कर्ष दिशासना	रपंथाति	**	tat
र्न ^{त्} गरीत	***	**	₹#¥
देशिष्टाती भीत	there is a second of the secon	17	र्वा राज्य है।
दोप्तार क्या	भारती	* 7	
कार गई।	fillians.	71	
elui el unia	स्टोबंद		- * * *
共享電 有更	उद्यासकार । इ.स.च्या	रा संस्कृत	~ ** ***

स्फुट एवं अवशिष्ट साहित्य

प्रतः ऋइमंताकुमार रास—मुनि नारायण । पत्र सल्या- वा साइज-१०×४५ दश्य । माना-हिन्दी (प्रष) गुजराती मिश्रत । निषय-कथा । रचना काल-गं० १६८३ । लेखन काल-× । ऋपूर्ण । नेष्टन नं० ११६ ३ ।

विशेष-- १ तमा ५ वां पत्र नहीं हैं।

श्चित्तम — श्चरिहत वाणी इदय श्वाणी पूरा इति विज श्वासए ।
श्री रत्नसीह गणि गछ नायक पाय प्रणमी तासए ॥३ ३॥
सवत सोल त्रिहासी श्वा वर्षि वृधि वदि पोस मासए ।
क्लप वल्ली माहि रंगिह रच्यउ सु दर रास ए ॥३ ४॥
वाचारिषि शिष्य समरचद मुनी विमल ग्रण श्रावासए ॥३ ४॥

म्थरे. श्रजीर्ण मजरी—पत्र सख्या-ः । साइज-६२×४२ इख । माषा-संस्कृत । विषय-धायुर्वेद । रचना काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं∘ ४४१ ।

म्प्रश्च. त्राद्धेकथानक--वनार्सीदास । पत्र संख्या-६ से ३२ । साइज-६×८ दे इञ्च । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-म्रात्म चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । ऋपूर्ण । वेष्टन न० ११६३ ।

विशेष-कि ने स्वय का धात्म चरित लिखा है।

५३४ श्रहेन् सहस्रानाम—पत्र सख्या-६ । साइज-१०ई×४ हुँ इख । माषा-सस्कृत । बिृषय-स्तोत्र । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्य । वेष्टन न० १२०३ ।

विशेष—र्चितामणि पार्श्वनाम स्तोत्र एव मंत्र भी दिया हुआ है। पडित श्री सिंघ सौभाग्य गणि ने प्रतिलिपि की भी।

दश्र. श्रादिनाथ के पंच मगल-श्रमरपाल । पत्र संख्या- = 1 साहज- ६×६ इन्च ! भाषा -हिन्द पश्र | विषय-धर्म | रचना काल-× | लेखन काल-स० १७७२ सावण मुदी १४ | पूर्ण | वेष्टन न० १०१० |

बिशेष--- स० १७७२ में जहानावाद के जैसिंहपुरा में स्वय अमरपाल गंगवाल ने प्रतिलिपि की भी ।

श्रितिम छंद-श्रमरपाल को चित सदा श्रादि चरन ल्यो लाइ।

सव सव मांभि उपासना रहाँ सदा ही श्राइ॥

जिनवर स्तृति दीपचन्द को सी दी हुई है।

स्फुट एव अव्हिष्ट साहित्य]

=४७. किशोर कल्पद्रुम - शित्र कृति । पत्र स्ख्या-१८४ । साहज-८३ँ×६ इस । साषा-हिन्दी । त्रिषय-पाक शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । स्रपूर्ण । वेष्ट्न न० १०१२ ।

विशेष—इति श्री महाशांज नृपति किशोरदास श्राज्ञा श्रमाणेन अशा कृति विस्थित अंश किशोर कल्पद्रुमे सिखरादि विधि वरनन नाम नवविंसत साखा समाप्ता । ६२० प्रध तक है । श्रागे के पत्र नहीं हैं ।

्र्र्प कुब्ल्यानंद् कारिका—पत्र सल्या—ः। साइज-१२×७ इन्च् । भाषा-५स्कृत । विषय-रस त्रलकप् । रचना काल-× लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०७१ ।

विशेष - एक प्रति श्रीर है । इसका दूसरा नाम चन्द्रालोक भी है ।

्रथ्रः प्रतथ सूची--पत्र सख्या- । साइज-द×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सूची । रचना काल-×। लेखन काल-×। व्यपूर्ण । वेष्टन नं० ११५०।

=६०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न—पत्र संख्या—३। साइज—६३×४३ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय-विविध। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेप्टन न० ६६३।

विशेष-सम्राट् चन्द्रगुप्त को जो सोलह स्वप्न हुये थे उनका फल दिया हुन्ना है।

न्दश चौत्रीस ठागा चौपई—साह लोहट । पत्र संख्या-६२। साइज-११६४६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १७३६ मगृसिर सुदी ४। लेखन काल-स० १७६३ फाल्ग्रण सुदी १४ साके १६२३। पूर्ण। वेष्टन न० ४२७।

विशेष--कप्रचन्द ने टोंक में प्रतिशिप की भी । प्रशस्ति में लोहट का पूर्ण परिचय है ।

रचना चौपई छन्द में है जिनकी संख्या १३०० है। साह लोहट श्रच्छे किन थे जो श्री धर्मा के पुत्र थे। • लक्ष्मीदास के श्रामह से इस म की रचना की गयी भी। माना सरल है।

प्रारम—भी जिन नेमि जिनदचंद विदय द्यानंद मन ।
सिध सुध श्रकलक व्यंक सर मिर मयक तन ॥
ए श्रष्टादश दोष रहत उन श्रम्रत कोइय ।
ए ग्रण रत प्रकास सुजस जग उन मजोइय ॥
ए ज्ञान नहें यमृत सबे इने साति नहें सीतधर ।
ए जीन रनरूप दिखाय दे नहें लखाने लोक नर ॥

भितम — युध सञ्जन सब ते श्रारदास, लिख चौपई करोमत् हासि । इनकी पारन कोऊलही, मैं मोरी मृति साद कही ॥१८४॥

लाख पचीस निन्याणव कोडि एक अब बुध लीक्योतीडि । सो रचना लख क्योन लाय । जंत्रग कदे धरु बनाय ॥१८६॥

महर. जल्लाली—पत्र संख्या-३। साइज-११ हुँ×१ है इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-रफुट। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। विष्टन न० १०४६।

६३. जीतकल्पावचृरि-पत्र सख्या-५ । साइज-२०४० है इन्च । साबा-प्राष्ट्रत । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ११६२ ।

विशेष — सस्कृत टिप्पण भी दिया हुन्या है।

म्ह४ दस्तूर मालिका-वंशीधर। पत्र सस्या ६। साइज १०४०। माषा-हिन्दी। विषय-ग्रर्थशास्त्र। रचना काल स॰ १७६५। लेखन काल-४। अपूर्ण एवं जीर्ण। वेष्टन न० १२८०।

विशेष - इसमें व्यापार सबधी दस्तूर दिये हुए हैं।

जो धरत गनपति बातें में धरत जे लोह । ग्रन बदत इकदत के सर मिन जन सब कोइ ॥ १ ॥ हीव श्रक चक घुज पग पर प्रय पाप प्रसाद। बसीधर वरननि कियौ सनत होय यहलाद ॥ २ ॥ जदि यदुनी लेखे घने लेखे के करतार । सटकत विनि दस्तुर है श्रटकत बारवार ॥ ३ ॥ सूध पथ जो जनिरिंग पहचहि मजल ऊताल। रहिवीना विसराइ है सकट वकट जाल ॥ ४ ॥ पातनाहि द्यालम द्यमिल सालिम प्रवल प्रताप । थालम मे जाको सबै घर घर जापत जाव ॥ ४ ॥ छत्र साल भूवपाल की राजन राज विसाल। सकल हिन्दु उग जाल में मनी इन्द्रद्त जाल ॥ ६ ॥ ताके अता सोभिजे सक्तसिंघ बलवान । उप्रमहेना रव हके नद दीह दलवान ॥ ७ ॥ सहर सकतपुर राज ही सम समाज सब ठौर । पर्म धरम सुकरन जहां सबै जगत सिर मौर ॥ = ॥ सवत सत्रासेक्ता पैसठ परम पुनीत करि बरनिन यहि अय नो छइ चरनन निर्ह मीत ॥ ६ ॥ श्रम क्पडा खरीद को दस्तूर —

जिते रुपैया मोल को गज प्रत जो पट लेह । गिरह एक श्राना तिते लेख लिखारी देश ॥ १० ॥ श्राना ऊपर होय गज प्रति रुपिया अक । तीन दाम श्रठ अस बढ ग्रह प्रति लिखी निसक ॥ ११ ॥

इसमें कुल १८३ तक पद्य हैं। प्रति अपूर्ण है।

द्ध नस्त्र शिख वर्गान -- पत्र सख्या-६ से १६ । साइज-६×६ ६०च । माषा-हिन्दी । त्रिषय-शृंगार रम । (चना काल-४ । लेखनकाल-स० १८०६ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० १०१३ ।

विशेष-विखतरान साह ने विखी भी।

न्द्द. नित्य पूजा पाठ संग्रह । पत्र त्त्या-१० । साइज-११×५ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०४ ।

=६७. पत्रिका--पत्र संख्या-१।साइज-×। साषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय-प्रतिष्टा का वर्षन। रचना काल-×। लेखनकाल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० १२६१

विशेष--स॰ १६२१ में जयपुर में होने वाले पच कल्यायाक प्रतिष्ठा महोत्सव की निमत्रया पत्रिका है ।

न्दन. पद संप्रह - जींहरीलाल । पत्र संख्या-२४ । साइज-१०ई/४१ई इंच । साषा-्रिन्दी पथ । विषय-पद । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न'० १२१२ ।

विशेष-- २४ पर्दो का सम्रह है।

म्६६. पन्नाशाहजादा की बात-पत्र सस्या-२०। साइज-६ई×=ई इव । माषा-हिदी गद्य। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७६० श्रासोज सदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं० १५।

विशेष--श्राविका कुशला ने बाई केशर के पठनार्ध प्रतिलिपि की ।

२० से श्रागे के प्त्र पानी में भीगे हुए हैं । इनके श्रतिरिक्त मुख्य पाठ ये हैं-

पद हरीसिंह

सुमित कुमित का गीत विनोदीलाल १=७३

जोगीरासा जियदास —

५७०. परमात्म प्रकाश —योगीन्द्रदेव । पत्र संख्या-५ सं १४ । साइज-११६४६ इन्च । भाषा-अपभ रा । विषय-श्रध्यात्म । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १५६७ चेत्र बुदी १० । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ११६६ । विशेष—ईहर के दुर्ग में लेखक दू गर ने प्रतिलिपि की । अत में यह भी लिखा है:—श्रीमूलसंघे श्री मत् हर्ण सुकार्ति न पुस्तक भिट ॥ वसुपूरे ॥

मण्शः पत्य विधान पूजा-रत्न निष्या-१। साइज-१०३४४६ इञ्च । माषा-सस्तत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२११ ।

८७२. पाठ सम्रह—पत्र संख्या—६१। ूसाईज-१२४५ इच । माणा-संस्कृत-प्राकृत । निषय-सम्रह । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० १०६७ ।

निशेष - त्राशाधर निरचित प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का स्प्रह है।

पाठ समह—पत्र सरूया-२०। साइज-१२×⊏ इब्च। माषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेब्टन न०४⊏०।

विशेष—इष्ट छत्तीमान, स्तोत्र मक्तामर स्तोत्र, निर्वाणकाड, परज्योति, कल्याण मन्दिर श्रीर विषापहार स्तोत्र हैं।

मण्डे. पाठ समूह—भृगुवतीदाृसः। पत्र स्ख्या-३ । साइज-१०४६ है इन्च । माषा-हिन्दी । विषय-सम्रहः। लेखन काल-×। पूर्ण । वेन्टन न० ६६७ ।

विशेष — निम्न पाठों का सुग्रह है —

मूदाष्टक वर्णन-

सम्यक्त पच्चीसी--

वेंराग्य पच्चीसी-

र० का० सं० १७४०।

न्ध्र. पाठ समह—पत्र संख्या-२४ । साइज-१२४० इथा भाषा-सस्वत । विषय-समह । रचना काल-× । तेखनःकाल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४७४ ।

विशेष---मकामर स्तोत्र, सहस्र नाम!तथा तत्वार्थ सूत्र वा सगृह है।

द•६ पाठ संग्रह्—पत्र सरूया-१०। साइज-द×४ इख। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। नेखन काल-। पूर्ण। वेष्टन नं० द६६।

विशेष-सास बहु का भगडा श्रादि पाठों का संग्रह है।

द्धा बनारसी विलास—बनारसीदास । पत्र सरूगा—७ से ८७ । साइन-११६ ४०६ इल्ब । साधा— हिन्दी (पद्य) । विषय—सम्रह । रचना काल-४ । संग्रह काल-१७०१ । लेखन काक्ष-म० १७०८ मात्र सुदी ६ । ऋपूर्ण वेष्टन न० ७३६ । विशेष-सक्लकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्स के २१ पत्र फिर लिखनाये गये हैं ।

च्छ= प्रति नं०२। पत्र संख्या-१३७। साइज-१०६४६ इन्च । लेखन काल-स० १७०७ फागुग्य सुदी १३। पूर्ण । वेव्टन न० ७६३।

विशेष-- ३ प्रतियां श्रीर हैं।

ज्ञा चुधजन विलास—चुधजन । पत्र सख्या-११६ । साइज-१०५४८५ ६०च । सापा-हिन्दी । विषय-समह । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन न० ७२२ ।

क्र . मजलसराय की चिट्ठी-पत्र शख्या-२२ । साइज-६×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । त्रिषय-यात्रा वर्णेन ।रचना काल-× । लेखन काल-स० १८४७ सादवा बुढी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० १२६४ ।

विशेष--- मजलसराय पानीपत वाले की चिट्ठी है । चिट्ठी के अन्त में पदो का समह सी है ।

प्रामाला—पत्र संख्या—६। साइन-६ र्ड ४६ इख । माषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—संगीत शास्त्र रचना काल—४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन नं० ६०६ ।

==२. लघु चेत्र समास—पत्र सख्या-४६ । साइज-६ई×५ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विश्वान । रचना काल-× । लेखनकाल-× । पूर्ण । जीर्ण । वेण्टन नं० ११८८ ।

विशेष--मूल प्र थ प्राकृत माषा में है जो रत्नरोखर कत है । यह इसकी टीका है ।

नन्दे. लीलावती भाषा—पत्र सख्या-१ से २४। साइज-१०ई×४६ इख । सामा-हिन्दी । विषय-गणित शास्त्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० ६३४।

प्पानचित्र टिप्पण्—प । संख्या-३८ से ४१ । साइज-१०५४६ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १४ =१ श्रासोज सुदी १० । श्रपूर्ण । वेष्टन न० १२६३ ।

विशेष—वद्ध मानचरित्र संस्कृत टिप्पण , । यह टिप्पण जयभित्रहल के व ब्दमाण कव्व (श्रपम्र ग) का सस्कृत टिप्पण है । टिप्पण का यन्तिम माग ही श्रवशिष्ट है ।

नन्थः व्यस्तराजवर्णन—टेकचन्द् । पत्र संख्या—१८ । साइज-१२४७ इञ्च । माधा-हिन्दी (पद्य) । विषय-विविध । रचना काल-स० १८२७ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० ८७४ ।

तिशेष-सप्त व्यसनों का वर्णन है पद्य सख्या २५६ है।

मन्द. श्रावक धर्म वर्णन-पत्र सख्या-१०। साइज-४३/४६% इख । भाषा-हिन्दी । विशेष-श्राचार शास्त्र । रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं ० १०२३।

विशेष-गुटका साइज है।

न-७ सङ्गाय - विजयभद्र । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४५ ४०० । माया-हिन्दी । विषय-स्तुःत । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११७१ ।

विशेष — इसके श्रतिरिक्त श्रानद विमल सूरि की सब्साय भी दी हुई हैं।

नन्न. साधर्मी भाई रायमल्लजी की चिट्ठी—रायमल्ल । पत्र सख्या-१०। साइज-१०×७ इन्च। मापा-हिदी । वृषय-इतिहास । रचना काल्-स० १=२१ माह बुदी ६ । लेखन काल-स० १=२१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेषन न० ७०= ।

विशेष--रायमल्लजी के हाथ की चिट्ठी है।

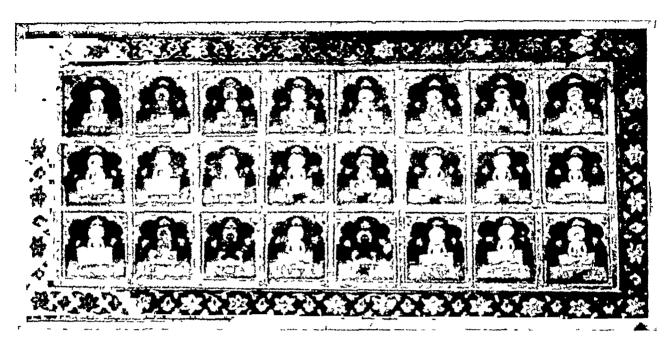
द्या शालिभद्र सङ्माय—मुनि लावंन स्वामी । पत्र स्ल्या-१ । साःज-१०४४ दे इत्र । माना-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना वाल्-४ । लेखन काल-स० १७०६ चेत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन त० ११७० ।

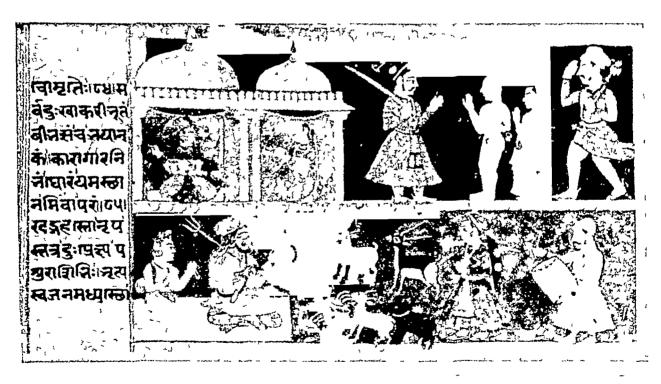
तिशेष - रामजी ने प्रतिलिपि की थी।

माषा-श्रपञ्च रा। विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण एव जीर्थ । वेष्टन न० १२५० ।



जयपुर मे ठोलियो क मन्दिर के शास्त्र भएडार में सम्रहीत एक कलात्मक पुटा जिस पर चौवीस तीर्थं द्वारों के रगीन चित्र दिये हुये हैं।





जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संब्रहीत यशोधर चरित्र के सचित्र प्रति का एक चित्र।

थी दि॰ जैन मन्दिर ठोक्रियों

, के

ग्रन्थ

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१ आगमसार—मुनि देवचंद्र। पत्र सख्या-४६। साइज-१०४४ हु इच। माषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-स० १७७६। लेखन काल-सं० १७६६। पूर्णा वेण्टन नै० ४०४।

पारम्म — श्रम मन्य जीव ने प्रतिवोधवा निमित्ते मोत्त मार्गनी वचनिका कहे छैं। तिहा प्रथम जीव श्रनादि काल नी मिथ्याती थों। वाल लबाब पाभी ने तीन करण करें छै प्रथम यथाप्रवृति करण १ बीजी श्रपूरव करण २ तीजी श्रनिवृत्ति वरण ३ तिहाँ यहा प्रवृत्ति कहें छैं।

> श्रन्तिम-सवत् सतर छिहोतरे मन सुद्ध फाग्रण मास । मोटे काट मरोट में वसता सुख चौमास ॥४॥ स्विहत खतर गछ स्थिर खगवर जिणचद्र सूर। पुर्य प्रधान प्रधान गुर्ण पाठक गुर्णेय भूत ।।६।। तास सीस पाठक प्रवर जिन मत परमत जाए। मित्रक कमल प्रांतवोधवा राज सार ग्रर माण ॥॥॥ ह्नान धरम पाठक प्रवर खम दम गुगी श्रागाह। राज हंस ग्ररु सकति सहज न करें सराह ॥=॥ तास सीस आगम रूची जैन धर्म को दास । देवचद खानद मय कीनो प्रन्थ प्रकाश ॥६॥ श्रागम सारीद्धार यह प्रावृत संस्कृत रूप । प्र थ कियो देवचद मुनि ज्ञानामृत रस कूप ॥१०॥ धर्मीमृत जिन धर्म रित सविजन समिकत वत । सद्ध अमर पदउ लवण प्रश कियो गुण वत ॥११॥ तत्व झान मय प्रथ यह जो खें बालाबोध । निज पर सत्ता सब लखें श्रोता लहें सबोध ॥१२॥

ता कारण देवचद कीनो भाषा प्रथ ।

भणती गुणती जे मिवक लहती ते सिव पथ ॥१३॥

कथक शुद्ध शोता रूची मिल व्यो ए सयोग ।

तत्व ज्ञान श्रद्धा सहित वल काया नीरोग ॥१४॥

परमागम स राचव्यो लहस्यो परमानदः।

धर्म राग गुरु धर्म स धरि व्यों ए सुल वृन्द ॥१४॥

प्रथ कियो मनरंग स सित पल कागुण मास ।

मीमवार श्रक तीज तिथि सकल कली मन धास ॥१६॥

इति श्री श्रागमसार ग्र म सपूर्ण । स० १७६६ वर्षे मार्गसीस बुदी १२ भृगुबासरे वेधमनगरमध्ये रावत देवीसिंह राज्ये लिपि कृत मट्ट श्रखेराम पठनार्थ । वाई माणा श्री ।

२. द्याश्रविश्वभंगी । पत्र सख्या-११०। साहत-१२४५ इब्च। साधा-हिन्दी। विषय-सिद्धात । रचना काल-४। लेखन कारू-४। पूर्ण । वेप्टन न० ३२२।

विशेष---पत्र २० से ८४ तक सत्ता त्रिमगी तथा इससे श्रागे मान त्रिमगी है। ग्रुणस्थान तथा मागंधा का

३ कर्मप्रकृति — नेमिचन्द्र(च।र्य । पत्र सख्या-२१ । साइज-११×४ है इस्र । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धाःत । रचना काल-× । लेखन काल-। पूर्ण । वेष्टन न०१६७ ।

विशेष-दो प्रतियां श्रीर हैं .

४ कमेप्रकृति वृति-सुमितिकीर्त्ति। पत्र संख्या-४६। साइज-११६४६ इम्र। माषा-संस्कृत। विषय-मिद्धान्त । रचना काल-४। लेखन काल-स० १८४६ वैसाख बुदी ६। पूर्ण । वेष्टन त० ३७८।

विशेष--जयपुर मे शान्तिनाम चैत्यालय में प॰ श्रानन्दराम के शिष्य शी चद्र ने प्रतिलिपि की यो।

प्र गुण्ह्यान चर्चा—पत्र सख्या-११०। साइज-१२४६ इन्च। भाषा-सरकृत। विषय-सिद्धान्त। स्वना काल-४। लेखन काल-स० १७६०। पूर्णा वेप्टन न० ३१३।

विशेष--गोमहसार के श्राधार से हैं।

६. गुग्रस्थान चर्चा । पत्र सरूया-४४। साइज-१२३४६ इन्च। मापा-सस्कृत। विषय-सिद्धान्त । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न०३१४।

विशेष-गोमहसार के श्राधार से वर्णन हैं।

७ गोमदृसार (कर्मकाण्ड)— नेमिचन्दाचार्य। पत्र सख्या-४२ । साइज-१०४४ है इझ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७८५ । पूर्ण । वेप्टन न० २६४ ।

विशेष - पस्कृत हिन्दी टीका सहित है । केवल कर्म प्रकृति का वर्णन है ।

द्ध. गोमट्टसार जीवकारड भाषा—प० टोल्स्मल । पत्र सरूया-१६६ । साइज-१३४८ इच । भाषा-हिन्दौ गद्य । त्रिपय-सिद्धात । रचना काल-सं० १८१८ । लेखन काल-४ । ध्रपृर्ण । वेष्टन न० १२८ ।

विशेष-- प्रत्य की एक प्रति श्रीर है लेकिन वह भी अपूर्ण है।

ध गोमदृसार कर्मकाग्रंड भाषा—हेमराज । पत्र सख्या-१०१ । साइज-१४४६ इत्र । भाषा-हि दी (गद्य) । विषय -सिद्धान्त । रचना काल-×। लेखन काल-स० १७२० मगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

विशेष—दीना ने रामपुर में प्रतिलिपि की थी।

एक प्रति श्रीर है लेकिन वह श्रपूर्ण है । इस प्रति के पुट्टे पर सुन्दर चित्रकारी है ।

- १० चरचा संग्रह । पत्र संख्या-१५ । साइज-१० दें ४५ दे डब्च । माधा-हिदी पद्य । विषय-चर्चा (धर्म) । रचना कास-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० १४७ ।
- ११ चर्चाशतक--द्यानतरायजी । पत्र सख्या-२= । साइज-=×६ इब्च । भाषा-हिन्दी पद्य । द्रषय-चर्च । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्य । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। २ प्रतिया धीर हैं।

१२. चर्चा समाधान-भूधरदासजी। पत्र संख्या-१११। साइज-१०ई×१६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गण। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-म० १००६ माच सुदी ४। लेखन काल-स० १८१३ माघ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन न० १६।

विशेष-यति निहालचद ने प्रतिलिपि की भी।

१३ चौवीस ठाणा चर्चा - नेमिचद्राचार्य । पत्र सख्या-३८ । साइज-११४५ इस । मापा-प्राहत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७४१ कार्तिक बुढी १० । पूर्ण । वेप्टन न० १८६ ।

विशेष — जहानावाद मध्ये राजा के वाजार में पंडित माया राम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई। तीन प्रतियां श्रीर हैं। ये सस्प्रत ब्ला टीका सहित हैं।

१४. चौवीस ठाणा चर्चा — नेमिचन्द्राचाये । पत्र रुख्या = । माइज-१११४६ इन्च । सापा-शाष्ट्रत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १७३ ।

विरोप -- पत्र मस्या ४ से त्रागे क्लियुग की बीनती है भाषा-हिन्दी तथा नहादेव इत हैं

१४ ज्ञान किया संवाद्—पत्र सरुया-३। साइज-१०४४ हुँ इन्च। मापा-सस्कृत। त्रिषय-चर्चा। रचना काल-४। लेखन काल-सं० १७४६ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन न०४१७।

विशेष - श्लोक सरूया-१५ हैं। तृतीय पत्र पर धर्मचर्चा भी दी हुई है।

१६ तत्त्वसार दोहा--भट्टारक शुभचद्र। पत्र संख्या-४। साइज-११×= हे इच । माषा-गुजरात। लिपि देवनागरी। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३६७।

प्रारम्म — समय सार रस सांमलो, रे समरिव श्री सिमसार ।
समय सार सुख सिद्धनां, सीभि सुक्ख विचारे ॥१॥
श्रप्पा श्रप्प श्रापमुं रे श्रापण हेतिं श्राप ।
श्राप निमित्त श्रापणो ध्यातु रहित सन्ताप ॥२॥
च्यार श्राण श्रीणित सदा रे निश्चय न्याय वियाण ।
सत्ता सुख वर वोधिम चेतना छुब श्राण ॥३॥
व्यार श्राण व्यवहार थी रे दश दीसि एह सेद ।
इ दिय वल उरसास सुं श्रायु तणा वहु छेद ॥४॥

श्रन्तिम — मणो मशीयण २ मिनतमर मारि चैता चिद्रूप ।

चितता चित्ति चेतन चतुर मान श्रावए ॥

सातु धात देहनेगलो भमल सकल स विमल मानए ।
श्रात्म सरुप परूवण पटज्यो पानन सत ।

ध्याजो ध्यानि ध्येयस्यु ध्याता धार महत ॥६०॥

सात शिव कर २

झान निज मान शुद्ध चिद्रानद चींततो मूको मागा मोह गेह देहए ।

सिद्ध तणा सखिज मल हरिह श्रात्मा मानि शुम ए हए ॥

श्री विजय कौतिं ग्रह मिन धरी ध्याउ शुद्ध चिद्रूप ।

महारक श्री शुमचंद्र मणि या तु शुद्ध सरूप ॥६१॥

॥ इति तत्वसार दूहा ॥

१७ तत्वार्थरत्नप्रभाकर—भट्टारक प्रभाचंद्र देव । पत्र सस्या-१३६ । साइज-११६४४ ड इन । भाषा-सस्त्रत । विषय-सिद्धाःत । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्या । वेष्टन न ० १७० ।

विशेष--- यह तत्वार्ध सूत्र की टीका है। सरल (स्टूत में हैं। कहीं ? हिन्छी भी इन्ट हीती है। ६ अध्याय तक है।

सिद्वान्त एवं चर्चा]

यध्याय ६ सूत्र-२४. हिंसानस्ते-रोंद्र ध्यान कथयित तद्यया प्रकार र मर्वान्त । हिसानद कोर्थ । जीव घात को काइ । सूली चोर सती होय, सप्राप्त होर्थ तजह आनन्दु सुखु मानइ त हिंसानन्दु होइ । रोद्र ध्यान प्रथम पद नरक कारण इति झात्वा । हिंसानद न कर्नव्य.

इति तत्वाय रत्नप्रमाक्र ग्रन्थे सर्वार्थिमद्धी मुनि श्री धर्मचढ़ शिष्य प्रमाच देव विर्वित नहा जैयतु माधु हाबदेव सावना पदणनिमित्तो संवरनिजेश पदार्थकथन मतुष्यत्वेन नव सूत्र विचारप्रकरण ।

बीचमें २ से ७ पत्र भी नहीं हैं।

१८. तत्त्रार्थसार—अमृतचंद्र सरि । पत्र सरुपा—१४ । साहज-१२४४ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेख । काल-४ । पूर्ण । वेष्टन २ १४ ।

मति प्राचीन है।

१६ तत्त्रार्थसूत्र--उमास्वाति । पत्र सख्या-१४८ । साइज-११४५ इश्च । माषा-मस्कृत । विषय-भिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । त्रपूर्ण । वेन्टन न० १२४ ।

विशेष-प्रति संस्कृत शैका सहित है।

२०. प्रति नं २२। पत्र सख्या - ४०। साइज-- = ४४ ई इख्र । लेखन काल-स० १००६ चेत्र सुदी ६ पूर्ण । वेव्यन नं० १३३।

विशेष-सूत्रों पर हिन्दी में शर्थ दिया हुआ है । चार प्रतियां श्रीर हैं किंतु वे मूल मात्र हैं ।

२१. तत्वार्थसूत्र टीका (टब्बा) । पत्र सख्या-२४ । साइज-१२४७६ दश्व । मापा-पस्कृत हिन्दी । वपप-सिद्धात्त । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६१२ श्रासोज बुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन न० ७० ।

विशेष--लाला (तनलाल ने करवा शमनावाद में प्रतिलिपि की ।

- २२. प्रति न० २ । पत्र सख्या-४६ । साइज-वर्डे×= इश्र । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन न० ३६७ । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।
- २३. तत्वार्थसृत्र भाषा टीका कनककीत्ति । पत्र संख्या-१४२ । साइज-१०४४ इन । मापा-हि दी गद्य । रचना काल-४ । लेखन वाल-म० १०४४ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । बेप्टन न० ४० ।

विशेष-कनकनीति ने जोशी जगनाय से लिपि कराई । उसा स्वाति रचित सस्वार्ध सूत्र पर शुतसागरी टीना की हिन्दी न्याख्या है । एक प्रति श्रीर है ।

२४ त्रिभगीसार—नेभिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-२६ । साइज-११४६ इस । भाषा-प्राष्टत । विषय-भिद्रा त । रचना काल-४ । तेखन काल-४ । पूर्ण । बेष्टन न० ३४३ । त्रिशेष - एक प्रति श्रीर है।

२४ त्रिलोकसारसदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सख्या-१३। साइज-११४×=१ इस । मापा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४। लेखन काल-स० १८८८ पोष सुदी १३। पूर्ण । वेष्टन क० ६४।

विशेष-- जयपुर में कवक झानजी ने महात्मा दयाच्द मे प्रतिलिपि क्राई थी।

२६ द्रव्यसम्रह— नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सख्या-६ । साडज-११ई-४५ डझ । भाषा-प्राकृत । विवय-विद्यात । रचना काल-४ । तेखन क ल-४ । पूर्ण वेष्टन न०१७३ ।

विज्ञेष-४ मतियां श्रीर हैं।

२७. प्रति न० २। पत्र सख्या—४७। साइज-१०×४ इख । लेखन काल-स० १७४० फाग्रन सुदी १४। पूर्ण । वेष्टन नं० २६४।

विशेष-हिन्दी और संस्कृत में भी श्रर्थ दिया है ।

२= द्रव्यसम्भह टीका--- त्रहादेव । पत्र सख्या-१११ । साइज-११×३ है इश्र । माषा-सस्कृत । विषय-सिद्धा त । रचना काल-× । लेखन काल н० १४१६ मादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष-- चेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

मवत् १४ १६ वर्षे मादवा सुदी १३ ग्ररी दिनें श्रीमधोगिनीपुरे सकल राज्य शिरोम्रकृट माणिवय मरीचिकृत चरण-रमल पाद पाठस्य श्रीमत् पेरीज साहे सक्ल साम्राज्यधुरा विश्वाणस्य समये वर्षामाने श्री कु-दकुन्दाचाये वये मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे मट्टारक रत्नकीर्ति क्षा क्णात्व मुर्वीकुर्वाणां श्री प्रमाच द्राणां रस्य शिष्य बहा नाथू पठनार्थं अम्रोतकान्वये गोहिल गोत्रे मरथल वास्तव्य परम श्रावक साधू साउ मार्या बीरो तयो पुत्र साधु उधम मर्या बालही तस्य पुत्र कुलधर मार्या पाणधरही तस्य पुत्र मरहपाली मार्या लोधा ही मरहपाल लिखा पित कम चर्यार्थ । क्रनलदेव पडित लिखितं । श्रुभ मवत ।

२६ द्रव्य तम्रह भाषा-पर्वतधर्माधी। पत्र सस्या-२६ । साइज-१२×६ इम । माना-हिन्दी गुजराती लिपि देवनागरा । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन माल-स १८४३ फाग्रन बुदी ४ । पूर्ण । बेप्टन नं० १८ ।

विशेष-प० केशरीसिंह ने अलवर में प्रतिलिपि की भी।

30. नामकमें प्रकृतियों का वर्णन—पत्र सस्या-१६। ाइज-१२३८५ इझ। मामा-प्राक्त। विषय-सिद्धात । रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेटन नं•३६१।

विशेष-सरवत टीका सहित है।

३१. पचास्तिकाय टीका मृतकर्त्ता-स्त्रा० कुन्दकुन्द । टीककार स्रमृतचंद सूरि । पत्र सख्या-६५ । साइज-१०१४४ हे इस । भाषा-प्राकृत-सस्त्रत । त्रिय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । नेप्टन नं० १५४ ।

विशेष - २ प्रतियां श्रीर हैं।

३२. पचास्तिकाय भाषा टीका - पांडे हेमराज । पत्र संख्या-१६१ । साइज१•ई×१ई इच । माषा-भाकृत हिन्दो गद्य । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन कास- स० १७१६ पीष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

विशेष-रामप्र में प्रतिलिपि हुई थी।

- ३३. पाल्तिक सृत्र-पत्र संख्या-६। साइज-६ई×३ई इ.च.। साषा-संस्कृत । निषय-सिद्धान्त । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । बेप्टन न० ४२४।
- ३४ भगवती सुत्र—पत्र संख्या-५७ द्र सं ८४४। साइज १३×६र्ड दिच । भाषा-प्राकृत । विषय-भिद्धात । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८६४ श्रासीज सुदी १ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० १६२ ।

विशेष—टन्वा टीका ग्रजराती, लिपि हिन्दी में हैं। निहालचद के शिष्य तुलसा ने किशनगढ नगर में मितिलिपि की भी।

३४. भावसग्रह—पंडित नामदेव। पत्र सख्या-२४। साइज-११४६ इख्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सिद्धान्त। रचना फाल-४। लेखन काल-स० १८५८ पीप सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न० ३९६।

विशेष — सवाई जयपुर में शान्तिनाम चैत्यालय (इसी ठोलियों के मन्दिर मे) विवृध आनन्दराम के शिष्य भीचर ने प्रतिलिपि की भी ।

विशेष - एक मित और है।

- ३६. भावसंग्रह—देवसेन । पत्र सख्या-२० । साइज-११६४६ इश्व । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन न० ३० ।
- ३७. भावसग्रह—श्रुतमुनि । पत्र मंख्या-१३ । साइज-११३४४ इश्व । माषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १५६६ माघ बुदी = । पूर्ण । वेष्टन न० २=६।

विशेष--महा हरिदास ने प्रतिलिपि की । ३ प्रतियां श्रीर हैं ।

२८ रक्संचय —िवनयराज गिर्मा। पत्र सख्या-१४। साइज-१०० ४४ हे इस्र। माषा-प्रावृत। विषय-सिद्धान्त। रचना काल-४। लेखन काल-म० १७७० कार्तिक सुदी =। पूर्ण। वेण्टन न० २०७।

भी विधासागर सूरि के शिष्य लद्दमीमागर गिया ने प्रतिलिपि की थी। प॰ जीवा वासलीवाल के पठनाथ इतिलिपि की गई भी।

३६. लिब्धसार टीका-माधवचंद्र त्रैविद्यदेव । पत्र मंख्या-७० । साइत-११४० द्वा भाषा-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल४-स॰ १८८४ फागुन नुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न॰ १८२ ।

- ४०. विशेष सत्ता त्रिभंगी ' । पत्र राख्या-१६ । माहज-१२४६ इत्र । भाषा-हिन्दी । विवय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्य । वेप्टन न० ६०३ ।
- ४१ सिद्धान्तसार दीपक—सकलकोर्ति । पत्र संख्या-२२८ । साइज-१०४४ हेच । माषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८२१ । पूर्ण । वष्टन नं० २४२ ।

विशेष—कुल १६, अधिकार हैं तथा अध (श्लोक) सरूवा ४=१5 है। २ प्रतिया धौर हैं।

४२ सिद्धान्तसार सग्रह—ग्राचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र सरुया-६१ । माइज-१०४६ इच । माषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण वेष्टन न० २४ ।

बिरोष-जयपुर में चंद्रप्रम चैत्यालय मे पांडत नामचन्छ ने माधवासह के राज्य मे प्रतिलिपि का भी। श्लोक संस्था २४१६ । एक प्रति श्रीर,हैं।



विषय-धर्म एवं ऋाचार शास्त्र

- 8रे. श्रमुभव प्रकाश दीपचंद काशलीवाल । पत्र सल्या-४४ । साइज-=२×७५ इ'च । माबा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-म० १७७३ । लेखन काल-४ । पूर्या वेष्टन न० ११६ ।
- ४४. ऋाचार शास्त्र । पत्र संस्था-२२ । साडज-११४४ । माना-सस्कृत । विषय-
- ४४. आन्नारसार-वीरनंदि । पत्र मरुग-१०० । साइज-११हे×६ हे इ'च । मात्रा-मंस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण वेष्टन नं० २५१ ।

धर्म एवं आचार शास्त्र]

विशेष-कुल १२ अधिकार हैं। प्रारम्भ के पत्र जीर्था हो चुके हैं।

४६. उनतीसबोल दंडक-पत्र संख्या-१०। साइज-१०४४ई इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं० २६४।

४७. उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला भाषा —भागचंद । पत्र हंस्या-४३ । साइज-१०३४५ हे इन । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १६१२ श्रापाट बुदी २ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६ ।

त्रिशेष-मृत्रमंथ भी गायाएँ भी दी हुई हैं।

४८. उपासकाध्यन-प्रा० वसुमिदि । पत्र संख्या-५४ । साइज-१२४५ ई इ । माषा-पस्टत । विषय-श्राचार । रचना क ल-४ । लेखन काल-सं० १८०८ भादना हुदा ६ । पूर्ण वेष्टन नं० ५४ ।

विशेष--- प्रति हि दी अर्थ सहित है। प्रथ का दूसरा नाम वस्निन्द आवकाचार भी है। एक प्रति और है।

४६. प्रति न० २। पा एक्या-२= । साइज-१ दे×४ ई इब्च । लेखन काल-स० १४६५ चेन बुदी ५। पूर्ण । वेव्टन न० २४४।

विशेष—हेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार हे—

श्रम सवतसरेस्मिन् श्री तृष विक्रमादित्यगतान्द्र. सवत् १५६५ वर्षे चेत्र षुदी ५ श्रादित्यवारे श्रीकुरुजागल देशे श्री सुवर्णपत्र सुमद्देगे पातिसाह हम्माजराज्यप्रवत्त माने श्री काष्ठासचे माधुरान्वये पुष्कागणे भट्टारक गुणकीतिदेवाः तत्पट्टे दभय भाषा प्रवीण मट्टारक श्री सहसकीतिदेवा तत्पट्टे विवेककलाक्रमालिनीविकाशनैकमास्कर मट्टारक श्री मलयकीतिदेवा. तत्पट्टे वादीम- कु मस्यलिद्यारणेककेसरि, मन्यां बुजविकाशनैकमात्त शृंख भट्टा । श्री गुणमद्रस्रिदेवाः तदाम्नाये पावृ वशे गर्गगोवे गोधानद वास्तव्य श्रनेक गुण विराजमात् साधु ण्राणी तस्य समुद्रदव गेभीरान् मेरवद्यीरान चतुविध दानितरणेक श्री यांसावतारान् सरस्वती कंटा कठितान् राज्यसमा जैनसमा १८ गाग्हारान् परोपकारी पंडिणु साधु गोपा तेन इटं शावकाचार लिखापित । कर्म स्यार्थं।

पत्र न० ०७ के कोनं पर एक महोर लगी हुई है जिसमे उद्दें में चग्नटास मृत्य पर टेडित लिखा है। प्रथम कुछ परिचय प्रथ कर्जा का भी दिया हुआ है।

- ४०. एषणा दोष (छियालीस दोप)-भैया भगवतीदास । पत्र सरुगा-७ । साहत-१० रूप हे इत्र । भाषा-हिन्दी पद्य । त्रिषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० १०४ ।
- ४१. कियाकोप भाषा—दौलतराम । पत्र सख्या-६५ । साइज-१२४५ है इस । माषा-हिन्दी पथ । विषय-ग्राचार । रचना काल-म० १७६५ मादवा सुदी १२ । लेखन काल-सं० १८६४ माटवा सुदी १० । पूर्ण । वटन न० १६२ ।

विशेष एक शति और है।

- ४२. ग्यारह प्रतिमा वर्णन । पत्र संख्या-२ । साइज-८र्१×४६ इन्च । माषा-हि टो । त्रियय-श्राचार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण वेष्टन न० ६५ ।
- ४३. चर्चासागर भाषा-पन्न संख्या-२००। साइज-१३५ँ×८ इम । माया-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। स्रपूर्ण । वेष्टन न० ६१ ।

विशेष -- २० से आगे पत्र नहीं है । दो तीन तरह की लिपियां हैं।

४४ चौबीसद्दक—दौलतराम । पत्र सख्या-ः । साइज-ः×४३ दश्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । बेप्टन नं० ४१२ ।

विशेष--- ५७ पद्य हैं । दो प्रतियां बीर हैं ।

४४. जिनपातित मुनि स्वाध्याय—विमल हर्ष बाचक । पत्र मख्या-२ । साइन-१०४४ इन्च । भाषा-हिदी पद्य । बिषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २५३,।

विशेष--

प्रारम्म---मिरि पास मखेमर श्रववेसर मगवंत । पाय प्रणाम जिया पालित मृनि सत ॥१॥

श्रितम—सत एहनीय परिजय छड्य, श्रक्षिकचा विषयविनाडी ।
 एह परमव ते याह सुखिश्रा तेहनी कीर्ति गवाणी ॥
 जगगुरु हीर यह सोहाकार श्री विजयसेन सुरिंद ।
 श्री विमल हर्न वाचक तउ मेवक मात्र कहह सानंद ॥१६॥

प्रति प्राचीन है।

४६ त्रिवर्गाचार — सोमसेन । पत्र सख्या- १३४ । साइज-११ई ४७ई इठ्च । माधा-संस्कृत । विषय-श्राचार । रचना काल-स० १६६७ । लेखन काल-म० १६८२ बँसाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० २८७ ।

विशेष—पाटलिपुत्र (पटना) में प्रतिलिपि हुईं। कुल १३ श्रध्याय है। प्रमा स्रभ स० ७०० ई। एक प्रति श्रोंग है।

५७ धर्म परीचा —हरिषेगा । पत्र सम्ब्या-२ से ७६ । पाइज-११३८४ हु इ व । विषय-धर्म । माधा-अपन्र ग । रचना काल-स० १०४४ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १७१ ।

विशेष-अपम पत्र नहीं है।

- ४८. धर्म परीत्ता-श्रमितगित । पत्र सस्या-८५ । साइज-१२४५ देश । माषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-म० १०१७ । लेखन काल-४ । पूर्ण । तेष्टन नं० ३११ ।
- ४६. धर्मपरीत्ता भाषा "''। पत्र संख्या-२०। साहज-११ हे×४ हे इद्य । माषा-हिन्दी मध। विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । देण्टन नं० १०० ।

धर्म एवं छाचार शास्त्र]

\$

- ६०. धर्मरत्नाकर जयसेन । पत्र संख्या-१२६ । साइज-१०३×१ इस्त्रं। मापा-संग्रुत । विषय-धर्म । त्यना काल-× । लेखन काल-स० १०६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६। -
- ६१. धर्मरसायन—पद्मनंदि । पत्र सल्या-= । साइज-११ दे×१६ इन्चे । भाषा-प्रार्हते । त्रिपय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-मं० १⊏७२ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२ = ।
- ६२. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं मेधावी। पत्र सस्या-४२। साइज-१२हें×४२ इन्च। भाषा-सस्कत। विषय-त्राचार शास्त्र। रचना काल-स० १५४१ कार्तिक बुदी १३। लेखन काल-स० १८३६ माघ बुदी ६। पूर्ण। वेध्यन नं०२४६।

विशेष—कुल दश श्रधिकार हैं। प्रथ १४४० श्लोक नमाण है। प्रंभकार प्रशस्ति विस्तृत है पूर्ण परिचय दिया हुया है। श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी।

- ६३. धर्मीपदेशश्रावकाचार-ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या-३४ । साइज-६×६ इन्च् । मापा-सरकृत । विषय-ग्रावार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८७३ फाग्रुण मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।
- ६४. नास्तिकवाद—पत्र सरुया-२ । साइज-११×४० इन्च । माथा-सस्कृत । विषय-धर्म । रचना माल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन नं० ४२४ ।
- ६४. नियमसार टीका पद्मप्रभमंत्रधारिवृद्ध । पत्र सख्या-१२७ । साइज-१२४६ दे दश्च । सापा-रास्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७=४ मंगितर सुदी ६ । पृथं । वेष्टन नं० ३१ = ।
- ६६. पचसंसारस्वरूपनिरूपग्य-पत्र संख्या-६ । माइज-१०४५ व्या । माया-संस्कृत । विषय-धर्म । स्नना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १७३ ।

।वरोप-एक प्रति और है।

६७ पाखण्डद्लन — वीरभद्र । पत्र क्ल्या-१६ । साध्न-१×४ हम । साधा-मम्बृत । विवय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-मं० १०४ माघ बुदी ४ । अपूर्ण । बेष्टन नं • ४७४ ।

निशेष-पत्र २ व ४ नहीं हैं। मानवगढ में मंगलदास के पठनार्थ पेमदास ने प्रतिलिपि की भी।

६म. पुरुषार्थसिद्धन्युपाय-अमृतचंद्रसूरि। पत्र सल्या-१०६। साइज-११४४ इन। भाषा-गंग्रत। विषय-भर्ग। रवना माल-४। सेखन काल-४। पूर्ण। वेस्टन नै० ११८।

विशेष-श्रीत गंस्कत टीका सहित है। टीका सुन्दर एवं सरल है।

६६. पुरुषार्थसिद्ध-युवाय भाषा—दौलतराम । पत्र संस्था-१२४ । साहत-१२४) इद्य । सावा-हिन्दो गय । विषय-धर्म । रचना कल-मं० १८२७ भगतिर सदी २ । स्मान कास-मं० १८३ र साहत बुद्धा १० । पूर्व । विषय २० ४३ । ् विशेषः चिमन्ताल मालपुरा वाले ते प्रतिलिपि की भी । २ प्रतिया शां है । । । । ।

७०. पुरुपाथितुशासन—गोविन्द् । पत्र संख्यामदेश । साहज-१७४५ हे हे । माया-संस्कृत । निर्वर्ग-धर्म । । रचना काल-४ । लेखन काल-सं०,१५४८ मुगसिर सुदी ४ । पूर्ण मुनेष्टन न०,३३ । -------------------------------

विशेष—विस्तृत लेखक महास्ति दी हुई। है । श्रीचट ने सवाई जयपुर में मितलिप की भी। 🕐 -

भार परिवा काल-× शिखन क ल-× । पूर्ण वेष्टर्न न० ३ ई. । भारत-११० ४४ है। इस । भाषा-प्रकित । विषय-

विशेष—कहीं २ गुजराती भाषा में अर्थ दिया है जोकि स० १५४६ का लिखा हुआ है प्रति प्राचीन है। इसमें कुल ४०४ गायाऐं दी हुई हैं। म० वार्छी ने प्रतिलिपि की भी।

पत्र सख्या-३ गुजराती गद्य ---

रति सन्दरी राजपुत्री नदनपुर नह राजाह परिणा। श्रतिरुप पात्र सांमर्ला हस्तिनपुर ना राजाह श्राण लीधी तीण इन मनादिक श्रशुचि पणउ दिखाला राजा प्रतिनोधउ साल राखिउ रिद्धि सन्दरी श्रेष्टि श्री व्यवहारि पुत्र परिणी समुद्धि चिटिं प्रनहिण मागउ। काष्ट प्रयोगि श्रत्य द्वीपि पहुता। बीजा प्रनहिण चेटया रूपि मीहि तिणि मैसेरि सराह माहिला बिंड श्राचीने इह श्रवन्यन ।

ं ७२ प्रश्नोत्तरोपासकाचार-सकलकीर्ति । पत्र मर्स्यो- हिं से १ ४४ । साईर्ज-१० १४४ है इस्त । माना-सस्तत । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-४ । तीसेन काल म० १७४३ मगसिर प्रेटी १३ । श्रपूर्ण । विष्टन न० १७४ ।

विशेष-शत्वार मे प्रतितिषि हंई भी । दो प्रतियां श्रीर हैं । 📝 🖰 😘 🖰

७३ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार — युलाकीदास । पत्र सख्या- १३० । साइज-१२ई्रे×० इच । साबा-हिन्दी पद्य । विषय-श्राचार शास्त्र । रचना काल-स० १७४० वैशाख सुदी ३ । लेखन काल-स० १६४५ सिंवन सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३ ।

विरोध-धिमनलालं वडजात्या ने श्रजमेर में स्व पर्यनार्थं प्रतिलिपि की थी।

७४ प्रायश्चितसमुच्चयं चूिलका - श्री निट्गुरु । पत्र सल्या-६७ । साइज-१२×६६ इश्र । मोबा-संस्कृत । विषय-घाँचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखने कॉल-संहर्ष ६० १ ६० १ किसी प्री पूर्ण । ब्रिटन न० २१ ६ ।

विशेष—लालचंद टोंग्या ने प्रतिलिपि करवाकर शातिनाम चैत्यालय में चटाई। श्वेताम्बर मोतीराम ने प्रति लिप की भी ।

७५. प्राथश्चितसमृह ः श्रकलंक देवं । पत्र संख्या हु। सहिन = १४४ किन । माया-संस्कृत । विषय-धाचार शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन न० २१७ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४ ।

तो विष्य-भूम । विष्य-भूम । विषय-भ्राचार शास्त्र । रचना काल-स० १६०० मादवा सुदी २ । लेखन काल-स० १६४६ श्रापाद सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ८४ ।

विशेष—श्लोक संख्या २१६७। एक प्रति श्रोर है।

्र । प्रदा प्रदात्व खंडन-विखतराम साह । पत्र सख्या-दृधः साइज-दुः ६ इत्त । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-धर्म (नाटक) । रचना काल-स० १८०१ पीष सुदी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १४८ ।

पद्म संख्यानर४३, द्रिया हम्रा है। एक प्रति मीर है। 🛶 🖟

७६. मिर्थयात्व निषेधं — बंनारसीदास । पत्र संख्या-३२ । साइज-१२×७ इन्च । भाषा-हिन्द विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६०७ सावन सदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १४० ।

विशेष - २८ पत्र से सम् इसनी क्या धानतराय कृत्दी हुई है ।

ं में ू =०. े मोत्तमार्गप्रकाश—पं० टोडरमता । पत्र संख्या—२०० । साइत—११४८ इञ्च । माना—हिन्दी (-गबः) । विषय-धर्म । सत्तना काल-४ । लेखन काल-स० १६४६ आवाट खुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ । ं ं

न् रत्नकरंडश्रावकाचार-प० सदामुख कासत्तीवाता । पत्र सख्या-४३० । साहज-११४= देखें । साबा-हि दी गद्य । विषय-श्राचार शास्त्र । रचेना काल-सं० १६२० चेत्र बुदी १४ । तेखन काल-×। पूर्या । वेप्टन न० ⊏३ ।

विशेष--पं सदामुखजी के हाथ के खरडे से प्रतिलिपि, की गर्यों है ।

निषय-आचार् शास्त्र । रचना काल-सं० १८२१ चेत्र प्रदी ४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेट्टन न० १४१ ।

विशेष-हरदेव के मृन्दिर में लिवाली नगर में फूलचंद की देखा से मुंग रचना हुई भी।

ं दि. रयग्सार--कुन्द्कुन्दाचारो । पत्र संख्या-रं ः । 'साइज--×४र्दे दस्र । भाषा-प्राकृत । विषये-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८७ ।

विरेष—पसवा नगर में, महात्मा गोरअन ने प्रतिलिपि की भी । गाभा स० १००, हैं । एक प्रति स्त्रीर है ।

विशेष--सं० १६४१ में बादशाह अंक्बर के शासनकाल में शावक इदा के पुत्र फामन ने श्र च रतना कराई भी।

म्ध्र पटकर्मोपदेशमाला-श्रमरकीति । पत्र मस्या-१०० । साइज-११×५ इव । मात्रा-श्रप्शंश । स्वय-श्राचार शास्त्र । रवना काल-स० १२४७ मादना सुदी १० । लेखन वाल-संवे १६४६ श्रासाज सुदी २ । पूर्ण । वेस्टन न० २६८ ।

विशेष-- १४ सिंघयां है। लेखक का परिचय दिया हुवा है।

न्दः पटकर्मापदेशमाला-भट्टारक श्री सकलभूषण्। पत्र संख्या-१४०। यादन-१० द्रै X४ दन्त । भाषा-सरकृत । विषय-ग्राचार शास्त्र । रचना काल-सं० १६२७ सावन सुदौ ६ । लेखन काल-स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन नं- २०३।

विशेष.—सवत् १४४४ वर्षे जेष्ठमासे शुक्तपन्ने नवास्यां तिथा रविवासरे हस्तनस्त्रे सिधियोगे श्री रणयम दुर्गे राजाधिराजराजाश्रीजगन्नायराज्ये प्रवर्तमाने श्री मिल्लिनायचेत्यालय श्री काष्ठासचे माथुरगच्छे पुण्करगये महारक श्री नेमर्पातिदेवा तत्पष्टे महारक कमलकीतिदेवा तत्पष्टे महारक श्री जयसेणिदेवा. । तदान्नाये ध्रप्रवालान्त्रये गोयलगोते देन्याना विड साहनी यदारय तस्य मार्या मानो । तस्य पुत्र १ । प्रथम पुत्र साह श्री मत्रानीदास तस्य मार्या गोमा तस्य पुत्र साह खेमचन्द तस्य मार्या झानी तस्य पुत्र द्वय । प्रथम पुत्र मोहनदास तस्य मार्या कीजी । द्वितीय पुत्र चिरंजीव धृटी । द्वितीय पुत्र साहयान तृतीय पुत्र साह बीरदास । चतुर्घ पुत्र साह श्री रामदास तस्य मार्या माग्योती तस्य पुत्र त्रय । प्रथम पुत्र साह मेथा द्वितीय पुत्र चिरंजीव साह चोखा तस्य मार्या पार्वती तस्य पुत्र चिरंजीव देवसी तृतीय पुत्र साह नेतसी । प्रयमो पुत्र रमीला । प्रतेषां मण्ये चतुर्विधि— दानिवतरणयव्यवृत्त साह चोखा तस्य मार्या पार्वती इष्टं शास्त्र लिखा य मानावर्णीकर्ममिमित्तं रमत्रयपुन्यनिमित्तं झानपात्राय मद्य श्री रूपाचन्दये दत्तं ॥ इति ॥

द्या कोल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० १४२ ।

क्ष्या-११३ । साहज-११४% इष । शाहा-हिन्दी'। विषय-धर्म । रचना काल-र । केखन काल-र । पूर्ण । वेंदन न० '१३६ ।

म्ह शिखरिवलास — मनसुखराम । पत्र संख्यां — ६३ । साइज — ११×१ दश्व । मावा -हिदी पर्थ । विषय — प्रमी । रचना काल — स • १८४४ श्रासीज सुदी १० । लेखन् , काल — स • -१-८४ श्रावाट, सुदी १४ । पूर्व । वेष्टन व ४४ ।

े विशेष -शिवर महात्म्य में से वर्णन है। बनस्वे अझग्रेताल के शिष्य थे।

्यासार गास्त्रता काल-× । लेखन काल-संव १७३१ नैशास्त्र सुदी व । पूर्व । वेहन नंव १६४ ।

धर्म एवं आचार शास्त्र]

विशेष.—राजनगर में नितिलिप हुई थी । प्रागनाट झातीय वाई श्रमरा ने लिखनाया था ।

११ श्रावकाचार—योगीन्द्रदेव । पत्र सस्या-१४ । साइज-११९४५ है इब्च । सात्रा-श्रपश्रंश । विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष — दोहा संख्या २२१ है।

- हर. संबोधपचासिका—गौतमस्वामी। पत्र संख्यां ३। साइज-११३×१३ इन । भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। स्वना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं वे ३८७।
- ६३ संबोधपचासिका टीका—पत्र संख्या-१२ । साइज-१०ई×१ई इश्र । साषा-प्राकृत -संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-×। लेखन काल -×। वेष्टन नं∘ ३८८ ।
- ६४. सयमप्रवहण-मुनि मेघराज । पत्र सस्या-४ । साइज-१•४४ ई इ॰च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-धमें । रचना काल-स० १६६१ | सेखन काल-स० १६८१ त्राषाद सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३६ ।

विशेष ---

श्रारम्म दोहाः — रिसह जियोसर ध्रगतिलाउ नामि नरिंद 'मल्हार ।

श्रथम नरेसर प्रथम जिन त्रिभीवन जन साधार ॥१॥

चक्री पंचम जायोइ सोलमउ जिनराय ।

शान्तिनाम जिम शान्तिकर नर सुर प्रयमह पाय ॥२॥

श्रन्तिम-राग धन्यासी-

गछपति दरिसणि घित श्राणंद । श्रीराजनंद स्रीसर प्रतपंद जा लिंग हु रिवर्चद ॥ ४६ ॥ श्राक्यो ॥ संयम प्रवहण मालिमगायंड नयर खम्मावत माहि,॥ संवत,सोल श्रनह इकसठई श्राणी श्रित रुझाह ॥ गछ० ॥ सरवण श्रिष ग्रन साधु शिरोमणि, मृनि मेघराज तसु सीस ॥ गुण गळपति ना मावह मावह पहुचह श्रास बगीस ॥ १५२ ॥

॥ इति श्री सयम प्रवहण संपूर्ण ॥

श्रुश्राविका पुन्यप्रमाधिका धर्मधूनिर्माहिका सम्यक्तम् लद्धादसत्रत कपूर्यप्रवासितोक्तमांगा श्रुश्राविकामघ धाई
पहनाधेम ॥

सबत् १६=१ वर्षे श्राषाद मासे शुक्ल पत्ने पुर्णिमादित्यभारे स्यम तीर्घे लिखित ऋषि क्ल्याणेन ।

श्लोक संख्या २०० है।

ध्य सम्मेदशिखरमहात्म्य-दीत्तित देवदत्त । पत्र संख्या-७= । साइज-११×१ई इ च । माना-सस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १=४१ । लेखन काल-स० १=४= । पूर्ण । वेष्ठन न० २१६ ।

विशेष--जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

६६. सागारधमिमृत—प० श्राशाधर । पत्र संख्या-१८१ । साहज-११४१ है इच । मापा-संस्कृत । विषय-त्राचीर शास्त्र । रचना काल-स० १२६६ । लेखन काल-स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०७ ।

विशेष - एक प्रति घोर है।

६७ सामायिक टीका-पत्र सख्या-३६ । साइज-१२४६ इञ्च । मापा-सस्कृत प्राकृत । विषय-धर्म । , रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

- ६८ सामायिक पाठ-पत्र संख्या-१२ । साहज-१०×४ रे हच । माषा-सहकृत । त्रिषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।
- ६६ सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द् छावडा । पत्र संख्या-५३। साइज-११×५ हुँ इन्च। माषा-हिन्दी गद्य। विषय-धर्म। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १६०१ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० ४२।

विशेष — ३ प्रति और है।

१००. सुदृष्टितरंगिणि — टेकचन्द् । पत्र संख्या-४६७ । साइज-११ ४८ इंच । माथा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-सं० १८३८ सावन सुदी ११ । लेखन काल-सं० १६६२ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन न० ४८६ ।

विशेष-४२ संधियां हैं। चद्रलाल वज ने प्रतिलिपि की थी।

- १०१ सृतक वर्णन पत्र संख्या-२ । साइज-६×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रःचार । रचना काल-× । सेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४७ ।
- १०२. हितोपदेशएकोत्तारी-शी रत्नहर्ष । पत्र संख्या-२ । साइज-१०४४ इम्र । भाषा-हिदी । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नै० २४२ ।

विशेष — किशनविजय ने विकमपुर में प्रतिलिपि की थी। श्लोक संख्या ७१ है।

विषय-अध्यात्म एवं योग शास्त्र

- १०३ श्रष्टपाहुड भाषा जयचद छ।बडा । पत्र संख्या-१७८ । साहज-१३६े×६६ इन्व । माषा-हिन्दी गद्य । विषय-श्रष्यात्म । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६५० फाग्रन घुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ६८ ।
- १०४. श्रात्मानुशासन-गुगाभद्राचार्य। पत्र सरूया-३०। साइज-११×१ई इश्र । भाषा-संस्कृत। विषय-ग्रध्यात्म। रचना फाल-४। लेखन काल-स० १७६४ माघ सदी ४। पूर्ण। वेष्टन न० २८६।

विशेष — वसवा नगर में श्री चंद्रप्रम चैत्यालय में श्री त्तेमकर के शिष्य त्रिलोकचद ने प्रतिलिपि की भी। एक प्रति श्रीर है।

- १०४. त्रात्मानुशासन टीका-प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-६४ । साइत-६४४ इन्च । मापा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स॰ १९२६ आषाद बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं॰ २८० ।
- १०६. त्रात्मानुशासन भाषा टीका— प० टोडरमल । पत्र संख्या-१०४ । साइज-१०४५ है इस । भाषा-हिन्दी । विषय-त्रभ्यातम । रचना काल-स० १७६६ भादवा सुदी २ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं• ४१।

विशेष--राजा की मडी (श्रागरा) के मंदिर में महात्मा संभूराम ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति श्रीर है ।

१०७. श्राराधनासार—देवसेन । पत्र सख्या-१३ । साइज-१०४६ इन्छ । माषा-प्राकृत । विषय-श्रम्यातम । रचना काल-४ । तीखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५२ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है वह संस्कृत टीका सहित है।

- १०८ श्राराधनासार भाषा--पन्नालाल चौधरी। पत्र सख्या-१८। साहज-१२६४८ इन्च। माबा-हिन्दी गद्य। विषय-श्रध्यातम । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० ८२।
- १०६. कार्तिकेयानुप्रेत्ता—स्वामीकार्तिकेय । पत्र सख्या-७८ । साइज-११४४ है इन्च । माषा-माकृत । विषय-प्रध्यास । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष-प्रथम ७ पत्र तक सस्कृत में सकेत दिया हुआ है।

११०. कार्तिकेयानुप्रेत्ता भाषा-पं० जयचंद छाबढा । पत्र संख्या-१४७ । साहज-११४७ ई इब ।
भाषा-हिदी गद्य । विषय-श्रम्यात्म । रचना काल-स० १८६३ सावन सदी ३ । लेखन काल-सं० १६१४ माघ सदी ११।
पूर्ण । बेप्टन न० ७२ ।

विशेष-- २ प्रतियां श्रीर है।

- १११. चारित्रपाहुड भाषा—पं० जयचंद छावडा । पत्र सख्या-१५ । साइज-१२४ इम । माषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-४ । खेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६१ ।
- ११२. ज्ञानार्णव शुभचंद्र। पत्र सरूया-१७६ । साइज-११×५ दे इश्च । माषा-सस्कृत । विवय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन न० २५४ ।

विशेष—संवत् १७८२ में कुछ नवीन पत्र लिखे गये हैं । सस्कृत में कठिन शब्दों का श्रर्ध दिया हुआ है । प्रति–एक प्रति स्रोर है ।

- ११३ दर्शनपाहुड—प० जयचंद छाबडा । पत्र संख्यां-२०। साइज-१०४८ इन । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-श्रध्यात्म । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०।
- ११४. द्वादशानुप्रेत्ता—कुन्द्कुन्दाचार्य। पत्र सल्या-१२। साइज-१०३×५ इस । माबा-प्राकृत। विषय-चितन। रचना काल-४। लेखन काल-सं० १८८२ द्वि० वैसाक्ष बुदी ७। श्रपूर्ण । वेष्टन नं० १७३।

विशेष —हिन्दी संस्कृत में छाया भी दी हुई है।

११४. द्वा १शानुप्रेत्ता—स्रालू किव । पत्र सल्या-१६ । साइज---१×४४ ६ १ माषा-दिन्दी । विषय-चितन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६४ ।

विशेष-- बारह मावना के २ = पद्य हैं । इसके श्रतिरिक्त निम्न हिन्दी पाठ श्रीर हैं.-

- (१) जखडी-हरोसिह।
- (>) पद (वदू श्री ऋरहंत देव सारद नित सुमर्ग इदय घरू) --- हरी बिंह
- (३) समाधि मरन-पानतराय।
- (४) वज्रनामि चक्रवर्ती की वैराग्य मावना--- मृधरदास ।
- (५) वधावा-(वाजा वाजिया भला)
- (६) बाईस परीवह।

रामलाल तेरा पंथी छावडा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

११६. दोहाशतक — योगीन्द्र देव । पत्र सख्या – १ । साइज – १ है ×४ है इन्छ । भाषा – धपश्र श । विषय – श्रव्यातम । रचना काल – × । लेखन काल – स० १८२७ वर्तिक चुटी १३ । पूर्ण । निष्टन नं० १०० ।

विशेष-शीचढ़ ने वसवा में प्रतिखिपि की भी।

११७. नवतत्वबालावोध-पत्र संख्या-३१। साइज-१०ई%४६ इस । सापा-ग्रजराती हिन्दी । विवय-

विशेष--हिम्मतराय उदयपुरिया ने प्रतिलिपि की थी

११८. परमात्मप्रकाश--योगीन्द्रदेवं। पत्र संख्या-२० । साइज-११२४५ ६०व । माषा-अपभ्र श । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७७४ फाग्रुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५० ।

विशेष—वृ-दावती नगरी में श्री चंद्रप्रभु चैत्यालय में श्री उदयराम लद्दमीराम ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत में काठन शब्दों के श्रर्थ दिये हुए हैं। कुल दोहे २४६ हैं। २ प्रति श्रीर हैं।

११६ प्रति नं०२। पत्र सख्या-१२३। साइज-११x४ई इख । जेखन काल-स्०१४८६ पीष बुर 📱

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है। इसमें कुल ४५ अधिकार हैं। प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवंत् १४ = ६ वर्षे पीष बुदी ६ रवौदिने श्री गोपिगिरे: तीमरवंशमहाराजाधिराजश्रीमद्दोंगरसीदेवराच्यप्रवितमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्त्रये पुष्करगणे महारक श्री ने ोन्द्रकीर्तिदेवास्तद्गु ह शिष्य श्री पद्मकीर्तिदेवा. तस्य शिष्य श्री वादीन्द्रचूडामणी महासिद्धान्ती श्रीनहा हीराख्यानामदेवा । श्रमोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्री गल्हा मार्थी खेमा तयो पुत्री मौणी एक पत्ता । द्वितीय पत्ता श्रमोतकान्त्रये गर्ग गोत्र साधु श्री नेमघरा मार्थी हरो । तयापुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र देसलु, द्वितीय वील्हा, तृतीय श्राल्हा, चतुर्ष मरमा देसल मार्था हपा. वील्हा मार्थी नाष्ट्री साधु श्राल्हा मार्थी धानी तयो पुत्राश्चत्वार, साधु श्री चदा साधु हिस्चद सा०, रता, सा०, साल्हा । श्रीवद पुत्रमेषा स्वधमेरत साधु श्री मर्था मार्थी मोणा शीलशालिनी धर्म प्रमालनी सन्त्रयपाराधिनी वाई जोणी श्रात्मकर्मन्त्रयार्थं इदं परमात्मप्रकाश प्रंथ लिखापित ।

इसमें २४४ दोहा हैं। प्रथम पत्र नया लिखा गया हैं।

१२०. प्रवचनसार —कुन्द्कुन्द्ाचार्य । पत्र सख्या-३३ । साइज-१०ॐ४४ इब्च । माषा-प्राकृत । विषय-श्रध्यात्म । रचना काल-х । लेखन काल-स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन नं०३५८ ।

विशेष--पत्र = तक संस्कृत टीका भी दी है।

१२१. प्रबचनसार सटीक-श्रमृतचन्द्र सूरि । पत्र संख्या-१०७ । साइज-१०३×४३ इन्च । माषा-संस्कृत । त्रिषय-श्रम्यातम । रचना काल-४ । लेखन काल ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

विशेष---- श्रन्तिम पत्र फटा हुआ है। बीच में २४ पत्र क्म हैं। श्रागरे में प्रतिलिपि हुई था। प्रति प्राचीन है

- १२२. प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या-३० । साइज-११४४ इच । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्रध्यात्म । रचना कास्त-सं० १७०६ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्ट्रन न० ४४ ।
- १२३. प्रवचनसार भाषा पांडे हेमराज । पत्र संख्या-१४२ । साइज-१२४८ इश्व । माषा-हिन्दी (गष)। विषय-श्रध्यात्म । रचना काल-स० १७०६ माघ सुदी ४ । लेखन काल-स० १६४२ श्राषाढ बुढी २ । पूर्ण वेष्टन नं० ६७ ।

एक प्रति श्रीर है।

१२४. बोधपाहुड भाषा—पं० जयचद् छ।बडा । पत्र संख्या -२१ । साइज-१२४८ इव । भाषा-हिन्दो गद्य । विषय-श्रम्थास्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

१२४. भव वैराग्य शतक-पत्र सस्या-११। साइज-१०३/४५ इन्च। माषा-श्रपश्र श। विषय-श्रध्यातम। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १७३।

विशेष —हिन्दी में छाया दी हुई है।

१२६. मृत्युमहोत्सव--बुधजन । पत्र सल्या-३ । साइज-=×६ ई इञ्च । माषा-हिन्दी पद्य । विषयत्रध्यातम । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १३० ।

१२७ योगसमुच्चय—नवनिधिराम । पत्र सख्या १२३ । साइज-१४४ई इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-योग । रचना काल- × । लेखन काल -× । वेष्टन न० ४६० ।

विशेष-- ५० पत्र तक श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

१२८. योगसार-योगोन्द्रदेव । पत्र सख्या-६ । साइज-११५४६ इस । माषा-अपश्र शा । विषय-श्रथ्यातम । रचना काल-४ । तेखन काल-स० १८७२ मगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२६ ।

विशेष--- एक प्रति श्रीर है।

१२६. षट्पाहुड--कुन्द्कुन्दाचार्य। पत्र संख्या-६७। साइज-१२×५ इच । माषा-प्राकृत। विषय-ग्यास्म। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० २४५।

विशेष-- २ प्रतियां श्रीर हैं जिनमें केवल लिंगपाहुड तथा शीलपाहुड दिया हुआ है।

१३० षट्पाहु**ड** टीका—टीकाकार भूधर । पत्र संख्या-६० । साइज-११२४४ ३ इन्छ । साषा-८२कृत । विषय-प्रथ्यात्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७५१ । पूर्ण । वेष्टन न० २४४ ।

विशेष--प्रति टन्वा टीका सहित है । यह टीका मूधर ने प्रतापसिंह के लिए बनाई थी ।

१३१ समयसार फुन्दकुन्दाचार्य। पत्र सख्या- १५१। साइज-१०४६ इन । माषा-प्राकृत। विषय-• यातम । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८२६ मादश सुदी १४। पूर्ण । वेष्टन न० ५०।

> विशेष—दौसा में पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई घी । श्रमृतचन्द्र कृत आत्मख्यित टीका सहित है । एक प्रति श्रीर है ।

१३२. समयसार कलशा - अमृतचद्रसूरि । पर्वे सख्या-४६ । साइज∓११४८ इंब । माषा-संस्कृत । विषय-अध्यातम । रचना काल-४ । सेखन क.ल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १२७ ।

ष्प्रध्यातम एवं योग शास्त्र]

१३३. प्रति नं०२। पत्र संख्या-११२। साइज-१०×५ हु इत्र । लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न • २४ विशेष--- आनंदराम के वाचनार्थ नित्य विजय ने यह टिप्पण लिखा था। टिप्पण टब्वा टीका के सदश है। प्रति सन्दर है।

१३४. समयसारनाटक — बनारसीदास । पत्र सख्या – ७३ । साहज – १२×५ है हम । साहा – हिन्दी । विषय – अप्यास । रचना काल – स० १६१३ । लेखन काल – सं० १०० चेत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२० ।

विशेष - बसवा में श्री (नरमैराम के वेटा श्री मनसाराम ने फतेराम के पठनार्थ लिखी थी। ४ प्रतियां श्रीर हैं।

- १३४. समयसार वचितका—राजमल्त । पत्र सख्या-१६८ । साइज-११४४ ई इच्च । माषा-हिन्दी गद्य । विषय-श्रध्यातम । रवना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।
- १३६. समाधितंत्र भाषा-पर्वतधर्माथी। पत्र सख्या-७७। साइज-६३×५ इच। माषा-ग्रजराती देवनागरी लिपि। विषय-योग। रचना काल-४। लेखन काल-सं० १७५५ फाग्रन बदी ७। पूर्ण । वेष्टन नं० १८३।

विशेष — गगपत्तन में श्री श्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । एक प्रति श्रीर है ।

- १३७. समाधिमरण भाषा—पत्र सस्या-१३ । साइज-१२६४८ इश्र । भाषा-हि दी गद्य विषय-ष्रध्यातम । रचना काल-× । सोखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन न० ८१ ।
- १३न. सूत्रपाहुड—जयचद् छाबडा । पत्र सख्या-१४ । साइन-१२४= इश्च । भाषा-हिदी गध बिषय-मध्यातम । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।



विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

१३६. स्त्राप्तपरीत्ता-विद्यानिद् । पत्र सरूया-६ । साइज-१०३×४ है ६०च । माषा-सरुत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६० ।

विशेष--पंडित धरमू के पठनार्थ गयाससाहि के राज्य में प्रतिलिपि की गोई थी।

१४०. श्रालापपद्धति—देवसेन । पत्र सस्या-११ । साइज-१०४० हुँ इस्च । माषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन नं० २०६ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

१४१ तर्कसम्रह-म्प्रन्नभट्टः पत्र संख्या-६ । साइज-१०४४ हु इख । माषा-सस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २०२ ।

विशेष—मोतीलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की भी । एक प्रति स्त्रीर है ।

१४२ दर्शनसार—देवसेन । पत्र सख्या-३ । साइज-११ई-४१ इझ । माषा-प्राकृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १००२ मगसिर बुदी श्रमानस । पूर्ण । वेष्टन न० २१७ ।

विशेष--- २ प्रतियां और हैं।

१४३. नयचक—देवसेन । पत्र सरूया-३३ । साइज-११५×५ इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८०६ फाग्रुन खुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

श्लोक सख्या-४४३ है।

१४४ न्यायदीपिका—धर्मभूषगा। पत्र सख्या-४८। साइज-८३/४४ इब्च। माषा-संस्कृत। विषय-

विशेष-देवीदास ने स्वपठनाथ लिखी थी।

१४४ परिभाषा परिच्छेद (नयमूल सूत्र)—पचानन भट्टाचार्य । पत्र सख्या-११ । साइज-१०१४४ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-х । लेखन काल-х । पूर्य । वेष्टन न० ४२७ ।

श्रन्तिम—इति श्री महामहोपाध्यायसिद्धान्त पंचानन मट्टाचार्य कृत परिमाषा परिच्छेद समाप्त । १६६ श्लोक हैं प्रति प्राचीन मालूम देती है ।

१४६ पट्दर्शन समुच्चय —हिरभद्रसूरि । पत्र संख्या-७ । साइज-१०४४ इन्व । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन ने० २८४ ।

F ...

पूजा एव प्रतिष्ठादि श्रन्य विधान]

विशेष — ६६ श्लोक हैं।

१४७. सन्मतितर्क—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सल्या—= । साइज-=×४ है इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रवना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं ० १०२ ।



पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

१४८. श्रज्ञा—पत्र संख्या-३। साइज-११४४ई इब्ब। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। चना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न०११४।

विशेष-- लिध विधान पूजा भी दी हुई है।

१४६ त्राकुरारोपण विधि-पत्र सस्या-७ । साइज-१०४६ इख । माषा-संस्कृत । निषय-विधि विधान । स्वना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८० ।

विशेष-- छठा पत्र नहीं हैं।

- १४०. श्रनंतत्रतपूजा-श्री भूषण्। पत्र सख्या-६ । साइज-१०४४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन न० १०२ ।
- १४१. अनतन्नतोद्यापन-पत्र सस्या-२२ । साइज-११ई×१६ इच । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६ ।
- १४२. श्रभिषेकविधि-पत्र सस्या-३ । साइज-७३/४४३ इन्च । भाषा-सस्यृत । विषय-विधि विधान । स्वना काल-х । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन न० १२४ ।

विशेष — एक प्रति श्रीर है।

१४३. श्राहेत्यूना--पदानंदि । पत्र सस्या-४ । सारज-६×६ई इख । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । स्वना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं • ४८ ।

- १४४. श्राब्टक--पत्र सस्या-१ । साइज-१०४४ र इख्र । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।
- १४४. श्रष्टाहिकापूजा । पत्र सख्या-१०। साइज-७३४४ई इच। माषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १२४।
- १४६. ऋष्टाह्निकापूजा-पत्र सस्या-७ । साइज-१×६ ई इच । माषा-सस्कृत । त्रिषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष — जाप्य से श्रागे पाठ नहीं हैं।

१४७ श्राब्दाहिकापूजा—शुभचद्र। पत्र संख्या-३। साइज-१०ई×१ इञ्च। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न०३७।

विशेष --- प्रति प्राचीन है। त्र० श्री मेघराज के शिष्य त्र० सवजी के पठनार्थ लिपि की गई थी।

- १४८. इन्द्रध्वजपूजा—विश्वभूषगा। पत्र सख्या—६६ । साइज-११४६ इन्च । माषा—सस्कृत । विषय—पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-स० १८२० चैत सुदी १२।पूर्ण । वेष्टन न०३३।
- १४६ कलिकुं डपारर्वनाथपूजा -- पत्र सल्या-६ । साइज-१×६३ इञ्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष-पत्र ४ से चिन्तामणिपार्श्वनाय पूजा भी है।

- १६०. कर्मदहनपूजा टेकचंद । पत्र सख्या-१६ । साइज-१६×७३ इम । मापा-हिन्दा । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १३ ।
- १६१० कोलकुतुहल-पत्र सख्या-==४। साइज-=×५ इद्य । माषा-सरवृत । विषय-विधि विधान । स्वना काल-×। लेखन काल-स० १६०२ पीप सुदी २। पूर्ण । बेष्टन न० १०७।

विशेष--यहादि को सामग्री एवं विधि विधान का वर्णन है। कुल ६१ श्रम्याय है।

१६२. गणधरवलयपूजा--शुभचद्र। पत्र संख्या-१०। साहज-१०३×४३ १०च। मापा-सरष्टत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। बेप्टन न०११०।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

१६३. गिरनारसिद्धन्तेत्रपूजा — हजारीमल्ल । पत्र सस्या-३६ । साइज-२०१४ = इम्स । भाषा-हिन्दी । निषय-पूजा । रचना काल-स० १६२० श्रासोज बुटी १२ । लेखन नाल-४ । पूर्ण । नेप्टन न० । विशेष — हजारीमल्ल के ।पता का नाम हरीविसन था । ये अप्रवाल गोयल ज्ञातीय थे तथा लश्कर के रहने बाले थे किन से साहपुर मे श्राकर दौलतराम की सहायता से रचना की थी ।

१६४. चन्द्रायणञ्चतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सख्या -४ । साइज-५२ई×७४ इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं ० १७ ।

विशेष-- २ प्रतिया श्रीर हैं।

१६४ चारित्रशुद्धिविधान (बारहसोचौतीसिवधान)—श्री भूषण । पत्र सख्या-७६ । साइज-१२×५ है इरूच । साषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-४ । लेखन क.ल-स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२ ।

विशेष—दिच्या में देविगिरि दुर्ग में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रंथ रचना की गयी थी। तथा जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

- १६६. चौवीसतीर्थंकरपूजा पत्र सरूया—५१। साइज-११४१ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ६१।
- १६७. चौनीसतीर्थंकरपूजा—सेवाराम । पत्र सख्या—४३ । साइज-१२×६ इब्च । माषा—हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८५४ माह बुदी ६ । लेंद्धन काल-सं० १८६ । पूर्ण । वेष्टन न०२८ ।
- १६८ चोवीसतीर्थं करपूजा—रामचद्र । पत्र सख्या-४० । साइज-१०३४७ हे इष्च । भाषा-हि दी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८८६ चैत छदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं०१० ।

विशेष—प्रति सुन्दर व दर्शनीय है। पत्रों के चारों श्रोर सिन्न २ प्रकार के सुन्दर बेल बूटे हैं। स्योजीराम भावसा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की घी।

१० प्रतियां श्रीर हैं।

- १६६ चौवीसतीर्थेकरपूजा—मनरंगलाल । पत्र सख्या ५१ । साइज-१२३४८ इब्च । माषा हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ४।
- १७० चौवीस तीथैकर पूजा— घुन्दावन । पत्र सख्या-१५१ । साहज-११४७ई इच । माषा-हिन्दी विषय-पूजन । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेध्रन न० २० ।

विशेष-- ३ प्रतियां श्रीर हैं।

१७१. चौवीसतीर्थंकर समुच्चय पूजा-पत्र संल्गा-४। साइन-११४५ इञ्च। माधा-संस्कृत । त्रिषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं० ७१। १७२ चौसठ ऋद्विपूजा (गुरावली)—स्वरुपचद । पत्र संख्या—७१ । साइज-११४७३ इख । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स॰ १६०० आवण घुटी ७ । लेखन काल-सं॰ १६४ = । पूर्ण । वेष्टन न॰ २ ।

विशेष-इस प्रति को बहादरजी ठोलिया ने ठोलियों के मन्दिर में चढाई थी।

१७३. जम्बृद्वीप पूजा-जिगादास । पत्र संख्या-३१। साइज-११ई×५ई इन्न । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३५ ।

१७४ जलहर तेला को पूजा—पत्र मरूगा-४। साइज-११४७५ इख्न । मापा-सस्वत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेट्टन न० २२ ।

१७४. जिनयज्ञ कल्प (प्रतिष्ठापाठ)—श्वाशाधर। पत्र सस्या-१२०। साइज-१०४६ इध । माषा-सस्वत । विषय-विधि विधान । रचना काल-सं० १२८१। लेखन काल-स० १८७४। पूर्ण । वेष्टन न० ३६६।

प्र-माप्र य सच्या-२ १०० श्लोक प्रमाण है ।

विशेष — संवद्वाणघरास्मृतिप्रमिते मार्गशीर्णमृतिष्टा सिते लिखितमिट पुस्तकं विदुषा स्वेतांवर सुन्दरदासेन श्रीमञ्जयपुरे जयपत्तने ।

१७६ जैनविवाहविधि--जिनसेनाचार्य। पत्र सख्या-४४। साइज-१२४= इश्व। माषा-सस्कृत। विवय-विधान। रचना क.ल-४। लेखन काल-स० १६३३। पूर्ण। वेप्टन न० १०४।

विशेष---प्रति हिन्दी श्रर्थ सहित है। भाषाकार पन्नालालजी दूनी वाले हैं। स• १६३३ में इसकी भाषा पूर्ण हुई थी।

१८७. ज्ञानपूजा-पत्र सरूया-४ । साइज-११×४३ इश्र । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-×। पूर्ण वेप्टन न० ११४ ।

विशेष-शी मूलसघ के श्राचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

१७८ तीनचौत्रीसी पूजा-पत्र सस्या-२१ मे ६८ । साइज-११४४ ई इस्र माषा-६स्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

१७६. त्रिशत्चतुर्विश(तपूजा-शुभचद्र। पत्र सख्या-१२०। साहज-६०४८ई इञ्च। माषा-सस्कृत। विषय-पूजा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न०६१ क।

गुटका के स्राकार में है।

१८०. तेलान्नत की पूजा-पत्र सख्या-४ ! साइज१•४४ई इच । माषा-सर्हत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

१८१. दृत्तिगायोगीन्द्र पूजा - छा० सोमसेन । पत्र संख्या-१ । साहज-११ई×१ई इस्र । माया-सम्कत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १७६४ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८४ ।

विशेष - पहित मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

१८२. दशलज्ञायात्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-५२। साहज-६ ई×५ ई हन्च। माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। श्रपूर्ण। वेष्टन नं० ११८।

विशेष — श्रन्तिम दोहा —

डारि मत दश धर्म को लुव्ध हो ग्रह सेव । रावत सुर नर सर्म इत मरि परमव शिव लेव ॥

१८३ दशलस्यापूजा—पत्र संख्या—३ । साइज-११६४५६ इस । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । बेप्टन नं० ११२ ।

विशेष-नदीश्वर पूजा (प्राकृत) भी दी है ।

१८४. दशलत्तापूजा — पत्र सरूया-१७ से २४ । साइज-८३४४ ईश्चं । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १२२ ।

१८४. दशलत्त्रापूर्जा- श्रमयनंदि । पत्र सख्या-१४ । साइज-११३८४ हे इब । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

१८६ दशलस्याजयमाल-भावशमी । पत्र संख्या-११ । साइज-१०ई×४५ इन्च । माषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७३३द्वि० सावन सुदी ३ । पूर्य । वेष्टन न० ७१ ।

विशेष — रामभीर्ति के शिष्य प० श्रीहर्ष तथा कल्याया तथा उनके शिष्य प० चिन्तामिया ने खेम स्तनसिंह के पठनाथं प्रतिक्षिप की थी।

१८७ दशलत्तराप्पूजा जयमाल-रहभू । पत्र सरूया-१६ । साहत-११४४ हुँ इख्र । भाषा-त्रप्र श । विषय-पूजा । रचना काल -× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०८ ।

सस्कृत टिप्पच सहित है। ४ प्रतियां श्रीर हैं।

१८८ द्वादशन्नतपूजा — देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र संस्था-१४ । साइज-१२४५ ई इच । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-स॰ १७७२ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेप्टन न० ८० ।

१८. देवपूजा-पत्र सल्या-६ । साइज-१० \times ४ $\frac{1}{2}$ इख । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल- \times । लेखन काल- \times । पूर्ण । वेप्टन नं० ४६ ।

विशेष - २ प्रतियां श्रीर हैं । एक-प्रति हिन्दी माषा नी है ।

१६० नन्दीश्वरिवधान—रत्ननंदि। पत्र संख्या-१७। साइज-११४५ इन्च। माषा-सस्कृत। त्रिषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-स० १८२७ फाग्रुन बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न०४२।

विशेष — महाराजाधिराज श्री सवाई पृथ्वीसिंहजी के राज्यकाल में वसवा नगर में श्री चद्रशम चैत्यालय में पिटत स्रान-दराम के शिष्य ने शिर्तिलिपि की भी । एक शिंत श्रीर हैं ।

- १६१ नंदूसप्तमीत्रतपूजा- पत्र संख्या-१। साहज-१०ई×७ई इञ्च। मापा-सरकृत। विषय-पूजा। रवना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वे॰टन नं० १६।
- १६२. नत्रप्रहश्चरिष्टिनिवारकपूजा-पत्र सल्या-१८। साईज-१२ई×८ इन्च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६ ।
- १६३. नित्यनियमपूजा पत्र सख्या-४० । साइज-५×४ दृहसः । माषा हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन ने० १२४ ।

त्रिशेष-प्रथम पत्र नहीं है। ३ प्रतियां श्रीर है।

१६४. निर्वाण्चेत्रपूजा-स्वरुपचद् । पत्र संख्या-२६ । शहज-१४८ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६१६ कार्तिक बुदी १३ । लेखन काल-स० १६३८ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ८२ ।

विशेष-गणेशलाल पांच्या चाक्यू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५. निर्वाणकारहपूजा--- द्यानतराय । पत्र सख्या-३ । साइज-११४४ इद्य । माषा-हिदी । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४ ।

विशेष—निर्वाणकारड गाया भी दी हुई है।

१६६. पद्मावती पूजा--पत्र संख्या-१३। साइज-११२×५ इच। माषा-सस्कृत । विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्य । वेष्टन न०३७।

विशेष-निम्न पाठों का श्रीर समह है --

पद्मावती स्तोत्र, रुलोक रुल्या २३, पद्मावती सहस्रनाम, पद्मावती क्वच, पद्मावती पटल, श्रीर घंटाकरण मंत्र ।

- १६७. पंचकल्याग्पपूजा लद्मीचद्। पत्र संख्या-२ सं २४ तक। साइज-१९४४ इञ्च। माषा~ संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-सं० १६०६। पूर्ण। वेष्टन न० ८६।
- १६८ पचकल्याण्कपूजा—टेकचद । पत्र संख्या-२४ । साइज-८३×६ इम्च । भाषा-हिदी । विवय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६५४ अवाद सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न०४७ ।

१६६. पचकत्त्याग्यकपूजा पाठ —पत्र संख्या—२२। साइज-१०ई×० इख । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६०० वैशाख सुदी ⊏ । पूर्ण । वेष्टन न० २३।

विशेष--चिम्मनलाल मांवसा ने जयपुर में बरूशीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

२०० पंचपरमेद्दीपूजा-पत्र संख्या-४। साइज-११×४६ इब्च। माषा-सस्कृत। विषय-पूजा। स्वना काल-४। लेखन काल-स०१७३१। पूर्ण। वेप्टन न०१११।

विशेष--- श्लोक सख्या ००० है।

२०१. प वपरमेष्टीपूजा-पत्र सख्या-४=। साइज-६×१ दश्च । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । स्वना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ६२ ।

२०२ पंचमेरुपूजा— पत्र सख्या-७। साइज-७ $\frac{3}{7}$ ×४ $\frac{1}{7}$ इस । माषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० १२४।

२०३. पूजा एव स्रभिषेक विधि । पत्र संख्या-१४ । साइज-८३×६ है इख । भाषा-सस्कृत हिन्दी गद्य । विषय-विधि विधान । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष-गुटका साइज है।

२०४. पूजापाठसम्मह - पत्र संख्या-६= । साइज-११×= इन्च । माषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । स्चना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३ ।

विशेष---नित्य नैमित्तक पूजा पाठ श्रादि समह है। पूजा पाठ संमह की 🗆 प्रतियां श्रीर हैं।

२०४. बीसतीर्थं करपूजा-पन्नालाल सघी। पत्र सख्या-६२। साइज-१२ई४ = इन्न । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। रचना काल-स० १६३४। लेखन काल-स० १६४४ सावन खुदी ७। पूर्ण । वेष्ठन नं० ४।

विशेष — टोंक में कोजसिंह के पुत्र पन्नालाल ने रचना की तथा अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी। ३ प्रतियां और है।

२०६ भक्तामर स्तोन्न पूजा—सोमसेन । पत्र हंस्या-१० । साइज-१०ई-४५ इच । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १०८४ वार्तिक सुदी । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३ ।

विशेष - पहित नानकदास ने प्रतिलिपि की भी

२०७. मंहल विवान एव पूजा पाठ संम्रह — पत्र संख्या-१४४। साइज-११×६ इस । भाषा-सरकत । विषय-पूजा । लेखन काल-स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० १२६ ।

विशेष-- निस्न पाठों का संग्रह है--

नाम पाउ	वर्षा	पत्र संख्या	ले॰ काल	विशेष
(१) जिन सहस्रनाम (२) ,, ,,	याशाधर जिनसेनाचार्य	: } भे से १६	_	
(३) तीन चौबीसी पूजा		१६ से ३३		
(४) पचकल्यागकपूजा		२४ से ४४		मढल चित्र सहित
(५) ५चपरमेष्ठीपूजा,	शुभचद्र	४६ से ७७	ले॰ काल १⊏६४	_
(६) कर्मदहनपूजा	शुमचद्र	<i>७</i> ⊏ से ६७		चित्र सहित
(७) बीसत्तीर्गकरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	६⊏ से १०१		
(=) मलामरस्तोत्रपूजा	श्रीमूषण	१०२ से ११२		मडल चित्र सहित
(१) धर्मचक	रगमल्ल	११३ से १२६		
(१०) शास्त्रमंडल पूजा	झानमूषण	१३० से १३४		चित्र सहित
(१ •) ऋषिमंडलपूजा	या० गणिनीद	१३४ से १४४		,,
(१२) शातिचकपूना	-	१४६ से १६१	-	वित्र सहित
(१३) पद्मावतीस्तोत्र पूजा	~	१६२ से १६६		
(१४) पद्मावतीसहस्रनाम	******	१६७ से १७३		
(१५) षोडशकारणपूजा उद्या	पन वेशव सेन	१७४ से १६⊏		
(१६) मेघमाला उद्यापन		१६६ से २१३		चत्र सहित
(१७) चौबीसीनामत्रतमृहली	वधान	२१४ से २३०		
(१८) दशलक्षणवतपूजा		२११ से २६०		चित्रं सहित
(१६) पंचमीव्रतोद्यापन	-	२६१ से २६७		77
(२०) पुष्पांजलिनतोद्यापन	-	२६⊏ से २⊏३	-	"
(२१) कर्मच्रवतीयापन		२⊏३ से २६१		
(२२) श्रक्षयनिधिन्नतोद्यापन	झानभूष ण	२ ६० से ३०४	_	
(२३) पंचमासचतुर्दशी म	।० सुरेन्द्रकीर्ति	३०६ से ३११		
व्रतोद्यापन				
(२४) अर्गत त्रत पूजा —	-	३१२ से ३४१		चित्र सहित

पजा एवं प्रतिष्टाद् श्रन्य विधान]

	· · ·	_						
	नाम	कर्त्ती	पत्र सं•	काल	विशेष			
	(२:) श्रनंतवतपूजा	गुणचद	३४२ से ३७४	र० का० १६३०	सचित्र			
	(२६) रत्नत्रय पूजा	केशवसेन	३७५ से ३६६	-	tanger#			
	(२७) रत्नत्रय्वतोद्यापन		३६७ से ४१२	-				
	(२८) पल्यव्रतोद्यापन पूजा	शुभचद्र	४१३ से ४२६		चित्र सहित			
	(२६) मासांत चतुर्दशी पूजा	श्रव्यराम	८२७ से ४४४	-	चित्र सहित			
	(३०) यमोकार पैतीसी पूजा	श्रन्यराम	४४५ से ४५०	111	चित्र सहित			
	(३१) जिनगुणसपित्रतोचापर	न —	४५१ से ४५⊏		सचित्र			
	(३२) त्रेपनिकयाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	४४६ से ४६६		सचित्र			
	(३३) सोरूपव्रतोद्यापन	श्रत्यराम	४६७ से ४⊏१		सचित्र			
	(३४) सप्तपरमस्थान पूजा	_	' ४८१ से ४८५	+1				
	(३५) श्रग्टाहिका पूजा		४⊏६ से ४,३१।	1 —	सचित्र			
	(३६) रोहिणीवतोचापन		५१२ से ५२४	लें० का० १८८६				
विशेष — जयपुर में लिपि हुई थी ।								
	(३७) रतावलीवतोद्यापन		४२५ से ४३६		सचित्र			
	(३८) ज्ञानपच्चीसीव्रतोद्यापन	स्रे न्द्रकीर्ति	५३७ से ५४४	ले० का० स ं० १ ८४०				
विशेष—जयपुर में चद्रप्रभु चैत्यालय में लिपि हुई थी।								
	(३६) पंचमेरुपूजा म	॰ रत्नचद्र	१४६ से १४२		-			
	(४०) श्रादित्यवाखतोद्यापन		४५२ से ५६१		सचित्र			
	(४१) श्रचयदशमीवतपूजा		५६२ से ५६५	-				
	(४२) द्वादशव्रतोद्यापन दे	वेन्द्रकीर्ति	१६६ से ५७६					
	(४३) चदनषष्टीव्रतपूजा		१८० से ४८६	4	चित्र पर श्रपूर्ण			
	विशेष—-५⊏७ से	दि० र तक पृष्ट नहीं है	ŧ.	โร้				
	(४४) मौनित्रतोद्यापन		६०६ से ६२१					
	(४४) श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	-	६२२ से ६३६	*****	-			
	(४६) कांजीव्रतोद्यापन	******	६३६ से ६५४		_			
	(४७) प्जाटीका संस्कृत		६४४ से ६४४					

इसके श्रतिरिक्त र फुटकर पत्र हैं। श्रोर र पत्रों में त्रत पजाश्रों की सूची दी है महत्वपूर्ण पाठ संग्रह है।

२० मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-१= । साइज-१४×६ है इस । मापा—सस्कृत । विषय-पुजा । रचना क.ल-× । लेखन काल-स० १६०२ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेप्टन न० १२७ ।

विरोष — चाक्स् के मदिर चद्रप्रम-चैत्यालय में पंढित रतीराम के शिष्य रामबल्श ने प्रतिलिपि की थी।

२०६. रत्नत्रयजयमाल-पत्र संख्या-४। साइज-१०४४ इम । मापा-प्राकृत । विषय-पूजा । रवना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० ११०।

विशेष-सस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है। ३ प्रतियां श्रीर हैं।

२१०. रत्नन्नयपूजा--पत्र सख्या-६ । साइज-११×४ दे इस । साया-१ स्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं-१ ६६ पीप सुदी २ । पूर्ण । वेण्टन न०१०१ ।

विशेष-- पं श्रीचद्र ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की भी । एक प्रति श्रीर है।

- २११. रत्नत्रयपूजा--आशाधर । पत्र सख्या-४ । साइज-१२×८ इत्व । भाषा-संस्कृत । 'वषय-पजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।
- २१२. रत्नत्रयपूजा--पत्र संख्या-३४। साइज-१२ई×७२ इब्च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । स्चना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं० २६।
- २१३. रिवन्नतपूजा—पत्र सख्या—१६। साइज=र्ड्डै×५ इच । माषा—संस्कृत । विषय-पूजा। रचन। काल-× । लेखन काक-× । पूर्ण । वेष्टन नं∘ ६३ ।
- २१४. रोहिणीव्रत पूजा केशबसेन । पत्र संख्या- ६ । साइन-११×४ र इन्च । माधा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०० ।
- २१४. लिख विधान पूजा-पत्र सल्या-२१। साहज-१०×४ है इस्र । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्य। वेण्टन न० ४१।
- २१६. लिंब्य विधान त्रतोद्यापन पत्र सख्या— । साइज १३४८ इन्च । भाषा सस्कृत । विषय पूजा । रचना काल ४ । लेखन काल ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८१ ।
- २१७. विमलनाथ पूजा-रामचंद्र । पत्र सख्या-३ । साइज-११६४४ इन्व । माषा-हिदी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेण्टन न॰ ४६ ।
- २१८. षोडशकारण पूजा--पत्र संख्या-ः। साइज-६×६६ इन्च। माषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×।पूर्ण। वेष्टन न०४८।

विशेष—दशलवण पूजा भी है वह भी संस्कृत में है।

- २१६. घोडश .कारण व्रतोद्यापन पूजा—श्राचार्य केशव सेन। पत्र सख्या-२१। साइज-१०१४४ दे इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न० ४४।
- २२०. शान्तिनाथ पूजा—सुरेश्वर कोत्ति । पत्र संख्या-४ । साइज-११४५ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

विशेष-अंत में श्रारते भी हैं।

ध्ज्ञानी जन श्रारती नित्य करो । ग्रुफ वृषचंद सुरेश्वर कीर्ति भव दुख हरो । प्रभु के पद श्रारती नित्य करो ।

२२१. श्रुतज्ञान पूजा-पत्र संख्या-१३ । साइज-११ई×५ इद्य । माषा-संस्कृत । विषय-प्जा । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन नं ०६२।

विशेष — पत्र ६ से आगे पाठों की सूची दी हुई है। हेमचद्र कृत श्रुत स्वंध के आधार से लिखा गया है।
महल तथा तिथि दी हुई है।

- २२२. सप्त ऋषि पूजा-पत्र सख्या-ः। साइज-१०३४४३ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×।पूर्ण। वेष्टन नं० २४।
- २२३ समवशरण पूजा लितकी ति । पत्र संख्या -४ । साइज-११ई×१ई इन्च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० ५७६४ श्रासोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष-वंसवा • गर में प्रतिलिपि हुई थी।

२२४. समवशरण पूजा-पन्नातात । पत्र सख्या-६७ । साइज-१२६४८ इन्च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६२१ श्रासोज सुदी ३ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३ ।

त्रिशेष---जवाहरलालजी की सहायता से रचना की गयी थी । पन्नालालजी जीवतसिंह जैपुर के कामदार थे ।

- २२४. सम्मेदशिखरपूजा- पत्र सख्या-१०। साइत-६×४ है इब्च। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेब्टन नं० ६६।
- २२६. सम्मेदशिखरपूजा--नंदराम । पत्र सख्या-१२ । साइज-१३४७ई इस । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६१२ माघ मुदी ४ । लेखन काल-स० १६१२ पोष मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ११ ।

विशेष--रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२२७. सम्मेदशिखर पूजा— जवाहरलाल । पत्र सख्या-११ । साइज-१२२४८६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेन्टन न० ६३ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

२२८. सहस्रगुणितपूजाश्रीशुभचद्र । पत्र ५६वा-४८ । साइज-१०ई४४६ इम । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-४ । जैखन काल-एं० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन न०६०।

विशेष—संवत् १६६८ वर्षे शाके १५३३ प्रवर्तमाने पौप गुढी ७ महाराजाधिराज महाराज श्री मानसिंह प्रवर्त्तमाने अवावत्ति मध्ये ।

् २२६ सहस्रनाम पूजा—धर्मभूपण्। पत्र सख्या-८७। साइज-११४५ इय। मापा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-स० १८७४। पूर्णे। वेष्टन न० ७७।

विशेष-शान्तिनाय मिटर के पास जयपुर में पं० जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी।

२३० सहस्रनाम पूजा—चैनसुख। पत्र ४ स्था-१०। साइज-१०५४८ इश्र। भाषा-हिटी। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्य । वेष्टन न००।

विशेष - पद्य मरूया २२० है।

२३१ साद्धद्वय द्वीप पूजा—विश्वभूषणा। पत्र सस्या-२०८ः साइज-१०×४ई इख। माग-स्स्कृत ।विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८५७ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन न० ७८ ।<

प्रति नं ० २---पत्र सरूया - ६ ६ । साइज - ११×५ ई । खेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन नं ० ०६ ।

विशेष—श्रदाई द्वीप के तीन नक्शे भी हैं उनमें एक कपडे पर है जिसका नाप र' १'×२' ७" फीट है। नक्शे के पीछे द्वीपों ना परिचय दिया हुश्रा है। इसके श्रतिरिक्त तीन लोक का नक्शा भी है।

२३२ सिद्धन्तेत्र पूजा-- । पत्र सरूया-४४ से ४० तक । साइज-१०५४४ इझ । माषा-हिदी विषय-पूजा । रवना काल-× । लेखन काल-× । त्रपूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

२३३ सिद्धचक पूजा (श्रष्टाह्निका) — नथमल बिलाला । पत्र संख्या-१०। साइज-१२ ५४८ इश्र । साया-हिर्दी । विषय-पृजा । रचना काल-४। सेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन न० १६।

२३४. सिद्धचक पूजा — सन्तलाल । पत्र सख्या-११० । साइज-१२५४७ ई इच । माषा-हिन्दी । विषय-पूजन । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६८६ स्रासीज सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन नं०१।

विशेष-ईश्वरलाल चांदवाड ने अजमेर वालों के चौबारे में प्रतिलिपि की थी।

सवत् १६८७ में श्रष्टाहिका वृतोद्यापन में केसरलालजी साह की पत्नी नंदलाल पीने वालों की पुत्री ने ठोलियों के मन्दिर में मेट की थी।

२३४ सिद्धपूजा-पद्मनिद्। पत्र सख्या-४। साहज-१०४४ दृ इस्त्र। साषा-सस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-४। लेखन काल- श्रासोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन न०४६। विशेष-एक प्रति श्रीर है।

२३६. सुगंधदशमीत्रतोद्यापन पूजा-पत्र संख्या-२२। साइज-८६४६६ इश्व। माषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन नं० ४६।

विशेष-कंजिकावतीर्धापन भी है वह भी संस्कृत में है।

२३७. सोलहकारणजयमाल-पत्र सख्या-१४। साइज-११ई×५ इन्च। माषा-भ्रवभ्रंश। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १=३५ सावन सुदी १। पूर्ण। वेष्टन नं० ७०।

विशेष--श्रीचंद ने जयपुर में श्री शान्तिनाय चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२३८. सौख्यकाख्यत्रतोद्यापन विधि—श्रात्त्यराम । पत्र संख्या ६ । साहज-६३ ४४३ इन्च । माषा— सस्कृत । निषय-पूजा । रचना काल- सं० १८२० मादवा बुदी ४ । लेखन काल-सं० १८२८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेण्टन न० ११३ ।

विषय-चरित्र एवं काव्य

२३६. ऋषभनाथचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र सख्या-२३१ | साहज-११४४ है इन्च । माषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखने काल-सं० १६६६ माह बुदी १० । पूर्ण । वेप्टन नं० २२० ।

विशेष---मल्लहारपुर में चादवाड गोत्र वाली वाई लाडा तिसच्या मागा ने प्रतिलिपि कराई थी। एक प्रति श्रीर है।

२४० किरातार्जुनीय—महाकिव भारिव । पत्र ,संल्यां-१६८ । साइज-११४५ इस्र । माषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८१ ।

निशेष---प्रारम्म के ३१ पत्र दूसरी प्रति के हैं। पत्र ६२ से १६८ तक दूसरी प्रति के हैं जिसमें शोकों पर हिन्दी में श्रर्थ सी दिया हुन्ना है। २४१. कुमारसभव-कालिदास । पत्र संख्या-१३ । साहज-१०१×४२ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १४८६ घापाद । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रशस्ति—संवत् १४८६ वर्षे धापादमासे वटपद्रवास्तव्य दीसावालजातीय नखद स्त व्यास पद्मनामेन कुमार समवकाव्यमलेखि । शुभंमवतु । मट्टारक प्रभु ससाखारणविदारणर्सिंह श्री सोमसुन्दर सूरिश्चिरंनदतु । प्रति सुन्दर है ।

२४२. चंदनाचरित्र—शुभचंद्र । पत्र संख्या-२० । साहज-११६४४६ हन्न । मापा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८६१ मादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेप्टन न० १४० ।

विशेष-शिवलाल साह ने प्रतिलिपि कराई भी !

२४३. चन्द्रभचरित्र—वीरनन्दि। पत्र संख्या-१४३। साइज-१३४५ इश्व। मापा-सस्कृत। विषय-काव्य। रचना काल - ×। लेखन काल-सं० १५६७ मादवा सुदी १०। पूर्ण। बेप्टन नं० ६७।

विशेष—इसमें कुल १८ सर्ग हैं मंथा मंथ सख्या २५०० श्लोक प्रमाण हैं। प्रारम्भ के १४ पृष्ठों पर संस्कृत टीका भी दी हुई है।

२४४. चन्द्रप्रभचरित्र - किव दामोद्र । पत्र संख्या-२०२ । साइज-१२६४४ इन्च । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७२३ । लेखन काल-१८४० माघ सुदी ४ । पूर्य । वेष्टन नं० २३३ ।

विशेष--जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

२४४. चारुद्त्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र संख्या-४१ । साइज-१२४८ इच । सापा-हिन्दी (पद) । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६ ।

विशेष-पद्य संख्या ११०६ है।

२४६. जम्बूस्थामीचरित्र-- ब्रह्म जिनदास । पत्रसंख्या-७२ । साइज-१२४४ इन्द । माषा-संस्कृत । निषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २४२ ।

२४७ जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम। पत्र संख्या-३२। साइज-१२ई४८ इन्द। माषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न० ८०।

प्रारम्म-प्रथम प्रथमी परमेष्टिगण, प्रथमी, सारव माय।

ग्रह निर्प्रांच नमी सदा, मन मन,मैं सुखदाय ॥१॥

धर्म दया हरदे धरूं, सन निधि मंगलकार।
जम्नू स्नामी चरित, की करूं वचनिका सार ॥२॥

श्रम वचिनका प्रारम्म । मध्यलोक के श्रसंख्यात द्वीप श्रीर समुद्रों के मध्य एक लाख योजन के व्यास वाला घाली के श्राकार सदस गोल जम्बू नाम की द्वीप है । जिसके मध्य में नामि के सदस सोमा देने वाला एक सुदर्शन नाम का पर्वत पृथ्वी से दस हजार योजन ऊ'चा है श्रीर जिसकी जड पृथ्वी में १०००० दश हजार योजन की है ।

श्रान्तम - जंबूस्वामी चिरत जो, पढे सुने मनलाय।

मनवां हित सुख भोग के, श्रमुक्तम शिवपुर जाय॥

संस्कृत से भाषा करी, धर्म बुद्धि जिनदास।

लमेचू नाथूराम पुनि, छंद बद्ध की तास॥

किसनदास सुत मूलचद, करी प्रेरणा सार।

जब्स्वामी चिरत की, करो वचिनिका सार॥

तब तिनके श्रादेश से भाषा सरल विचार।

लघु मित नाथूराम सुत दीपचद परवार॥

जगत राग धर दे व वश, चहुँगिति समे सदीव।

पाव सम्यक रल जो, काटे कर्म श्रदीव॥

गत संवत निर्वाण को महावीर जिनराय।

पक्तम श्रावण श्रुक्त को करी पूर्ण हरवाय॥

श्रतिम है इक प्रार्थना सुनो सुधी नरनार।

जी हित चाहो तो करो स्वाध्याय परचार॥

इति श्री जबूस्वामी चिरत्र माषा मय वचिनका संपूर्ण।

२४८. जीवंधरचरित्र—आचार्य शुभचद्र। पत्र सख्या-८०। साइज-११है×५ इन्च । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६२७]। लेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं० २१३।

२४६. दुर्घटकाव्य-कालिदास । पत्र संख्या-२० । साइज-११४४ इञ्च । साषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-४ । सेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२४०. धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य। पत्र सल्या-१६। साहज-१२४४ ई इस । माषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। रचना काल-४। खेखन काल-४। पूर्ण । वेष्टन नं ०१७२

> विशेष-लंबकं खक्योत्रेभूच्छुभचन्द्रो महामना । साधुः छशीनवान् शांत आवको धर्मवत्सल ॥ तस्य पुत्रो वभूवात्र कष्ह्यो दानवान् वशी ।

परोपकारिचत्तस्य न्यायेनार्जितसद्धनः ॥ धर्मानुरागिणा तेन धर्मकर्मनिनंधन । चरितं कारित मुण्य शिवापित्ति शिवार्चिनः ॥ इति धन्यकुमार चरित्र समाप्तं ।

सस्कृत में कठिन शब्दों का श्रर्थ भी दिया हुचा है। ७ पिच्छेद हैं।

२४१. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्त्त । पत्र संख्या-४० । साइज-१२×५६ व । मापा-पस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १५६४ मगिसर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६४ ।

प्रशस्ति— सवत् १६६४ वर्षे श्राषादादि ६५ वर्षे शाके १४३१ प्रथमं मागंतिर सुदि रूप श्री गिरेपुरे श्री श्रादिनाथचेत्यालये श्री मूलरांचे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे महारक श्री सकलकोित्ताः तत्पट्टे महारक श्री भुवनकीिता स्तत्पट्टे महारक श्री विजयकीित्तित् शिष्य वस मिल्लिदासपटनार्थं हुवड झातीय वृद्धः शाखायां चोकडी श्रावाद्या तद्भार्या वम्मलदे तयो द्वी पुत्री । चोकडी सावपा तद्भार्या राजलदे। एते झानावणीं कर्म चयार्थं श्री धन्यकुमार-लिखाप्यदत्त शुमं भवत् पश्वात् वस श्री मिल्दासात् शिष्य उन्ही श्राकेन पठित । प० हीरा की पोषी है। सात श्राविकार हैं।

२४२ धन्यकुमारचरित्र—न्नहा नेमिद्त्त । पत्र सख्या-२४ । साइज-१४४ इच । माषा-संस्कृत । विवय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । चपूर्या । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष-चतुर्थ अधिकार तक है इसके आगे अपूर्ण है।

२४३. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचद्। पत्र सस्या-३ = । साइज-१४४ = र इश्व । माबा-हिदी पद्म । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६५६ मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेथ्टन नं० ६५ ।

विशेष-एक प्रति खौर है।

२५४. धर्मशर्माभ्युत्य-हिरचंद्र । पत्र सख्या-१०१ । साइज-१२४४ हुन्त । भाषा-सस्त्रत । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४३२ ।

विशेष-प्रति प्राचीन है बीच के कुछ पत्र जीर्थ है। धर्मानाय तीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णित है।

२४४. नागकुमारचरित्र-पत्र सख्या-३६। साइज-१३४० इन्च। माषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। स्वना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न०७६।

२४६ नेमिद्तकाच्य-विक्रम । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०४४ ई इच् । माषा-सस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

चरित्र एवं काव्य]

२४७ नेमिदूतकाव्य सटीक—मूलकत्ता विक्रम किन्न किन्न पं० गुरा विनय। पत्र राख्या—२३ । साइज-१०र्५४४ इश्च । माषा—संस्कृत । विषय—काव्य । टीका काल—सं० १६४४ । लेखन काल—सं० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन न० २६२ ।

२४८ प्रद्युम्तकाच्य पजिका—पत्र संख्या—ः । साइज-१०४६ इब्च । माषा-प्राकृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ३४२ ।

तिशेष--१४ सर्ग तक है।

२४६. प्रद्युम्नचिर्त्र--महसेनाचार्य। पत्र सल्या-प्यः। साइज-११ई×५ई इस्र । भाषा-संस्कृत । वित्रय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७११ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्या। वेष्टन न० २६४।

विशेष —कुल'२४ परिच्छेद हैं, कठिन शन्दों के अर्थ दिये हुए हैं।

२६०. प्रयुम्नचरित्र — म्या० सोमकीर्ति । पत्र संख्या-२३६ । साइज-११×५ इन्च । साषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । । पूर्ण । वेष्टन न० २६३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । मं म सं ० ४=५० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति संवत् १६४७ की लिखी हुई श्लीर है ।

२६१ प्रद्युम्नचरित्र—कि सिंह। पत्र संख्या-१४३) साइज-११×४ र्ने इन्च। माषा-ऋषभ्र श। विषय-चरित्र। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १५६ = चैत सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन नं• १८१।

विशेष — तत्तकगृद (टोड्रारायसिंह) में सोलंकी वंशोत्पन्न सूर्यसेन के राज्य दावणह्या स्थाने खडेलवालजातीय सोगाणी गोत्रोत्पन सघी सोटा के वंशज हू गा पत्ता सांगा ख्रादि ने प्रतिलिपि कराकर सुनि पद्मकीर्ति को मेंट किया।

२६२. पार्श्वपुराण-भूधरदास । पत्र सख्या- = २ । साइज-११×६ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय- काव्य । रचना काल-स॰ १७=६ । लेखन काल-स॰ १६१६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन म॰ १७ ।

विशेष—- २ प्रतियां श्रीर हैं ।

२६३ पारवैनाथचरित्र—भ० सकलकोर्ति । पत्र संख्या-१०३ । साइज-११४५ इन्च । माषा-संस्कृत । विषय-चित्र । रचना फाल-४ । लेखन काल-स० १६०५ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३ ।

विशेष—श्री वादशाह सलीमशाह (जहांगीर के) शासन काल में प्रयाग में श्री श्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिंप की यी । त्रहा श्रासे ने इसे सुमतिदास के पटनार्थ श्रांतिलिंप की यी । श्राचार्य श्री हेमकीर्ति के शिष्य सा० मेघराज की पुस्तक है ऐसा लिखा है ।

इस अ य की मरबार में एक प्रति और है।

२६४. प्रीतिकरचरित्र— ब्रह्मनेमिद्त्त । पत्र सख्या-२० । साइज-१२४६ इख । मापा-सस्तृत । निषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स • १८०५ द्वि० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७६ । २१४] [चरित्र एव काव्य

विशेष — वसुपुर नगर में श्री चंद्रश्रमचैत्यालय में प० परसराम जी के शिष्य श्रानन्दराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२६४. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननंदि । पत्र सख्या-२० । साहज-११×१ इश्र । माषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १६५२ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेण्टन न० २६७ ।

विशेष- प्रशस्ति अपूर्ण है प्रथ ६ == श्लोक संख्या प्रमाण है।

२६६. भद्रबाहुचरित्र भाषा—चपाराम । पत्र सख्या–३८ । साइज-१०४४७१ इख । माषा— हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १८०० सावन सुदी १४ । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ३४ ।

विशेष — प्रथ १३२५ श्लोक प्रमाण है।

प्रारम्म--जैनतो नरती सदा, चीवीस् जिनराज । तिन नदत नंदक लहै, निश्चय यल सुखदाय ॥

चौपई--रिषव श्रजित संमव श्रभिनंदन ।
समिति पद्म सुपारिस चद ॥
पुष्पदत शीतल जिन राय ।
जिन श्रीहांस नमू सिर नाय ॥२॥

पत्र सरूया-२३ पर-श्रधानतर जे जीव तिस ही भव विषे स्त्री कू मोच गमन कहें है, ते जीव धाप्रह रूप प्रह करि प्रस्थ है श्रधवा तिनकू वाय लगी है ॥ दाि कदािच स्त्री परयाय धारि श्रर दुद्ध र धोर वीर तप करें। तथािप स्त्रीकू तद्भव मोच नाहीं ॥ दशा

श्रन्त-इह चरित्र ग्रर गम्य लिख रतनि मुनिराय ।
रच्यो पंसत श्लोक मय मूल महा मुख दाय ॥१॥
लेय तिस श्रनुसार कछ रच्यो वचनका रूप ।
जात नाम कुल तास श्रव कहं मुनी ग्रन मूप ॥२॥
देश इंडाइड मध्यपुर माधव सूवस्यान ।
जगतसंघ ता नगरपित पातल राज महान ॥३॥
तहां वसे इक वेश्य श्रुम हौरालाल मु जान ।
जाति श्रावग न्याति में खंडेलवाल श्रुम जानि ॥४॥
गोत मांवसा फुनि धरे परम ग्रनी ग्रन धाम ।
तिनके श्रित मित दीन सत उपनी चपाराम ॥४॥

ताकै फ़िन झता खगम लसे सुजन सुख दाय। ताने कळू श्रवर समिक सीखी पाय सहाय ॥६॥ तिस पुर सध्य जिन भवन इक राजत अधिक उदार। मध्य लसे जिन इषम सर नर वंदित पद सार ॥ ॥ तहा जात दिन रैन मुिक सयी कडू अन्यास। तव लखि के सचरित्र इह रची वचनका तास ॥ = ॥ होय दोस यामें जहां श्रमिलत श्रवर होय। सोधो ताक भुषड नर निज लक्षण श्रव लोग ॥ ६ ॥ संत सदा गुन दुर्जन महे श्रीगण लेय। सुख ते तिष्टी मूमि पार मो पर ऋषा करेय ॥ १० ॥ चुद्धहीन ते मूलवत अर्थ भयो नही होय। ता परि सजन पुरुष मो चमा करो ग्रन जोय ॥ ११ ॥ श्रर सोधी वर बोर ते लिख श्रक्तर विनास । यह मेरी श्ररजी शुमग घरी चिच ग्रण रासि ॥ १२॥ श्रिधिक कहे किम होत है जे है संत पुमान 1 ते थोरे ही कहन तें समिक लेत उर स्थान ॥ १३॥ नर सुर पति बदत चरण करन हरन गुन पूर । पर दरसत भजन करें धर्म रूप विधि चूर !! १४ !! जो जिनेश इन ग्रण सहित सो नंदू सिर नाय । सोह इहा मंगल करन हरन विष्न श्रधिकाय ॥ १५ ॥ थावण सुदि पुनिम सु रविवार अर्थ रस जानि । मद सिंस संवत्सर विभी सयी प्रथ सुख खानि ॥ १६॥ चर भिर चवगति जीवत निति होहु सुखी जगयान । टरो विघन दुख रोष सब वधी धर्म मगवान ॥ १८ ॥

> — छद श्रवुष्टया— मद्रबाहुमुनेरेतत् चरित्र प्रति दसता । भाषा मय कृतं चपारामेण भदवुद्धिना ॥ १६॥

> > —सोरठा—

तस्य दोष परित्यन्य मह् तु ग्रुन सन्जना। यथा घृष्टोपि सौरम्यं ददाति चदनोल्वणं॥ २१॥

तेरह रो पचीस श्लोक रूप संख्या गिनी । मद्रवाहु मुनि ईस चरित तनी माथा मई ॥ २२ ॥

इति श्री श्राचार्य रहन दि विरचित सद्रबाहु चरित्र सस्कृत स्रग्न ताकी बालबोध वचनका विदे स्वेताम्बर मत उत्पति वा पर्यसंध की उत्पति तथा लुकामत की उत्पति नाम वर्नर्नो नाम चतुर्य द्यविकार पूर्ण सया ॥ इति ॥

२६७ भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह्। पत्र सल्या–३४। साइज-११×४ इब्ब। माषा-हि दी गद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-स०१७⊏३। लेख्न काल-×। पूर्ग। वेष्टन न०७८।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

२६८ भविष्यद्त्त चरित्र—श्रीधर । पत्र साल्या-६६ । साइज-१२४४ इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १४८६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० २३४ ।

विशेष—खंडेलवाल जातीय साह गोत्रीत्पन्न साह लाला के वश्र नामा खीमा झीतर आदि ने प्रतिलिपि कराई भी 1

२६६. भविष्यद्त्तचिरित्र—न्न० रायमल । पत्र सख्या—३६ । साइज-१२४८ इञ्च । माषा—हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६१६ । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन नं० ११५ ।

२७० भविष्यदत्त चरित्र--- घनपाल । पत्र सस्या-११२ । साइज-११×५ द्व । भाषा-श्रपश्र श । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६६२ माघ सुदी १२। पूर्ण । वेष्टन न० १६४ ।

विशेष—सं० १६६२ वर्षे माघ सुदी ११ ग्रुक्वासरे रोहिणीन वृत्रे श्री मूल्रांचे लिखित खेमकरण वायस्य हाजीपुरनगरे।

एक प्रति श्रीर है लेकिन वह श्रपूर्ण है।

२७१. भोजप्रबंध-पद्धित श्राल्जारी । पृत्र सख्या-१६ । साइज-१०४४ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २६८ ।

विशेष-श्लोक संख्या ११०० प्रमास है।

२७२ महीपालचरित्र—नथमल । पत्र सस्या-७०। साइज-१२ई४६ इत्र। माबा-हिन्दी गर्य।।

विशेष--प्रारम्म के २ तथा श्रन्तिम पत्र नहीं है ।

श्री नशमल दोसी दुलीचद के पौत्र तथा शिवचंदजी के पुत्र थे । इनने प० सदामुखजी के पास रहशर श्रध्ययन व रचनाएँ की भी ।

*

२७३. ्मेघदूत—कालिदास । पत्र संख्या-१७। साइज-१०४० इन्च । भाषा-मस्पृत । विषय-फाव्य । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन गं० ४१३ ।

विशेष—शित सस्कृत टीका सहित है। टीकाकार सरस्वतीतीर्थ हैं। काशी से दीका लिखी गई थी। पत्र १६ सक मूल सहित (श्लोक ५४) टीका है शेष पत्रों में मूल श्लोकों के लिए स्थान खाली है।

२०४. यशोधरचरित्र - वादिराजसूरि । पत्र संख्या-१७ । साइज-१२×६ इख । साषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । त्वना काल-४ । लेखन काल-सं० १७०० ज्येष्ठ वृदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० २७७ ।

२७४. **यशोधरचरित्र--सकलकीर्त्ति । पत्र सख्या-४१ । साइज-१०**४४ हे इस । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । जेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २७१ ।

विशेष' - श्राठ सर्ग हैं । प्रति प्राचीन है । पत्र पानी में भीगे हुए हैं । एक प्रति खोर है ।

२७६. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति । पत्र सख्या-७६ । साइज-१०३४१ इस्र । माषा-सस्मत । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६६६ माच सुदी ४ । लेखन काल-स० १६६१ जेव्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० २७६ ।

त्रिशेष— ६ सर्ग हैं । राजमहल नगर के श्री पार्श्वनाय चेत्यालय में महाराजाधिराज श्री मानसिंह के राज्य काल में उनके प्रधान श्रमात्य श्री नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७ यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सख्या-६३ । साहज-१०१८४३ इद्घ । भाषा-सस्तत । विषय-चरित्र । रचना काल -× । लेखन काल-स० १६१४ चेत्र सुदी १ । पूर्ण । वेप्टन न० २७४ ।

प्रशस्ति—सवत् १६१४ वर्षे चेत्र सुढि ५ शुक्रवारे तत्तकमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीकल्याणराज्यप्रवर्शमाने श्रीमृत्तसंघे नधाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगत्त्छे श्रीकुन्दकु दाचार्यान्वये महार्त्त श्री पद्मनादिदेवा तत्पट्टे म० श्रीश्रमचढ़देवा तत् शिष्यमङ्कताचार्यश्रीधर्मचद्रदेवा तत् शिष्यमङ्कताचार्यश्री लिलतक्षीतिदेवान्त्राम्नाये खडेलवालान्वये श्रजमेरा गात्रे सा दामा तद्भार्या चादो तत्पुत्रो द्वो । प्र० सायो जिनपूजापुरदर चतुर्दानवितरणक्ष्यवृत्त शात्रगयेव सा बोहिष, द्वि० सा वाना । सा० वोहिष तद्भार्या वालहदे । तत्पुत्रो द्वो । प्र० सा. सरताण द्वि० सा. सापु । सा, सरताण भार्या द्वे ।

२०८ यशोधरचरित्र-पदानाभ कायस्थ । पत्र सख्या-६ । साइज-१९६४४ हे इञ्च । सादा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन न० २७२ ।

निशेष — ६ सर्ग तक है, प्रति प्राचीन है।

२७६ यशोधरचरित्र —सोमकीर्ति । पत्र मंस्या-५१ । साइज्ञ-१०१४० ६च । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-म० १४३६ पोप बुदी ४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । विष्यन न० २७० ।

विशेष — आठ सर्ग हैं। श्री शीतलनाथ चैत्यालय गोटिन्यामेध पाट में प्रत्य रचना की गई था। प्रथ श्लोक सर्गा-१०१= प्रमाण है। २० से ४१ तक पत्र दूसरी प्रति के हैं। प्रति प्राचीन है। एक प्रति श्रीर है।

२८. यशोधरचरित्र — तिखमीद्रांस । पत्र संख्या-३६ । साइज-१३४७ दे इख । माषा-हिन्। षच । निषय-चरित्र । रचना वाल-स० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । लेखन काल-स० १६४२ । पूर्ण । वैष्टन न० १२२ ।

२८१. यशोधरचरित्र भाषा—खुशालचन्द् । पत्र संख्या-३३। साइन-१३४८ इछ । भाषा-हिन्दो पथ । त्रिषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७०१ कार्तिक सुदी ८ । लेखन काल-सं० १६०० त्रवाद बुटी ३ । पूर्व । त्रेष्टन न• ६४ ।

विशेष-- पं कालीचरन ने प्रतिलिपि की थी। एक प्रति और है।

२८२ रघुवश-कालिदास । पन सँख्या-११७ । साइज-१०४८ इम्च । मोपा-सरकृत । विषय-

त्रिशेष — प्रति प्राचीन है। सम्कत टीका सहित है। पत्रों के मध्य में मूल सूत्र है तथा उपर नीचे टीका टी है। प्रथ टीका रहीक संख्या—४२४० है। मूल श्लोक संख्या—२००० है।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है।

२८३. रामकृष्ण काञ्य-प० सूर्य किन । पत्र सख्या-२२ । साइज-११४४ है इस्र । भाषा-संस्त्रत । भिष्य-काञ्य । रचना काल-४ । लेखन नाल-सं० १०० चैत्र सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन न० ४०२ ।

त्रिशेष — अन्वयदीपिका नाम की टीका है । पिंड ग्रानन्टराम ने प्रतिलिपि की भी ।

प्रारम्म-धीमञ्जानकीनाथाय नमः।

श्रीमन्मगलमृतिमातिशमन नत्वा विदित्वा तत । शन्दनहामनीरम सुगुणक्लाधिर जात्मनः॥

श्रितम-सुलव्यवठास्तु विलीमवर्ण काव्येऽत्र मव्येरतिमादधातु । चातुर्येमायाति यतः कवित्ये, नाशां तमा पाक जातमेति ॥

· इति श्री सूर्यकित कृता रामक णत्राव्यस्यान्त्रयदीपिका नाम्नी टीका सप्णी।

२८४ वरांगचरित्र—मट्टारक वद्धभान देव। पत्र सल्या-६७। साहज ११ई×१ इछ। मार्ग-सरकृत। त्रिषय-चरित्र। रचना काल-४। लेखन वाल-१८६३ श्राषांट बुदी १। पूर्ण। वेप्टन न०३७०।

तिशेष-जगपुर के श न्तिनाथ चैत्यालय में विद्युध अमृतचाह ने प्रतिलिपि की भी।

३८४ वें।सेवंद्त्ता- महाकवि सुर्वेधु । पत्र सर्ग्या-१६ । साईज- १०ई४४६ इन्त्र । भाषा-रास्थ्रतः । तित्रत-कान्य । रचना कें!लं-४ । लेखन काल-४ । पूर्णः । बेटन स ० ४७६ २८६. विद्रायमुखमंडन - धर्मदीस । पत्र संख्या-३१। साइज-१९४४ हन्च । मापा-सस्कृत । विपा-काव्य । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १८६१ । पूर्ण । विष्टन नं० ३४० ।

विशेष—यित अमरदत्त ने जयपुर में सं. १८६१ में पंषित श्रीचद्र के शिष्य चि० मनोरयराम के पठनार्थ - प्रतिलिपि कराई थी। प्रति संस्कृत टीका सहित हैं।

२८७ शिशुपातवध-महाकवि माघ । पत्र संख्या-११ । साइज-११×५ देख । माषा-सस्कृत । विष्य-काव्य । रचना काल-× । तीखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं ०४२६ ।

तिशोष - केवल १४ वें समें की टीका है, टीकाकार मल्लिनाण सूरि है।

२८८. श्रीपाल चरित्र—ज्ञह्मनेमिद्ति । पत्र संख्या-६६ । साइज-११४४ डब्च । माया-सस्कृत । विषय-चरित्र । रचना फाल-स० १४८४ श्रापाद सुदी १४ । लेखन काल-सं० १८४४ श्रासीज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन ,न० २२६ ।

विशेष - पूर्णनासा नगर के श्रादिनाथ नैत्यालय में अन्य रचना की गई थी।

२६. श्रीपात्तचरित्र-परिमत्तं। पत्र सख्या-१३६। साइज-१२×४६ इत्र । भाषा-हिन्दी। विषय-परित्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० २७।

विशेष-४ प्रतियां श्रीर हैं।

२४० श्रेशिकचरित्र-शुभचंद्र । पत्र सख्या-१९३ । साइज-१९२४४ ६ इन्च । माया-सस्तृत । निषय-परित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं ० १७०५ शावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० २४१ ।

विरोध - फोडी प्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

२६१ सप्तव्यसन चारंत्र भाषा । पत्र संख्यां-१३ । साइज-१२४८ इझ । भाषा-हिन्दी गध । त्रिवय-घरित । रचना काल-स० १६२१ । लेखन काल-अ । पूर्ण । बेष्टन न० ८७ ।

विशेष-- रचना के मूलकर्चा सोमकं तिं है।

२६२ सुकुमालचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र सर्व्या-४३ । साइज-१०२४४ देश । साबा-सस्तत । विषय-चरित्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । त्रेष्टन नं० ४१९ ।

षिरोष- ६ सर्ग हैं । एलीक संख्या १२०१ है वन पानी में भीने हुए हैं ।

२६३. सुकुमालचरित्र भाषा—नाधूलाल दोसी । पत्र संख्या-६४ । साइजे-१२४= दें इंच । साथा-दिन्दी गध । विषय-चरित्र । रचना कास-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १४० ।

निषेत्र - प्रारम्भ में चित्र पय में दिया हुत्रा है किर उसकी वचनिका लिखी गई है।

प्रारम्म (पद्य)—श्रीमत बीर जिनेश पद, कमल नमू शिरनःय । जिनवाणी उर मैं धरू जजू सुग्रुक के पाय ॥ १ ॥ पच परम ग्रुक जगत में परम इष्ट पहिचान । भन वच तन करि ध्यावते होत कर्म की हानि ॥ २ ॥

श्र तिम — सर्वारथ सिध लों गये, रोष जती तज प्रान।
जानी मिन सत्तेष तें ईह निध चरित बखान॥ १२४॥
श्रव सुकुमाल चरित्र का सक्ल ज्ञान के हेत।
देश वचनिका मय लिखू पढी सुनी धरि चित॥ १२६॥
विश प्रमाद कहू भूलि कें श्ररथ लिख न जो होय।
पडित जन सब सोधियो, मुल प्रथ श्रवलीय॥ १२७॥

वचनिका पद्य न० ८८ की ---

श्रर मू ठ बबनका बोलना ते बुद्धि को नाश हो है। श्रपजत फेंले है। श्रर सर्व जीवन के धिवस्वास की पात्र हो है। बहुरि राजादिकनि ते हाथ पांव कान नांक जीम श्राटि का छेद रुप दह पावे है।

र्था तस-स्थादि श्रत मगल करी थ्री वृषमादि जिनेश।
जैन धर्म जिन भारती, हर ससार क्लेश।
मवैया – दु दाहड देश मध्य जैपूर नगर सो है,

व्यार वर्ण राह चाले अपने सुधर्म नी।

रामसिंह मूपत के राज माहि कमी नाहि,

प्रमी कछ दृष्टि परे जानी निज कर्म की।।

वेश्यकुल जेनी को पूरव कृत्य पुष्य मकी,

पायो यह खोलो अब मुदी दृष्टि धर्म की।
जैन वैन कान सुनी अत्मस्वरुप मूनो,

चार अनुयोग मनी यही सीख मर्म की।। २॥

चीवाई—दोसी गोत दुलीचद नाम । ताकी सत शिवचद धिमराम ॥

नायुलाल तास सत मयी । जैन धर्म की सरगो लयो ॥ ३ ॥

श्रीदीयाण संगही ध्रमरेश । पाय सहाय पद्यो श्रुत लेश ॥

कासलीवाल सदाउख पास । फिर कीनी श्रुत की ध्रम्यास ॥ ८ ॥

श्री सृत्रमाल चरित्र रसाल । देख कही हरचद गगवाल ॥

होत वचनिका मय जो ऐह । सब जन वाचे हित गेह ॥ ४ ॥

विन व्याकरण पढे नही ज्ञान । मूलप्रंथ को होइ निदान ॥
अमि प्रार्थना तने वसाय । मूल प्रथ को पाय सहाय ॥ ६ ॥
मावार्थ सो लिखयो एह । देश वचिनका मय धरि नेह ॥
वाची पढी पढावी हनी। श्रात्म हित कू नीकू हुनी ॥ ७ ॥
जो प्रमाद वस ते कुछ इहा । मोलपने तें मैने कहा ॥
सो सब मूल प्रथ श्रमुसार । हुध करयो बुध जन हुविचार ॥ = ॥
उनवीससतठारहसार । सावण हुदी दशमी ग्रक्वार ॥
पूरण मई वचिनका एह । वाची पढी हुनी धरि नेह ॥ ६ ॥

दोहा---मगलमय मगल करन नीतराग चिद्रूप। मन वच कर ध्यावते, हो है त्रिभुवन भूप॥ १०॥

इति श्री सकलकार्ति द्याचार्य विरचित सुकुमाल चरित्र सस्कृत प्रंथ ताकी देशभाषा वचनिका समाप्ता ॥

- ६४. सीताचरित्र — कवि बालक। पत्र सख्या-११३। साइज-१३×६ई इन्च। माषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। रचना काल-सं० १७०३ मगसिर सुदी ४। लेखन काल-स० १७६ = सावन सुदी र३। पूर्ण। वेष्टन न० ६२

विशेष—प॰ सुखलाल ने केथूण नगर में प्रतिलिपि की थी। प॰ सुखराम का गीत ठीलिया, वासी शेखा-वारी, वास हिंगू णया था।

२६४. हनुमतचौपई— ब्रह्मरायमल्ता । पत्र सख्या-४० । साइज-१०×६ हु इख । भाषा-हि दी पछ । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६१६ । लेखन काल-स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८० ।

विशेष—छोटेलालजी ठोल्या ने मिद्द दाणाविल (दीवानजी) के पिडत सवाई रामजी में २) देश्र पुस्तक सवत १६०२ में ली थी।

२६६. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म अजित। पत्र सरूपा-८६। साइज-१०३४४ डन्च। भाषा-सस्पृत। विषय-चरित्र। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न०२३६।

विशेष-- प्र थ २००० श्लोक प्रमाण है प्रति प्राचीन है।

२६७. होत्तिकाचरित्र—िन्दास । पत्र मख्या–१०६ । साइज-११३४४ इन्च । भाषा-मस्कृत । दिषय-चरित्र । रचना काल- \times । लेखन काल- \times । पूर्ण । वेप्टन न० २३= ।

विशेष-म प श्लोक संख्या ६४३ प्रमाण है।



विषय-पुराग साहित्य

२६८ श्रादिपुरागा— जिनसेनाचार्य। पत्र सख्या-३४४। साइज-१२र्द्धे इझ। मापा—सस्कृत। विषय-पुरागा। रचना काल-×। लेखन काल-सं० १७३६ व्येष्ठ सुदी ४। पूर्गा। वेष्टन न० १४८।

विशेष—पालुम्ब नगर निवासी विहारीदास के पुत्र निहालचद जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति श्रीर है लेकिन वह श्रपूर्ण है ।

२६६ स्त्रादिपुरागा — पुष्पदत । पत्र सख्या-४ से २०६ । साइज-१२×५ है इख । माषा-हिदी । माषा-श्रपभ्र श । रचना काल-४ । लेखन काल-सं०१५४३ द्यासीज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६४ ।

विषशे — एक प्रति श्रीर है। लेकिन वह श्रपूर्ण है। लेखक प्रतिस्त निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—श्रथ श्रीविकमादित्यराज्यात् सवत् १५४३ वर्षे श्रासोज सुदी ६ ग्रुक्वारे श्री हिसारपेरोजाकोटे स्वतान श्रीवहलोलसाहराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसचे नद्याग्नाये सरस्वतीगच्छे मलात्कारगणे मट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पृष्टे मट्टारकश्री ग्रुमचद्रदेवा तत् शिष्य श्री मुलसचे नद्याग्नाये सरस्वतीगच्छे मलात्कारगणे मट्टारकश्रीपद्मानिकपरमशावकपरमशावकसम्पतिकल् नामा तत्पली शोलशालिनी साम्बी राणी नाम्नी तयो चत्वार पुत्रा श्रीकरतीर्थयात्रादिमहामहोत्सवकारायिका श्रहेतादिपचपरमेष्टिज्वरणारविंदसेवनैकचचरीका संवपति हवा स० धीरा स० कामा, स० सरपित नामधेया तन्मच्ये सम्पति कामा मार्या विहितानेकन्नतिन्यमतपोविधानादिधर्मकार्या साम्बी कमलश्री तत्पुत्री देवपूजादिपट्कमपिद्मिनीखडमार्रीएडो हरितनागपुरतीर्थयात्राप्रमावनाकारणीपपण पुन्यवलप्रचडी स० मीवा स वच्छको सम्पति मीमाख्यजाया देवग्रकशास्त्रमिकिख्यानप्रलब्ध्छाया साम्बी मीवश्री इति प्रसिद्धि तद्ग्नदने प्रर्थनामा ग्रुक्दास तत् क्लत्र शिलाधनेकग्रुणपात्रे ग्रुणश्री नामिक तत्सतौ चिरजीत्र जैरणमल सम्पति वह् गेहनी विनयादिग्रुणांश्रुतद्वाहिनी वडलिसिरि इति स्थि। तत् तृत्रजो जिनचरणकमल सेवनैकचचरीका स० रावणदासाख्य त्यजननी श्रुलविनयादिग्रुणश्रीयच्च सरस्वती सिक्षण। प्रतेषामध्ये साम्बीया कमलश्री तया निज पुत्र स० भीवा बच्छूक्यो न्यायोपार्जित विरोन इदश्री श्रादिपुर,णपुरत्वक लिखापित ॥ लिखित महेश्वर शोमा सत् कथाकेन इद पुरत्वक।

३०० त्रादिपुराण भाषा-प० दौलतराम । पत्र सस्या-६४८ । साइज-१-ई×६ दे इन्त । माषा-हिन्दी । त्रियय-पुराण । रचना काल-× । लेखन वाल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

प्रन्य २३७०० श्लोक प्रमाण हैं। एक प्रति श्रीर है।

३०१. उत्तरपुराग - गुगाभद्राचार्य । पत्र सरूगा-२=१ । साहज-१२६्रै×६८्रे इन्च । माधा-संस्कृत । विषय-पुराग । रचना काल-× । लेखन काल-सं १८६२ चेत्र सुदी १३ । अपूर्ण । तेन्टन न १४६ ।

विशेष—प्रशस्ति श्रपूर्ण है। श्रजमेर पट्ट के म॰ देनेन्द्रकीर्ति के पट्ट में श्राचार्य रामकीर्ति के समय में लण्टर (ग्वालियर) में श्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिप की गयी थी। इसमें ६६ से ६८ तक पत्र नहीं हैं।

एक प्रति श्रोर है। यह प्रति प्राचीन है।

३०२. नेमिजिनपुराग-- ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या-१८३ । साइज-११४५ इब्च । माषा-मंस्कृत । विषय-पुरागा । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६१० श्राषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन नं० २३० ।

विशेष—तत्तकगढ में राजा रामचद्र के शासन काल में श्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गर्ड थी। > प्रतिया श्रीर हैं।

३०३. पद्मपुरागा - रिवर्षेगा चार्य । पत्र सरूया - १ से १५० । साइज - १३४६ । भाषा - संस्कृत । वषय - पुरागा । रचन। काल - × । लेखन काल - × । अपूर्ण । वेष्टन नं० १६१ ।

३०४. पद्मपुराण-प० दोत्ततराम । पत्र संख्या-६२१ । साइज-१२×६२ इस । माषा-हि दी गरा विषय-पुराण । रचना काल-स० १८२३ माघ सुदी ६ । लेखन काल-स० १६०० श्राषाह सुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन न० ४८

विशेष-द्याचद चादवाड ने लिपि की वी।

३०४. पाण्डवपुराण-शुभचद्र । पत्र सख्या-२०२ । साइज१२र्-रें ६३ । माषा-स्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-स० १६०६ भादवा बुदी २ । लेखन काल-स० १७६२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वणन न०४१ ।

विशेष-श्वेताम्बर यति गोरखदास ने बसवा में प्रतिलिपि की भी ।

२०६ वलभद्रपुराण-रइधू । पत्र सल्या-१४४ । साइज-१२४४ हुझ । म या-प्रपन्न ग । विषय-पुराण । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७३२ फाग्रुन बुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन न० १६६ ।

विशेष —श्रीरगजैब के शासनकाल में वैराठ नगर में श्रमवाल वशोत्पन्न मुगिल गोत्रीय सधी सांगु के वर्णज सधी श्री कुशलसिंह ने पेमराज से प्रतिलिपि कराई थी।

३०७ रामपुराख पद्मपुराख)--भ० सोमसेन । पत्र सख्या-२०४ । साइज-११६४५ इन्न । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराख । रचना काल-स० १६५६ । लेखन काल-स० १००० माह सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० २५६

विशेष-- श्वेताम्बर जयदास ने प्रतिलिपि की थी। कुल ३३ श्रधिकार है। प्रथाप्रंथ सरूया- ५२० श्लोर प्रमाण है।

३०८. वर्द्धसानपुराण-सकलकीर्ति। पत्र सख्या-१६४। साइज-१२१४६ इव । भाषा-१स्ट्रत । विषय-पुराण । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १=६८ । पूर्ण । वेष्टन न० २४७ ।

विशेष — इसमे कुल १६ व्यधिकार हैं। महात्मा सालगराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६ शान्तिनाथपुराण-सकलकीर्ति । पत्र सख्या-४६ से १८४ । साइज-११४ इञ्च । माषा-सस्कृत ।विषय-पुराण । रचना काल-४ । लेखन काल-५० १६१८ माह सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २१८ ।

विशेष-- कुल १६ श्रधिकार हैं। एलोक सख्या ४३८० है। एक प्रति श्रोर है।

३१० हरिवशपुराग्य--- यश कीर्त्ति । पत्र सख्या-१५१ । साइज-११२४ ४ हु इच । माषा-श्रप अश । ् विषय-पुराग्य । रचना नाल-× । लेखन काल-स० १६१५ सावनसुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

विशेष — ४००० प्रभाणरुलो ६ प्रय है । वादशाह श्रकघर के शासन काल में श्रप्रवाल वशोत्पन्न मित्तल गोत्रीय रेवाडी निवासी साह श्रसराज के वशज सा. मीमसेन ने प्रतिलिपि क्राई थी । लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत हैं ।

३११ हरिवशपुराग्ण-- त्र० जिनदास । पत्र सख्या-३६६ । साइज-१०३४५ इस्र । मापा-सस्कृत । विषय-पुराग्ण । रचना काल-х । लेखन काल-स० १७१० श्रगहन बुदौ म । पूर्ण । वेष्टन न० १६ म ।

लेखक प्रशास्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

३१२ हरिवशपुराण-प० दौततराम । पत्र सस्या-६ =४ । साइज-१३४ = इन्न । मापा-हि दी । विषय-पुराण । रचना काल-स० १ = २६ चैत्र सुदी १ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १४५ ।

विशेष- बलदेव कृत जयपुर बदना भी है।

विषय-कथा एवं रासा साहित्य

३१३. श्रष्टाहिकाकथा---पत्र सख्या-३४ । साइज-१०×४ई इख । भाषा-हिन्दी गर्ध । विषय-कश्रा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६१० मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२ ।

विशेष—गुजराती हिन्दी मिश्रत है। प्रावृत गाथाएँ है उस पर टीका है। प्रभालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि नी था।
प्रारम्म—शाति देव प्रणाम करि निश्चय मन में ध्याय।
कथा श्रठाईनी लिखी, मापा सगम बनाय॥

कथा एवं रासा साहित्य]

यहा समस्त खोट कर्म री पालने वाली, निमल धर्म री उपजावने वाली खोर कर्म तियारी नासरी करिने वाली केर, यह लोग रे विषे परलोक रे विषे परलोक रे विषे कियों छैं। घर्यों सुख जिन्हें ऐसा पर्यू बया पर्व खायों थ की समस्त देवता भवनपति इन्द्र भेल्या होय ते नंदीश्वर नामा खाठमा द्वीप रे विषे धर्म री महिमा वरनावे जावे।।

प्रतिम - मित मिदिर फिनी सरस कथा श्रठाई देख । पद में श्रमुध केई हुवो किन जन लीजो देख ॥

३१४. श्राटाहिका कथा---पत्र सल्या-- २३। साइज-१०४४ है इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-वधा। रचना काल-४। लेखन कल-सं० १८०२ श्राषाट सुदी ११। पूर्ण । वेष्टन नं० ३८१।

विशेष — पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी । श्रन्त में निम्न दोहा भी है. —
रतन कोह मुख सकडो श्रलवेली पणीयार ।
दपत पाणि भरें तीसे पुरूष री नार ॥ १ ॥

३१४ त्रानंतत्रतकथा -- पत्र सख्या-६ । साइज-११४४ हज्ञ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। रचना क.ल-४ । लेखन काल-स० १६०१ मादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४२४ ।

३१६. अष्टाह्निका कथा— रत्ननिद् । पत्र सख्या—४ । साइज -११९×8 इत्र । भाषा—संस्कृत । त्रिषय—कथा । रचना काल—х । लेखन काल—х । पूर्ण । वेप्टन नं० ७५ ।

विरोष — संस्कृत में कठिन शन्दों के श्रर्थ भी दिया हुआ है । प्रति प्राचीन है । श्लोक मरूया - = ह है ।

३१७. आराधनाकथाकोष—पत्र सस्या—८२ । साइज-११×१ इस । मापा-सस्त । विषय-विषा । रवना काल-× । लेखन काल-स० १४४४ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२४ ।

विशेष—हिसार पैरोजाबादपत्तने ध्रुत्त्राण मयलोलिसाहि राज्ये ग्रुणभद्र देवा—तेवा श्राम्नाये सानु चौढा एत्त कमाकोषप्र म लिखापितं । ब्रह्म घांटम योगदत्त ।

श्रति प्राचीन एत जीर्थ है। पत्र ३४ से ८२ तक फिर लिखाये गये हैं। श्रन्तिम पत्र जीर्थ तथा फटा हुत्रा है।

३१८. कमलचन्द्रायणकथा—पत्र संख्या-२ । साइन-१०४४ है इन्च । भाषा-मंस्कृत । तिषय-क्या । स्वना काल-४ । लेखन फाल-४ । पूर्ग । वेप्टन न० ४२५ ।

विशेष-१४४ धीर १४४ वां पत्र धन्य अन्य के हैं।

३१६. कालिकाचार्यकथानक -- भावदेवाचार्य । पत्र सस्या-= । साइज-१०१४८ ई इस । भाषा-भाषत । विषय-क्या । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३=४ ।

विशेष-नाथा सम्बा १०० है। पत्रों पर सुनहरी पिक है।

३२० श्राराधनाकथाकोश --पन सरुगा-१६। साउज-१०%×= ६७। सापा-हिन्दी पय। विषय-वया। रचनाकाल-×।-लेखन काल-×।-पूर्ण। वेष्टन न० ==।

निम्न कमाश्रों का समह है'--

मम्यक्त्वोद्योत कथा, श्रक्तक स्वामी की कथा, समतमहाचार्य की कथा, मनतकुमार चक्रवर्ता का कथा, मज्यत मनि की कथा, मधुपिंगल की कथा, नागदत्त मुनि की कथा, नवादत्त चक्रवर्ती की कथा, अजन चीर की कथा, अनतमित की कथा, उद्यापन राजा की कथा रेवती रानी की कथा, जिनेन्द्र भक्त सेठ की कथा, वारिपेण की कथा, विक्नुकुमार कथा, वत्रकुमार कथा, श्रीतिका कथा, तथा जन्तुस्वामी कथा। ये कुल १८ कथाएँ हैं।

३२१ नन्दीश्वरिवधान कथा--पत्र गर्गा-/। साइज-१०३४४ हे इस । मापा-पम्प्रत । विषय-ज्या । रवना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

विशेष-- प्रति प्राचीन है।

३२२. नन्दीश्वरत्रत कथा—शुभचद्र । पत गरया-७ । मारज-११×१ इत्र । माया-सम्हत् । विषय-कण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न०४२ ।

विशेष-एक शति श्रीर है।

३२३. नागकुमारपचमी कथा-मिल्लिपेस सूरि। पत्र सन्या-२१। माइज-१०×४१ इम । माया- , स्रम्त । विषय-क्या । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न०२=१।

विशेष-४ सर्ग हैं। मध रलोक संख्या ४६५ ममाण है।

३२४. निशिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र सख्या-१० । साइज-१२×= इझ । मापा-हिदी प्रथ । विषय-न्या। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० ११३।

प्रति प्राचीन है।

३२४ पुरवाश्रवकथाकोप—टौकतराम । पत्र करया-४१ । साइज-१३४६ इ॰च । मापा-हिदी। गय । विषय-क्या । रचना काल-४ । लेखन काल स० १७७७ । पूर्ण । वेटन न० ३२ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

३२६. भक्तामरस्तोत्र कथा--पन्न सस्या-३७। साइज-१२३४४ इन्न । भापा-स्रकृत । विषय-क्या । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन न० २१४ ।

२२७ भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा—विनोदीलाल । पत्र सख्या—१७३ । साइज-११९४= ६छ । भाषा-'हन्दी गय । विषय-कथा । रचना काल-मं० १७४७ साम्रन सदी २ । लेखन काल-म० १६४७ । पूर्ण । नेष्टन २० ६३ । त्रिशेष -- यानजीलाल जी ने प्रतिलिपि कराई थी। कुल ३८ कथाएँ हैं। एक प्रति श्रीर है।

३२८. मद्नमंजरीकथा प्रबन्ध—पोपटशाह । पत्र मख्या-२५ । साइज-१०ई×४६ इच । माषा-हिन्दी । विषय-क्रमा। रचना काल-मगिसर सुदी १०। -लेखन -काल-स० १७०६ श्रापाद सुदी १०। पूर्ण । त्रप्टन न०२६३।

- ३२६. मुक्तावित्रतक्तथा--खुशालचंद् । पत्र सस्या-४ । साइज-⊏ई४७० इझ । त्रिय-क्या । रचना काल-स० १८०२ । लेखन काल-४ । पूर्य । वेष्टन न० १६६ ।
- ३३० मेचकुमारगीत-कनककीर्त्त । पत्र सख्या-२ । साइज-१०×४ इझ । मामा-हिन्दी । तित्रय-द्या । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४० ।

विशेष-प्रति प्राचीन है:-४६ पद्य हैं।

श्री वीर जिणद पसाइ, जे मेवकुमार रिषि गाइ। ताही श्रागंती वीनस वीजाइ, वसी सपित सगत्ती पाइ॥ ४६॥ धन घन रें०॥ जे सुनीवर मेचकुमार, जीणी चारित पालउसार। गुणैक श्री जीन माणीक सीस, इस कनक मणय नीस दीम॥

॥ इति मेघकुमार गीत सपूर्ण ॥

- ३३१ राजुलपच्चीसी—लालचंद विनोदीलाल । पत्र सख्या-४ । साइज-१०३×४% इन्न । भाषा-हि दी (पद्य)। विषय-क्या । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।
- ३३२. रेंद्वत कथा—देवेन्द्रकीर्त्त । पत्र सल्या-४ । साइज-११र्दे×५ इख्र । माषा–सस्कृत । विषय-नया । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७२ ।
- ३३३. रोहिस्पीन्नतः कथा—भानुकीर्ति । पत्र सख्या-४ । साइज-११×५३ इझ । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । स्वना काल-× । तीखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८२५ ।
- ३२४ वंकचोर कथा (धनदत्त सेठ की कथा)—नथमता। पत्र सख्या-१४। साइज-१२ई×७ई इल भाषा-हिंदी पद्य। त्रिपय-क्या। रचना काल-सं० १७२४ श्रवाद बुदी ३। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३७।

विशेष-एक प्रति और है। चाक्य का विस्तृत वर्णन है। पद्य मख्या २६१ है।

प्रणम् पच परमेष्टी सार । तिह् समरत पाव मवपार ॥
दूजा-सारद ने निस्तरू । बुधि प्रकास कवित उचक् ॥
यरु निप्तर्थ नम् जगदीस । सरुया तीस सहम चोनीस ॥
वाणी तिह करै जनमार । सुणत मन्य जिन उत्तरे पार ॥

गगाधर मुनिवर करू वदना । वक चोर की कथा मन तथां ॥ ता सीचा पाली निज मांस । ताको मयो सोलहो निवास ॥ ३ ॥ दूजी कथा सेठ की कही । नाम धनदत्त धर्म नगरी सही ॥ सदा ब्रत पाले निज सार । ऊँच नीच को नही विचार ॥ ४ ॥

% न्तिम — पदसी मुणसी जे नर कोय। कम २ ते मुिक ही होय॥ सहर चाटस सुवस वास । तिह पुर नाना मोग विलास ॥ २७७ ॥ नवसे कूवा नव से ठाय। ताल पोखरी कहा न जाय।। तामें बड़ो जगोली राव। 'सबै लोग देवरण को भाव। २ ० = 11 वेडीत माहि वर्णी चोकोर । नीर मरे नारी चहु धोर ॥ चक्वा चक्वी केल कराहि। विधिक ताहि नहीं दुख दाय।। २७६।। छत्री चींतरा वैठक घणी। श्रर मसजद तुरका की वणी।। न्रहेंघा रूप वृत्त चहु छाय। पथी देखि रहे विरमाय॥२८०॥ चह धा चाट श्रधिक वणाय । पीवे संग वछा धर गाय ॥ सहर वीचि तें कोट उतंग। ताहि बुरज श्रति वणी सुचग॥ २=१॥ चह धा साई भरी छुमाय। एक कोस जाणी गिरदाव॥ चह धा वर्षे श्रधिक बाजार । वसे विशिक करें व्यापार ॥ २८२ ॥ कोई सोनो रूपो कसे। कोई मोती माणिक लसे।। कोई वेचे टका रोक। केई बजाजी रोका ठोकि॥ २८३॥ बोई परचुना वेचे नाज। केई एकठे मेले साज॥ वेई उधार दाम की गांठि। केई पसारी माडे हाटि॥ २二 / । च्यार देव ए जिएवर तथा। ता महि विव वदो अति घणा।। वरें महोछें पूजा सार। श्रावक लीया सन श्राचार॥ २८४॥ वाई जती रहण को ज्यान । उनहीं हार दोजे करि भान !! त्रीर देहरे वैसन् तणा। वर्म क्रे सगला त्रापणा॥२०६॥ नीरगमाहि राज ते धरे। पीण छतीसी लीला परें॥ कह चीवा चदन महकाय। कह अगाजा फल विक्साय॥ २८७॥ नगर नायका सोमा धरें। पातु नवु रचित वोली करें।! भैसो सहर श्रोर नहीं सही। दुखी टलिद्री दीसे नहीं H २== II हाकिम से सदारखां मही। श्रीर जीर कीउ दीमें नही।। यारी परजा चारी न्याय । सीलवत नर लाम लहाय ॥ २ = १॥

कथा एव रासा साहित्य]

सवत सतरा से पचीस । श्राषाइ वदी जाणो वरतीज ।।
वारज सोमवार ते जाणि । क्था सपूर्ण मई परमाण ॥ २६०॥
पदसी सुणपी जे नर कीय । ते नर स्वर्ग देवता होय ॥
भूल चूक कही लिखयी होय । नथमल समा करो सब कीय ॥ २६१॥
।। इति श्री बंकचोर धनदत्त कथा सपूर्णम् ॥

विशेष - एक प्रति श्रीर है।

३३४. त्रतकथाकोष--श्रुतसागर । पत्र संख्या-८० । साहज-१२४५६ हव्च । माषा-सस्कृत । विषय-कथा । रचना वाल-४ । लेखन काल-सं० १७८४ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १४३ ।

विशेष-- भिलाय में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । ४ प्रतियां श्रीर हैं ।

३३६. व्रतकथाकोष--खुशालचंद्। पत्र संख्या-८०। साइज-१२×१ इत्व। माषा-हिन्दी पद्म। विषय-कथा। स्वना काल-४। लेखन काल-सं० १७६७। पूर्ण। वेष्टन न०२०।

विशेष-- २ प्रतियां श्रीर हैं।

निम्न १३ कथात्रों का संप्रह है-

मेरपिक्त क्या, दशलवण क्या, ग्रुक्तावलीव्रतक्या, तपक्या, चदनषष्ठीक्या, घोडपकारणक्या, च्येष्ठ जिनवरक्या, श्राकारा०चमीव्रतक्या, मोचसप्तमीव्रतक्या, श्रचयनिधिक्या, मेघमालाव्रतक्या, लिध्यविधानक्या श्रीर पुष्पांजलिव्रतक्या।

२२७. शुकराज कथा (शत्रु जय गिरि गौरव वर्णन)—माणिक्य सुन्दर । पत्र संख्या-२१। साइज-१०१/४४ ई इन्च । माषा -सस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७६ ।

२२८. सप्त त्र्यसनकथा — सोम कीर्ति । पत्र सख्या-६६ । साइज-११×४ई इन्च । माषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-सं० १५२६ । लेखन काल-सं० १७१७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

विशेष — नोशी मगवान ने सिलोर में प्रतिलिपी की थी कुल ७ श्रध्याय हैं । श्लोक संख्या २१६७ प्रमागा है ।

३३६. सिंहासनद्वात्रिशका-पत्र राख्या-४१। साइज-१×४६ इन्च । माषा-संस्वत । विषय-वद्या। रचना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण । वेष्टन न० ३८६।

विशेष — बचीसों कयाएँ पूर्ण हैं पर इसके बाद जी कुछ श्रीर विवरण है वह श्रपूर्ण है ।

विषय-च्याकरण शास्त्र

३४०. श्राख्यात प्रक्रिया । पत्र सख्या-२२। साहज-१०१८४१ हम्र । साबा-सस्वत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । त्रेष्टन न० ४१६ ।

विशेष- श्लोक सख्या १५० हैं।

२४१ दुर्भपद्प्रबोध -- श्री वल्लभवाचक हेमचंद्राचार्य। पर्त्र सख्या-३६ । साइज-१०१४४ है इस । साषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-६० १६६१ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४४ ।

विशेष—िसंगानुशासन की वृत्ति है। प्रति प्राचीन है।

३४२. धातु पाठ - वोपदेव । पत्र सख्या-१४ । साहज १० रै ४४ हु इस । साषा-सस्प्त । तिपय-ह्याक्र्रण । रचना काल-४ । लेखन काल-५० १८११ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २०० ।

विशेष-प्रथाप्रथ सख्या ४०५ हैं। एक प्रति श्रीर है वह सस्कृत टीका सहित है।

३४३. पचसन्धि । पत्र ५ ख्या-६ । साइज-- है ×४ र् इद्ध । माषा-सस्वत । विषय-व्याकरण । स्वना काल-× । त्रेखन काल-× । पूर्ण । वेन्टन न० ४३६ ।

३४४. पच सन्धि टीका 1 पत्र सख्या-२० । साइज-००३×४३ इख । मात्रा-५स्वत । वित्रय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७०२ ज्येष्ठ । पूर्ण । वेष्टन न० ४३६ ।

विशेष—स॰ १७६२ जेन्ठ में नदलाल यति ने टीका लिखी थी।

३४४. प्रक्रियाकौमुदी—रामचन्द्राचार्य । पत्र सल्या-र्१ । स.इज ११६४५ इच । मापा-सस्त । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०८ ।

प्रति प्राचीन है। श्लोक सख्या-२४०० है।

३४६ प्रयोगमुख्यसार . । पत्र सरूपा-११। साइज-=×४ इख । माषा-सरष्टत । विषय-

३४७. प्राकृतच्याकर्गा—चड । पत्र संख्या—३ । साइज-१०४४ ६व । माषा-सस्वत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १०६६ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८८ ।

३४८ प्राकृतव्याकर्ग । पत्र संख्या-१८ । साहज-११ है ×६ इथ । भाषा-हस्त । विषय-व्याकरण । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

३४६. तिंगानुशासन — हेमचन्द्राचार्य। पत्र सस्या-४। साहज-१०ई×४ई इख्न। माषा-सर्वत । विषय-व्याकरण। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन ४४१।-

व्याकरण शास्त्र]

विशेष--- प्रति प्राचीन है ।

३४०. सारस्वत घातुराठ -हर्षेकीर्ति । पत्र संख्या-१= । साइज-१०३×४३ इव । भाषा-संस्कृत । विषय-च्याकरण । स्वना काल-× । लेखन वाल-भ० १७=१ चैत्र सदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २६७ ।

विशेष खडेलवाल ज्ञातीय हैमिनंह के पठनार्थ प्र च रचना की गई तथा वसु ग्र.म में प्रतिलिपि हुई थी।

३४१ सारस्वत प्रक्रिया—श्रनुभूतिस्वरूपाचार्य। पत्र सख्या-१०। साइज-११×४ है इख। भाषा-सस्कृत। विषय न्याकरण। रचना काल-×। लेखन काल-सं० ८०६४ सावन सुदी १। पूर्ण। वेष्टन ००६६।

विशेष—६ प्रतियां श्रीर हैं।

३४२. सारस्वत प्रक्तिया—नरेन्द्रसूरि । पत्र सख्या-७४ से १३३ । साइज-१०४४ ई इछ । सापा-संस्₹त । विषय-व्याक्रण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण । वेष्टन न० ४१५ :

विशेष-वेवल ऋदंत प्रकरण है।

३४३. सारस्वनप्रक्रिया टीका--परमहंस परिल्लाजकाचार्य । पत्र सख्या-१६ । साइज-१०४४ इम । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेट्टन न० ३/६ ।

विशेष-दितीय वृत्ति तक पूर्ण है।

३४४. सारस्वत रूपमाला-पद्मधुन्द्र । पत्र सर्वया-६ । साइज-१० है ४४ ई इच । मापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

विशेष - रलोक सरुया-४२ है। पडित ऋषमद स ने प्रतिलिपि की थी।

३४४० सिद्धान्त चिन्द्रका (कृदन्त प्रकरणी)—रामचंद्राश्रम । पत्र सल्या-२१ । साइज-१०६े×१ ६व । माबा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४। लेखन काल-सं०१८६ द्वितीय वैशाख सुदी १। पूर्ण । विष्टन न०३३८।

विशेष—जयनगर में घासीराम ने महात्मा फतेहचंद से प्रतिलिपि कराई। तृतीत वृत्ति है। एक प्रति श्रोर है लेकिन वह मी श्रपूर्ण हैं।

३४६ सिद्धान्त चिन्द्रका वृत्ति—सद्। नंद । पत्र सख्या-्र ८४ । सोइज्ञ-१० रू ४४ ई इन्च । मापा-संस्कृत । विषय-व्य करण । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४४ ।

३४७. हेमठ्याकरण-आचार्य हेमचन्द्र । पत्र सल्या-२४ । साहज-१०४४ हे इन्च । मापा-सस्तृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेन्टन नं० ४२१ ।

विशेष — पत्र के कुछ हिस्से में मूल दिया हुआ है तथा शेप में टीका दी हुई है | चरादि गण तक दिया हुआ है।

विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

३४८. श्रानेकार्थ मजरी--नंददास । पत्र संख्या-१ । साइज-१२×१ इझ । भाषा-इटी पद्य । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० ४०६ ।

विशेष - पद्य सख्या-१०१ है।

३४६. अनेकार्थ समह—हेमचद्र सूरि। पत्र तस्या-६६ साइन-१२ई×१ इन्च। माना-संस्कृत। विषय-कोश। रचना क.ल-४। लेखन काल-स० १४७७ कार्तिम सुदी ६। पूर्ण। वेच्टन न० ११४।

विशेष-मंपान थ संख्या २०४ है। पत्र जोर्ण है। पत्र ६= तक संस्कृत टीका भी है।

३६० प्रति न०२। पत्र रूख्या-१४। साइज-१३४४ इख । लेखन काल-सं० १४=० श्रयाद। पूर्ण। वेष्टन नं० ३१६।

विशेष- • काएड तक हैं। सागरचंद सूरि ने प्रतिलिपि की थी।

३६१ अभिधानचितामणि नाममाला—आचार्य हेमचद्र । पत्र सख्या-१२६ । सारज-१०ई× ४ई इक । माषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १=०४ । पूर्ण । वेप्टन न० ३५४ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

३६२ स्त्रमर कोष (नाम लिङ्गानुशासन)— स्रमरसिंह । पत्र सख्या-११० । साइज-११६४६ इत्र । माषा-संन्कृत । विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३६१ ।

विशेष — द्वितीय पायब तक हैं। पत्रों के बीच २ में श्लोक हैं। एक प्रति स्रीर है उसमें तृतीय कायब तक है।

३६३. प्रति न०२। पत्र सरूया--१००। साइज--१०ई×४६ दृब्च। टीका काल-सं० १६८९ व्येष्ठ सुदी ४। पूर्यो । वेष्टन नं०४८०।

विशेष — हस्कृत में टीका दी हुई है एव कठिन शब्दों के प्रथं भी दिये हुऐ हैं।

३६४. धनजय नाम माला- घनजय । पत्र सख्या-१६ । साइज-१०४४६ इस । माषा-सस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १७४७ माघ । पूर्ण । विष्टन नं० ४०४ ।

श्लोक संस्था-२०० हैं।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई तथा दीधराज ने संशोधन किया । एक प्रति श्रीर है । ३६४ शब्दानुशासन-वृत्ति --हेमचद्राचार्य । पत्र रुख्या-१४८ । साइज-१०३×४६ इन्च । माषा-सरकृत । विषय-कोष । रचना काल-×ं। लेखन काल-सं० १५२४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४१४ ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १४२४ वर्षे श्री खरतरगछे श्री जिनचन्द्रसूरिविजय लब्धविसालगिया, वा॰ शान्तिरत्नगिया शिष्य ना॰ धर्मगिया नाम पुस्तक चिर नथात्।

३६६. वृत्तरत्न।कर -- भट्ट केदार । पत्र सरूया-७ । साइज-११×४ ई इख । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन क ल-सं० १८६२ पीष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १६ ।

विशेष-४ प्रतियां श्रीर हैं जिनमें एक सस्कृत टीका सहित हैं।

३६७ वृत्तरत्नाकर टीका—सोमचंद्रगिण । पत्र सख्या-४० । साइज-१०×४ई इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-छद शास्त्र । टीका काल-स० १३०६ । लेखन काल-х । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

३६८. श्रुतबोध — कालिदास । पत्र सख्या-१ । साइज-६×६ इस । साषा-सस्रत । विषय-छद शास्त्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३३ ।

विशेष—६ फुट लम्बा एक ही पत्र है। पद्य सख्या ४३ है। इसके वाद स्त्रव्माध्याय दिया हुन्रा है जिसके ७६ पद्य हैं। इसकी प्रतिलिपि मुखराम मोटे ने (खडेलवाल) स्वपठनार्थ स० १८४४ मगिसर बुदी ६ की वटेश्वर में की थी।

विशेष-एक प्रति ध्यीर है।

- TERRIS

विषय-नाटक

देहर. प्रबोधचन्द्रोद्य नाटक-श्रीकृष्ण मिश्र । पत्र सल्या-४० । साइज-१०%६ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १७८३ फाल्ग्रन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ । ३७०. मद्न पराजय--जिनदेव । पत्र संख्या-४० । साङ्ज-११३४१ इश्र । मापा-सस्कृत । विषय-नाटक । रचनाकाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २४० ।

विषय-लोकविज्ञान

- ३७१ त्रिलोकप्रज्ञप्ति यति ग्रुपभ । पत्र सस्या-२०३ । साइज-१२२४५ इस । मापा-प्रावृत । विषय-लोक विज्ञान (रचना काल-४ । लेखन काल-स० १०३१ । पूर्ण । वेष्टन न० २४ ।
- ३७२ प्रति न०२। पत्र सख्या-२०६। साइज-१२×६ इल। लेखन काल-×। श्रपूर्ण। नेष्टन न०३३२।

विशेष-अ य के साथ जो लक्डो का पुट्टा है उस पर चौत्रीस तीराक्रों के चित्र हैं । पुट्टा सुन्दर तथा सुनहरी हैं ।

२७३ त्रिलोकमार — नेमिचद्राचार्य। पत्र सल्या-२६। साइज-६३८४६ इझ। माषा-प्राहत। विषय-लोक विज्ञान। रचना काल-х। लेखनकाल-स० १७६६ वैशाख बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन न० २०८।

विशेष - नरसिंह श्रप्रवाल ने प्रतिलिपि की घी ।

३७४ त्रैलोक्यसार चौपई—सुमितिकीर्ति । पत्र सख्या-२३ । साइज-=×६ इद्य । साधा-हिदी पर्य । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-स० १६२७ माघ सुदी १२ । लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० १४१ ।

विशेष-१६ पत्र से श्रागे श्रजयराज कत सामायिक समावाणी है। जिसका रचना काल-स० १७६४ है।

३७४. त्रिलोकसार सटीक-मू० कत्ती-नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार-सहस्रकीर्ति। पत्र सख्या-== । साइज-११×५ दे इच । भाषा-प्राहत-सर्कत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १७६ माघ सदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २६ ।

विशेष--नरसिंह श्रमवाल ने प्रतिलिपि की थी।

विषय-सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३७६. कामंदकीय नीतिसार भाषा—कामन्द । पत्र सख्या-४ । साइज-१०४६ इन्छ । माषा-हिन्दी गद्य । वित्रय-नीति । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन नं० ४२ = ।

प्रारम्म —श्रय कामंदकीय नीतिसार की बात लिख्यते । जाके प्रमावते सनातन मारग विषे प्रवर्ते । सो दड को धारक लक्ष्मीवान राज जयवंत प्रवरतो ॥ १ ॥ जो विष्णुगुन्त नामा श्राचारिन वडे वंश विषे उपजे श्रयाचक ग्रग्णनि करि वडे जे रिवीश्वर तिनके वश में प्रयिवी विषे प्रसिद्ध होतो मयो ॥ २ ॥ जो श्रग्नि समान तेजस्वी वेद के ज्ञातानि में श्रिष्ठ श्रित चतुर च्यारू वेदनि की एक वेद नाई श्रष्ययन करतो हुवो ॥ ४ ॥

श्चित्म — विस्तीर्थ विषय रूप वन विषे टोडतो पीडा उपजायवेको है स्वमाव जाको असो इन्टिय रूप हस्ती ताहि श्रात्मज्ञान रूप अकुश करि वशीभृत करें ॥ २७॥ प्रयत्न करि श्चात्मा विषयनि ग्रह ॥ क्मदनी ॥ गारशरामजी की लीख ॥

३७७. चाण्वयनीतिशास्त्र—चाण्यय। पत्र स्ट्या-२ से १५ तक। साइज-१०३/४५ इस । सामा-सस्कृत । विषय-नीति । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन नं ० ४२० ।

विशेष--पथम पत्र नहीं है तथा श्राउनें श्रध्याय तक है। एक प्रति श्रीर है। लेक्नि वह भी श्रपूर्ण है।

रेज= ज्ञानिवितामिणि — मनोहरदास । पत्र सख्या—६ । साइज-१२४८ इन्च । भाषा-हि दी पर्घ । विषय-सुभाषित । रचना काल-स० १७२६ माह सुदी ७ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

रेण्ड जैनशतक — भूधरदास । पत्र सख्या –१४। साइज -१९×५ इन्च। भाषा – हिन्दी। विषय – स्मापित। रचना काल –स०१७ = पोष बुदी १३। लेखन काल –स०१ = हिन्दी प्र। पूर्ण विष्टन न०१४।

३८० प्रति नं०२। पत्र सस्या-१३। साइज-१०ई×४ इन्च। लेखन वाल-४। पूर्ण। वेष्टन

विशेष - इम प्रति में रचना काल स० १७ = १ पौष बुदी १३ दिया है ।

३८१. नीति शतक-भतृहिरि । पत्र सल्या-१ । साइज-१२×१ ई इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । रचना काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष — श्लोक सस्या-१११ है। एक प्रति श्रीर है।

३८२ं. नीतिसार — इन्द्रनिद्। पत्र सल्या-४। साइज-११४५ इजन। भाषा-मस्कृत। नित्रय-नीति। रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेप्टन न० ३३०। विशेष- श्लोक संख्या ११३ प्रमाण है।

३८३ शतकत्रय-भन्तृहिरि । पत्र सल्या-६७ । साहज-१०४४ ई इन्च । साया-सस्हत । विषय-सुनाषित । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८५८ वेशाख सुठी २ । पूर्ण । वेण्टन न० ३५१ ।

विशेष - पत्र ३६ तक स€कृत टीका भी दी हुई है । नीतिशतक बैराग्य शतक एव १ गार शतक दिये गये हैं।

३८४. मनराम विलास—मनराम । पत्र सख्या-१० । साइज-१२४५ इद्य । मापा-हिदी (पद्य)। ।वपय-समाधित । रचना वाल-४ । लेखन वाल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६५ ।

विशेष-दोहा, सवैया, कवित्त श्रादि छदो का प्रयोग किया गया है तथा विहारीदास ने समह किया है।

शारम्म — करमादिक श्रारेन की हरें श्राहंत नाम, सिद्ध करें काज सब सिद्ध की मजन
उत्ताम स्थान ग्रन श्राचरत जाकी सग, श्राचार ज मगांत वसत जाके मन है।।
उपाध्याय ध्यान तें उपाधि सम होत, साध परि पूर्ण की समरन है।
पच परमेन्टी की नमस्कार मत्रराब धावें मनराम जोई पावें निज धन है।।

३-४ राजनीति कवित्त-देवीदास । पत्र सल्या-२४ । साइज-६×६ इन्च । मापा-हिदी । विषय-नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७३ ।

त्रिरोष-११६ विन हैं एव ग्रटका साइज है। पत्र १,०,४ तथा श्रन्तिम बाद के लिखे हुए हैं। ताजगंज आगरे के रहने वाले ये तथा श्रीरंगजेब के शासन काल में श्रागरे में हीं रचना की।

३८६. सद्भाषितावली-पत्रालाल । पत्र सख्या-४३ । साइज-१३४८ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुमाषित । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६४२ पीप युदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ८४ ।

३८७. सिंद्र प्रकरण-जनारसीदास । पत्र सख्य -३७ । साइज-ट×६ हन्च । माषा-हि दी पद्य । विषय-सुभाषित । रचना काल-स० १६६१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १३६ ।

विशेष-१= पत्र से थांगे मैया मगवतीदासजी इत चेतन कम चरित्र है जी अपूर्ण है।

३८८ सुभाषितरत्न सन्दोह — श्रमितगित । पत्र सल्यां - ७२ । साइज-१२×४ई इञ्च । माषा - सस्कृत । विषय - सुमाषित । रचना काल - स० १३५० । लेखन काल - स० १८०६ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० २४३

विशेष—मेवात देश में सहाजहानावाद में प्रतिलिपि हुई । श्रहमदशाह के शासन काल में लाल इन्द्रराज ने देवीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई ।

३८६. सुभाषित संग्रह ' " । पत्र सख्या-२२ । साइज-१०४४ ई इश्च । माबा-सस्वत । विषय-सुमाबित । रघना फाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० ४१ म । श्लोक मख्या - १११ है।

े ३६० मस्भाषितावली— सफलकीर्ति । पृत्र संख्या-२०। साइज-१०४५ स्छा । साया-संस्≢त । विषय्-सभाषित । रचना काल-४ । लेखन कालं∸स० १७७६ । पूर्ण । वेप्टन न० २२१ ।

विशेष — श्रमरसिंह छान्हा ने टोंक में प्रतिलिपि की भी।

३६१. सुमापितार्ग्यव शुभचद्र। पत्र संख्या-६५ । साइज-११×४ इस । साषा -सस्क्रत । विषय-सुमाषित । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १०६० भादवा चुटी ७ । पूर्ण । वेप्टन नं० २०४ ।

विज्ञेष--मनवा में दीपचद सबी ने प्रतिलिप की भी । एक प्रति कीर है जो सबत् १०८० नी लिखी हुई है।

- ३६२. सुभाषितावली-चौधरी पन्नालाल । पत्र मरूया-१०५ । साहज-११८६ हम । भाषा-हिटी । त्रिषय-सुमाषित । रचना नाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेच्टन नं० ४२ ।
- ३६३. सूक्तिमुक्तावित—सोमप्रभाचार्ष । षत्र सस्या-४५ । साइज-१०५/४५ इम्र । मापा-सस्कृत । विषय-सुमाषित । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० २०४ ।

विशेष — प्रति संस्कृत टीका सहित हैं। ग्रन्तिम पुष्पिका में टाकाकार भीमराज वैद्य लिखा हुन्या है। २ प्रतियां धार हैं। जो केवल मूल मात्र हैं।

३६४. प्रति ते २ । पत्र संख्या-१८ । साइज-१०×४ ई डब्च । लेखन काल-× । पूर्ण । प्रेटन नं० १४२।

३६४ प्रति न०३। पत्र संख्या-६०। साङज-१२×६६ इब्च। लेखन काल-स० १७६०। पूर्ण। भैटन नं ०३१०।

विशेष-प्रित सटीक है। टीकाशार हर्गकीति हैं।

ŧ

विषय-स्तोत्र

३६६ इष्टोपदेश--पूज्यपाद । पत्र सरूया-४ । साइज-१२४६ इत्र । भाषा-परकृत । विषय-रतात्र । रचना क्राल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २०४ ।

श्रिशेष--त्र धर्मसागर के शिष्य प० वेशव ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३६७ एकीभावस्तोत्रभापा-भूधरदास । पत्र सख्या-= । साइज-७३४८ । अत्र । भाषा-हिटा । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२४ ।

३६८. एकीभावस्तोत्र—वाविराज । पत्र सस्या-४ । साइज-१८ है ६ छ । भाषा-सस्त्रत । तिपय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८६३ वेशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

त्रिशेष- > प्रतियां श्रीर हैं । जिसमे एक प्रति टीमा सहित है ।

३६६ कल्याग्गमन्दिरस्तोत्र—कुमुद्चन्द्र । पत्र सख्या-१२ । साइज-१००४ इख । मापा-सस्कत । विश्य-रतोत्र । रवना काल-४ । लेखन काल-स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३ ।

विशेष—सस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है। तथा प्राथ कर्ता का नाम सिद्ध सेन दिवाकर दिया हुआ है। ऋषि रामदास ने प्रतिलिनि की थी। निन्न रलोक टीका के अत में दिया हुआ है।

मालवारुये महादेशे सारगपुरवत्तने ।

स्तोत्रस्यायों ऋतो नव्य छात्राय उत्तमिषणा॥

विशेष- ६ प्रतियां श्रीर हैं जो केवल मूलमात्र है।

४०० | कल्याग्रामन्दिर स्तोत्र भाषा—बनारसीदास । पत्र ५रूथा- । साइज -११र्डू×६ ४व । साथा-हि दी । त्रिषय—स्तोत्र । रचना काल~× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

विशेष - इसके श्रतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

४०१. कुचेरस्तोत्र । पत्र सस्या-१ । साइज-१३६/४६६ डम । भाषा-मस्कत । विषय-स्तोत्र । स्वना काल-४ लेखन काल-स० १६१४ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वष्टन न० २०१ ।

४०२. चैरयवद्ना । पत्र सख्या-= । साइज-७२×२३ इम । मार्था-मस्पृत । विषय-गतीत्र , रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न ० ६ = ।

विशेष-इसके अतिरिक्त महानीराष्ट्रक (सस्कृत) भी हैं ।

4,5

४०३ चौबीसजिनस्तुति – शोभन मुनि । पत्र सख्या - १०। साइज – १० रे४४ इत्र । मापा – मस्त्रत । विषय – स्तोत्र । रचना काल – ४ । लेखन काल – ४ । ऋपूर्ण । वेष्टन न० ३४ = ।

विशेष — रुलोक सरूया ६४ है। प्रथम पत्र नहीं हैं प्रति प्राचीन है। इसका शासन सूत्र नाम भी है।

- ४०४ चौत्रीसतीर्थं करस्तवन — लिल ति विनोद । पत्र संख्या-१। साइज-१०४५ इञ्च । सापा-हि दी । विषय-स्तवन । रचना वाल-४ । लेखन वाल-५० १८६६ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन न० ४२५ ।

४०४. ज्यालामालिनी स्तोत्र । पत्र सख्यः-२। साष्ट्रज-१०४८ है इन्च। भाषा-सस्कृत। वित्रय-स्तोत्र रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न० ४३।

४०६. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र सख्या-२ । साइज-११६ ४६ इन्च । भाषा सस्तत । विषय-स्तात्र । रचना पाल-४ । लेखन वाल-स० १८६ प्र० श्रासोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष-छोटेलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

४०७ जिनसहस्रनाम- जिनसेनाचार्य । पत्र सल्या-२३ । साइज-११४६ 'इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रतीत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १५२ ।

४०= जिनसहस्रनाम-श्राशाधर । पत्र सख्या-१४ । साईज-११४६ इन्च । भाषा-स्स्त । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन २० ३३४ ।

४०६ जिनमहस्त्रनाम टीका — श्रुतसागर । पत्र स्ख्या-१०=`। साइज-१२४१ है इस । माया-संस्कृत । त्रिषय-स्तोत्र । रचना काल-४ लेखन काल-४ । अपूर्ण । त्रेष्टन न० २५६ ।

विशेष-- कुल इसमें १००० (१२३४) पद्य हैं।

४१०. जिनसहस्रनाम टीका—त्रमर कीर्ति। पत्र सख्या—कं। साक्त-१९३×१० इत्र। भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रवना ज्ञाल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेच्टन न० २४१।

प्रति प्राचीन है । मूल क्त्री जिनसेनाचार्य है । एक प्रति श्रीर है ।

४११. जखडी-- बिहारीदंग्स । पत्र सरुया-४ । साइज-६ र्४७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । स्वना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेन्टन न० ४८ ।

त्रिशेष-- ३६ पध हैं।

४१ दर्शन '। पत्र सख्या- । साडज-८१४८ इश्र । साया-मस्कृत । विषय-स्तीत्र । रचना काल- । लेखन काल- । पूर्ण । विष्टन २०४४७।

४१३ दर्शनाष्टक । पत्र संस्था-१। साइज-११ ४४ इन्न । साथा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । स्वना राख-× । लेखन काल-× । पूर्ध । वेप्टन न० २०१ ।

४१४ टडकपर्ड्तिंशतिका । पत्र सरूया-३ । साइज-१०३४/२ इन्च । आधा-मस्पृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वैष्टन न० ३६० ।

४१४ देवागमस्तोत्र-श्राचार्य सम्तमद्र । पत्र सख्या-६ । साहत-११४४ : इन्च । साया-मस्कत । विषय -दर्शन । रचना क.ल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० ३४४ ।

४१६ देवप्रभारतोत्र — जयानिहसूरि । पत्र संख्या-६ । साइज-१०३×४३ ६३ । भाषा-सस्वत । विषय -स्तोत्र । रवना काल - × । नेखन काल - स० १८६ । पूर्ण । बेप्टन न० २७८ ।

प्रश्र निर्वाणकार्यडगाथा " । यत्र मख्या-२ । माइज-१०४४ देश । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना राल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४२४ ।

विशेष-एक श्रीत श्रीर है।

४१८ नेमिनायस्तोत्र —रालिपहित । पत्र संख्या-० । साइज १०×४६ इच् । सावा-सस्कत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन याल-४ : पूर्ण वेष्टम न० १५२ ।

४१६. पद्मावतीस्तोत्रकवच । पत्र मख्या - । माइज - ११×५ ई इम । सामा - मंस्कत । विषय - स्तोत्र एवं मत्र शास्त्र । स्वना काल - × । लेखन काल - × । पूर्ण । वैंटन न० ४२५ ।

४२० पचपरमेष्टीगुस्तवन—प० खालूराम । पत्र मंख्या-२६ । साइज-७र्दे×६र्दे इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना माल-× । लेखन माल-× । पूर्ण । वेष्टम न० ४३४ ।

४२१. पंचमगता — रूपचड । पत्र सस्या-१८ साइज-उड़ै४८ इब्ला । मांशा—हिन्दी । विषय÷ स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूरा । वेप्टन न० १२५ ।

४२२. पार्श्वदेशान्तरछद ' '। पत्र मस्या-। माइज-११ है×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-न

४२३ पार्र्वनाथस्तोत्र—मुनिपद्मनिट । पत्र संख्यान१७ से २५ । माइज-१०४४ ६० । माषान मंस्कृत । सिषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेप्टन न० ४ । ४२४. पार्श्वेनाथस्तवन । पत्र सस्या-१ साइज-१०३/४४ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रवना काल-४ । लेखन काल-स० १८६४ मगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२४. पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र सख्या-१ । साइज-१०६४६ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तात्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न०२०१ ।

४२६ भगवानदास के पद्—भगवानदास । पर्त्र संख्या=६१ । साइज-६३४७ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद । रचना काल-× । लेखन काल-स॰ १८०३ । पूर्ण । वैष्टन मं॰ ४७१ ।

विशेष—१४= पदो का सम्रह है। विभिन्न राग रागिनि यो में कृप्ण मिक्त के पट है।

श्रीराग-हरि का नाम विसाही रे सतगुरु चीखा वनिज वनाया।

गोविंद के ग्रन रतन पदारण नका साथ ही पाया । जनम पदारथ पाइ के किनहूँ विरखे नेग लगाया ।। काम कोध मद लोभ मोह मैं मूरख मूल गवाया । हिर हिर नाम श्रराधि के जिनि हिर ही सो मन लाया । किह भगवान हित रामराय तिनि जंग मैं श्रांनि कमाया ॥११२॥

विशेष — अत्येक पद के अन्त में "किह भगवान हित रामराय" लिखा हुआ है । ६४ पत्र के श्रितिरिक्त अन्त म ६ पत्रों में विषय वार भिन्न २ रागिनियों की सूची दी है । इसमें कुल १४३ पद तथा ६०० रलोकों के लिये लिखा है । गोविंद्यसाद सीह के पठनार्थ रूपराम नंदीश्वर के ग्रंसाई ने अतिलिपि की । पटों की सूची के लेखन का सम्बत् १८०० दिया हैं।

४२७ भक्तामरस्तोत्र—मानतु गाचार्य । पत्र सख्या-१६ । साइज-५३×४ इम्न । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टनं न० १४३ ।

विशेष — १ र पत्र से कल्याण मटिर स्तोत्र हैं जो कि अपूर्ण है । इसी में २ फुटकर पत्रों पर सरकृत में लह्मा स्तोत्र भी है ।

विशेष - २ प्रति खोर है।

४२८ भक्तामर टीका । पत्र संख्या-४३ | सांद्रजं-१०४४ है इस | भाषा-संस्कृत | विषय-स्तीत्र | रचना काल-४ | लेखन काल-४ | श्रीपूर्ण | बेधन न० २८३ |

४२६ भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—भ० रत्नचन्द्र सूरि । पत्रं सख्या—४४ । माइज-१०×४ इच । माषा-मरकृत । विषय—स्तोत्र । रषना काल-स० १६६७ श्राषाट सुदी ४ । लेखन काल-म० १७२५ कार्तिक चुदी १२ । पूर्ण । वैष्टन न० २४६ ।

विशेष — वृन्दावती नगर में चन्द्रथम चैत्यालय में श्राचार्य कनककी है के शिष्य प० रायमल्ल ने स्वपटनार्थ प्र परोपकारार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति मत्र तथा कथायों सहित है । मन्धकार परिचयात्मक श्लोक--

श्रीमद्भ् वडवरोमडणमणिर्महीपित नामा विणक ।
तद्भार्या ग्रणमित मत्मुता च्यामिति नामधा ॥
तन्पुत्री जिनपादपक्त मधुपो श्रीरत्नचन्द्रो मुनिः ।
चक्र वृत्तिममां स्तवस्य नितरा नत्वा श्री'वादीन्दुक्म् ॥ ॥
सप्तषष्ठ चांकिते वर्षे शोडणास्येहि सवने ।
श्राषादस्वेतपत्तस्य पचम्यां बुधवारके ॥६॥
श्रीवापुरे महीसिन्धोस्तर भाग समाश्रिते ।
शोत् गदुर्गसमुक्ते श्री चन्द्रप्रममद्यनि ॥७॥
विण्नः कर्ममी नाम्नः वचनात मया च्यारिव ।
भक्तामरस्य सिंद्व ि रत्नचन्द्रेण सूरिणा ॥=॥

५३०, भक्तामरस्तोत्र भाषा-जयचद्जी छात्रहा। पत्र मंख्या-२७। माइज-१४४८ इच । माधा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १८७० कार्तिक बुढी १२। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ७।

विशेष-- २ प्रतियां श्रीर हैं।

४३१ भक्तामर स्तोत्र भाषा कथा सहित—नथमल । पत्र सस्या-४० । साइज-३२×५६ इत्र । भाषा-हिन्दी पथ । विषय-स्तोत्र एव कथा । रचना काल-स० १८२८ अपेट सुटा २० । लेखन काल-म० १८५२ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वेपन न०४० ।

विशेष - यह प्र'थ लिखवाकर ब्रह्मचारी देवकरणजी को दिया गया।

४३२. भारती स्तोत्र "। पत्र सस्या-१। साइज-१७४६ इत्र । भाषा-सस्वत । विषय-स्तीत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०१ ।

४३३. भूपाल चतुर्विशति स्तोत्र—भूपाल किंव। पत्र सस्या-६ । माडक्र-११४४ इक्ष । भाषा-मस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १६१ ।

विशेष - सस्कत में कठिन शन्दों के वर्ष भी दिये हुए हैं। एक प्रति बीर है।

४३४ तादमी स्तोत्र-पद्मनित्। पत्र सस्या-१। बाहज-१०ई×४६ इम। भाषा-सस्कत। विषय-स्तोत्र। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन ने० ४३।

४३४ लघु सस्नहनाम" । पत्र सस्या- । साइज-१०४४ ई डम्र । माधा-सस्वत । विषय-स्तीत्र । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १५२ । ४३६ विचारपडित्रिशिका स्तोत्र —धवलचन्द् के शिष्य गजसार। पत्र संख्या-४। माईज-१०×४ दे इस । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० ३५६।

> विशेष — सिरि जिणहंस पुणीसर रजे धवलचद । सिसण गजसारेण लहित्रा एसा अप हिया ॥४२॥

४३७. विषापहार स्तोत्र — धनजय । पत्र सख्या-३ । साइज-११४४ इव्च । भाषा-६२६ते । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३५६ ।

पष संख्या ४० हैं।

४२ विषापहारस्तोत्र भाषा—ग्रचतकीर्ति । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०१४६ । भाषा-हिन्दी । विषय -स्तोत्र । रचना फाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

विशेष-पत्र ४ से आगे हेमराज कत भक्तामर स्तोत्र भाषा भी है। २ प्रतिया और हैं।

४३६. विषापहार टीका — नागचद्रसूरि पत्र सख्या-२६ । साइज-=१४४ इथ । भाषा-सस्वत । निषय-स्तीत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २१० ।

विशेष - भट्टारक ललितकीतिं के पट्ट शिष्यों मे नागचद सूरि थे।

४४०. विनतो — श्रजयराज । पत्र संख्या – २ । साइज - २ 1×४ र इक्ष । भाषा – हिन्दी । विषय – स्तत्रन । रनना काल – × । तेखन काल – × । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२४ ।

विशेष - दूसरे पत्र पर रविवार कथा भी टी हुई है पर वह अपूर्ण है। २२ पद्य तंक हैं।

४४१ शत्रु**खय मुख मडन स्तोत्र (युगादि देव स्तवन**)। पत्र सस्या-१०। साइज-१०४४ ई रत्र । भाषा-ग्रजराती । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० २६ इ ।

विशेष — म-थ मे २१ गाथाऐ हैं जिन पर गुजराती भाषा मे ऋषं दिया हुआ है। ऋर्थ के स्थान पर ''वस्तान'' नाम दिया है।

४४२ शान्तिनाथ स्तोत्र—कुशलधर्धन शिष्य नगागिरा । पत्र संख्या- १ । साइज-१०४८ इस । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना फाल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । बेप्टन न० ३६२ ।

विशेष-पय सस्या ५१ है।

प्रारम्म — सकल मनोरथ पूरेणो वाष्टित फल दातार । वीर जिणेसर नायके जय जय जगदाधार ॥१॥

भन्तिम—ईय वीर जिणवर सयल सुखरर नयर वडली भडनो। मिधुएयो मगति प्रवर युगति रोग सोग विहडमो॥ तपं गच्छ निरमल गयण दिनयर श्री विजयसेन सूरिसरी । कवि कुशलवर्धन सीस ए भणइ नगागणि मगल करी ॥४२॥

४४३ समवशरण स्तोत्र । पन सख्या-७। साइज-११३४४ दृ इत्र । मापा-मस्तत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वैष्टन न० २००।

रथेश. स्तुति सम्रह - चद किया । पत्र सस्या-१ । साइज-=र्थ्य १ इमा । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १-४ ।

विशेष-शान्तिनाथ, महावीर तथा श्रादिनाथ की स्तुर्तियां है।

दोहा—स्तुतिफल तें में ना चह् इन्द्रादिक सरवास । चद तणी यह वीनती दांच्यो मुक्ति निवास ॥१०॥॥ इति श्रादिनाथजी स्तुति सपूर्ण ॥

४४४. स्तोत्रटीका--श्राशाधर । पत्र सख्या-३० । साइज-११४४ इख । मापा-सस्त्रत । विषयदेतीत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-स० ११६१ कातिक सदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६३ ।

विशेष - रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी।

४४६ स्तोत्र सम्बद्धः । पत्र स्ख्या-४ । साइज-११६४६ इक्षः । भाषा-हिन्दी सस्वतः । विषय-मन्नतः । तीखन काल-४ । पूर्णः । वेष्टनर्भि ०४३ ।

निम्न लिखित स्तोत्र हैं-

नाम स्तोत्र	ऋ ची	भाषा	र० या०	ले) का ०	विशेष
पाइर्वनायंस्तोत्र	जगतमू वन्त	हिन्द <u>ी</u>	×	×	
लद्मीस्तोत्र	पंजनदि	सर≢त	×	×	
प पूर्वनांघस्तोत्र	×	"	×	×	
कलिकु ड पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	×	×	
पाइर्वनाथस्तोत्र	~	11	×	🗙 मत्र सि	हेत
चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तीत्र	×	7,1	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	गजसेन	"	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत	घानतराय	हिन्दी	×	×	

४४७ सिद्धिप्रियस्तोत्र — देवनिदः । पत्र सख्या-४ । साइज-७३४४ इम्न । भाषा-सस्रतः । विषय- - न्तांत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्णः । वेष्टन न० १३७ ।

विशेष-एक प्रति श्रीर है।

विषय-ज्योतिष एवं निमित्तज्ञानशास्त्र

४४८. स्त्रिरुटाध्याय —पत्र सल्या-१० । साइज-१० हुँ×४ इख । माषा-प्रावृत-। विषय-ल्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३१ ।

विशेष—कुल २०३ गाथाएँ हैं। अन्त में प्रथ में छाया पुरुष लक्षण है। प० श्रीचद्र ने प्रतिलिपि की थी।

४४६. च्रीरार्ग्व -- विश्वकंमी । पत्र सख्या-१० । साइज-१२×१ दे इच । माषा-सस्कृत । विषय-व्योतिष (शक्कन शास्त्र) । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण । वेष्टन न० ३७६ ।

४४०. चमत्कारचितामिण-नारायण । पत्र सख्या-७ । साइज-१०ई×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ ज्येष्ट सुदी ४ । पूर्ण । वेप्टन न० ४६१ ।

विशेष-सवाई जयपुर में महाराजा जगतसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी।

४४१. ज्योतिषरत्नमाला-श्रीपति भट्ट। पत्र सख्या-१४ । साइज-१०×४ ई इख । माषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४४२. नीलकठज्योतिष—नीलकठ। पत्र सख्या-४६ | साइज-११४५ इख | माषा-सस्इत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-शक स० १४ • ६ श्रासोज सुदी ६ | लेखन काल-४ | पूर्य | वेष्टन न० ४६७ |

विशेष--नीलकठ काशी के रहने वाले थे।

४४३. पाशाकेवली—पत्र सख्या-६ । साइज-११ई-४१ई- इख । माषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न् ७ ४०० ।

श्लोक सख्या ४५ है। पाशा फेंक कर उसके फल निकालने की विधि दी हुई है।

४४४ भड़लीविचार—सारस्वत शर्मा। पत्र सल्या-१४। साइज-११ई×५ इख। मापा-हिन्दी पद्य। विषय-ज्योतिष। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेप्टन न०४६८।

विशेष---प्रत्येक नचत्र तथा तिथियों में मेच की गर्जना को देखकर वर्ष फल जानने की विधि दी हुई है। कुल ३१६ पथ हैं।

४४४. शोघ्रबोध - काशीनाथ । पत्र सख्या-३४ । साइज-१०४६ ई इख । माषा-सस्कृत । विषय-इयोतिष । रचना फाल-४ । लेखन फाल-स० १८६६, वैशाख इदी १४ । पूर्ण । वेप्टन नं० ४६६ ।

विशेष — चतुर्ष प्रकरण तक है । रखोक सख्या – ७० है । उदयचन्द ने स्त्रपठनार्थ लिपि की थी । ग्रटका साइज है ।

४४६ षट्पचासिका बालाबोध — भट्टोत्पल । पत्र संख्या-१४। साइज-१०×४ है इस । माषा-सरकत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६४० वैशाख युदी १० । पूर्य । वेप्टन नं० ४६३ ।

विशेष— प्रिन नोरत्नवीर ने नदासा ग्राम में प्रतिलिपि की थी । यह ग्र थ कपूर विजय का था । संस्कृत मूल के साथ ग्रजराती साथा में गध टीका दी हुई है ।

प्रारम्म-प्रियपत्य रविं मूर्द्ध ना वराहमिहरात्मजेन सत्यशसा । प्रश्नो कृतार्थं गहनापरार्थमुद्दिश्य पृथु यशसा ॥१॥

टीका—प्रियपत्य कहीइ नमस्कार करी नइ सूर्य प्रति मूद्धी। मस्तिक करी वराहमिहरज पिडत तेह आत्मज कहीइ पुत्र पृथुयत्तां एह वर नामि प्रश्न नइ विषइ प्रश्न तीविया कता कहीइ की थी।

४८७ संक्रान्ति तथा प्रहातिचारफल-पत्र सरूपा-१० से ४२ तक । साइज-०८६ १ इस । माषा-सरकत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १७७३ माघ सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन नं ० ४७० ।

विशेष-व्यास दयाराम ने प्रतिलिपि की भी।

विषय-आयुर्वेद शास्त्र

४४८ व्यंजनशास्त्र —व्यग्निवेश । पत्र संख्या-१३ । साहज-११ई×१६ इस । माधा-सँस्तृत । विषय-ब्रायुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७४४ ब्राहियन सधी २ / पूर्ण । वेष्टन मं० ४४१ ।

विरोष --- १ लोक सल्या २ ३४ है । नेत्र सबंधी रोगों का वर्णन है । पुरुतान नगर में रामकृष्ण ने प्रतिलिपि की भी ।

४४६. अष्टांगहृद्यसहिता—वाग्भट्ट। पत्र सख्या-६३ । साइज-११३४४ है इख । माषा-सस्कत । विषय-त्रायुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४० ।

विरोष — सूत्र मात्र है। जयमल ने प्रतिलिपि की थी।

४६०. कालज्ञान-पत्र सल्यां-१६। साइज-१०४५ है इस । साबा-संस्कृत । विषय-श्रायुर्वेद । रचना काल-४ । तेखन काल-स० १६२७ पीत्र सुदी १४ । वेष्टन नं० ४४८।

४६१. त्रिंशतिकाटीका—पत्र संख्या-२२ । साइज-११हें×४६ इम्ब । साषा—संस्कृत । विषय—न्नायुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० ४५⊏ ।

विशेष-सपतराम छाबडा ने प्रतिलिपि की थी।

श्रन्तिम पुष्पिका-इति श्री श्रमुतप्रम सूरि विरिषत योगशत । सपूर्ण ॥

सं० १८४५ का वर्षे शाके १७२० प्रवर्तमाने मासानामाशुममासे दुर्तियश्रावणमासे शुमे शुक्षपत्ते तिथी षष्टम्यां भगवासरे लिखितं संपतिराम श्रावक गोत्र छावडा निज पठनार्थ ।

४६३. रसरत्नसमुच्चय-पत्र सख्या-१३२। साइज-११३४४ इश्र । माषा-सस्कृत । विषय-श्रायुर्वेद । रचना शक्ष-४। लेखन काल-सं० १८१२ चेत्र सुदी ३। पूर्ण । वेष्टन नः ४४६ ।

विशेष--ग्रलाबचद छावड़ा ने जयपुर में मघानीराम तिचारी की प्रति से लिपि की थी।

४६४. रससार—पत्र संख्या—ः । साहज-१०×४% इख । साषा-सस्कृत । विषय-श्रायुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७६६ । पूर्या । वेष्टन नं० ४५४ ।

विशेष-

प्रारम्म -- श्री गोहोपार्वनाथाय नम पंडित श्री १ मावनिधानमणि सद्गुरुन्य: नमः।

भन्त — इति श्री रससार प्रथ निर्विषम् भनभूतिसमीहतम् बहुशास्त्रसम्मत सम्पूण ।

४६४. रोगपरीत्।--पत्र संख्या-७। साइज-१२×१६ इख । साषा-हिन्दी संस्कृत विषय-म्रायुर्वेद । रचना काल-х। लेखन काल-х। त्रपूर्ण । वेष्टन न० ४४७।

४६६. वैद्यजीवन — लोलिम्बराज । पत्र संख्या - २६ । साइज - १२×४ है इस्र । भाषा - संस्कृत । विषय--भायुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-स० १ - १३ श्रासीज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष--- रलोकों के ऊपर टीका दी हुई है।

४६७. सर्वेज्वरसमुच्चयद्र्पेगा—पत्र संख्या-१८। साईज-१२×६ इस । माषा-संस्कृत । विवय-, बायुर्वेद । रचना काल -× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५२ ।

विषय-गणित शास्त्र

४६८. षट्रिंशिका—महावीराचार्य । पत्र 'ख्या-४५ । साइज-११×४३ इम्ब । मापा-संस्कृत । वषय-गणित । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६६४ श्रासीज सुदी = । पूर्ण । वेष्टन न० ४६५ ।

विशेष—सवत् १६६५ वर्षे श्रासोज सुदी = ग्ररो श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे म० श्री सकलकीर्तिदेवा । तत्पट्टे म० श्रुमचन्द्र देवा तत्पट्टे म० सुमतिकीर्चिदेवा तत्पट्टे म० श्रीग्रणकीर्चिदेवा तत्पट्टे वादिमूषणदेवारतद्गु क्याता व० श्री मीमा तत् शिप्य व० श्री मेघराज तत् शिप्य व० केशव पटनार्थ । व० नेमिदाम की पुस्तक है ।

४६६. प्रति न २२ । पत्र सल्या-१८ । साइज-११४४ दे इस्व । लेखन काल-१६३२ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६६ ।

विशेष—प्रति पर खत्तीसी टीका मी लिखी है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है.—

सवत् १६३२ वर्षे जेप्ठमासे शुक्लपछे नवम्यां तिथी ग्रुक्वासरे इलाप्राकारे श्रीसमवनाथचैत्यालये श्री मृलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टान्तसरिण म० श्रुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमतिकीर्तिदेवा तत्रिएप्य व० श्री सुमतिदास लिखापित शास्त्र । मट्टारक श्री ग्रुणकीर्ति शिप्य श्रीम्रिनिश्रृतिकीर्ति पुस्तकं ।



विषय-एस एवं अलंकार शास्त्र

४७०. इश्किचिमन—नागरीवास । पत्र संख्या-३ । साइज-११ई×४ इश्च । मीषा-हिन्दी पप । विषय-शृंगार रस । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्ठन नं० ४३⊏ ।

> प्रारम्म — इस्क उसी की भलक है उथीं सूरज की धूप । जहां इस्क ताहां श्रापहं कांदर नागर रूप ॥१॥

कटु कीया निह इस्क का इस्तमाल संवार । सी साहिव सू इस्क हैं किर क्यों सके गवार ॥ ॥

श्रन्तिम—जिरद जहम जारी जहां नित लोह का कीच ।

नागर श्रासिक लुट रहे इसक चिमन के बीच ॥४४॥

चलें तेज नागर इक हैं इसक तेज की धार।

श्रीर कटें नहीं बार सो कट्टें करें रिमज़ार ॥४४॥

४७१. कविकुलकंठाभर्गा—दूलह । पत्र सख्या-११ । आइज-६×० है इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रलंबार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०२ ।

प्रारम्म-पारवती शिव चरन में किव दूलह किर प्रीति ।

थोरे क्रम क्रम तें कहे श्रलकार की रीति ॥१॥

चरन वरन लझन लित रिचरी क्यों करतार ।

विन भूत्रन निह भूत्रई किता विनता चारु ॥२॥

दीरघ मत सत किवन के श्ररथा से लघु तरन ।

किव दूलह याते कियों किवकुलकटामरन ॥३॥

जो यह कटामरन को कठ करें सुल पाई ।

समामध्य सोमा लहें श्रलकृती ठहराई ॥४॥

चद्रादिक उपमान हें चदनादिक उपमेय ।

नुन्य श्ररध वाचक लहें धर्म एक सो लेय ॥४॥

मध्य—श्रश्तुत वरने प्रससा लिए प्रस्तुत की ।

पचधा श्रश्तुत प्रससा होति चाहे ते ॥

पष्टिन में याही तें बढ़ों है राजहस ।

एक सदा नीर छीर के विवेक श्रवगाह ते ॥

प्रस्तुत में प्रस्तुत को पोतन जहाई होइ

प्रस्तुत अङ्गर तहां वहनी उछाह ते ।

पूर्ती स्प रही मसी गालनी समीप तें

थहीं कमेर कहीं के हुटेत हाई ने ॥३२॥

श्रीताम—एस्ता उदारिता की घटभुत बर्तन । निष्यास्य चित उति मार्वे सद लीउ है ॥ टार्नि हैं हैं जावक हुवे रक मेरे तेज । स्में सिथ तेरी रिष्ट रानी करि मीय है।।
नाम जीन भीरे धर्म थापिए निरूकि।
सांचे गुपाल मए जी रध्यो राधे मी वियोगु है।
प्रगट निर्पेश की धर्मक्मन प्रतिषेश।
गिर गरियो नेवी नेवी सी मामिन की मीय है।

४७२. चैनिनिलास-नागरीदास । पर रगया-६ । महन-१०ई८४ इस । मारा-हिदी वस । विषय-ध गार । रचना काल-४ । क्षेत्रन फाल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३७७ ।

विशेष--- आरम्भ के ४ पर्यो म रनेइसमाग प्रनापतेज एन दिया है जिसके २४ पदा है। इमें सं० १८६८ से छोटलाल ठोलिया ने ३ पाने में सहीदा था ॥१॥

स्तेहसंगान—प्रारम्भ— इ डलिया —

मों हे बाका बाक्या लवा कु ज की घोट ।

समर गरत बिहुजा राग्यो लालन लोटिह वोट ॥

लालन लोटिह वोट चोट जब उर में लागी ।

क्यो हियो दुस्पार वीर प्राप्त में वागी ॥

मजनिधि बाकेजीर दीत में खड़े थगोहे ।

तहां घाज पर घाव करत रावे की मोहे ॥ ॥।

श्रितिम—नेही गुजनिधि राधिका दोउ समर सधीर हेत खेत छाउत तही छाके माके वीर ॥ छाके बाके वीर हम्य वय्य न मिर्डिट्टे । ' दोऊ कि पिरे दाव बाव खिन हूँ नहि छुटे ॥ यह सनेह समाम सनत चित होत विदेही । प्रताप तेज की बात जानि है सुधर सनेही ॥ १॥

वैनविलास-प्रारम -

श्रहे बावरी वसुरिया ते तप फीनों कीन । श्रधर सुधारस ते विमो हम तरफत विच मोन ॥॥॥

श्रितम - मुरली सुनित में भई श्रास् द्रगनि विसाल ।

मुख थावें सोही कहे त्रेम विवस वज वाल ॥२६॥

नागर हरिह पलाग की दारु धरी दवाय ।

अग राग वशी लपट्यो ही चिउडी नम काय ॥३०॥

क्षि श्री नागरीदास छत वैनविलास सपूर्ण ।

रस एव श्रलंकार शास्त्र]

४७३. रसिकप्रिया केशबदास । पत्र सख्या - ४६ । साइज - १२३ ४५ इस । मापा - हिन्दी पद्य । विषय - १८ गार । रचना काल - ४ । लेखन काल - स० १७३३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६ = ।

विशेष—पद्य सल्या—६२४ हैं। मिश्र श्रामानेरी वाले ने वसवा में प्रतिलिपि की थी। स्वामी गोविंददास की पोधी से प्रतिलिपि हुई थी। स० १८६८ माह मुदी १ को छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने सवाई जयपुर में १॥) रू० निष्टराविल देकर यह प्रति खरीदी थी।

४७४. श्रंगारतिलक-कातिदास । पत्र सख्या-४ । साइज-१०४४ देश्य । सापा-सस्कत । विषय-श्र गार । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेण्टन न० ४०६ ।

विशेष- २३ पद्य हैं।

४७४. शृगारपच्चीसी— छविनाय । पत्र सख्या-६ । साइज-१०३४४ इस । मापा-हिन्दी । विषय-र्थंगर । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० ४७४ ।

प्रारम्म—कोकिल न हो हिये मतंग महा मस्तक कै।

वात मानु मत्र को वताई मली वस्त है।।

फूलें न पलास लाल पौप श्राइ फेलि गये।

जग चहुंधा राखिने को वसी दस्त है।।

मेरी समभाई हिल भिल प्यारी पीतम सीं।

कानि काम मूपित की मान नो प्रस्त है।।

कहें छिनाय श्राज नकसीय सत छेडि।

मान गड परत करिने नी नरी करत है।।१॥

श्रन्तिम—छाडि मकरद कमलन के मरद मई पाइ के ।

सुगध जाको हरत न टारे हैं ॥

खजन चकोर मृग मीन सेदखत जाहि ।

चौकत से जहां तहां छपत निचारे हैं ॥

कहें छिवनाथ छित्र अगन की देखि ।

जासों हारि गई तिलोचमा जाने जग बारे हैं ॥

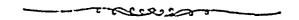
प्यारे नंद नंदन तिहारे मुख चद पर ।

बारि बारि डारे बिह नेनन के तारे हैं ॥ २ ॥।

दोहा— माधव नृव की रीम्त को कवि हाविनाय विसास । कीन्द्रे रस श्रुगार के कवित्त पर्चीन समात ॥ - ६॥ रित क्षी मम्भहाराजाधिराज धी माध्येश प्रसम्बता ग्यवरमावक गीविंद्रदासा मज विध द्विनाम विर्निता श्र गारपण्चीसी सोमते ॥ विजेय नाम सन्तरसर दिश्णायणे हेमंत श्राती पीयमांग श्रुवसविं दितीया श्रुकवासरे विभित्तिवंद पुस्तकं ।

महाराजा माधवसिंह के प्रसद करने को गोविंददास के पुत छविनाम ने रचना की थी।

४७६. हृतयातीकतीचन-पत्र संख्या-१६ । साहज-१०×८ द्वा । मापा-मस्वृत । विषय-धर्महार । स्वना काल × । लेखन वाल-× । धर्ण । बेप्टन न० ४७० ।



स्फुट-रचनायें

४७७. अकलनामा-पत्र संख्या १। साइज-११×६६ इम। मापा-हिची सस्टत। विषय-स्फुट। सचना काल-×। लेखन काल-×। त्रपूर्ण। वेष्टन २०४२०।

४७=. श्रव्हरवत्तीसी-मुनि महिसिंह । पत्र सस्या-२ । साइज-६ई×४६ इस । माया-हिन्दी पच । विषय-स्फूट । रचना काल-स॰ १७२५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न॰ १६६ ।

विशेष यन्तिम पष-

सतरहसई पच्चीस सवत् कीयो बखाण । उदयपुर उद्यम कीयो मुनि महसहि जाय ॥

४७६. ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका-पत्र संख्या-१०। साइज-१-१×६ है इत्र । मापा-हिन्दी । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेप्टन नं० ३१२ ।

४८०. गोरसविधि - पत्र सरूया-४ । साइब-६ र्५×४ र्ई इस । मापा-संस्कृत । विषय-विधान । रचना काल-× । लेखन काल -× । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

४८१. गोत्रवर्णन-पत्र संख्या-१०। साइज-६×३ इस । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-इतिहास । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० १८४।

विशेष - गोत्रों के नाम दिये हुये हैं।

४८२. चौरासी गोत्र - पत्र सख्या-१। साइज-२१ई×१० इख। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। रचना काल-×। लेखन काल-स०१८६२। पूर्य। वेष्टन न०१८४।

विशेष-खरडेलवालों के चौरासी गोत्रों के नाम हैं।

४८३. चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन-सन्दनन्द् । पत्र संख्या-१२ । साइज-६४३ है इख । भाषा-हिन्दी पद्य विषय-इतिहास । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

विशेष-पद्य संख्या-१११ है। खण्डेलवालों के ⊏४ गोत्रों की उत्पत्ति का वर्णन है।

प्रारम्म दोहा —श्री युगादि रिसमादि ग्रुण, सरण श्राय ग्रुण गाय ।
श्रावक नंस सुत्रंथ रिच श्रुतुल सु सपित धाय ॥१॥
वैस्य वरण में उच्य पद, धर्म दया को पामि ।
श्रय करयान श्रावक प्रगट, रच्ये गोत्र कुल ग्राम ॥२॥

छद-श्रावक जत तीर्घ कर सेय सुच्यारिह वर्ण स पालत है।
च्यार ही वर्ण सुकर्म िकया तब मुिक गया स मालत है।
श्रीवरवर्द्ध स मान्य स स्वामी छ मुिक गया सम तालत है।
फेर सुवर्स छह सतीयासिंह वा तब मुिन प्रगटालत है।

चौपाई— अपराजित मुनि नाम मुस्वामी । यान सीधाडा मध कहामी ॥
अपराजित मुनि तप स प्रमाक । जियासेनाचार्य स मये ताक ॥
अी जियासेनचार्य तव होये । सवत येक साल मध्य जोये ॥
जियासेनाचार्य स मध्य सारा । छह सात मुनि काछ सिधारा ॥
प्रमु पदम पद्म ध्यान तहां धर्ता । श्री जिया जोग रट्या मुनि कर्ता ॥
फिर अवसर इक असहु श्राया । प्राम खडेला वन मधि श्राया ॥
मुनिहुँ पाच सह पक्तावित तह । भूत मविषत वर्त ज्ञान लह ॥
मूनी सकल सुनि मुनि की वानी । हेगी यह उपसर्ग पिछानी ॥
होनहार उपसर्ग अठही । होनहार नहि मिटे कठही ॥
मावधान मुनि ध्यान सुहावा । जोग सु ध्यान समर्थ सु जूवा ॥
प्राम लगे चतुरासि खडेले । ताहां इक विध्न मरी उपजेले ॥
ताहां नरनारी बहुत अति होये । ताहां त्रपति चींता उपजोये ॥
तवे त्रपति सब वीप्र वृत्वाये । विध्न मिटे सो करो दुजोये ॥

तम इक बीप कही सुचि राज्ये। नरिह मेघ को जहां कराज्ये॥ तव उह त्रपति वाक्य सत्य कीन्हों । नरिह सेघ सायत रचि दीन्हो ॥ नर सब चौरासी के श्राए । बध्यो विम ताहा घडोत कहाये ॥ दुल्य कहि ज्रपति मनुष सत चाहै। मिटै विद्या यह होन कराहै।। ताहा मुनी तप करें मु त्याक । पकडि मंगाय होन क्यि दयाक ॥ हाहाकार वोहोत तहां होयो । जपति दुप्टते काहा कर थोयो ॥ तव वाहा सुनिराज सब धाये। जैनसैन धाचार्य ताहाये॥ वडा वडा सब मुनि का स्वामी। जीग ध्यान श्री श्रंतरयामी॥ नगर सुफल सघ्यान लगायो। चक्रोस्री स जाप जजायो॥ महूरी गुष्टो जिन थापन कीनो । शांत मई त्रप ग्यान उपीनो ।। तन श्राय जप बदन कीनी। इसा करो श्रपराध प्रनीनी॥ त्रपति कहें मुनिराज दयाल । विन्न मिटै सी करो कृपाल ॥ त्रप स कही मनी सर बानी। लग्यो पाप मात्रप की धानी।। स्व श्रातम कत नींदत राजा। परची पाय प्रनि के छ समाजा।। कही भूप मम श्रष मेटो। तुम पारस्य मुनिराज सु मेटो।। कही मुनि सुनि हे त्रप राजा। श्री जियधर्म सर्य तुव श्राजा।। दया रूप जिण धर्म प्रकासा । मिटे पाप युधि निर्मेल मासा ॥ श्रावक धर्म ज्रपति मुनि लीन्हों । मीटे पाप निर्मल अग तीन्हों ।। नगर खडेल गांव वयासी। बंट्या छा छन्नी त्या वासी।। द्वय सुनार षट्या छा त्याही। कही भूप ये दोउ न्याही।। दोउ केंद्र दीहाडी न्यारी। श्रावक घर्म मूल सुसकारी।। इक कही श्रामणी देवी। दुजा कम्रु मोहणी तेवी।। चोरासी सुगोत्र श्रावक का । नोके रची मली युधि सुखका ।। गोत्र वस ऋर नाम की हाडी। जिएस धर्म तर नीकी वाडी।।

श्रन्तिम — सवत १८ सह गिनो श्रन्थनीवासी साल।
चैत कम्न तेरिस ग्रन सम प्रथ पूर्णाल।। १०६।।
मन विक्षित पठियो सुनै कुल श्रावक ग्रथसार।
नद नद देदत सुख, न देना निर मार।। ११०।।

इति श्री मंग श्रावक गोत्र गुण सार नद नद रचिते सपूर्ण । सम ॥

लीखी गरोश लाल कवी स्वतं कृत । लिखायतं राज्य श्री चपाराम का नद चिरजीव ।। पुत्र पौत्र कुल वृद्धि सुख सपित कल प्राप्ती सत्येव वाक्यं ।। १११ ।।

४८४ जैनमार्तेग्डपुराग्-भ० महेन्द्र भूषग्। पत्र सल्या-१०२ । साहज-१२४६ इश्व । माषा-सरकृत । विषय-सिद्धान्त एव श्राचार । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १८४३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

विरोष-- म॰ महेन्द्रमूष्या ने प्रतिलिपि कराई थी । प्रन्य का दूमरा नाम कर्म विपाक चरित्र भी है।

प्रारम्मः — श्रखहात्मप्रज्ञानलजनितः तीन्नातिशयितञ्चलः ।

ञ्वालावलीनिचय परिदग्धाखिलमलः ॥

महासिद्धः सिद्धः कृतचरणपंकेरुहनुति ।

महावीरस्वामी जयित जगर्ता नाथ उदत ॥ १॥

श्रन्तिमस्तीर्थकरो महात्मा महाशय शीलमहांद्वराशिः ।

नमोस्त तस्मै जगदीश्वराय श्रीमन्महावीरजिनेश्वराय ॥ २॥

श्रन्तिम पुष्पिका—इति श्रीमज्जैनमार्तंडमहापुराणे श्रीमद्भष्टारक जिनेन्द्रभूषण पट्टाभरण श्री भट्टारक महेन्द्रभूषण इतिय नाम कर्नविपाक चरित्र कृते चित्रांगदायि मोचशान्तवर्णनो नवमोऽधिकार समान्तोयंग्रंथ ॥

४८४. नंदवत्तीसी—हेमविमल सूरि। पत्र संख्या-४। साइज-१०४४ इस। माषा-हिन्दी। रचना काल-स० १६६०। लेखन काल-स० १६ : । पूर्ण । वेष्टन न० २०४।

प्रारम्भ-गामा-

श्रागमनेदपुरायामग्गे जजकवति कनीयया तं शारद तु पसायछ ।

दूहा—पहिलंड प्रयामंड सरसती, जगवित लील विलास ।
श्री जियावर शंकर नम्म माँग वृद्धि पयास ॥१॥
श्रापीय श्रविरल बृद्धि धर्य जन मन रंजन जेह ।
नंद वचीसी जे म्रुयंड चरीयर चपुरि तेह ॥२॥
नयरागर श्रहि ठाया जे तेह तथा वोलेस ।
नंद वचीसी मुपई एहज नामठ व्योस ॥

चौपई—पुर पाडलीय नगर श्रभिराम । पुहिव प्रगटउ जेह तु नाम ।।

वरण वरण विसे तहां लोक । जाणस जाण तणा तिहां थोक ॥

सजल सरोवरिन वन खड । राजा लोक न लेवि दड ॥

गट मट मदिर मैंडी पोलि । चुरासी चहु टा नीरा डिल ॥

श्वित्तम—हीयिं श्रित कमाहुँ करी । नदरायत वील्यु चरो ॥

स्य विनोद कथा स्वर्ष । नद वचीसी स्वर्ष ॥११॥

तप गछ नायक एह सुर्थिद । जय श्री हेम विमल स्रद ॥

हान सील पंडित सुविचार । तास सिस्य किह यह विचार ॥

सवत १५ साठा मभार । चैत सुदि तेरिस वार ॥

जे नर विदुर विसेप सुर्यि । मुनिवर कुल सघ मणि ॥

भयातां ग्रयतां लहीर बुद्धि बुद्धि सयल काज ती सिद्धि ॥

वस्रुधि फलीइ विद्यत सदा नितु नवर सपदा ॥१४४॥

॥ इति विनोदे नद वचीसी सुपूर्व समान्त ॥

सवत् १६ श्रीमत् काष्टासघे नदीतदृगच्छे विद्यागये म० रामसेनान्वये तदाम्नाये म० उदयसेन तत्पट्टे म० श्री त्रिभुवनकीित्त तत्पट्टामरण वादिगजकेसरी उमयमाषाचकवर्ति म० श्री रत्नभूषण नरसिंह पुरा झातीय सांपढीया गोत्रे सा० योगा मार्थ्या विनादे सूत ब्रह्म श्री वछराज तिसन्य ब० श्री मगलदास ।

४८६. दशस्थानचौवोसी—द्यानतराय। पत्र सल्या-७ । साइज-८४६ इस्र। माषा-हिन्दी। स्वना काल-४। लेखन काल-स० १६४४। पूर्ण । वेष्टन नं० १२४।

विशेष—चौनीस तीर्पंकरों के नाम, माता पिता के नाम, ऊचाई, श्रायु श्रादि १०, वार्तो का वर्णन है। मीठालाल शाह पावटा वाले ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४८७. समयसार कलशा— श्रमृतचद्र । पत्र सख्या-१४ । साइज-११६४५६ इत्र । माषा-सस्कत । विषय-श्रध्यातम । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८८ ।

४== पद्मनिद्पचिविंशतिका—पद्मनिद्। पत्र सल्या-४६ । साइज-११ई×४ई इम्म । माषा-सरकत विषय-धर्म । रचना काल-× । सेखन काल-× । मपूर्ण । वेष्टन न• १ ।

विशेष-- १०५ से श्रागे के पत्र नहीं हैं। ? प्रतियां श्रीर हैं।

४८६ पचदशशरीरवर्णन - पत्र सख्या-१ । साइज-११ई×४६ इस । माषा-सस्कृत । विषय-स्फुट । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्य । वेष्टन न० ७६ ।

४६० प्रतिक्रमण सूत्र । पत्र सख्या-४ । साइज-१०×४६ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेप्टन न० ४१० ।

४६१ प्रशस्तिका--पत्र सरूया-१६। साइज-६×४ इश्व। माषा-सस्कृत। विषय-विविध। रचना वाल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४२३।

४६२ फुटकर गाथा—पत्र सल्या-२। साइज-११४४ दृ इञ्च। भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-४। लेखन काल-४। पूर्ण वेष्टन न० ४२५।

४६३. बारहत्रतोद्यापन (द्वादस व्रत विधान)—पत्र सख्या-४ । साहज-१०ई×५ इख । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा ा रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८७ ।

४६४ **वारहखढी--सूरत**। पत्र सख्या-१६। साइज-७ है×४ र्दे इख । माषा-हिन्दा । विषय-सुमाषित रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेष्टन न० १२४ ।

४६४ भावनावन्तोसी--श्रमितिगति। पत्र संख्या-३। साइज-१०५८४ इख। भाषा-सस्कृत। विषय-चितन। रचना शल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन न-३६१।

विशेष--- पद्य सल्या ३३ है।

४६६. मानवर्णन — पत्र संख्या-५। साइज-१०१४ इख। भाषा-संस्कृत। विषय-स्फुट। रचना क्वाल-४। लेखन काल-४। पूर्ण। वेष्टन नं० २२२।

४६७. मालपचीसी—विनोदीलाल । पत्र संख्या-४ । साइज-६५४ १ इस्र । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-४ । लेखन काल-स० १६०४ पीष सुदी ११ । श्रपूर्ण वेष्टन न० १८४ ।

४६८. सास बहु का मागडा — देवात्रहा । पत्र सख्या-१ । साइज -११×१६ इस्व । माषा-हिन्दी । विषय-समाज शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न ०४३८ ।

विशेष—देवानहा यो देखि समासो ढाल वएगाई सार। मात पिता की सेवा कीच्यो कुलवता नर नारी।।१७॥ सांची बात कह छू जी।।

४०० लीलावती--पत्र सख्या-ः । साइज-१०१४४ इख । माषा-सस्कृत । विषय-गणित । रचना काल-× । लेखन काल-× , पूर्ण । वेष्टन न० ४६२ ।

विशेष — सकमण सूत्र तक दिया हुआ है।

४०१ स्नानिविध—पत्र सस्या-४४ । साइज-८५ ३३ इख । माषा-प्राकृत सस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६४ ।

प्रति प्राचीन हैं।

४०२. समस्तकर्मसन्यास भावना--पत्र सख्या-७ । साइज-१०ई×१५ इख । मापा-सस्कृत । विषय - श्रध्यात्म । स्वना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३४६ ।

श्लोक सख्या-१३३ हैं।

गुटके एषं संयह गृन्थ

वहुरी जल लेन सरूग नहीं, ईसु चढाई जे जिन पद जाप || तो वस्त करी भिन जैन का || १४१ ||

श्रन्तिम पाठ— ग्रहो वृदी जी नग्र हाडा तनीं थान, राज करें प्रथिसिंह कुल मातु।
पोन छत्तीस लीला करें, गट श्रद कोट वन उपवन वाय।
सहल तलाव देवल छत्रां, श्रावण धर्म चलें वहु माय। तो वरत०।।
श्रहों जगत कीरित मट्टारक परमान, मृल सघी सरस्वती गच्छ जान।
तो कु दकु दा मुनि पाटई, ब्रह्मचार श्राचारिज पिडत माय।।
श्रीर श्रारियका जी सग में, मानत श्रावग यह श्रमनाय।। तो०।।
श्रहों पार्श्वनाथ चैत्याली जी गाय, तहां पिडत तुलसी जी दास रहाय।
तो सास्त्र समृह विषा धणी करह, निरतर धर्म दिद्राव सुख स्यों काल पूरण करें।
तास चरचा रिच गंथ पसाव॥ तो।।।

श्रहो साह मामा सुतधर धनपाल, ताको चतुरभुज रूप दसाय।
तो सुत दौलितराम हुन कछुयक, जिन ग्रुण किं श्रमिराम।।
वस्त विधान रासो रच्यो, ताके पुत्र हरदेराम सटाराम।। तो०।।
श्रहो पाटणी गोत प्रसिद्ध मही माही, खडेलवाल जिन म तिय कहांहि।
तो श्रावग धर्म्म मारग माले, करिह चरचा जिन वचन विलास।
श्रोन धर्म नहीं ऊचरे, सहु परिवार वृदी गढ वास।। तो०।।

× × ×

श्रहो सवत् सतरासे सत सिंद लीन, श्रासोज सुकल दशों दिन परवीन ॥
तो लगन प्रहुरत सम घरी वार, ग्रक वार नचत्र जो ता माहि॥
प्रथ पूरण भयो भविष सबोधन यह उपयोग॥
श्रहो दोय से इक्स्या जी छद निवास, सातसे पचास सख्या ताम॥
तो एक सो इक्सिठ तामे तप क्या, जीलतराम विविध वृरणाय॥
मिव करि मन वच काय सीं, श्रमुक्रम सर सुख शिव पद पाय॥ २००॥

।। इति श्री व्रत विधान रामो सगही दौलतराम कृत सपूर्ण ।।

- (२) १४= वर्तों के नाम पत्र सख्या २३-२४।
- (१) पूजा स्तोत्र सम्ह---पय मरुया-१ से २५१ तक ।

विशेष— ६३ प्रकार के पाट व पूजा स्तोष श्रादि का समह है। गुटका के कुछ पत्रों की सक्या २७४ है।

४०४. गुरु हा न० २- पत्र पस्या-२४ । मार्ज-=र्×६ इन । भाषा-हिन्दी । लेखन वाल-х । अपूर्ण ।

विशोष---श्रायुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं। एव मश्रों का सकतन है। सभी मत्र श्रायुर्वेद से सम्बधित है। स्तोत्र श्रादि मी हैं।

५०६ गुटका न० ३---पत्र सख्या-२=। साइज- >×१ इत्र । मापा-प्राकत-परकृत । लेवन काल-×।

विशेष-नित्य नियम पूजा पाठ हैं।

४०७ गुटका न० ४--- पत्र सख्या-६० । साइज-६×६ इस । मापा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । निम्न पाठों का समह हैं ---

(१) ज्ञानसार—रघुनाथ । पत्र स० १ से ३४ । भाषा-हिन्दी । पद्य सख्या-२७०।

प्रारम्भ - छप्पय छंद---

गनपित मनपित प्रधम सक्ल शुभ पल मगलपर ।
स्तरमित श्रित मित गृढ देत श्रारूढ हस पर ॥
निगम धरन जग भरन करन लगि चरन गगधर ।
श्रमर कोटि तेतीस कहत रघुनाथ जोरकर ॥
भिव तिरन हरन जामन मरन मरिन जानि इह देह वर ।
श्री हिर पद की पीऊ ग्रनिन गाऊ मन वच काय कर ॥१॥

दोहा—हिर दरसावन सब सुखद श्रघ हर ज्ञान उदोत ।

गगनीर गुरु के चरन छुवत सुधि गित होत ॥२॥

तुम सर्वज्ञ दयाल प्रभु कहो कृपा किर बात ।

श्रमत रूप हिर गिति श्रलख लखे कौन विधि जात ॥३॥

तब श्रपनो जन जीनि मन मीनि करी प्रतिपाल ।

स्त्रे दयाल तिह काल कर बोले बचन रसाल ॥४॥

सत दशा वर्णन - सबैया-

जग सीं उदास मन वास किये नास मन, धारत न थास रघुनाथ यों कहैत है। कोधी से न कोध, न विरोधी से विरोध, निहं लोगी सो प्रमोध नित धेंमे निवहत हैं॥ जीव सकल समानि समम्मे न कहु श्रतुराग दोग, श्रमिमान प्रम तो देहत है। ज्ञान जल मजन मलीन कर्म मजन के, राचे है निरजन सो, अजन रहत है॥१०६॥

विन जाने वहु दुख है जाने तें उडि जात । तीन काल में एक रस सो निज रूप रहात ॥१ = ७॥ गृह त्यागी रागी नहीं, सागी अस जग शीति । हरि पागी जागी सबुधि इह वैरागी रोति ॥ > १ ७॥

श्रन्तिम पाठ — असो हरि को निज धर्म सुनि मन मयो हुलास ।
ताते इह भाषा करी लघु मित राधो दास ॥२६४॥
ग्रनी मुनी पिढत किव चतुर विवेकी सोथ ।
कियो प्रन्थ उनमान विधि छिमा सकल श्रपराध ॥
विक्त जुक छद गित माव वरन गन हीन ।
इक ग्रन हरि को ग्रन वरन ताते गुन्यो प्रवीन ॥२६६॥
सतरसे चालीसित्रिय सवत् माघ श्रन्य ।
प्रगट मया सुदि पचमी ज्ञान सार सुख रूप ॥२६७॥
सनत गुनत जे ज्ञान सत नसत श्रस्त अम रूप ।
मत्र नावत गावत निगम पावत ब्रह्म सक्य ॥२६८॥
सुद्ध श्रपार श्रधार सव सोखन सक्ल विकार ।
पार करत रूसार सर महासर को सार ॥२६८॥
राघव लाघव केरि करि कहत सव सतन सो ज्ञिक ।
श्रमे दान धो जानि जन सत सग हरि मिक्त ॥२७०॥
॥ इति ज्ञानसार रघुनाय सा० इत सपूर्या ॥

(२) गण भेद-रघुनाथ साह। पत्र सख्या ३। भाषा-हिन्दी पद्य विषय-छ द शास्त्र (पत्र २४ से ३७ तक)। पद्य सख्या-१४। पूर्ण।

प्रारम्भ-गवरिनट श्रानन्द कर विधन धाय बहु माय ।
श्रादि कावि के राज किन मगल दाय मनाय ॥१॥
प्रथम चरित्र त्रजराज के गाय सु मन बचकाड ।
जन्म सुधारिड धारि कुल कल मल सक्ल नसाड ॥२॥
हिर गुन मेद विना श्रमल फल दुह लोक श्रपार ।
रहन सक्त नर कवित्त विनि तिन मधि विवधि विचार ॥३॥

मध्य साग दोहा—शष्ट गणागण श्रमस्फल श्रमुस च्यारि शुम च्यारि । राधव मनि विवे राज सनि धरह विवारि विवारि ॥१०॥ अन्त भाग — स्रणत गुणत गृंध मेद की रघा प्रकासत बान । हर जस क्वि रसे रीति की पावत सकल सजान । १५॥ ॥ इति श्री रचुनाय साह ऋत गण मेद सपूर्ण ॥

विशेष—हद शास्त्र की सित्तप्त रचना है किन्तु वर्णन काने की शेंली धच्छी है।

(३) तित्य विहार (राधा माधो) रघुनाथ-पत्र सख्या-१। माबा-हिन्दां पर्छ। पद्य स० १६।

पूर्या ।

श्रारम्भ—छद चरचर्रा राजत अज रूप अग अग छिन श्रनूप।

निरक्षि लजत काम भूप वहु विलास मीने।।

रत्न जिटत मुक्ट हारक मिन श्रमित वरन।

कु डल दुति उदित करन तिमर यरत छीने।।१॥

माल तरल तिलक लस्त मीहे छग अग रिसत।

नेन चपल मीन चिसत नाशा शुक मोहे।।

कु द क्ली दसन रसन वीरी छत मद हसन।

कल कपोल श्रधर लोल मधुर बोल सीहे॥।।

धन्तिम — जे जन श्रघ नाम रटत मगल सब सुपनि जटत ।
श्रघ कटित जम जार फटित जगत गीत गावें ॥
श्री वाल मित्ति विहार श्रानट तडर जे उदार ।
राघो मय होत पार प्रेम मिक्क पावें ॥ १६॥
॥ इति राघो माधो निल्य विहार सपृण ॥

विशेष रचना शुगार रस की है।

(४) प्रमग सार—रघुनाथ। पत्र संस्था-४३ से ४६ तक। भाषा-दिन्दी पद्य। पद्य संस्था-१६०। रचना काल-स० १७४६ माघ सुदी ६। पूर्ण।

प्रारम्म — एक रदन राजत वदन गन मगल सुख कद ।

रावन रिधि सिधि वृधि दे नव निस गनरी नद ॥१॥

वानि गति वानीनते कास बखानी जात ।

हिर मानी रांनी सकल वर दानी जग मात ॥२॥

गुरु सत गुरु तीरम निगम गगादिक सुख धाम ।

देव त्रिदेव रखी सुमनि प्रत सबके काम ॥३॥

सीस नाय सब गाय हो राघो भिन इह रीति । सकल देव की सेवकीं फल हिर्देषद सौं प्रीति ॥४॥

श्रितम पाठ—िनस दिन रिच पिच मरत सठ सवको इह उनमान ।

सवल जानि मन जानि मन राधा मजो मगत्रान ॥१५६॥

भजिन मजे तिन तें मजे पाप ताप दुख दानि ।

मागवत भगत्रत जन ग्यान वत सो जानि ॥१५७॥

सव सुख ज्ञत सुंदर सुमत सतरासें गुनचास ।

भोयो माघ सुदि पचमी सार प्रसग प्रकास ॥१५८॥

रग रग वहु श्रग के वरने विवधि प्रसग ।

छने गुने सुख में सने श्रित रित हो सतसग ॥ १५६॥

अग उधारत गग ज्यों मिलन कर्म किर मग ।

उिक्त जिक्त हिर मिक्त हो सभक्ते सार प्रसग ॥ १६०॥

॥ इति श्री रच्चनाथ साह कृत प्रसगसार सपूर्ण ॥

विशेष - रचना सुमाषित, उपदेशात्मक एव भक्ति रसात्मक है।

४०७. गुटका न० ४—पत्र सस्या-८०। साइज—=र्×४ इश्च। मापा-सस्कृत हिन्दी। लेखन काल-×।

विशेष-केवल नित्य नियम पूजा वाठ हैं।

४०= गुटका न० ६—पत्र सरूया-२४ । साइज-=×६ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १६६३ मादवा बुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—वारह मावना, इष्ट छत्तीसी माषा, मक्तामर माषा, निर्वाणकंडमाषा एव समाधिमरण श्रादि पाठों का सम्रह है।

४०६ गुटका न० ७--पत्र सरूया-५४ | सण्डज-=५×६ इख | माषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १=३६ मगिसर सुदी ६ ।पूर्ण ।

विशेष - रामचन्द कत चौबीस तीर्थ करों की पूजा है।

४१०. गुटका त० ८—पत्र संख्या->३ । साइज-६×१ इस । सापा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

(१) वैराट पुराण-प्रभु किव । प्रारम्भ के पत्र नहीं है ।

विरोष-प्रभु कवि चरणदासी सप्रदाय के हैं।

श्रन्तिम पाठ--कांछ मिले ते पड कहाये, रुधिर श्र उटी पीछे मरकाये। क्वन पवन तें वाक उचारा, क्वन पवन के रहैय श्रधारा। याको मेद वतावो मोय, प्रभु कहे ग्रुक पुछू तोय॥ ॥

(२) श्रायुर्वेद के उसखे -- सावा-हिन्दी । पूर्ण ।

४११. गुटका न०६ - पत्र सख्या-२७ । साँइज-६×६ इख । भाषा-हिदी । लेखन काल-×। पूर्ण । विरोष--यत्र चिन्तामणि के कुछ पाठ हैं ।

४१२ गुटका त० १०-पत्र सख्या-३४। साइज-४४६ इख। माया-सस्वत-हिन्दी जेखन काल->। पूर्ण।

विशेष—सक्तामर श्रादि पाठ एव पूजा समह है।

४१३ गुटका न० ११ — पत्र सस्या-७१ । साइज-= $\frac{1}{2}$ \times $\frac{1}{2}$ इख । माषा-सस्रत-हिन्दी । लेखन काल- \times । पूर्ण ।

विशेष-प्रथम तत्वार्थ सूत्र है पश्चात् पूजाश्रों का समह है।

४१४ गुटका न० १--- पत्र सख्या- । साइज- १० ई×१ इम । माषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्चाका नाम	माषा	विशेष
(१) पद	कत्रीरदास	हि-दी	
(२) शब्द व धातु पाठ सम्रह		सस्ऋत	पत्र ४४ तक
(३) लच्चण चौबीसी पद	विद्याभूषण	<i>(</i> हन्दी	
(४) षोडशकारणनतकथा	व्र॰ ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य स० ३७

प्रारम्भ-श्री जिनवर चोबीस नमु, सारद प्रयामी श्रव निगमु ।

निज ग्रुरु केरा प्रयामु पाय, सकल सत वदत सुख पाय ॥ १ ॥

पोडश कार्य व्रतनी कथा, मांपु जिन श्रागंम छे यथा ।

श्रावक सुरा जो निज मन शुद्ध, जे थी तीर्यंकर पद वृद्ध ॥ ।।

श्रन्तिम माग — जे नर नारी ए त्रत करे, तें तीर्यंकर पद श्रनुसरे ।

इह मिन पाने रिद्धि श्रपार, पर मन मोच तथी श्रधिकार ॥

पामे सकल मोग सयोग, टले श्रापदा रीरन रोग ।

श्री भूषण गुरु पद श्राधार, त्रहा झान सागर कहे सार ॥३ ०॥

विषय-सूची	कर्जाका नाम	भाषा	विशेष
(५) दशलचण वत कथा	वहा ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य स० ५५

प्रारम्भ - प्रथम नमन जिनवर ने करू, सारद गएधर श्रनुसक् । दश लच्च व्रत कथा विचार, माखु जिन श्रागम श्रनुसार ॥१॥

श्रन्तिम पाठ-ए व्रत जे नर नागे करे, विगेंते भव सागर तरे।
सकत सीख्य पात्रे नव निद्ध, सर्वारथ मन वांक्रित सिद्ध ॥ १४॥
महारक श्री भूषण धीर, सकत शास्त्र पूरण गमीर।
तस पद प्रणमी वोले सार ब्रह्म ज्ञान सागर सुविचार ॥ १४॥

(६) रत्नत्रय व्रत कथा	न॰ ज्ञानसार	हिन्दी	
(७) श्रनन्त व्रत कथा	79	97	
(=) त्रेलोक्य तीज कथा	17	79	
(६) श्रावण द्वादशी कथा	79	77	
(१०) रोहिणी व्रत कथा	7)	55	
(११) श्रष्टाहिका नत कथा	57	5 5	
(१२) लब्धि विधान कथा	"	"	
(१३) पुप्पांजलि वत कथा	27	"	_
(१४) त्राकाश पचमी क्या	3 7	99	
(१५ रका वधन यथा	5 7	"	_
(१६) मौन एकादशी व्रत क्या	77	55	-
(१५) मुकुट सन्तमी कथा	99	"	
(१८) श्रुतस्यध कथा	**	"	_
(१६) कोिकला पचमी कथा	13	,, म०	१७३६ चैत्र सुदी ६ रविवार
		को स्	रत में ब्रह्म कनकसागर ने
			प्रतिलिपि की यी।
(२०) चदन षष्टी व्रत कथा	"	11	
(२१) निशल्याप्टमी कथा	59	**	•
(२२) सुगध दशमी वृत कथा	77	"	-
(२३) जिन रात्रि व्रत क्था	77	; ;	
(२४) परुय विधान कथा	5)	57	-

२६६]			[गुटके प	एव सम्रह मन्थ
(२४)	जिनगुनसपति वत कया	17	"	
(३६)	श्रादित्यवार कथा	"	"	
(96)	मेघमाला व्रत कथा	,,	"	-
(२⊏)	पच कल्याण बढा		"	
(38)	33 33 37	-	"	
(३०)	परमानद स्तोत्र	पूड्यपाद स्वामी	सर्क्त	
		युक्त निविकार निरामय । न पश्यन्ति निजदेहे व्यवसि	यत ॥ १॥	
(३१)	वद्धीमान स्तोत्र		सस्ऋत	-
(३२)	पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	"	-
(३३)	श्रादिनाथ स्तवन	व्रह्म जिनदास	हिन्दी	
	लाख चोरासी योनि थावर चिहु गति ससार माहि पान कोध मान माया लोम इनि कुदेव कुग्रह कुशास्त्र मिथ सजन कुट्ट ब ने काज कीध तु माता तु बाप, तु ट हवें जो तुम्हें जुग देव कर	जगम ह् भम्यो ए। तुहु न्या दु खिम श्रित घणा ए द्र चोरें हु भोलव्योए। राग या मारग रजियुए। साचो ां पापिम श्रित घणाए। ते सकुर तु देव गुरु। तु म निवारो श्रह्म तणांए। र	हम साची देव त्रिमुवन स्वामी त् धगी ए न लाधो लेह ससार सागर तेह तणी ए । जामन मरण वियोग, रोग दाखि जरा तेह द्वेष मद मोह-मयण पापी घणु रोलकोए देव सुशास्त्र सह ग्रुक वयण नमे दीयुए। पातिक्नीवार जिनवर स्वामी श्रुह्म तणा ए वांधव जिन राज, वांछित फल हवे दान कर।। सिव मिव तुह्म पाय सेव ग्रुण श्रायो स्वामी श्रह्म हा जिणदास मणेसार, मुगति वरांगना ते वरे प	= तर्णाषु =
(३४)	चडवीस तीर्थंकर विनती	व्रह्म तेजपाल	"	
(३४	जिनमगलाप्टक		सर्ऋत	
पूर्च ।	विशेष — नित्य नियम	की पूजाऐं हैं। ये पूजाऐं	। साइज-६×६२ इख । भाषा-हि-दी । लेख भाल सहेली जयपुर में प्रत्येक ग्रुकवार को होती । साइज-५×६२ इख । भाषा-सरष्टत वेस	
१६⊏३ स	द्वासदी १० । पूर्ण ।			

विशेष—सुगन्ध दशमी व्रतोधापन का पाठ एव क्था है। ४१७. गुटका न०१४ - पत्र सरूया-१६२।साइज-१४६३ इख । माषा-हिन्दी। लेखन कालं-४। एर्यं

विष-नूची	क्त्री का नाम	भाषा	ले∙ का•	विशेष
ज्ञान तिलक के पद	कषीरदा स	हिन्दी स०	१८०६ कार्तिक षुदी ७	
कबीर की परचई	77	97	53	
रेखता	73	77	"	-
काया पाजी	5 7	"	"	-
हं समुक्तावली	17	59	97	
प्त्वीर धर्मदास की दया	17	77	19	
श्चन्य पाठ	77	17	33	
साबी	F7	"	कितने ही प्रकार की है	
सोसट वध	33	99	"	

विशेष — कवीर दास कत रचनाओं या अपूर्व संग्रह है।

काभी वसे क्वीर गुसाई एव | हिर सक्तन की पकड़ी टेक ||

बहोत दिना संकिट में गये | श्रव हिर को ग्रन लीन भये || (किव की परचई)

४१६ गुटका न०१६--पत्र सल्या-१३ से ५०। साइज-६×६१ इम्ब। भाषा-हिन्दी। लेखन

विशेष---महामारत के पाचने श्रध्याय से ३० वें तक है प्रारम्भ के ४ श्रध्याय नहीं है। जिसके कर्ता लालदास हैं। ६ वें श्रध्याय से प्रारम्भ--दरसन सीषम को प्रीय जदा, सकल खीरवर श्राये तिहां। सरसञ्या भीषम विश्राम, श्रव सुनि प्रगट रिधिन के नाम ॥ २ ॥ भृग्र विसष्ठ पारास्वर व्यास, चिवन श्रित्रिय श्रीतरा प्रवगाम। श्रगस्त नारद परवत नाम, जमदिग्न दुरवासा राम॥ २ ॥

२ = वें श्रध्याय का श्रन्तिम माग - धर्म रूपज राजा सिव भयो, जिहि परकाज श्रपनपी दयो।
विस्तृही श्राराधे दहि रीति धरम कथा सुने करि मीति ॥ १६ ॥
जो याह कथा सुने श्रक गावे, धरम सहित धरम गति पावे।
यों सों कथा पुरानन कही, लालादास भाल्यो यो सही।। २०॥

४१६ गुटका न० १७—पत्र सख्या-१०६ । साइज-६×६ । भाषा-हिन्दी । स्चना काल-× । लेखन काल-स० १८७६ भोष सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष-महामारत में से 'उषा कथा' है जिसके रचियता 'रामदास' है।

मारम्म-भी गणेसाहनम. । श्री सारदा माताजी नम । वो नमो सगवत वासदेवाय। श्री ऊपा चरण लिखते ।

नासुदेव पुराण चित लाउ, करी हो रूपा रिक्छ ह गुण गाउ।
समरो गुण गोविंद पुरारी, सदा होत सतन हितकारी।।
समरो श्रादि सुरसित माता, सुमरो श्री गणपती सुखटाता।
बुधकर जोड चरण चीत लाउ, करी हो रूपा कछ हिर गुणगाउ॥
समरो मात पिता बडमाई, सुमरो श्री रघु।ित के पाई।

दोहा — श्रष्टसठी तीरथ कथे, सुमरो देव कोटी तेतीस ।

रामदास ऋषा कर वृधी देही जगदीस ॥ १ ॥

व्याहां चत्रमुज राय वीराज, प्रममह तीतिह पुरको राजा ।

जाके धरम कथा श्रधीकाई, दानव छ्छ वी वोहोत बढाई ॥

श्रकलोकाय सु दरसण पुज सुखमान, गऊ वित्र की सेवा जान ॥ २ ॥

नारद उकती व्यास कही नाहा, दसम सकद मागवत की हा ।

व्यास पुराण कह सब साखी, श्री सुखदेव वृष सुमावी ॥

देग्हा— चित दे सुनी नृपति धनी परीछत राय।

न्यास पुत्र उपदेश ते रस हीयो ख्रयाय।।

श्रमर कोक पग गुल नहीं देखों, पच सग सलव सेपा।

रामदास तनी सगित पाई, मात्रा करी हरी कीरित गाई।। ६

प्रेम सयाना पुछत वाता, तुम कसन कहा मये विधाता।

श्रादि देस तुमाहारी कहा होइ, हम सुनचन कहो न जसोई।।

महमा कह राम को दास, देस मालवो श्रती सुखवास।

सहर, सरु छ निकट ताहां ठाहु, पावो जनम मालनी गाउ।।

पिता मनोहर दास विधाता, वीरम ने जनम दोयो माता।

रामदास सुत तीन को माई, कसन नाव को मगतो ताही।।

दोहा— लालदास लालच कया, सोघ्यो मगवत सार।

रामदास की बुधी लघु पथ कुदे न मार।। १०॥
नृप पृष्ठ सुख है वसु सुनी, सुनाय करी हो मोहि।
अनरव ऊषा हरन की कथा, कह सुनावो मोही।। ११॥
कैसे चत्रा हरी ले गई, कैसे कवट भेंट मई।
कुण पुनी वाणासूर लीया, वर वसी हरी दरसण दीया।।
सो न्न मा मुनी घ्यान लगायो, श्रादि पुरुष को अत न पायो।
कहें प्रताप हरी पूजा पाह, सो हम सु कहींये समकाई।।

श्रन्तिम पाठ—धनी सो सुरता चीत दे सुन, श्ररण वीचार प्रेम ग्रनमन ।
धनी सोही देस धनी सोही गांव, नीस दिन कथा कृष्ण को नांव ।
उषा श्री मागोत पुराना, सहजही दुज दीजे दाना ।।
छुछ मसक पवन मर सोही, कृष्ण मगति बिना श्रवरथा देही ।
रामदास कथा कियो पुराना, पटत गुणत गगा श्रसनाना ।।

दोहा—चंद बदन यो होय फल, तो पातु दल पान । ई विध हर पूजही, क्ये हो पुत्र की लाण।।

इति श्री हरिचरित्रपद समी श्रसकदे श्री मागोतपुराणे ऊवा कथा वरणनी नाम सपत दसी श्रम्याय ॥ १७॥ ।। इति श्री उषाकथा सपूर्ण समाप्ता ॥

४२०. गुटका न० १८—पत्र सख्या-१३२ । साइज-६×६ इख । माषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७६७ फागुन बुदी ७ । पूर्य ।

विशेष-किव वालक कृत सीता चरित्र है।

४२१. गुटका नं० १६ -- पत्र संख्या-१३१। साइज-६×६ इश्व। साषा-हिन्दी। लेखन काल-×। श्रपूर्ण।

विशेष -- नददास कत मागवत महा पुराया माषा है । केवल ६१ पत्र है ।

४२२ गुटका नं० २०—पत्र सर्पा—३ से ३२ । साइज==र्दे×६ इच । माषा—हिन्दी । लेखन काल-×। श्रपूर्ण । प्रविशेष—हितोपदेश कथा भाषा गध में हैं । रचना नवीन प्रतीत होती है भाषा श्रच्छी है श्रादि श्रत भाग नहीं है ।

४२३. गुटका न० २१—पत्र सख्या-१३६ | साइज-६×६ इत्र । माषा-हिन्दी | लेखन काल-×। श्रपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी गद्य में राम क्या दी हुई है। प्रति श्रशुद्ध है।

४२४. गुटका नं २२--पत्र संख्या-२८। साइज-६×६ इख । मापा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-

विशेष--पं ॰ नकुल विरचित शालि होत्र है । संस्कृत से हिन्दी पद्य में भी श्रर्थ दिया हुआ है ।

४२४. गुटका न०२३--पत्र सख्या-१०। साहज-=१×११ इस्व। माषा-हिन्दी। लेखन काल-×।

विशेष—फण्ण का बाल चिरत वर्णन है। १२२ पर्य है।
श्रादि—गर गनेस बदन किर के सतनिन की सिर नाऊ।

बाल विनाद यथा मित हिर के सु दर सरस सुनाऊ।।

मक्तन के बत्सल फरुना मय श्रद्भुत तिन की कीडा।

सुनो सत हो सावधान हो थी दामोदर लीला।।?॥

४२६. गुटका न० २६ — पत्र सख्या-३० । साइज-६×६ इम । मात्रा-हिन्दी । रचना काल-×। लेखन काल-म० १=२३ श्रासोज धुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष-लच्छीराम कृत करूना मरन नाटक है । कृष्ण जीवन की वाल लीला का वर्णन है ।

प्रारम्म—रिसक मगत पिडत किवन कही महाकल लेहु ।

नाटक करूणा भरन तुम लद्यीराम किर देहू ॥१॥

प्रेम बढे मन निपट हो श्रव श्रावे श्रित रोह ।

करुणा श्रति सिंगार रस जहां बहुत किर होइ ॥

लद्यीराम नाटक कर श्रो दीनों गुनिन पढाइ ।

मेत्र रेप नित्त न निपट लाये नर निसि लाइ ॥२॥

श्रितम पाठ-शिक्षण्या कथा श्रमृत सर वरनी, जन्म जन्म के क मल हरनी ।
श्रित श्रमाघ रस वरन्यों न जाई, दुधि प्रमान कछ वरिन सुनाइ ॥३४॥
सो मित थोरी हिर जस सागर, सिंधु सुमाइ कहा लो गागर ।
लक्षीराम किव कहा वखानी, हरिजस को कोई हरिजन जाने ॥३५॥

इति श्री कृष्ण जीवन लाछीराम कृत करूणा भरन नाटक सपूर्ण । स॰ १८२३ श्राहवन बुदी ३ रविवासरे । सप्तमी श्रम्थाय ।

४२७ गुटका न०२४—पत्र सख्या-३०। साइज-६×७ इच। माथा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण त्रिशेष—गुटके में भद्रवाहु चिरत्र है। यह रचना किशनसिंह द्वारा निर्मित है जिसको उसने स०१७०३ में समाप्ता की थी। प्रति नवीन है।

मद्रवाहु चरित्र--

प्रारम्म —केवल बोध प्रकास रिव उदे होत सिख साल । जग जन अतर तम सकल छेथो दीन दयाल ॥ १॥ सनमति नाम जुपाइयो औसे सनमित देव । मोको सनमति दीजिए नभी त्रिविध करि सेव ॥ २ ॥

व्यन्तिम पाठ- श्रनत कीरति श्राचारज जानि, ललित कीर्ति स् सिष प्रमान । रलनदि ताको सिप होय, श्रलप मित धरि करना सोय ॥ श्वेतांवर मत को श्रधिकार, मूट लोक मन रजन हार! तिनही परीचा कारन जान, पूर्व श्रुत कृत मानस श्रानि ॥ १० ॥ किया नहीं कतिताइ करी, कान कर्न अभिमान ही अरी। मगलीक इस चरितह जानि, रच्यों सबें सुखदाइ मान ! मूल प्रथ फर्चा सये रतन नदि सु जानि । त्तापरि भाषा प्रहरि कीनी मती परमान ।। ११ ।। नगर चाल सुदेम से वरवाडा को गांव। माधुराय वसत को दामपुरी है नांव ॥ त्तहा बसत सगही कानो गोट पाटणी जोय। ता सुत जागो प्रगट सुख देन नाम तस होय ॥ ता भी लघु सत जानीयो किसन सिंघ सव वान । देस द ढाहर को भयो सांगानेर सुधान ॥ १४ ॥ त्तहां करी भाषा यह भद्रवाह ग्रणधारी । सुमति कुमति को परख के द्वीव भाव न विचारि !! किसनसिंघ विनती करें, लिख क्विता की रीति। चह चरित्र माषा कियो, बाल बोध धरि प्रीति ॥ १७ ॥ जो याको वाचे सुनै विपुल मित उरधारी। कहूँ ठौर जो भूल है लीड्यो सुधी मवारी ॥ १ = ॥ सुमति कुमति को परख के, कीच्यो कुमत निवार । अहण सुमति को वीजियो जो सुर सिव पदकार ॥ १६ ॥ सवत् सतरह से श्रसी उपरि श्रीर है तरीन। माघ कृष्ण कुज श्रष्टमी प्रथ समापत कीन ॥ २० ॥

४२८ गुटका न०२६---पत्र मख्या-२००। साहज-=२४६३ डब । भाषा-सस्वत-हिन्दी। लेखन फाल-×। श्रपूर्ण।

विशेष-- गुटका प्राचीन है । निम्न पाठों वा समह है ।

७२]		[गुटके एवं समह प्रत्थ
विषय-सूची	नर्जा का नाम	माषा	विशेष
तत्त्वार्धसूत्र	उमा स्वाति	संस्कृत	- 7(11
श्रीपालरास	वहा रायमल्ल	हिन्दी	
नेमीश्वररास	"	,,	
विवेकजलडी		,, ,,	
पद्य सम्रह	-	37	Person
जखडी	रुपचद	77	
मांगीतु गी की जखर्ड	रामकीर्चि	** **	
जखडी	जिनदास	5 7	र० वा० स० १६७९
कर्म हिंडोलको	हर्पकीचि	"	
गीतः	चद्रकीर्ति	"	~
गीत	मुनि धर्भचन्द्र	"	-
चेतनगीत	देविदास	77	-
चेतन गीत	*****	77	
पचवधावा		39	
ग्रादिनाथस्तु तिं	च दर्कीर्च	77	
शालिमद्रचौपई		7)	त्रपूर्य
५२६ गुटका	न० २७ - पत्र सरूया-२५ । साइज-६	×५5 इच । माषा–हिन्दी	। लेखन काल-×।
र्ण ।			
विशेष—स्फुट पू	जार्थी का समह हैं।		
४३०. गुटका	न ः २८— पत्र संख्या-२५ । सा इ ज-६>	८५ इश्व । माषा-हिन्दी । ले	खन काल-×। श्रपूर्ण ।
विशेष—निस्य पू	जा पाठीं का समह है ।		
४३१. गुटका	न० २६—पत्र सख्या-१४ । साइज-⊏ै	×१ इच) माषा-सस्कृत	। लेखन काल-× I
र्ष ।			

विशेष—सामान्य पाठ संमह है ।

४३२. गुटका न० ३०—पत्र सर्खा-१४ । साइज-१४६ इत्र । मापा-हिन्दी सरकृत । तेखन काल-४ ।

पूर्ण । विशेष — निम्न पाठों का संमह है —

गुटके गर्व सम्रह भन्थ]

विनती समह	name.	हिन्दी	
मंत्रीधपव्यामिका मापा	घानतराय	"	
घटारह नाता		59	

४६४. गुटका न० ३२ — पत्र सस्या-२० | साइज-७ई×१ इख । मापा-हिन्दो | लेखन काल-×। पूर्ण ।

विशेष -- ६४ चतुराई की वार्ता दी है जिसका रचना कल वीर स० १६४२ है।

प्र3प्र. गुटका सं० ३३ - पत्र सख्या-०३ से १४२। साइज-६×६ इच। मापा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्य।

विशेष--- पुरूय पाठों का समह निम्न प्रकार है।

विषय-सूची	क्ची का नाम	माषा	विशेष
स्तोत्रविधि	जिनेश्व रम् रि	हिन्दी	_
मकामर् स्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	Sparine
क् त्याणमदिस्सोत्र	कृमुद चन्द्र	53	
पद समह सतर प्रकार			
पूजा प्रकरण्)	गा धुर्वाति	हिन्दी	र ना १६४= आ. मु. ४
गगमाला	3*		general
श्र णपद्यगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर (वाचनावार्य)	53	
पद २	जिनदत्त्वस्रि	हिन्दी	gavenus
रतमनक पार्श्वनाघ गीत	महिमासागर	•	
पट	जिनचन्द्र मृरि, जिनकृशल	प्रि व कृपुदच्छ ।	
पविच	- Management	हिन्डी	र. दा. स १४११

इनके धतिरिक्त और मां हि दा पद है।

राना प्रकार पूजा प्रकारण—साम प्रनार्थों — साम्या गृथि घनजि है। गठि दिन तेज नगीय सुन राज्य।

कविन रानक बाट पुर्णात श्रम्भन्त । प्रय पुष रगढ माणाज्य ।।।।

श्रम्भिट प्रभाति सब गुन्दाई । सो श्रमु नविनिध विधि बाद ज्या।

सत्र सपूज सुनिधि शायण की । स्पानई सगीत दिल कर्ण्ड ।मान्।।

सीक्ष्मिय्यक्ति ग्रम्भ स्वार्यपति । स्पानि देणम नाम् वर्ण गाज्य ।।

भवत् १६ घटार शायद सुदि । प्रणानि विश्वी सम्याद्ध ग्रमवा।

दयाकलशागि श्रमस्माणिक ग्रह । तासु पसाइ सुविधि हुँ गाञ्चइ । कहइ साधु कीरति कर मजन सस्तव सवि । साधुकीरति करत जन सस्तव सविलील सव सुख साजइ ॥

॥ इति सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण ॥

४३६. गुटका न० ३४—पत्र स्ल्या-१४ से ८६। साइज-६×५ इख। माषा-प्राकृत हिन्दी। लेखन काल-×। ऋपूर्ण।

विशेष — द्रव्य सम्मह भी गायार्थे हिन्दी श्रर्थ सहित है तथा समयसार के २०६ पद्य है।

४२७ गुटका नः २४--पत्र सरूया-२ से ३८ । साइज-६२/४४ इख । माषा-हिन्दी । लेखन काल-४। ऋपूर्ण ।

विशेष-पूउ।श्रों का समह है।

४३८ गुनका न०३६ —पत्र सम्या-६ से ६३। साइज—८ दे×५ इख। माषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष— महाकवि क्ल्याण विरचित श्रनग रग नामक काव्य है। काम शास्त्र का वर्णन है श्रागे इसी कवि द्वारा निरूपित समोग का वर्णन है। श्रायुर्वेद के तुसखे दिये हुए हैं।

४३६ गुटका त० ३७--पत्र सख्या-१६ । साइज-६×६ इख । माषा-सस्क्रत हिन्दी । लेखन काल-४। पूर्ण ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम के श्रतिरिक्त श्रन्य भी पाठ हैं।

४४०. गुटका न० ३८—पत्र संख्यां-१५०। साइज-७×५३ इस । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स॰ १७६६ पौप सुदी ४ । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न साधा(ण पाठों का संमह है।

४४१. गुटका न०४०-पत्र सस्या-७ । साइज-१×६ इख । माषा-सरहत । लेखन काल-स० १८८३ चत्र बुदी १४ । पूर्य ।

विशष —चाणक्य राजनीति शास्त्र का समह है।

४४२ गुटका न०४१--- पत्र सख्या-३०। साइज-४४ इख। माधा-संस्कृत। लेखन काल-४। अपूर्ण एव जीए।

४४३ गुटका नं० ४२--पत्र सख्या-२६ । साइज-६×६ इख । माषा-प्राकृत । लेखन काल-स०

गुटके एव सप्रह प्रन्थ]

विशेष—श्राचार्य कुन्दकुन्द कृत (दर्शन, चारित्र, सूत्र, बोध, साव श्रीर मोत्र) षट पाहुड का वर्णन है ।

४४४. गुटका न० ४३ -- पत्र सख्या-४= । साइज-६×१ इस्व । साषा-हिन्दी । लेखन काल-×। श्रपूर्ण
एव जीर्थ ।

विशेष—देहली के बादशाहों की वशाविल दी हुई है खन्य निम्न पाठ भी हैं—

विषय-सूची	कर्जी का नाम	भाषा	विशेष
कृप्ण का वारह मासा	धर्मदास	हिन्दी	
विरहनी के गीत		75	
श्रायुर्वेद के नुस्खे	-	99	
दोहे	दादूदयाल	99	

४४४. गुटका न ० ४४--- पत्र संख्या-६= । साइज-=र्-्रे×६ इच । माषा-संस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण । विशेष — मत्र शास्त्र से सम्बन्धित पाठ है ।

४४६. गुटका न० ४४--- पत्र सख्या-६० । साइज- ×४ इच । माषा-हिन्दी सस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण ।

विरोष--पार्श्वनाथ स्तोत्र-सस्कृत, चेत्रपाल पूजा शनिश्वर स्तोत्र-हिन्दी स्रादि पाठ हैं।

४४७ गुटका न०४६--- पत्र संख्या-१२। साइज-४३/४४ ई इच । साषा-हिन्दी। लेखन काल-४। पूर्ण।

विशेष--चरनदास के पद है। कुल १४ पद है।

४४८. गुटका न० ४७---पत्र संख्या-१६ । साहज-=र्-्र्×=र्-्र इख । माषा-संस्कृत । लेखन काल-×।

विशेष --- भुवनेश्वर स्तोत्र सोमकीर्चि कृत हैं।

४४६. गुटका न० ४८—पत्र सख्या-३४ । साइज-६×४ इख । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-स॰ १८६२ श्रवाद बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष —ऋषि महल स्तोत्र तथा श्रन्य पाठ है।

४४०. गुटका नं० ४६--- पत्र सख्या-२० से ६०, १७२ से २१२। साइज-५×३६ ६ माषा-सस्कत। लेखन काल-×। प्रपूर्ण।

विशेष--पचस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, पचपरमेप्ठीस्तोत्र एवं वज्रपंजरस्तोत्र (श्रपूर्ण) श्रादि हैं।

1

४४१. गुटका नं० ४०--पत्र संख्या-४ से २१०। साइज-६×४ इस । भाषा-हिन्दी सस्कृत । लेखन काल-×। श्रपूर्य ।

विशेष—स्तोत्र श्रादि का समह हैं।

४४२. गुटका न० ४१ — पत्र सख्या २६ । साहज-५×३६ इख । माषा-सस्कृत । विषय-सम्रह । लेखन काल-×। श्रपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र श्रादि के सभह है ग्रटके के श्रधिकांश पत्र खाली हैं।

४४३. गुटका न० ४२--पत्र सख्या-४० । साइज-७×५ इख । माषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । विशेष —ग्रटका जल्दी में लिखा गया है । कोई उल्लेखनीय पाट्य नहीं है ।

४४४ गुटका न० ४३-- पत्र संख्या-६ । साइज-७×४६ इञ्च । भाषा-संस्कृत ' लेखन काल-×। अपूर्ण ।

विशेष-- स्तोत्र श्रादि का समह हैं।

४४४ गुटका न० ४४---पत्र सख्या-६-२८४। साइज-६ई×४ई इस । माषा-सस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । स्रपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्म में स्वर्ग लोक का वणन है श्रीर पीछे तत्त्वार्थ सूत्रों की हिन्दी टीका है। कोई उल्लेख-नीय सामग्री नहीं है।

४४६ गुटका न०४४ - पत्र सख्या-२०। साइज-४×३६ इख । साषा-सस्कृत । लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष - मक्तामर, पार्श्वनाथ, लदमीस्तोत्र श्रादि हैं।

४४७ गुटका न० ४६—पत्र सख्या-४६। साइज-४४१। माषा-संस्कृत। लेखन काल-स० १६०३। पूर्य।

विशेष — सामान्य पाठ समृह हैं।

४४८. गुटका न० ४७—पत्र सरूया-३-४६ । साइज-७×४ इन्छ । मापा-हिन्दी । विषय-संग्रह लेखन काल-स० १६२३ । धपूर्य ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

४४६. गुटका न० ४८—पत्र सरुया-८०। साइज-८३४६३ इस । माषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । अपूर्ण एव जीर्य ।

गुटके एवं संग्ह प्रन्थ]

विशेष-अव्हर व्हीट होने पहने में नहीं अति है।

१६० गुटका सं०१६--पत्र नत्या-= से १०। माइज-६६४६६ हवा मापा-इंस्टर, हिन्दी। देसन कात-×। पूरी

विशेष—िन्न पाठ हैं—

विषय—सूची	क्र्जी का नान	सामा	विशेष
चौनीस दीर्यक्त पृजा		स्स्हत	-
सस्तर्ता दानाल	_	•	
श्रक्षतिम द्यमाल	-	27	
परमच्चोद्विन्तोत्र	इनारमीदाम	हिन्दी	
महानरस्त्रोत्र	मानतु गाचार्य	वस्त ्व	

४६१. गुटका तं० ६०--पत्र सस्या-१ मे ३= । माहन-४४१ हव । माहा-हिन्दी । विषय-त्रथा । देवन काल-४ । अपूर्य ।

विशेष—हितोपदेश की न्याएँ हैं ।

१६९ गुटका नं० ६१—पत्र नस्या-१०३। सङ्झ-१४: इख । सामा-हिन्दी । खेलन कल-४। धपूर्वी।

विशेष-पृजाझी तथा स्तोत्री का नमह है।

४६३. गुटका नं ६६८ - पत्र संस्था-१०। नाडज-६४१ इत्र । माषा-हिन्दी । तेसन जात-सं० १०४४ । अपूर्व ।

विशेष-१ से १६ एवं १०७ से छाते के पत्र नहीं है। तिम्न विश्वों का संप्रह है।

दिण्य -स ्ची	क्तीं का नाम	मापा	विरोप
महारक पट्टावर्ली	-	हिन्दी	र. झा. सं. १७३३
कृन्द्राह का गही		₅₇ र. ना. स	. १७४६ ले हा १७६२
पर्वेत पाटरी के गड़ो		33	ते. का नं १७१४
भीचड रफो		हिन्दी	
न्बाब ६वित		33	

४६४. गुटका न०६३-- पत्र नंह्या-६० से १०१। महत-४४४ हव । सामा-हन्दी । वेवन बात-स०१७६० साव मृदी १४। प्रपूर्त । (१) भृतहिर को वार्ती-पत्र स्ख्या-हिं से ७= । साषा-हिन्दी गद्य । लेखन काल-स॰ १७६० माघ सुदी १४ । अपूर्ण

श्रन्तिम पाठ—भरथरी जी गोरखनाथजी का दरसण में चालता रह्या । प्रश्री को मान सारो देखी किर निकत चीत हुश्रो । सारो जगत को एख । हैद ताको एथ । त्रीणी पराजमन मो देखता श्रोर सुनां मडल में चित दोजो । इति भरथरी जी का नात सपूरण । पोथी मान स्वच चत्रभुज का नेटा की लिखी जैराम काइथ नाचें जैजेराम । मी माह सुदी १४ स० १७४० ।

(२) स्त्रासात्ररो को बात--पत्र स०-८० से १२४ । माषा-हिन्दी गद्य । ऋपूर्ण ।

श्री गणेसाई नीमो । श्रवे धासावरी नी बात ऊतिपित वरण ववरणी जे हैं । ईतरा मांही राणी के पुत्र हुवो । नाम सीयु नीसर-घो । उछाव हुवो जाित कर्म हुवो । दान पुनि वाजा छतीष्ठ वाजवा लागा । नम्न माहै बुछाह घरि घरि हुवो । श्रावते दीनि वन्या को जनम हुवो । पिछता नाम श्रासम्बरी वाङ्यो । सिधि को वचन छैं । सोई नाम जनम को नीसर-घो । श्रासावरी देव श्रग श्रपछरा को श्रोता हुई तदि श्रासावरी वरस छहकी हुई । तदि पिदवाने वैठी ।

४६४. गुटका नः ६४---पत्र सरूया-१३ | साइज-७२४६ इस । माषा-संस्कृत । लेखन काल-х । पूर्ण ।

विशेष-- निम्न स्तोत्रों का समह है--विषाहार, एकीमाव एव भूवालचतुर्विशति ।

४६६ गुटका न० ६४— पत्र सख्या-४४ । साइज-७४४ इख । माषा-हिन्दी । लेखन काल स० १७७६ । ऋपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्चाका नाम	सावा	विरोष
मान सन्जरी	नंददास	हिन्दी	श्रप् र्ण
जानकी जन्म लीला	वालवृन्द	5 5	पूर्ण ले० का० स० १७७६
सीता स्वयवर लीला	तुलसीदास	•	माघ सुदी ६

श्रादि पाठ—ग्रर गणपति गिरजापित गौरी गिरा पित,
सारद सेप सुकवि श्रुति सत सरल मित ।
हाय जोडि करि विनय सकल सिर नाउ ,
श्री रवुपित विवा जधामित मगल गाऊ ॥१॥
सुम दिन रच्यो सुमगल मगल दाहक ।
सुनत श्रवन हिए वसहु सीय रचुनाइक ।
देस सुहावन पावन वेद बखानिये ।
मोमि तिलक सम तिरहुत त्रिमुवन मानिये ॥२॥

जानकी जन्म लीला-

श्रादि साग - श्री रघुवर ग्रुर चरन मनाऊं, जानकी जनम सुमगल गाऊं।

काम रहित सुधर्म जग जोहे, देस विरोहित तमु धरि सोहे।।

ता महि मिथुला पुरि सुहाई, मनउ श्रह्म विद्या छवि छाई।।।।।

श्मिन्तिम पाठ—भये प्रगट सिक्त श्रनत हित द्रग दया श्रमृत रस भरे।
सफल सुरनर पुनिन फेई है छिनहि सब फारिज सरे।।२।।
जै देवि धानि सिरोमने वरि, दया यह वर दीजिये।
सदा श्रपने चरनदास के दास हम कहुँ कीजिये।।४।।

॥ इति श्री जानुकी जनम लीला स्वामी वालघन्दजी कृत सपूरन ॥ माह सुदी ६ सवत् १७७६

४६७. गुटका न० ६६--- पत्र सल्या--०। साइज-६५×६६ इम्ब। साषा-हिन्दी। लेखन काल-स० १-३४ पोष पुदी ३। पूर्य।

विषय- सूची	फर्चा का नाम	भाषा	विशेष
म् षाम् ष ण	महाराज जसवतसिंह	हिन्दी	पद्य स• २१०
छवितरग	महाराजा रामसिंह) ;	पद्य स० ६४

प्रारम्म — श्रमुर कदन मोहन मदन त्रदन चंद रघुनद ।
सिया सहित विसयो मुचित, जय जय मय श्रानद ॥ १॥

यहां किंव की रीति प्रधानता करिके राम जू सौ विज्य होत है। ताते भाव धुनि । अरु प्रयम अनेक चरन अनेक वेर फिरत हैं ताते किति अनुप्रास चद रघुनद यह रुपक।

> दोहा-- श्रानदित मन्दत जगत सुख निकंद सिष नंद। भाल चंद तुव जपत ही दूरि होत दुव दद॥-॥

श्रन्तिम पाठ —परी परोसिन सौ श्रटक, चटक चहचही चाह ।

सिर मार्दों की चोधि को चंद निहारत नाह ॥१३॥

कल्लूक ग्रन दोहान के, वरने श्रीर श्रदूप ।

असे ही सहदय सबे श्रीरी लखी श्रदूप ॥६४॥

इति श्री महाराजा रामसिंहजी विरचिते छवितरग सपूर्ण।

श्रप्टजॉम फवि देव हिन्दी पद्य सं० १३१ श्रीषिध वर्णन ,, ४६८ गुटका न० ६७—पत्र संख्या-५ से ११३ । साङ्ज-६×६ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-×। अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्चा का नाम	माषा	विशेष
कृप्यालीला वर्णन	_	हिन्दी	पत्र ५-१७
होली वर्णन		•7	_
वारहमासा		1)	पत्र स॰ ७४ से ७७
स्फुट पट		,,	पत्र ७= से ११३

४६६ गुटका न० ६८-पत्र सल्या-२३ । साइज-६×४ इस । माषा-हि दी । लेखन काल- । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्चाका नाम	माषा	विशेष
पीपाजी की पत्रावलि		हिन्दी	
धु चरित	सुखदेव	"	_
विनति	_	"	
पद्मावती कथा	_	77	

५७०. गुटका न० ६६—पत्र सख्या-२४ | माइज-५ई×४ इत्र । माषा-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण ।

विशेष—िनम्न रचना है—

कत्मप कुठार—राममद्र हिन्दी ।

मध्यम माग—करनी हो सो कीजियो करनी की कछ दोर।

मो करनी जिन देखियो तो करनी की श्रोर ॥ २१ ॥

मो सो करनी कुटिल जग तो सो तारक ताज ।

यही मरोसो मोहि तो सरन गहे की लाज ॥ २२ ॥

रित श्रीमत् काम्यवनस्थ नायुल सगोत्रोत्पन्न गणेश महात्मज राममद्र महीन विर्रावते कल्मवकुठार प्रथ सपूर्ण ॥

> ४७१ गुटका न० ७० - पत्र संख्या-४ । माइज-४×४ इत्र । मापा-हिन्दी । लेखन वाल-× । श्रवृर्ण । विशेष-रसराज नामक प्रथ है ।

४७२ गुटका न० ७१ — पत्र सख्या-४ । साइज-६×४ इम । मापा-हिन्दा । लेखन काल-स० १८१२ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । पद्य सख्या-२४ । विशेष-गुटके में नदराभ पञ्चीसी दी है। रचना स॰ १७४४ श्रय नदराम पञ्चीसी लिखते।

दोहा—गनपति को ज मनाय हिर, रिंद्ध सिद्ध के हेत।
वाद वादनी मात तु, सुम श्रिक्षर बहु देत।
कछु कथो हु चाहत हू, तुम्हार पुनि प्रताप।
ताहि सुरया सुख उपजे, दया करो श्रव श्राप॥ २॥

श्रन्तिम पाठ — नद खडेलवाल है श्रवावित की वासी।

सत बिलराम गोत है रावत मत है ऋष्ण उपासी।। २४।।

सवत् सतरासे चवाला वातिक चन्द्र प्रकासा।

नदराम कछ ' '।।

कली ब्योहार पच्चीसी वरनी जथा जोग मित तेरी।

कला ब्योहार पच्चीसी वरनी जथा जोग मित तेरी।

कला ग्रा की ज बानगी एहे है श्रीर रासी बहुतेरी।।

राखे राम नाम या किल में नद दासा।

नदराम तुम सरने श्रायो गायो श्रजव तमासा॥ २४॥

इति श्री नदराम पच्चीसी सपूर्ण । सवत् १८१२ चैत बुदी १२।

४७३ गुटका न० ७२—पत्र सरूया-१६। साइज-६×४ इख । माषा-हिन्दी लेखन काल-×। श्रपूर्ण।

विशेष-- कुछ हिन्दी के क्वित्त हैं।

४७४. गुटका त० ७३ पत्र संख्या-११-२६३। साइज-६×४६ इख । माषा-हि दी । लेखन काल-× ध्रपूर्ण ।

विशेष-पुरुष रूप से निम्न पाठ हैं-

विषय-सूची	कर्ता का नाम	साषा	विशेष
श्रीपाल रास	महारायम हा	हिन्दी	ले. का. स. १⊏२५
मधु मालती कथा	चतुभु [°] जदास	47	
गोरख वचन	वनारसीदास	73	·
षेय लच्य	77 1	77	-
शिव पच्चीसी	"	77	****
भवसिन्धु चतुर्दशी	**	7;	-
ज्ञान पच्चीसी	57	"	

तेरह काठिया	त्रनारसीदास	हि दी	
घ्यान बत्तीसी	"	>,	
श्रध्यातम वत्तीभी	33	~ >>	
स्कि मुकावली	77	9 7	
ध मालती कथा			

मधु मालती कथा

प्रधम - बरवीर चित नया वर पाउ, सकर पूत गणपत मनाऊ। चातुर हेत सहत रिभाउ, सरस मालती मनोहर गाऊ ॥ १ ॥ लीलावती ललित ऐक देसा, चन्द्रसेन् जिहा सुघड नरेसा। सुमग यामिनी हो गगन प्रवेसा, मानू महप रचो महेसा ॥ २ ॥ वसहपुर नगर जोजन चार, चौराक्षी चोहटा चोबार। श्रति विवित्र दीसे नरनार मानू तिलक मूम मभार ॥ २ ॥

मन्य माग-च्वावती निपृत मलियदा, ताको कत्रर नाम जस चदा । वरस बीस बाईस में सोई, तास पटतर श्रवर न कोई ।। जास मत्र मह कन्या सुन्दर, वरस श्रठारह मांहि पुलंदर। रूपरेख तछ नाम सोहै, जा देखे सुर नर मन मोहे ॥ ४४ ॥

श्रन्तिम पाठ-सम है काम अम अवतारी, इहै कहें कहें सोनी की न्यारी। असे कही मधु नृप सुमभायो, राजा सुनत बहोत सुख पायो ॥ राज पाट मधुक सब दीनों, चन्द्रसेन राजा तप लीनों। राजरिपत्रिय बोहत होई, उनकी क्था लख न्ही कोई ॥ = ६२ ॥

दोहा-कायथ नैगमा कूल श्रहे, नाथा सुत भए राम । तनय चतु भुज तास कें, कथा प्रकासी ताम ॥ 🖛 🗀 ॥ श्रताल वधू दीठ दई, काम प्रवध प्रकास। कवियन सु कर जोर किर, कहत चतुर्भु ज दास ।। = ६४ ॥ काम प्रवध प्रकाम पुनी, मधू मालती विलास । पदु मनी का लाला हहै, कहत चतुर्भु ज दास ।। = ६५ ।। वनासपति में अवकत, रस में एक रसत। कथा सध्य सधू मालती षट्रित सिध बसत ॥ ८६॥ लता मध्या पवन लता, सो धन में धनसार । कथा में मधु मालती, श्रामूषण में हार॥ ८६०॥

राजनीत कीया में साखी, पचाल्यान चुच ईहां माषी।

चरना ऐका चातुरी बनायी, श्रोरी थोरी सबहु आई॥ = ६ = ॥

पुनि बसत राज रस गायो, यामें ईश्वर का मद भायो।

ताका ऐह विलावसतारी, रिसकिन रसक अवन सुखकारी॥ = ६ ६॥

रिसक होय सो रस कू चाहे, अध्यातम आतम अवगाहे।

चातुर प्रव होई हे जोई, ईहे कल रस समभू सोई॥ = ७०॥

किसन देव को कु वर कहावे, प्रदुमन काम अस मधु गावे।

पुत्र कलत्र सब सुख पावे, दुख दालिड़ रोग नहीं आवे॥ = ७१॥

दोहा — राजा पटे ही राज नीत, मित्र पटे ताही वधू ।

वामी काम विलास रस, ग्यानी झान सरूप ॥ =७३ ॥

सप्रन मधु मालती, कश्वस मगो सप्रण ।

स्रता वक्ता सवन कृ, सख दायक दुख दूर ॥ =७४ ॥

वैसर के पित सामजी, तीण उपगार माहाराजे ।

कनक वदनी कामनी, तै पामी मै श्राजे ॥ =७४ ॥

॥ इति श्री मधु मालती की कथा सप्रणी ॥

फाग्रुण बुदी ७ मगलवार सवत् १८२५ का दसकत नन्दराम सेठी का।

४७४. गुटका न० ७४-- पत्र सरूया-३४ । साइज-७x४ इख । माषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८७३

पूर्ण ।

विशेष — नन्ददास कत मानमञ्जरी है। पद्य सख्या-२८६ है।

प्रारम्भ — त नमामि पदम परम ग्रुक कृष्ण क्मल दल नैन।

जग कारण, करुणार्णव गोकुल जाको अने॥

नाम रूप ग्रुण मेद लहि प्रगटत सब ही बोर।

ता विन तहां ज श्रान ककु कहे सु श्रति वह बोर॥

श्रन्तिम पाठ---

ज्ञगल नाम-ज्ञगल ज्ञगम ज्ञग द्व य द्वय उभय मिथुन विविवीप । ज्ञगल किमीर सदा वसहु नददास के द्वीप ॥=७॥

रस नाम-सरव्य मधु पुनि पुष्प रस क्रस्म सार मकर । रस के जाननहार जन सुनिये है आनद ॥==॥ माला नाम--मालाष्टक ज ग्रुगवती यह छ नाम की दांम । जो नर कठ करें सुने हुँ है छवि को दाम ॥२८॥

इति श्री मानमजरी नददास कत सपूर्ण । सवत् १८७३ मगिसर बुदी १३ दीतवार ।

४७६ गुटका न० ७४---पत्र सख्या-६० : साइज-६×४ई इब । माषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । अशुद्ध ।

विशेष — साधु किव की रचनाओं का समह है। चरणदास को गुरू के रूप में कितने ही स्थानों पर स्मरण विया है। कोई उल्लेखनीय साममी नहीं है। प्रति श्रगुद्ध है।

४७७ गुटका न० ७६—पत्र सरूपा-२४ से १८६ । साइज-४×३ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-×। अपूर्ण ।

विशेष-विविध पाठों का समह है।

४७=. गुटका न० ७७ - पत्र संख्या-६२ । साइज-६×६ इख । माषा-हिन्दी सर्∓त । लेखन काल-×। पूर्ण ।

विशेष--निम्न पाठों का सम्रह है।

दस श्रद्धेरा, मुनि श्रहार लेता के पांच श्ररथ, मनुष्य गशि भेद, मुमेरु गिरि श्रमाण, जम्बू दीपका वर्णन, शील प्रमाद के मेद, जीव का मेद, श्रदाई द्वीप में मनुष्य गशि, श्रप्ट कर्म प्रकृति, विवाह विधि श्रादि ।

४७६. गुटका न० ७६—पत्र सख्या-१८ से २०४। साइज-४×४ इख। माबा-हिन्दी। विषय-सम्रह। लेखन काल-स०१७६६ फाग्रुण बुदी ६। श्रपूर्ण।

(१) श्री भू चिरत -हिन्दी । लेखन काल-स० १७६६ काग्रण बुदी ६ ।

श्रिन्तम पाठ — राजा प्रजा पुत्र समाना, सकट दुखी न दीसे श्रांना।

राजनीति राजा छ वीचारे, स्वामी घरम प्रजापित पाले।।

चक्र सुटरशन रखया करई, आग्या मग करत सिर हरई।

तातें सबको श्राग्या कारी, चक्र सुदर्शन की ढर मारी॥।।।

असी विधि करें घू राख, हरि किया सरें सन काजू।

घर में बन, वन में घर माई, अतर नाही राम दुहाई।।।।।

पानी तेल गिलें पुनि न्यारों, यो घू वस्तों राम पीयारो।

परविन पत्र मिलें नहीं पानी, येहि विधि वस्तें दास वी रानी।।।।।

उलटीं मील चलें जल मांही, यो हरि मगत मिलंन हरि जांहि।

जैसे सीप समद ते न्यारी, स्वांति बुंद वर्षे सुय भारी ॥॥॥
जैसे चद कमोद निमावे, जल में वसे श्रर प्रेम बढावे।
जैसे कवल नीर ते न्यारो, असी विधि धू पीयारो ॥=॥
जैसे किनक न काई लागे, श्राग्न दीया ते बाती जागे।
सत लपेटि श्राग्न में दीजे, मोहरे की सत्या नही छीजे ॥६॥
धू चरित जे को सुने, मन बच कम चित लाय।
हरिपुरवे सब कामना, मिक्त सुकित फल पाय॥१०॥
वसुधा सब कागद करूं, सारदा लिखुं चनाय।
उद्धि घोरि मिस कीजिये, धूमेह मान समाय॥
में जानी मित श्रापनी, कलिप कही कछ बात।
वक्सत सत श्रपराध को, जन गोपाल पित मात ॥११॥
हति श्री धू चरित सपूरण समापता।

ं (२) भक्ति भावती—(भक्तिभाव)

हिन्दी

प्रारम्स — सन सतन की नाय माथा, जा प्रसाद ते मयो सुनाथा ।

भन जल पार गयी की चाहे, तो सत चरन रज सीस चढावे ॥१॥
जे नारायण अतरजामी, सन की दुधि प्रकासक स्वामी !

तुम नाणी में प्रगटो आई, निर्नितिं परनति देह नताई ॥२॥

दोहा-पर्म हस श्रास्वादित चरन, केवल मकरंद।
नमो : रामानद नमो श्रनतानद ॥३॥
जे प्रवृतिं को दुख नहि जानें, तो निष्टतिं सौ क्यो मनमानें।
कलि श्रग्यान सयो विस्तारा, पुरव : नही सचारा ॥४॥

श्रन्तिम—भगति मावती याको नामा, दुख खडन सब मुख विसरामा । सीखे मुणेर करें विचारा, तो किल कुसमल की ह्वे क्यो कारा ॥ २०४ ॥ श्रलप मुख नाही जाणें केता, मु मुख पांचे चाहें जेता ।

दोहा—जो षद्द ग्रुक ते मित लहे षद्द पंडित हुमी होई। , सो सब याही में लहे जे निके सोधे कोय॥ २७६॥

चौपई —लिरका कछ बस्त जो पाने, ले माती आगे ग्रवराने।
मली ग्रिरी ने लेहि पिछांनी, यो तुम आगे में यह आनी।। २००॥
श्रव नहेंडो कहा ते करई, अपयो फल ले आगे धरई।
जैसी किपा तुम मोस्यु फीन्ही, तैसी में नायी कहि दीन्ही।

सवत् सोलहसे नव साले, मथुरापुरी केसवा थाले। ध्रमुन पहल ग्यारिस रिववारी, तहा पट पहर माहि विस्तारी॥ २७६॥ किर जागरणे प्रकमा दीनी, तव ठाकरने समर्पण धीनी। सगत समेत सतोखे सोई, ज्यो तो तद वचन सन के सुख होई॥ २=०॥

दोहा—नमह राम रामनदा, नमह अनतानद।

चरन कवल रज सिर धरै, पर पनगै सानद॥ २=१॥
॥ इति श्री मगति भावती भ य नमान्ता॥

(३) राजा चंद की कथा—प० फूरो । पत्र सख्या-१:१-२०४ । मात्रा-हिन्दी । रचना काल-स० १६६३ फाग्रुण सुदी २ ।

विशेष--राजा चद श्रामानेरी की कथा है। चन्दन मलयगिरी क्या मी इसका दूसरा नाम है।

४८० गुटका न० ७६ -- पत्र सल्या-२-२२। सारज-६४४ इत्र् । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४। श्रपूर्ण ।

विशेष-चरनदास कृत सतगुरु महिमा है -प्रथम व श्रन्तिम पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ —

सुख देव जी पूरन विसवा वीस ।

परम हंस तारन तरन ग्रह देवन ग्रह देवा ।
श्रनमें वानी दीजिए सहजो पाने मेवा ।

नमो नमो ग्रह देवन देवा ॥

४=१ गुटका नं० =0-- पत्र संख्या-३०। साइज-७×१ इख। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×।
पूर्ण।

विशेष—तीर्थकरों के माता, विता, गणधर, वश नाम आदि का परिचय, नन्दीश्वर पूजा तथा जीव आदि के मेदों का वर्णन किया गया है।

४८२ गुटका न० ८१ — पत्र संस्या∸२६ । साइज-८४६ इख । माषा-हिन्दी । लेखन फाल-४ । पूर्ण ।

विशेष-पंचमगल, सिद्धपूजा-सोल्ह कारण, दशलक्षा, पंचमेर पूजा घादि,का समह है।

४=३ गुटका न० =२—पत्र संख्या-१०२ । साहज-६×१ इच । मार्षा-प्राकृत-हिन्दी । लेखनकाल-४ ।

श्रपूर्ण ।

गुटके एवं संप्रह प्रन्थ]

विशेष—श्राचार्य कुन्दकृत्द कत समयसार गाथा मात्र है, श्रहवल विचार श्रादि पाठों का संग्रह है।

४८४. गुटका न० ६२ — पत्र सख्या –२३ – १७। साइज –६×४ इस । भाषा –हिन्दी । लेखन काल –×।
अपूर्ण।

विशेष — नारायण जीला के हिन्दी के २४६ पद्य हैं लेकिन वे कहीं २ अपूर्ण हैं।

४८४. गुटका न० ८४-पत्र सल्या-४०। साइज-७८४६ इस । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-८ । स्रार्ग ।

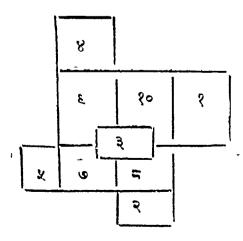
विशेष-गृटके में कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है।

४८६. गुटका न० ८४—पत्र सख्या-८४ । साइज-६×४ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । विशेष—शीलकथा-(भारामल्ल,) लावणी तथा समाधिमरण भाषा का सम्रह है ।

४८७ गुटका न० ८६ — पत्र सख्या-२२ । साइज-६×४ इच्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण विशेष — विभिन्न चक्र दिये हुए हैं जो भिन्न २ कार्य पृच्छा से सम्बन्धित हैं । आगे उनके अलग २ फल लखे हुए हैं ।

४८६. गुटका नं ०८०-पत्र सख्या-१०। साइज-६ रे×१ रे इख । साषा-हिन्दी। लेखन काल-४। श्रपूर्ण।
विशेष-मोह मर्दन कथा है। रचना काल-स० १०६३ कार्तिक बुदी १२ है। जीर्ण तथा श्रशुद्ध प्रति है।
४८६. गुटका न० ८८-पत्र सख्या-१४६। साइज-०४५ इख। माषा-सस्कृत-हिन्दी। लेखन

विशेष—मक्तामरस्तोत्र, सिद्धप्रियस्तोत्र, पार्श्व नाथस्तोत्र (पद्मप्रम), निषापहारस्तोत्र, परमज्योतिस्तोत्र, श्रायुर्वेदिक उसले, स्तनत्रय पूजा श्रादि पाठों का सम्रह है। षीसा यत्र भी है जो निम्न प्रकार है—



४६० गुटका नं ८६-- पत्र संख्या-६१ से १७१। साइज-१×३ इम्र । माषा-सस्कृत । लेखन काल-× । श्रपूर्ण ।

विशेष - ब्वालामालिनीस्तोष, चक श्वरीस्तोष, पार्श्वनाथस्तोष्ठ, त्रित्रपालस्तोष्ठ, परमानंदस्तोष्ठ, लदमी-स्तोष्ठ, चैतनवधस्तोष्ठ, शांतिकरस्तोष्ठ-(प्राकृत), चिन्तामणिस्तोष्ठ, पुण्डरीकस्तोष्ठ, मयहरस्तोष्ठ, उपसर्गहरस्तोष्ठ, सामायिक पाठ, जिन सहस्र नाम स्तोष्ठ श्रादि स्तोष्ठों का सम्रह है।

४६१. गुटका न० ६०--पत्र सल्या-६८। साइज-४×३ इश्रा मापा-सस्कृत। लेखन वाल-स० १८६६ | पूर्या।

विशेष---निम्न समृह हैं ---

न्हवण, सफलीकरणविधान, पुरायाहनाचन श्रीर याग मङल ।

४६२ गुटका न० ६१--पत्र सख्या-६० । साइज-५×४ इन्न । माषा-सस्कृत । तिर्शेष--सामान्य पाठों का संग्रह है ।

४६३. गुटका नं० ६२—पत्र सख्या-७१। साइज-५×४ इत्र । माषा-सस्कृत । लेखन काल-×। अपूर्ण । विशेष—श्रधिकांशत नन्ददास के हिन्दी पदों का समह है । कुछ पद सूरदास के सी हैं । राघाइप्ण से संविधत पद हैं । पदों की सख्या १५० से श्रधिक है ।

४६४ गुटका न०६३--- पत्र सख्या-१६१। साइज-४×४ इख। माषा-हिन्दी। लेखन काल-सं०

विशेष-नेमीश्वररास, श्रीपालरास (वहारायमल्ल) है ।

४६४. गुटका न० ६४—पत्र सल्या-२३ से ५४। साइज-५६×४ इश्र। मापा-हिन्दी। लेखन काल-×। श्रपूर्ण।

विशेष-हिन्दी पदों का समह है।

४६६. गुटका न० ६४—पत्र सल्या-१४० । साइज-४३×६५ इख । माषा-सस्कृत । तेखन काल-×। अपूर्ण ।

विशेष-व्योतिष शास्त्र से सर्षध रखने वाले पाठ हैं।

४६७. गुटका न०६६--पत्र सख्या-२६। साइज-२×४ इस । माषा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण। विशेष--पदों का समह है।

४६८. गुटका न० ६७— पत्र सरूया-२७६ । साइज-७४४ इस । मापा-हिन्दी । लेखन काल-४ । श्रपूर्ण एव जीर्ण ।

विशेष -- र गुटकों का सिम्मश्रण है । मुख्यत. निम्न पाठों का समह है ।

विषय-सूची	कर्चा का नाम	4	भाषा	विशेष
(१) शालिमद्र चौपई	जिनराज सूरि		हिन्दी	र० का० स० १६७⊏
•				श्रासोज नुदी ६

प्रारम्भ-सासण नायक समिरयइं, वर्द्धमान जिनचद। श्रीमश्र विधन दुरइ हरइ, श्रापह परमानद॥१॥

श्रन्तिम पाठ—साधु चिरत कहवा मन तरसइ, तियाए मास्यउ हरसइजी ।
सोलह सय श्रिठित्ति वरसइ, श्रासू विद छिठ दिवसइजी ॥
सा० जिनसिंह सूरि मितसारइ मिवयण नइ उपगारइ जी ।
श्री जिनराज वचन श्रनुसारइ , चिरत कहाउ र विचारइजी ॥
इणि परिसाधु तथा ग्रेण गावइ, जे भवियण मन भावइजी ।
श्रिलिप विघन तसु दूरि पुलावइ मन विधित सुख पावइजी ॥१०॥
ए सबध मिवक जे भिणस्यइ, एक मना सांमिलिस्यइजी ।
दुख दुह गतस दूरि गयावस्यइ, मिन विधित फल लहिस्यइ जी ॥११॥

महावीर चडवीसमउ प्रएम्या पुरह स्त्राम ॥१॥

(२) शीतलनाथ स्तवन	धनराजजी के शिष्य हरखचद	हिन्दी	र० का० स० १७२६ कार्तिक सुदी १४
(३) पार्र्व स्तोत्र	53	"	र० का० स० १ ७५४ कार्तिक सुदी ५
(४) नेभिनाष स्तोत्र		53	र० का० स० १७१३
(५) पदसग्रह	"	77	र० का०स० १७५⊏
(६) नेमिनाथ स्तवन	धनराज	17	र० का० स० १७४⊏
(७) चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति	_	29	
जन्मोत्सव स्वध्याय			•
(=) गणनायक देमकरण जन्मी	त्पित धर्मसिंह सूरि	57	र० का० स० १७६६
(c) गामामाम स्वा	(1777-265)		माघ सुटी
(६) पुरयसार कथा	(पुर्यकीर्ति)	77	र० का० स० १७६६
प्रारम्भ-नामि राय नदन न	मु, साति नेमि जिन पाशि।		

श्री गोतम गणधर सदा, लीला लिध निधान । समरी सह ग्रुर सरस्वती, वेषिष वधारइ वांन ॥२॥

श्रतिम पाठ-खरतर गछ मति महिय विरिजिउ, युग प्रधान जिनवद । श्राचारज मिहमागिर मुनि वरूए, श्री जिनसिंह सुरद ॥२००॥ हर्षचद्र गिथा हर्ष हितकरू, वाचक हस प्रमोद । तासु सीस पून्यकीरत इस माथइ, मन घर ऋणक प्रमोद ॥१॥ सवत् सोलह सइ छासट्टि समइ विजय दसमी ग्रुरुवार। सागानेर नगर रिलया मणड, पमरयं एइ विचार ॥२॥ पद्मप्रम जिन सुपसाउलउ, दोष दोह गत जा दिन। उदय वद्धी मण्ड, सुख सपद सतान॥३॥ एह चरित्र मवियन जे सामलइ दुख दोह गतमु जाइ दीन । उदय श्रद्धकउ न तरुवइ, तसघरन वनि धधाइ॥४॥ इति श्रष्ट प्रवचन माता उपर पुर्यसार कथा सपूर्ण।

(१०) सीमधर स्वामी जिन स्तृति		हिन्दां	विशेष
(११) छ जीव कथा		5 7	
विशेष— ६५ पद्य के द्यागे = पत्र किसी	के द्वारा फाड दिए गये	हैं।	
(१२) श्रावक सूत्र (प्रतिकमण)		शा₹त	
(१३) श्रतिचार वर्णन		,,	
(१४) नेम गीत	लन्धिवजय	हिन्दी	
(१५) स्तवन		"	
(१६) सीमधर स्तवन	गणिलाल चद	91	_
(१५) चउसरण परिकरण	_	77	
(१=) मकामरस्तोत्र		"	
(१६) नवतत्व		"	
(२०) नेमिराजुलस्तवन	जिनहर्ष	71	-
(२१) नेमि राजुल गीत	-	27	
(२२) सुमदासती सन्भाय		"	
(२३) विजय सेठ विजया सेठाणी सङ्गाय	स्रिहर्गर्कति	77	
(२८) पद-करि श्ररिहतनी चाकरी	ज्ञिनवल्लम	99	

गुटक एव सम्रह मन्थ]

Ę,

(२४) सङ्भाय (२६) प वाख्यान पचतत्र)

कवि निरम्लदान

ले० क० स० १७=१

"

"

प्रारम्म — प्रथम जपु श्ररिहंत, अग द्वादश जु मानधर ।

गणधर ग्रक सज्जत, नमो प्रति गणधर तिसतर ॥

नमो गणेश सारदा श्रवर ग्रक गोत्तम स्वामी ।

तीर्थंकर चौनीस सकल ग्रुनि मए शिवगामी ॥

नमो न्याति श्रावक सकल रस हाय मिल मिवक सम ।

तुम्हरे प्रसाद यह उच्चरो पचतत्र की कथा श्रव ॥

पच्छ्यान वखानि हो न्याय नीति ससार ।

श्रव्प बुद्धि माषा रच्चं कक् ं श्रन्थ विस्तार ॥१॥

श्रन्तिम पाठ-राम नाम निज हीरदे धरे, मुख ते मिन्ट वचन उचरे । सव जियासुख सो श्रपने थान, सदा कहे निज मन में ग्यान ।

दोहा-सम निज थानक सुख लहै, सव मुख सुमरे राम । सहस किरत माषा कियो श्रावक निरमल नाम ॥

इति श्री पचारुयान श्रावक निरमल दास कृत माषा सपूर्ण । लेखन काल स० १७५४ जेठ सुदी ४ । प्र'थ ५१ , पत्रों में है । तथा ११४१ पद्य हैं ।

(२७) सात व्यसन सिन्भाय	चेम कुशल	हिन्दी —
(२⊏) ज्ञान पच्चीसी	-	,,
(२६) तमाख़ु गीत	सहसकर्ण	,,
(२०) नल दमयन्ती चौपई	समयसुन्दर	,, र० का० स० १७२१
		पद्य सं० १०
(३१) शांति नाथ स्तवन	केश व	,,
३१ क पार्श्वनाथ स्तवन		,, —
(३२) महावीर स्तवन		"
(३३) राजमती नो चिट्ठी		,,
(३४) नववाडी नो सिक्साय		
(३५) शीलरासो	0	5)
_	विज्यदेव सूरि	1), पद्य स० ७६
(३६) दान शील चौपई	्जिनदत्त सूरि	•, लै॰ का॰ स॰ १७४२
(३७) प्रमादी गीत	गोपालदास	" २४ पद्य

२६२].		िगुटके एव प्रन्थ सम्रह
(३८) स्रात्म उपदेश गीत	समय सुन्दर	,,
(३६) यादुरासो	गोपालदास	"
(४०) रात्रिमोजन सन्भाय	,	,,
(४१) तमाखु गीत	मुनि श्राणद	
(४२) शांति नाथ स्तवन	ग्रण सीगर	,,
(४३) पच सहेली	छीहल	🤧 र० का० स० १५७५
		फागुण सुदी १५
(४४) माति छत्तीसी	यश कीति	,, र ० का० स ० १ ६८८
(४५) यादवरासो	पुएय रतन गणि	🥠 ले० का० स० १७४३
(४६) सिंहासन वत्तीसी		•• ले० का० स० १६३६
(४७) नेमिराजमतिगीत	-	" —
(४८) मुनिगीत		" –
(४१) भास	मनहरण	,, र० का० स०१७३४
(४०) सिंघासन वत्तीसी	हरि कलश	"र० का० स० १६३२

४६६. गुटका न०६८--पत्र सख्या-१७४। साइज-६५४७ इस्र। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-स॰ १७१ = वेशाख सुदी ६। पूर्ण।

श्रासोज मुदी २

विशेष-पर्वतधर्मार्थी कत समाधितत्र की बाल बोध टीका है। प्रति जीग है।

६०० गुटका न० ६६--पत्र सख्या-१४६ । साहज-१०×४ दे इस । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-स० १७६७ वैशाख बुदी र । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का समह है --

विषय-सूची	कर्त्तीका नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रस्तवन	श्राशाघर	सस्ऋत	
नवप्रहपूजाविधान	_	"	
ऋषिमडलस्तोत्र	-	"	
भूपाल चौवीसी	मृ्पाल कवि	"	
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	हिन्दी	५६ पद्य
सामायिक पाठ टीका सहित	नयचदजी छानडा	"	

गुटके एवं सम्रह मन्ध]

६०१. गुटका नं १००-पत्र सख्या-रे⊏। साइज-१०×७ इच । माषा-प्राऋत-हिन्दी। लेखन काल-स० १७०६ वैशाख बुदी ११। पूर्ण।

विशेष--गुणचद्र स्रि के शिप्य छात्र कल्यागा की ति ने प्रतिलिपि की थी। त्रिभगी का वर्णन है।

६०२. गुटका न० १०१ — पत्र सख्या-१०२ । साइज-६×१ इच्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-×। श्रपूर्ण ।

विशेष--- लद्दमीदास कृत श्रीणिक चरित्र है। माषा-हिन्दी है। कुल पद्यों की सख्या १६७४ है, श्रन्तिम के कुछ पद्य नहीं हैं। श्रीणिक चरित्र के मूलकर्ता म० शुमचन्द्र हैं।

६०३. गुटका न० १०२--पत्र सख्या--०। साइज-१०४४ है इख। माषा-हिन्दी। लेखन काल-म० १६४=। पूर्ण।

विषय−सूची पद	कर्त्ती का नाम सघपति राइ हूगर श्री जेगा सासगा सकल सुह गुर थिर	माषा हिन्दी	विशेष —
पद	अ। जप सातप तन्य छह गुरानर	33	-
पद	कुशल किर कुशल किर कुसल कालक सूरि	मुरिंद गुरु ।	
मणिहार गीत	जय जय भदा जय जय नदा वनिता क्रवि वीर	वचन विकासइरे ।	
·	वीर जी वयणे विरचीया, श्रेणिक	••	
गीत	— करि श्रु गार पहिर हार तजि विश	" कार कॉमनी ।	
जइतपद वेलि र०	कनकसोम का॰ स॰ १६२५, ले॰ का॰ सं॰	" १६४⊐ मादवा बुदी = ।	४६ पद्य हैं।

प्रारम्म—सरसित सामिण बीनवु, मुक्त दे श्रमृत वाणि ।

मृत्तपकी खरतरतिणा, करिस्यू विरद वखान ॥१॥

श्रावक श्रावी मिलि मुणड मिन धिर श्रित धार्णेद ।

चिति विष वादन को घरड, साचड कहर मुर्निट ॥२॥

सोलह पचीसह समह, वाचक दया मुनीस ।

च उमािम श्राया श्रागरह, बहुयरि करि मुजगीम ॥३॥

रतनचद्र	वश्रा	गि गणि,	पंडित	साघु	कीरति	1
हरिरंग	गुण	श्रागलउ	ज्ञाना	देवकी	रति	[[8]]

श्रन्तिम पाठ—दया श्रमर माणिक गुरु सीस, साधु कीरित लहीय जगीस ।

धुनि कनक सोम इम श्राखइ चड विह श्री सघ की साखइ ॥४६॥

इति श्री जइत पद वेलि । सवत् १६४= वर्षे श्रवाद बुदी श्रप्टमी ।

(६) चूनडी	साघुकीचि	हिन्दी	
(भाउ	तपुरि सोहामगाउ, गढ मढ मन्ति	दर वाई हो)	
(७) मजारी गीत	जिनचन्द्र सूरि	77	-
খ্ৰা	ली गारउ उदिरउ, नित खेलह	थालि ।	
(=) वइरागी गीत		"	_
(६) शील गीत	भारवदास	99	
(१०) पद		91	
(११) दानशीलतपमावना	_	हिन्दी	१४ पद्य हैं।
सरसति	स्वामिणि वीनवु वरदेई सारद	ा मोहि हो।	
(१२) गोरी काली वाद		9 7	*****
(१३) श्रावक प्रतिक्रमण स	্ব —	সান্থ্র	
(१४) पार्श्वनाथ नमस्कार	श्रमयदेव	"	-
(१५) रागरागिनी मेद, सर	गीत मेद —	हिन्दी	-
(१६) नेमिनाय स्तवन	_	77	
प्रारम्भ — श्री सहगुरना पाय न	मी, जियावायी पर्यामेवि ।		
नय मव नेमीसर	तया सवेपइ पमयोस्र।		
सील सिरोमणि गुण	निलंड, जादव कुल सिर्णगार	t	
स्पता तेइ तप	उचरी, पामीजइ मवपार	[] = []	

श्रन्त—इय नेमि जिण जगदीस गुरु, पर्स सिव लब्बी वरो ।
हरिवस खीर समुद्र ससिहर सामि सह सपइ करो ।
उदाम काम कुरग केसरि, सिवादेवि नदणउ ॥
मह देहि नीय पइ कमल सेवा, स्यल जण श्राणदणो ॥४३॥

(१७) वेताल पच्चीसी वेतालदास हिन्दी

प्रारम्म सरसित सुलित वचन विलास, श्रापं सेवक पूरइ श्रास ।

तुम्ह पसाइ हुन्नइ दुद्धि विशाल, कविता रसके कवं रसाल ।

महियल मालव देस विख्यात, धरमी लोक विसन नहीं सात ।

उन्जेगी नगरी सु विसाल, राज करइ विक्रम भूपाल ॥२॥

श्रन्तिम—प्रगट हुई सर्व सिधि रिधि वहु वुधि नरेसर ।

सरउ काज तुम्हि करेड राज, जाम तपइ दिगोसार ॥

इद्रह दीधंड मान वली, वरदान इसी परि ।

ए प्रवध तुम्ह तणंड प्रसिधि होसी जग मीतिरि ॥

रंजड राड सुपसांड लिहि विक्मा इत श्राव्यंड घरि ।

उच्जेण नगरि उछव हुय हरेष करी श्रित विस्तरिहि ॥३६०॥

राज रिधि सव सिधि सुनस विस्तरह महीतिलि ।

जरा मरण श्रवहरण, जन्म लर्ब्माइ उत्तिम कुलि ॥

धरम धराड धरण करण सुख श्रीहे निसि ।

रमण रूपि रमा समाण, तिजि माण हुउ वसि ॥

चिहु पद्दि प्रथम श्रवर करी, जास नाम श्रव्यइ प्रसिद्धि ।

तिणि कही कथा पच चीसए सरस वाचंड विष्ठिय ॥३६०॥

(१८) विकासप्रवन्य रास

विनयसमुद्र

इति वेतालपचीसी चउपई समाप्त ।

हिन्दी र०का०स०१४⊏३ ३६४ पद्यहें।

प्रारम्म—देव सरसित २ प्रथम पणवेवि, वीणा पुस्तक धारिणी ।

चद्र विहसि सु प्रसिस वल्लइ कासमीरपुर वासिणी ॥

देइ नांण श्रनाण पिल्लइ कवियणनी माडली दिउ मुक्त बुधि विशाल ।

जिम विकस राजा तणाउ कहाउ प्रवन्ध रसाल ॥१॥

मध्य भाग—विक्रमा दत्य तेज द्यादित्य बोलइ चचन करइ ते सत्य ।
बिलि मागइ भीजउ श्रादेस खम नयिर किर वेग प्रवेश ॥२४२॥
श्री जयकर्ण राय मेघरे त्रीजीमि चिंद साहस करे ।
पेटी श्राणि वेगि तिहां जाइ, राजा चाल्यु किर समदाइ ॥२४६॥

सन्तिम साग-सवत पनरह सई त्रासीयइ, ए चरित्र निम्रुणी हिर सीयइ। साइसीक जे होइ निसकि, कायर कपइ जे बिल रिका श्री उनएसगछ गण वर सूरिं, चरण करण गुण किरण मयूर ।
रयण प्रणु गुणगण भूरि, तसु श्रतुक्रिम जपक सिद्धसूरि ॥६७॥
तेह नइ वाचक हर्ष समुद्र तसु जसु उजल पीर समुद्र ।
तसु विनये विन या बुद्धि एह, रच्यु प्रविध निरिष तणेह ।
पच उड नामा सुचिरित्र, देखी वेहनउ श्रावि विचित्र ।
तिणि विनोद चउपई रसाल, कीधी सुणतां सुख रसाल ॥४६६॥

(१६) विद्याविलास चउपई

श्राह्मासु दर

हिन्दी ३६४ पद्य हैं। रचना काल स० १४१६

प्रारम्म —गोयम गणहर पाय नमी सरसित हियइ घरेवि ।

विद्या विलास नरवइ तण्ड, चरिय मणु सखेवि ॥१॥

जिम जिम समालियइ श्रवणि पुरुय पवित्र चरित्र ।

तिम तिम परमाणद रस श्रहनिसि विलसइ चित्त ॥२॥

भण कण कचण सुयण जण राणिम मोग विलास ।

मन विश्वत सुख सपजह जसु हुय पुरुय प्रकाश ॥३॥

चउपई—पुरय पसाई पाम्यउ राज, पुर्य प्रमाणि चट्या सविकाज । धन धन विद्या विलासहचरी, तेहिय निमणु द्यादर करी ॥४॥

मध्य माग—कमलवती पुत्री तयाउ पाथि ग्रहण करत । तउमु तउ नरवह सुखउ वाचा ध्ररणहु त ॥६८॥

श्रन्तिम पाठ — इगा परि प्रख पाली श्राउ, देवलोकि पहुतउ नरराउ।

खरतर गिछ जिन वरद्धन सूरि, तासु सीस बहु श्राणद पूरि ॥

श्री श्राह्मासु दर वसु बन्भाय, नव रस किद्ध प्रबध सुमाव।

सवत् पनरह सोल वरसिम सध वयिणएविय सुरम्म ॥

विद्या विलास नरिंद चरित्ता, मिवय लोय एह पवित्त ।

जे नर पढइ सुग्गइ सामलह, पुग्य प्रमाव मनोरथ फलाइ ॥३६ ॥।

इति श्री विद्या विलास चउपई ॥

(२०) माठि सवत्सरी — हि दी स० १६८ में स० १६६० का वर्णन है'। विषय—च्योतिष।

६०४. गुटका न० १०३--पत्र सख्या-७४ । साइज-७×१ इन्न । माधा-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण विशेष -- कर्मो की १४८ प्रकृतियों तथा चौवीस दडकों का वर्णन है।

गुटके एव सम्रह प्रन्थ]

६०४. गुटका न० १०४ -- पत्र सख्या-३१ । साइज-=×६ इत्र । माषा-सस्कृत । लेखन काज-×। पूर्ण विशेष---सकलीकरणविधान, न्हवनविधि, तथा पूजा समह है ।

६०६ गुटका न० १०४--पत्र सख्या-१२०। साइज-४८४६ ई इ । भाषा-हिन्दी सरकत । लेखन काल-×। पूर्ण ।

।वशेष — नित्य नियम पूजार्ये श्रादि हैं।

६०७. गुटका नः १०६—पत्र सस्या-२१८ । साइज-४×४ इझ । माषा-सर्ऋत । लेखन काल-×। पूर्ण । विशेष—पूजा समह है ।

६०८. गुटका न० १०७--- पत्र संख्या-२४४ । साइज-४५ ४६५ इख । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन

विशे - पूषना पाठ समह है।

६०६. गुटका त० १०८ - पत्र सस्या-२०० । साइज-६×६ दन्न । माषा-हिन्दी ।

विषय-सूची	कर्चाकानाम	भाषा त्रिशेष
(१) यशोधर चरित्र	खुशालचढ	हिन्दी र० का० म० १५७५
\		पद्य ५६६
(२) सप्तपरमस्थानकया	53	,, — पद्यस० ⊏३
		लेखनकाल
(३) मुकटसप्तमीव्रतकथा	77	,, स० 1⊏३६ पद्यस• ४२
(४) मेचमालात्रतकया	57	,, स• १⊏३० पद्य ४४
(५) चन्दनपिटमतक्या	"	"
(६) लिघिविधानत्रतकथा	19	>>
(७) जिनपूजापुरदरकथा	"	5 7
(=) षोडशकार्यव्रतकथा	77	" "
(६) पद (५)	39	77 79
(१-) रूपचद की जखडी	रुपचद	, , १८३०
(१) एकीमावस्तोत्रमाषा	चानतराय	,, १८३१ वेशाख सुद ी ३
(१२) भक्तामरस्तोत्रभाषा		" "
(१३) क्ल्यायमदिरसावा		77 79
(१८) शनिश्चर टेव की कथा	****	,, '= ७४ जेट सुटी १५

(१५) श्रादित्यवार कथा

भाऊ

हिन्दी १८७४ त्राषाट सुदी ४

१६) नेमिनाय चरित्र

श्रजयराज

"

पद्य मरूया - २६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १७६३ द्यपाद सुदी १३ । लेखन काल-स० १७६८ चेत्र सुदी ८ ।

प्रारम्भ —श्री जिनवर वदो सर्वे, श्रादि अत चवबीसे ।

हान पु जि ग्रण साग्खा, नमी त्रिभुवन का ईस ॥१॥

तामे निम जिणंद को बदौ वारवार ।

तास चरित वखाणिस्यो, तुझ वुधि श्रनुसार ॥२॥

मध्य भाग—जो होइ वियोग तिहारो, निरफल है जनम हमारो।
ताते सजम श्रव तिजिए ससार तथा सुख मिजए।
जल विन मीन जिब किम मीन, तेसे ह् तुम श्राबीन।
तुम माब दया भी मीन्हा, सब जीव छुडाई जी।

श्रन्तिम माग - श्रजयराज इह कीयो वखाण, राज सवाई जयभिंद जाण । अनावती सहरे सुम थान, जिन मन्टिर जिम देव विमाण ॥ नीर निवाण सोहें वन राई, बेलि गुलाब चमेली जाइ। चपो मरवो अरे सेवति, यौ हो जाति नाना विघ कीती ॥ २४ =॥ वह मेवा विधि सार, वरणत मोहि लागे वार । गढ मन्दिर कछ कहा। न जाइ, मुखिया लीग बसे श्रधिकाइ ॥ ११६॥ तामे जिन मन्दिर इन सार, तहां विराजे श्री नेमिकुमार । स्याम मूचि सोभा ऋति घणी, ताकी वोषमा जाइ न गणी ॥ १६०॥ जाके भाग उदे सुम होइ, करि दरसण हरषे भेट सोई। श्रावें जातें सरावग धया, कार्टे कर्म मर्वे श्रापणां ॥२६१॥ श्रनेराज तहां पूजा कराई, मन वच तन श्रति हरत धराई । निति प्रति बदे ते बारवार, तारण तरण कहे मत्र पार ॥२:२॥ ताको चरित कह्यो मन अपणा बुधि सारू उपजाई। पिंत पुरुष हसो मित कोई, मूल चूक यामें जो होई ॥२६ <॥ सवत सतरासे त्रेणवे, मास श्रसाट पाई वर्णयो । तिथि तेरस अधेरी पाल, शुक्रवार शुभ उतिम दाख ॥ इति श्री नेमिनाथजी की चौपई सपूर्ण ।

गुटके एव सम्रह मन्थ]

इह पोथी है साह की, चहड माल तस नाम । मान महातमा लिपि करी, नगर श्रवावती धाम ॥

इसके श्रतिरिक्त चौवीस तीर्थंकर स्तुति एव कक्का वचीशी श्रादि पाठ श्रीर हैं।

६१०. गुटका न० १०६-पत्र सस्या-१६४ । साइज-५३×४३ इश्व। भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× ।

पूर्ण । विशेष — सुदर्शन रास — षद्य सख्या २०१। लेखन काल – स० १ =०१ कातिक सुदी = । पूर्ण । इसके अतिरिक्त १० श्रीर पाठ है ।

६११. गुटका नं ११०-पत्र सख्या-१२० । साइज-६×५ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । विशेष-निम्न गुरूप पाठीं का सम्रह है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
टडाग्रागीत		हिन्दी	-
_, शिवपच्चीसी	वनास्सीदास	15	
समवशरणस्तोत्र	Accessed to	सस्कृत	, ,
पचेन्द्रियवेलि	ठ व कुरसी	हिन्दी	
पद	सुन्दर	"	*****
वचीसी	मनराम	77	

अत मे बहुतसी जन्मक डिलिया दी हुई हैं।

६१२ गुटका न० १११—पत्र संख्या-५ से १२४। साहज $-६×४ \frac{2}{5}$ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल- \times । पूर्ण ।

विषय-सूची	क्त्री का नान	भाषा	विशेष
जिनसहस्रनाम माषा	वनारसीदास	हिन्दी	
एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	9 %	
भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	77	_
क्ल्याणमन्दिरस्तोत्र	वनारसीदास	77	
पद	दीपचद	***	
	सेवा में जाय सोही सफल	घदी।	
पद		77	-
	मेरे तो यह चान है निति दर	(संग पाउ।	

] 20F			[गुटके एव सन्नह मन्थ
C	ाद	कनक नी तिं	"	
		श्रवग्रनहु वंकसो नाथ मेरो।		
t	मद	घानत	"	-
		समरण ही में त्यारी पानत प्रभ्		
•	ग द	मनराम	"	_
		श्रखियां श्राज पवित्र मई मेरी		
	पद	सोमा कही न जिनवर जाय जिनवर मूरी	ते तेरी	
•	इस तरह के २२ पद्य श्रीर है	1		
	त्रेपन किया	त्रवगुलाल	"	
	पचमकाल का गण	भेद करमचद	12	
कातिक सुद्दी १	· ~	'२पत्र भरूया-३० माइज-६×४ इ	त्र । भाषा−हिन्दी	। लेखन क्षाल-म० १८८६
	विशेषगुणविवेक वार नि	याणी है।		
5 .	६१४ गुटका न०११	१३पत्र सख्या-४६ माइज-४×४ इ	ष्म । भाषा-हिन्दी	सस्कृत लेखन काल-× I
पूर्ण ।		ाषा, बारह सावना, एव पचपरमेष्टियो के		
	_	१४—पत्र सख्या-५४। साइज-५X	४ इघ । माषा-	हिन्दी संस्कृत । लेखन
काल-×। श्र				-
		र्ग्यन, नरकों के दोहे, मक्तामर श्रादि माम		
काल~×ो पृ		१ १५ -पत्र सरूया <i>–६७</i> । साइज–६×	८५ इच्च । माषा-	≟हिन्दी-मस्कत । लखन
	विशेष—नित्य नियम पूजा	, चौबीसठाणा चर्चा, ममायिक पाट श्रावि	दे का समह हैं।	
•	६१७ गुटका न०१	१६—पत्र सरूया-३७ । साहज-६×४	इख । भाषा-हिस	दी। लेखन काल-×।
पूर्ण ।	विशेषनिम्न पाठा का स	मह है।		
	विषय-स्ची	क्तीका नाम	भाषा	विशेष ,
	जिनकुशलस्रि छ द स्तवन	— जिनकृशलमृरि	हिन्दी ग	

गगाप्टक	शकराचार्य	संस्कृत	-
जिनसहस्रनाम	जिनमेनाचार्य	37	
रगनाथ स्तोत्र	Distriction .	59	
गोविन्दाप्टक	शकराचार्य	"	

६१८. गुटका न० ११७—पत्र सख्या—६६ । साइज-७४४ है इस । मापा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन नाल-४ । पूर्ण । निम्न समह है —

विषय-सूची	कत्ती का नाम	भाषा	विशेष
(१) पार्श्वनाय नमस्कार	श्रभय देव	भा कृत	
(२) श्रजितशांति स्तोत्र		77	
(३) श्रजितशांति स्तवन	जिनवल्लम सूरि	**	
(४) मयहर स्तोत्र	Prima	हिन्दी	
(५) सर्वाधिप्टायिक स्तोत्र		"	
(६) जैनरत्ता स्तोत्र	-	77	
(७) मक्तामर स्तोत्र	-	77	
(=) क्ल्याणमदिर स्तोत्र	-	33	
(६) नमस्कार स्तोत्र		"	******
(१०) वसुधारा स्तोत्र	*******	"	-
(११) पद्मावती चउपई	.जिनमसहिर	"	
(१२) शक स्तवन	सिद्धिसेन दिवाकर	"	59
(१३) गीतमरासा	विनयप्रम	**	र० का० सं० १४१२

६१६. गुटका न० ११८—पत्र सख्या-२००। माडज-६३×४ ६व । भाषा-हिन्दी । त्रिषय-संग्रह । लेखन काल-х । श्रपूर्ण ।

विशेष-चीच २ में मे पत्र काट लिये गये गये हैं।

विषय-सूची	कर्चा का नाम	भाषा	विशेष
(१) पीपाजी की चतुराई		हिन्दी	
(२) नाग दमन कथा (कालिय नागर्या सन्नाद	-	हिन्दी गघ	
(३) महामारत कथा		गच में ३३ श्रापाय हैं ले॰ का॰ स॰	१७⊏१ श्रासोज मुटी =
(४) पद्मपुराण (टत्तर खड)		33	ते॰ का॰ सं॰ १ ७८२ श्रावण सुदी ३

्राटके एव सम्रह मन्थ

(५) पृथ्वीराजवेलि

पृष्वीराव

"

३०० पद्य हैं

(कृप्ण रूकमणी वेलि)

लेखन का० १७८२ श्रावण सुदी १३ । हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

६२०. गुटका नं० ११६--- पत्र सल्या-१२ से ६६ । साइज-४६×४ इन । माषा-हिन्दी । लेखन काल-×। अपूर्य ।

विशेष—हेमराज कृत मक्तामर स्तोत्र टीका है । प्रति जीर्ण है ।

६२१. गुटका नं० १२०--पत्र सख्या-३४ । साइज-४×४ १त्र । भाषा-प्राष्ट्रत-सस्टत । लेखन काल-×। पूर्ण एव जीर्थ ।

विशेष-परमानन्द स्तोत्र, दर्शन पाठ, सहस्रनाम (जिनसेन), सक्लीक्रण तथा द्रव्य सप्रह छादि पाठों का सप्रह हैं।

६२२ गुटका नं० १२१—पत्र सख्या-४० । साइज-४×४ १त्र । भाषा-संस्कृत । लेखन नाल-× । पृर्णः

विषय-सूची क्रिंग नाम माषा विशेष रामस्तवन सस्कृत

सनत्कुमारसंहितायां नारदोक्त श्रीरामस्तत्रराज सपूर्णं ।

त्रादित्यह्**दय** स्तोत्र — "

मविप्योत्तरपुराणे श्री कृष्णान्तु न सवादे ।

६२३. गुटका न० १२२-पत्र संख्या-११७ ।साइज-४×४ इख । माषा-सस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । विशेष--तत्वार्थसूत्र, देवसिद्ध पूजा, लघु चाणक्य नीति शास्त्र श्रादि पाठों का समह हैं।

77

६२४. गुटका न० १२३— पत्र सख्या-६०। साहज-६×४ इस । माषा-सस्कृत । लेखन काल-×। पूर्ण। विशेष—यत्र लिखने तथा उसके पूजने की दिनों की विधि दी हुई है।

६२४. गुटका न० १२४—पत्र सल्या-१२४ । साइज-६×६ इय । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । सेसन काल-×ं।पूर्ण ।

विशेष-पुरुष निम्न पाठों का समह है।

कृष्णकवच

	विषय-सूची	कर्चा का नाम	माषा	विशेष
	(१) सघ पच्चीसी	1/41 1/4 41ff	साना हिन्दी	. १५२१५ २ ५ पश
t		ं कि संघों के साधुत्रों श्रादि व	·	
1	(२) नाईस परीषह वर्णन		·	
	(३) मांगीतु गी स्तवन	श्रमयचन्द सूरि	"	·
	(४) सामायिक पाठ		"	
	(१) मलामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	***	
	(६) एकीमान स्तोत्र भाषा		"	
	(७) नेमजी का व्याह लो	लालचद	53	रचना काल स० १७४
	(नव मंगल)		"	सादवा सुदी ३
	एरी इह सबत सुनहुः एरी सतरेंसे श्र एरी मादु सुदि तीज उ	धिक चवालारी हो ।		
	एरी सतरेंसे श्र एरी माहु सुदि तीज उ एरी तां इह दि इह गीत मगल नेम डि श्रमवाल गरग गोती श्र पातिसाह वैठाठिक या	धिक चवालारी हो । ग्जारी री हो, ज गीत सुधारी रीहां छै ॥ जनका, साहजादपुर में गाहया	1	
	एरी सतरेंसे श्र एरी माहु सुदि तीज उ एरी तां इह दि इह गीत मगल नेम डि श्रमवाल गरग गोती श्र पातिसाह वैठाठिक या	धिक चवालारी हो। गजारी री हां, ज गीत सुधारी रीहां छै।। जनका, साहजादपुर में गाइया जनक चूर कहाईया।। च्योरा चक वैन वाईया।		
	एरी सतरेंसे श्र एरी मादु सुदि तीज उ एरी तां इह दि इह गीत मगल नेम दि श्रम्रवाल गरग गोती श्र पातिसाह वैठाठिक या नौरगस्याह वली के व	धिक चवालारी हो। गजारी री हां, ज गीत सुधारी रीहां छै।। जनका, साहजादपुर में गाइया जनक चूर कहाईया।। च्योरा चक वैन वाईया।	हिन्दी	 सह है ।
•	एरी सतरेंसे आ एरी मादु सुदि तीज उ एरी तां इह दि इह गीत मगल नेम दि अप्रवाल गरग गोती अ पातिसाह वैठाठिक या नौरगस्याह वली के व (८) चरचा समह	धिक चवालारी हो । ग्रजारी री हो, ज गीत सुधारी रीहां छै ॥ भनका, साहजादपुर में गाहया सनक चूर कहाईया ॥ च्यीरा चक वैन वाईया । रे लाल मगल गाहया ॥ मगवतीदास	हिन्दी विभिन्न चर्चात्रों का संद्र ११ रचन ११	ा काल सवत् १७४०
	एरी सतरेंसे श्र एरी माद्र सुदि तीज उ एरी तां इह दि इह गीत मगल नेम दि श्रमवाल गरग गोती श्र पातिसाह वैठाठिक या नौरगस्याह वली के व (二) चरचा समह	धिक चवालारी हो । ग्रजारी री हो, ज गीत सुधारी रीहां छै ॥ भनका, साहजादपुर में गाहया सनक चूर कहाईया ॥ च्यीरा चक वैन वाईया । रे लाल मगल गाहया ॥ मगवतीदास	हिन्दी विभिन्न चर्चात्रों का संद्र ११ रचन ११	ा काल सत्रत् १७४०
	एरी सतरेंसे आ एरी माद्य सुदि तीज व एरी तां इह दि इह गीत मगल नेम दि अप्रवाल गरग गोती अ पातिसाह वैठाठिक या नौरगस्याह वली के व (=) चरचा समह (E) परमात्म छत्तीसी पद समह अस टोडर, विजयकीर्ति, विश्व	धिक चवालारी हो । ग्रजारी री हो, ज गीत सुधारी रीहां छै ॥ भनका, साहजादपुर में गाहया सनक चूर कहाईया ॥ च्यीरा चक वैन वाईया । रे लाल मगल गाहया ॥ मगवतीदास	हिन्दी विभिन्न चर्चात्रों का संद्र ११ रचन ११	ा काल सत्रत् १७४०

बाई मेघश्री

(संणि 'चेतन स्युण

'घणा जीहां'जीव दया व्रव पाली)

' हिन्दी े

"

(१) पचाणुवत की जर्यमाल

(२) 'सिद्धीं की जयमाल

(३) गोमह की जयमाल

गुटके एव सप्रह प्रन्थः]

(४) मुनीश्वरों की जयमाल

जिगदास

(५) योगसार

योगचन्द्र

गद्य में दोहों पर श्रर्थ दिया हुआ है।

(६) श्रध्यातम सर्वेया

रुपचद

प्रारम्भ — अनमी अभ्यास में निवास सुध चेतन की।
अनमी सरुप सुध वोध को प्रकास है॥
अनमी अनूप उप रहत अनत ग्यान।
अनमी अनीत त्याग ग्यान सुखरास है॥
अनमो अपार सार आप ही की आप जाने।
आप ही मै व्याप्त दीसे जामे जढ नास है॥
अनुमी सरुप है सरुप चिदानन्द चद।
अनुमी अतीत आठ कम स्यो अकास है॥।।

श्चितिम पाठ—चोथे सरवांग सुधि भाने सो मिश्याती जीव,

, स्यादवाद स्वाद विना भूलो मूद मती है।

चोथे श्रित इ टी ग्यान जाने नहीं सो श्रजान,

वहें जगवासी जीव महा मोह रतो है॥

चोथे बण्यो खुल्यो माने दुह ने को मेद जाने,

दाने यो निदान कीयो साची सील सती है।

वार चाल्यो धारा दोड ग्यान मेद जाने सोइ,

तरहें प्रगट चौदे गयो सिध गती है॥

इति श्री श्रध्यातम रूपचद कत कवित्त समाप्त । अन्या ग्रन्थ ४०१।

६२६. गुटका न० १२८—पत्र सख्या-१३७ । सांइज-६×६ इच । साषा-हिन्दी । लेखनकाल-× । श्रपूर्ण । विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

काल चरित्र सा**खी** कवीर

हिन्दी

"

श्रपूर्ण २३ पद्य हैं

ध्रन्तिम पद्य — ऐसे राम कहे सब कोई, इन बातीन तो भगतिन न होई । कहे कबीर सुनहु ग्रर देवा, दूजो जाने नाही सेवा ॥

साखी, रवीर धनी धर्मदास की माला, सबद, रमानी, रेषता तथा अन्य वदों व पाठों का संग्रह है।

19

"

गुटका अधिक प्राचीन नहीं है।

६३० गुटका न० १२६ -- पत्र सख्या-२ से = । साइज-=×१ इस । माना-सस्कृत । लेखन काल-×।

श्रपूर्ण ।

विशेष-सस्कृत में श्रमिषेक पाठ है।

६३१ गुटका नं १३० -- पत्र सख्या-१६। साइज-७१×११ इस । माषा-सस्कृत । लेखन काल-×।

ऋपूर्ण ।

।वराय-पूजाओं का सभह है।

६३२ गुटका न० १३१ -- पत्र संख्या-२२४ । साइज-६×६ इख । माषा-हिन्दी-सस्कृत । लेखन काल-स० १७७६ मगसिर दुदी ३ । पूर्ण ।

विषय-सूर्ची	क्त्री का नाम	भाषा	विशेष
मोच पैडी	ननारसीदास	हिन्दी	
विनती	मनराम	"	
विनती	श्रजयराज	"	_
श्रठारह नाता का चौदाल्या	लोहट	1 7	दो प्रति हैं।
श्रीपाल स्तुति	-	72	२१ पच हैं।
साधु वदना	ननारसीदास	"	•
त्रादित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	१४० पध हैं।
		लै०का-स०१∨	०७६ फाग्रण सुदी ३ ।
गुणान्समाला	मनराम	22	४० पद्य है।

प्रारम्म-मन बच कर या जीडि कैरे बदी सारद मायरे।

ग्रंग श्रिक्षर माला कहु सुणी चतर सुख पाई रे।

माई नर मन पायी मिनख को ॥।॥

परम पुरिप प्रणमी प्रमम रे, श्री ग्रर ग्रन श्राराधी रे,

ग्यान ध्यान मारिग लहें, होई सिधि सन साधी रे।

माई नर मन पायी मिनख की ॥२॥

श्रन्तिम भाग-हा हा हासी जिन करें रे, किर किर हासी धानों रे। होरो जनम निवारियो, विना भजन भगवानों रे॥३०॥ पट गुणे श्रर सरदई रे, मन वच काय जो पीहारे। नीति गहें श्रति सुस्न लहें, दुख न न्यापे ताही रे। सार्ड नर सब पासों मिनस की ॥३८॥ निज कारण उपदेस मेरे, कीयों बुधि श्रनुसार रे।
किवयण दूसण जिनधरी लीज्यों सब सुधारी रे।
यह विनतीं मनराम की रे, तुम हो ग्रुणह निधान रे।
सत सहज श्रव गणत जो, करें सुग्रुण परवानी रे।
माई नर मव पायों मिनख की ॥४०॥

समयसार	बना रसीदास	हिन्दी	श्रप् र्ष
विनती	दीपचन्द	55	
	त्रविनासी त्रानन्द मय गुण पूरण	भगवान ॥	
विनती	कुमुदचद	33	****
	प्रभु पाय लागौँ करू सेव थारी ॥		
विनती	मनराम	77	
	पारत प्रभु तुम नाम जी जो	। सुमरे मन वच काय	
पचमगति वेलि	हर् नकी र्चि	1)	
प्रधुम्नरास	व० रायमस्ल	***	

६३३. गुटका न० १३२---पत्र संख्या-१० से ३०। साइज-६×६ इस्र । भाषा-हिन्दी । लेखक काल-×। प्रपूर्ण।

विशेष-अीवाल चरित्र (त्रहारायमल्ल) तथा प्रधुम्नरास, (ब्रहारायमल) श्रपूर्ण हैं।

६३४. गुटका न० १३३--- पत्र सख्या-३४ । साइज-६×४ इस । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-स॰ १७७३ माह बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष-चिन्तामि महाकान्य तथा उमा महेश्वर के संवाद का वर्णन है।

६३४. गुटका न० १३४—पत्र सख्या-१०१ | साइज-=×६ इम्र | भाषा-सस्कृत । लेखन काल-×। प्रपूर्ण

विशेष -- ऋषिम डल पूजा, दशलक्षण पूजा तथा होम विधान (आशाधर) श्रादि हैं।

६३६ गुटका त० १३४ — पत्र सख्या- ४६ । साइज-७३ ×६ इऋ । माषा-हिन्दी । लेखन काल-×। अपूर्ण ।

बच्छराज इसराज चौ नई--जिनदेव सूरि ।

प्रारम्भ - श्रादीपुर श्रादि करी, चौवीसउ जियद । स्रसती मन समस् सदा, श्री जिनतिलक सुनिंद ॥१॥ सद ग्रस्थ पायि प्रयामु करी पामु ग्रस्थ श्रादेस । पुनित खामल वोलिसु, कहरयु लवलेस ॥२॥
पुनि सु सुख उपजे हां, पुन्य सपित होइ।
राजरीध लाला घणी, पुण्य पावे सोई॥३॥
पुन्य उत्तम कुल होने, पुण्य पुरष प्रधान।
पुण्य पुरो श्रानुषो, पुण्य वृधी निधान॥४॥
पुण्य उपि सुणी जो कथा, सुणता श्रविरक्त धाथि।
हसराज वह्नराज नृष हुन्ना पुण्य पसाई॥४॥

मध्यमाग--

कामनी — विविध तेल ताहा कादि घं:रे कुमर न जाये सेंद।
कुमरी नययो नरीपई रे देखी धरी विपाट ॥७१॥

कामनी — कत मयों ताहां कामनी के दाहारें छेई मन कुछ ।

नय टालसी साधि परि करमी सगलो श्रो थुड ॥७२

वछराज क्हें कामनी रे, चिंता म करि काय ।

जेह वे जिया नई चिंतवई रे, तेह त्रो तिया नै माय ॥७३॥

अतिम पाठ नहीं है

६३७ गुटका न० १३६--पत्र सरूया-११३ । माइज-=×६ इख्र । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-×। अपूर्ण ।

निम्न लिखित पूजा पाठ सम्रह हैं — स्तत्रमपूजा, त्रिपचाशातिकयावतोद्यापन, जिनगुणसंपत्तिवतपूजा (म॰ स्तचन्ट), सारस्वतयत्रपूजा, धर्मचकपूजा (स्रपूर्ण), स्विवतिविधान (टेवेन्द्रकीति) वृहत् सिद्धचकपूजा ।

६३८ गुटका न० १३७—पत्र सख्या-४-३६ । संहज-८×६ इझ । भाषा-सस्कृत । लेखन काल-४। श्रपूर्ण । विशेष—गणधरत्रलय पूजा, एव श्राचार्य केशव विरचित षोडशकारणपूजा है ।

६३६ गुटंका न १३८--पत्र मरुगा-६ । साइज-८४४ इम । भाषा-सरकृत हिन्छी । लेखन काल-х । अपूर्ण ।

विशेष — निम्न पाठों का समह है।

भवतामरस्तोत्र, (मत्र सहित) तथा मक्तामर भाषा हेमराज कृत । एकीमावस्तोत्र मूल एउ माषा । निर्वाण कायद भाषा । तत्वार्थसूत्र, पचमगल रूपचन्द कृत । चरचा मग्रह—(स्राठं कमो की प्रकृतियों का वर्णन, जींव ममास वर्णन स्रादि हिन्दी में) तथा संस्कृतमजरी ।

~		•	_	٦
गुटके	ಗನ	संग्रह	ग्रन्थ	ı
570 AL		MAIG	*1 -3	J

	६४०.	गुटका न० १३६-पत्र सख्या-१०२ । साइज-७२×५ इख । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-Х ।
त्रपूर्ण ।		

विशेष कर्चा का नाम मापा विषय-सूची त्रपूर्ण चतु**भु जदा**स हिन्दी मधुमालती की नात ६४४ पद्य तक है। हिन्दी गध पचतत्रमाषा

विशेष — भित्र लाम तथा सहद भेद तो पूर्ण है किन्तु विमह कथा श्रपूर्ण है।

६४१. गुटका त० १४८--पत्र सल्या-४१ । साइज-७×५ इत्र । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल - 🗙 । श्रेपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्चा या नाम	भाषा	विशेष
नेमीर्वरराञ्चलसँवाद	विनोदीलाल	हिन्दी	
पद	नेमकीर्चि	"	***************************************
	सरणागति तेरो नाथ त्या	रिये श्री महावीर ।	
षचकुमारपूजा		"	
वीस विद्यमान तीर्थंकर पूजा		, ,,	
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सरऋत	
परीषह वर्णन		हिन्दी	
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न		"	

६४२. गुटका न० १४१--- पत्र सल्या-६२ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-सरकृत । लेखन काल-× । पूर्ण । विशेष--- मक्तामरस्तोत्र (मत्रसहित) तथा देवसिद्धपूजा है ।

६४३. गुटका न० १४२--पत्र सख्या-१५ से १८६ । साइज-७×६ इख । माषा-प्राकृत-सस्कृत हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एव जीर्ण।

विषय-सूची	कर्चीकानाम	साषा	विशेष
(१) स्रजितशाति स्तवन		मा रुत	४० गाथा
		प्रथम चार गायायें नहीं है।	
(२) सीमधरस्वामीरतवन		•	
(३) नेमिनाश एव पार्श्वना	भ स्तवन,		
(४) बीर स्तवन श्रीर महाव	ीर स्तवन —	सरक्रब	

(१) पार्श्वनाय स्तवन		सस्कृत	
(६) शत्रु जयमडल श्री श्रादिनाम	सतवन —	57	१३ पद्य हैं
(७) गीतम गर्यघर स्तवन		"	६ पद्य हैं
(=) वद्ध [°] मान बिन द्रात्रिंशिका		17	
(६) मारी स्तोत्र	_	**	१२ पद्य हैं।
(१०) सक्तामर स्तोत्र		77	४४ पथ हैं।
(११) सत्तरिसय स्तोत्र		"	-
(१२) शान्ति स्तवन एव वृहद् शान्ति स्तवन		"	
(१३) श्रात्मानुशासन	पार्श्वनाग	,,	७७ पद्य हैं
		र० का० स० १०४० म	।।दवा चुदी १४।
(११) श्रजितनाथ स्तवन	जिनयम स्रि	"	
(१४) वद्ध मान स्तुति	•	33	
(१४) वीतरागाप्टक	_	"	
(१६) षप्टिशत	मडारी नेभिचन्द्र	"	
(१७) गोतम पृच्छा		प्रान्त	
(१८) सम्यक्त्व सप्तति	*****	संस्कृत	
(१६) उपदेश माला	****	हिन्दी	
(२०) मतु ^९ हरि शतक	भतृ [°] हरि	सस्ङत	

६४४. गुटका न० १४३-पत्र सस्या-४४ । साइज-४×२ इन । माषा-हिन्दी । लेखन काल-×। पूर्ण । विशेष-चौनीस तीर्थंकरों का सामान्य परिचय है ।

६४४. धर्मविकास-चानतराय । पत्र सल्या-४४ । साइज-१०ई४७ई इख । माषा-हिन्दी पछ । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०= ।

विशेष-भर्म विलास धानतरायनी की स्फुट रचनाओं का समह है।

्र६४६. पद संग्रह---पत्र सरूया-४१ से ६६ । साइज-११४६ इश्व । माषा-हिन्दी पत्र । विषय-सग्रह । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न॰ १४७ ।

६४७. पाठ सग्रह—पत्र सरूया- = से ११३ । ताक्ज-७ रू ४४ रू विश्व । माना-सस्कृत । लेखन काल- х । पर्छ । वेष्टन न० १२४ ।

विशेष-निम्न पाठों का समह है।

गुटके एवं संग्रह प्रन्थ]

विषय-सूची	कर्चा का नाम	भाषा	विशेष
(१) भक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	
(२) परमञ्योति	वनारसीदास	हिन्दी -	
(३) निर्वाणकायड माषा	भैयामगवतीदास	3 7	
(४) छहदाला	चानतराय	"	

६४८. पाठसंग्रह—पृत्र संख्या—३६। साइज-११×१६ इम्ब। माषा—हिन्दी। रचना काल-×। लेखन काल-×। श्रपूर्ण।

निशेष—निम्न पाठों का संमृह है.—

विषय-सूची	कर्चाका नाम	भाषा	विरोष
(१) पच मंगल	रूपचद		
(२) कल्याणमन्दिर भाषा	चनारसीदास	हिन्दी	
(३) विषापहार		**	
(४) एकीमाव स्तोत्र	मूखर	"	
(५) जिनस्तुति	श्रीपाल))	
(६) प्रमात जयमाल	विनोदौलाल);	
(७) बीसतीर्थंकर जखडी	ह ^द ांकी चिं) ;	
(=) पचमे ब जयमाल	भूघ र दास	75	
(६) वीनती	नवलराम	33	
(२०) वीनितया	मूघरदास	>>	
(११) निर्वाण काण्ड भाषा	भैयामगवतीदास	"	
(१२) साधु वदना	नगर सीदास	7)	
(₹३) सवोध पचासिका भाषा	धानतराय	55	
(१४) वारह खदी	स्रत	87	
(१४) लघु मगल	रूपचद	77	
(१६) जिनदेव पच्चीसी	नवलराम	ת	
(१७) वारह भावना	प्रालू कवि	>>	
(१८) वाईस परीषह	भ्धरदास	33	
(१६) वैराग्य भावना	17	33	
(२•) गज मावना	27	7)	

' (२१) चीवीस टडक दोलतराम ,, (२२) जखडी मृथरदास ,,

६४६. पाठसम्रह—पत्र संस्था-४ से १२ तक । साइज-१०×४ दे इख । मापा-हिन्दी । रचना काल-×। लेखन काल-×। खपूर्ण । वेप्टन न० ४६।

विशेष—मकामर माषा पूर्ण हे एकीमाव स्तोत्र श्रपूर्ण है।

६४०. पाठसंग्रह—पत्र सख्या—६१ । साइज-१०४४ई इत्र । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४३४ । निस्न पाठों का सम्रह है—

विषय-ध्ची	कची का नाम	मापा	पत्र
(१) पाखीसूत्र	कुशल मुर्निद	मास्त	१ से २० तक
(२) प्रतिकमण	_	***	२० से २६ तक
(३) श्रजितशान्तिस्तवन		सस्ऋत	३६ से ४६ तक
(४) पार्श्वनाथ स्तवन		"	४६ से ५० तक
(१) गणधर स्तवन		शाकृत	५० से ५३ त क
(६) मक्तामर स्तोत्र		सरकत	५४ से ५⊏ तक
(७) शान्तिनाय स्तोत्र	मालदेवाचार्य	45	

इनके श्रतिरिक्त ये पाठ श्रीर — स्थानक स्तुति, नवपद स्तुति, शत्रु जय स्तुति, कल्याणमन्दिर स्तोत्र । सध्या चौ विहार, पचक, विचार, षटिश्राक, सामायिक विधि एव सधारा विधि ।

६४१. बुधजनिषतास—बुधजन । पत्र सख्या-५६ । साइज-१०३४६३ इस । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-सप्रह । रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० १०६ ।

विशेष--पं • वुधजनजी की रचनाओं का समह है।

६४२. भूधरविलास--भूधरदास । पत्र सख्या-११६ । साइज-७ई×५ई इख । भाषा-हिन्दी पथ । रचना काल-×। पूर्ण । वेप्टन न० १३२ ।

विशेष-भूधरदास की स्फुट रचनास्रों का सम्रह है।

६४३ मित्रविलास—घीसा। पत्र सख्या-४१। साइज-१०३४६३ इख। माषा-हिन्दी। रचना काल-४। लेखन काल-स० १६५३।पूर्ण। वेप्टन न०११०।

प्रारम्म-श्री जिन चरण नमूं सदा, श्रम तम नाशक मानं।

जा सम दर्शन दर्शते, प्रगटत श्रातम ज्ञान ॥१॥

चौपई-चदू श्रीमत वीर जिनद, मेटत सक्त कर्म जग फद,

बन्दू सिद्ध निरजन देव, श्रप्टगुणातम त्रिभुवन सेच।

बदो श्राचारज ग्रण लीन, जिन निज माव सुद्ध श्रित छीन॥

बदो उपाध्याय करि ध्यान, नाशक मिध्यातम श्रज्ञान,

बदू साधु महा गमीर, ध्यान विषय श्रित श्रचल शरीर।

बदू वीतराग हित माव, श्रातम धर्म प्रकाशन चाव॥४॥

मित्र विलास महासुख देन, वस्तू वस्तु स्वमाविक ऐन।

प्रगट देखिये लोक मकार, सग प्रसाद श्रनेक प्रकार।।४॥

—सर्वेया—

श्रन्तिम- कर्म रिपु सो तो च्याक गति में घसीट फिरचो,

ताही के प्रसाद सेती घीसा नाम पायो है।

भारामल मित्र वो वहालसिंह पिता,

तिनकी सहाय सेती मध यो बनायो है॥

यामें भूल चूक होय सोधि सो सुधार लीजो,

मो पे कृपा दिष्ट कीजो माव यो जनायो है।

दिग निध सत ज्ञान हरि को चतुर्घ गन,

फाग्रन सुदि चौथ मान जिन गुन गायो है॥

दोहा-शानदमय श्रानद करन हरन सकल दुख रोग । मित्र विलास मंग यह निज रस श्रमृत सोग ॥

इसमें निम्न लिखित पाठों का समह है. -

षट द्रव्य निर्णय-दूसरे श्रधिकार तक । मार्वो का पूर्ण सेंद्धान्तिक विवेचन है ।

द्वादस नत वर्णन, क्षाय के पच्चीस मेद वर्णन, सम्यक् दृष्टि श्रवस्था वर्णन, ग्रक स्वरूप वर्णन, द्वादसानुप्रेष्ठा वर्णन, बाईस परीषह वर्णन, पच प्रकारचारित्र वर्णन, मोत्त तत्व वर्णन, एवं सुख दुख निर्णय/प्रथ का विषय है धात्मा में स्व श्रीर परमावों का सद्धान्तिक विवेचन।

६४४. वचनशुद्धिवयाख्यान—पत्र संख्या-६। साइज-१२४७ इख । माषा-हिन्दी। विषय-समह। रचना काल-४। लेखन काल-स० १६४३ जेप्ठ बुदी ऽऽ। पूर्ण । वेप्टन न० १५१।

विशेष-च्याख्यान कर्चा मू थालालजी को कहा गया है।

६४४. विनती पद संमह-पत्र संख्या-१४३ से १७६। साहज-११४४ है इन । मापा-हिन्दां पध । विषय-रफुट समह । लेखन काल-४। श्रपूर्ण । वेप्टन नं० १४७।

विषय-सूची	कर्चाका नाम	मापा	निपय
विनर्ता	भूघरदास	हिन्दी	******
मक्तामर मापा	हेमराज	99	
सम्मेदशिखर पूजा	नंदराम	17	
स्फुट रलोक		सस्कृत	
पद	त्रातमराम	"	
उपदेशी पद		5)	-
पद	नवलराम	हिन्दी	
श्रालोचना पाठ	जीहरीलाल	हिन्दी	
पद	चानतराय	हिन्दी	_



श्र

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा प	त्र सं०
त्रहमताकुमार रास]	मुनि नारायण	(हिन्दी)	१६=
श्रकलनामा	 (:	सं० हिन्दी)	२५२
अ कलकस्तोत्र	(स॰ हि॰)	१००
श्रकलकाष्टक भाषा, स	दासुखं कासलीवा	त्त (हि०)	200
श्रकृतिमचैत्यालयों की व	नयमाल	(हि॰)	888
श्रकृतिमचैत्यालयों की र	चना -	(हि॰)	8 २
श्रकृत्रिमचैत्यालय पूजा	चैनसुखदास	(हि०)	86
श्रकृतिमचैत्यालय पूजा	प० जिनदास	(मं॰)	38
श्रकत्रिमचैत्यालय पूजा	Colones of the Colone	(हि०	38
त्रकत्रम जयमाल		(स॰)	२७७
अचयदशमी व्रत पूजा		(स॰)	२०५
अन्तयनिधि पूजा	******	(स॰)	१ह७
श्रचयनिधिव्रतोद्यापन	ज्ञानभूषगा	(स॰)	२०४
श्रचर वचीसी	मुनि महिसिंह	(हि०)	२५२
श्रजितनायस्तवन	जिनप्रभसूरि	(स॰)	३१०
श्रजितशांतिस्तवन	terna	(हि॰)	१४२
श्रजितशांतिस्तोत्र उ	पाध्याय मेरुनदन	(हि०)	१४०
श्रजितशांतिस्तोत्र		(स॰)	१०६
श्रजितशांतिस्तोत्र		(সা০)	३०१
श्रजितशांतिस्तवन	जिनवल्लभ सूरि	(সা০ ,	३०१
श्रजितशांतिस्तवन		(स॰)	३१२
श्र जितशांतिस्तवन	~	(সা॰)	३०६
मजितजिननाथ की वि	वेनती चिन्द्र	(हि॰)	१४३

यन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
श्रजीर्णमजरी		(स॰)	१६८
श्रठारहनाता		(हि॰)	३७३
श्रठारहनाता का ची	ढाल्या लो हट	(हि॰)	११३
	₹₹२,	१६१, १६१	₹, ३०६,
ब्रहाईद्वीपपू जा	डालूराम	(हि•)	RE
श्रदाईद्वीपपूजा		(स॰)	38
श्रदाईद्वीपपू जा	विश्वभूषगा	(स॰)	88
श्रण्यात्मकमलमार्त्तर	ह राजमल्ल	(स॰)	३८
श्रण्यात्मदोहा	रूपचन्द	(हि॰)	११३
श्रध्यात्म काग		(हि०)	१३८
श्रम्यात्मवत्तीमी	बनारसीदास	(हि॰)	२८२
श्रम्यात्मनारहखङी	दौलतराम	(हि॰)	३⊏
श्रष्यात्मसर्वेया	रूपचन्द	(हि०)	३०४
श्रन्तगढदशास्रो वृ	त्ते अभयदेव सूरि	(हिं॰)	१
(श्रन्तक्रद्दश	ासूत्र वृत्ति)		
श्रन्तरकाल वर्णन		(हि०) ६	.,११६
अन्तरसमाधि वर्णन	-	(हिं०)	3
अनादिनिधनस्तोत्र		(स॰)	१५६
श्रनित्यपं चासिका	त्रिभुवनचन्द	(हि॰)	४,१६४
श्रनुभवप्रकाश	दीपचन्द	(fio):	२३,१८२
श्रनेकार्थम जरी	नददास	(हि॰)	२३२
श्रनेकार्थस प्रह	हेमचन्द्र सूरि	(स॰)	२३२
अनंगरगका व्य	कल्याग	(हि०)	२७४

यन्थ नाम	लेखक	भापा	पत्र सं०	, यन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
श्रनतव्रतोद्यापन		(स॰)	१६७	ष्रप्राहिकाकषा	रत्ननन्दि	(स॰)	२२५
श्रनतव्रतकथा		(स॰)	२२५	श्रष्टांहिकापूजा	•	(हि॰)	¥٥
श्रनतव्रतकथा इ	त्र० ज्ञानसागर	(१ह०)	२६४	श्रष्टाहिकापूजा :	भ० शुभचन्द्र	(स॰)	१६८
श्चनतव्रतपूजा	श्रीभूपग्	(स॰)	१६७	श्रप्टाहिकापूजा	चानतराय	(हि॰)।	ko, ku
श्रनतव्रतपूजा	-	(स॰)	२०४	ध्यप्टाह्मिकापूजा		(स॰)	१ ६=
श्चनतव्रतपूजा	गुणचन्द्र	(स०)	२०५	श्रष्टाद्विकानतकथा	व्र॰ ज्ञानसागर	(हि॰)	२६४
श्रञ्जकमारणविधि		(हि०)	१४⊏	श्रष्टाहिकास्नपनविधि	-	(हि॰)	१४⊏
ग्रभिषेकपा ठ		(स॰)	५०,३ ३६	श्रष्टाहिकावतोद्यापनपू	লা —	(स॰)	१०
श्र मिषेकविधि	_	(स॰)	980	श्रस्सी शिक्षा की वाते		(हि॰)	१३०
श्रमिधानचिंतामिथ	हेमचन्द्र	(स॰)	२३२	श्रकुरारोपगाविधि	इन्द्रनिद	(स॰)	3¥
नाममाला				अकुरारोपणविधि	-	(40)	७३१
श्रमरकोश	श्रमरसिंह		८८,२३२	श्रगोपागफुरकनवर्णन	_	(हि॰)	१४८
श्रद्धक्यानक	वनारसीदास	(हि०)	१६२	अजनशास्त्र	घग्निवेश	(स॰)	३४६
श्ररहत स्वरूप वर्णन		(हि०)	२३				
श्रहत् पूजा	पद्मनदि	(स॰)	૧૬७		श्रा		
श्रईत् पूजा धर्हन् सहस्रनाम	पद्मनिद —	(स॰) (स॰)	१६७ १६⊏	श्राकाशपचमीकथा	श्रा व्र० ज्ञानसार	ार (हि॰ <u>)</u>	२६४
	पद्मनिद — —	•		श्राकाशप चमीकथा श्राख्यातप्रक्रिया		ार (हि॰ <u>)</u> (स॰)	२६ ४ २३०
श्रहेन् सहस्रनाम	पद्मनिद — — —	(स०)	१६⊏			•	
श्रहेन् सहस्रनाम श्रहिन्टाच्याय	पद्मनिद — — — —	(स॰) (प्रा॰)	१६ <i>द्</i> २४५	श्रारूयातप्रकिया		(स॰)	२ ३ ० २
श्चर्तन् सहस्रनाम श्वरिष्टाच्याय श्ववजदकेवली	पद्मनिद — — — — — सिद्धराज	(स॰) (प्रा॰) (हि॰)	१६८ २४५ १३८	श्राख्यातप्रक्रिया श्रागतिजागतिपाठ	व्र० ज्ञानसाग 	(स॰) (हि॰)	२ ३ ० २
श्चर्त् सहस्रनाम श्चरिप्टाध्याय श्ववजदकेवली श्रष्टक	_ _ _	(स॰) (प्रा॰) (हि॰) (स॰)	१६ द २४४ १३ द १६ द	श्राख्यातप्रक्रिया श्रागतिजागतिपाठ श्रागमसार	व्र० ज्ञानसाग 	(स॰) (हि॰) (हि॰) (ग)	२३० > १७१
श्चर्तन् सहस्रनाम श्चरिष्टाध्याय श्चनजदकेवली श्रष्टक श्रष्टविधिपूजा	_ _ _	(स॰) (प्रा॰) (हि॰) (स॰)	१६ ा २४४ १३ ा १६ ा १४२	श्राख्यातप्रक्रिया श्रागतिजागतिपाठ श्रागमसार श्राचोररासा	व्र० ज्ञानसाग 	(स॰) (हि॰) (हि॰) (ग) (हि॰)	₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹
श्चर्तन् सहस्रनाम श्चरिष्टाध्याय श्चनजदकेवली श्रष्टक श्रष्टदिधिपूजा श्रष्टकर्मप्रकृतिवर्णन	— — — — सिद्धराज —	(स॰) (प्रा॰) (हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰)	१६	श्राख्यातप्रकिया धागतिजागतिपाठ श्रागमसार श्राचोररासा श्राचारशास्त्र	त्र० ज्ञानसार — — मुनिदेवचन्द्र —	(स॰) (हि॰) (हि॰) (ग) (हि॰) (स॰)	₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹
श्चर्तन् सहस्रनाम श्चरिष्टाध्याय श्चनजदकेवली श्रष्टक श्रष्टविधिपूजा श्रष्टकर्मप्रकृतिवर्णन श्रष्टजाम	— — — — सिद्धराज — कवि दे व	(स॰) (प्रा॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰)	१	श्राख्यातप्रकिया श्रागतिजागतिपाठ श्रागमसार श्राचोररासा श्राचारशास्त्र श्राचारसार	त्र० ज्ञानसार — मुनिदेवचन्द्र — — वीरनदि	(स॰) (हि॰) (हि॰) (ग) (हि॰) (स॰) (सं॰) २३	2 3 0 2 5 4 2 5 6 2 5 7 2 5 7 2 5 7 2 5 7 3 7
श्चर्तन् सहस्रनाम श्चरिष्टाध्याय श्चनजदकेवली श्रष्टक श्रष्टविधिपूजा श्रष्टकर्मप्रकृतिवर्णन श्रष्टजाम श्रष्टपाहुड	— — — सिद्धराज — कवि देव श्रा० कुन्दकुन्द	(स॰) (प्रा॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (प्रा॰)	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	श्राख्यातप्रकिया ध्यागतिजागतिपाठ श्रागमसार श्राचोररासा श्राचारशास्त्र श्राचारसार श्राचारसारह च	त्र० ज्ञानसार — मुनिदेवचन्द्र — — वीरनदि	(स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (स॰) (स॰) (स॰)	₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹
श्चर्त् सहस्रनाम श्चरिष्टाध्याय श्चनजदकेवली श्रष्टक श्रष्टविधिपूजा श्रष्टकर्मश्रकृतिवर्णन श्रष्टजाम श्रष्टपाहुड श्रष्टपाहुड साषा श्रष्टसहसी श्रष्टांगहृद्यसहिता	— — — सिद्धराज — कवि देव श्रा० कुन्दकुन्द जयचन्द छावड़ा विद्यानदि वारभट्ट	(स。) (प्रा。) (हि。) (हि。) (हि。) (हि。) (प्रा。) (स。)	ि प्र ा । र ४ ८ ८ १ १ १ १ १ १ १ ४ ८ ८ १ १ १ १ १ १ १	श्राख्यातप्रक्रिया ध्यागतिजागतिपाठ श्रागमसार श्राचोररासा श्राचारशास्त्र श्राचारसार श्राचारसारत च श्राचारसारत च	त्र० ज्ञानसार — मुनिदेवचन्द्र — — वीरनदि — जगराम	(स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (स॰) (स॰) (हि॰) (हि॰)	2 3 0 2 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
श्चर्त् सहस्रनाम श्चरिष्टाध्याय श्चनजदकेवली श्रष्टक श्रष्टविधिपूजा श्रष्टकर्मश्रकृतिवर्णन श्रष्टजाम श्रष्टपाहुड श्रष्टपाहुड साषा श्रष्टसहसी श्रष्टांगहृद्यसहिता	— — — सिद्धराज — किव देव श्रा० कुन्दकुन्द जयचन्द छावड़ा विद्यानिंद	(स。) (प्रा。) (हि。) (हि。) (हि。) (हि。) (प्रा。) (स。)	ि प्र ा । र ४ ८ ८ १ १ १ १ १ १ १ ४ ८ ८ १ १ १ १ १ १ १	श्राख्यातप्रिक्या धागतिजागतिपाठ श्रागमसार श्राचाररासा श्राचारशास्त्र श्राचारसार श्राचारसारवृ च श्राठ द्रव्य की मावना श्रातम उपदेश गीत	त्र० ज्ञानसार —— मुनिदेवचन्द्र —— वीरनिद जगराम समयसुन्दर रहधू केशवदास	(स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (स॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰)	2 2 4 5 7 7 4 6 7 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8
श्चर्त् सहस्रनाम श्चरिष्टाध्याय श्चनजदकेवली श्रष्टक श्रष्टविधिपूजा श्रष्टकर्मश्रकृतिवर्णन श्रष्टजाम श्रष्टपाहुड श्रष्टपाहुड साषा श्रष्टसहसी श्रष्टांगहृद्यसहिता	— — — सिद्धराज — कवि देव श्रा० कुन्दकुन्द जयचन्द छावड़ा विद्यानदि वारभट्ट	(स॰) (प्रा॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (स॰)	II Y II II 7 8 dd 62 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	श्राख्यातप्रिक्या धागतिजागतिपाठ श्रागमसार श्राचाररासा श्राचारशास्त्र श्राचारसारह श्राचारसारह च श्राठ द्रव्य की मावना श्रात्म उपदेश गीत धातमसंबोधनकाव्य	त्र० ज्ञानसार —— मुनिदेवचन्द्र —— वीरनिद जगराम समयसुन्दर रहधू केशवदास	(स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (स॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰)	2 2 4 5 7 7 4 6 7 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8 7 8

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र	ा सं० ∣	त्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र	य सं ०
श्रात्मानुशासन टीका	प्रभाचन्द्र	(सं०) ३६,	,१६१	श्राराधनाकथाकोष		(स॰)	२२४
त्रात्मातुशासन भाषा	पं० टोडरमल	(हि॰) ३६	,१६१	श्राराधनाकथाकोष	,	(हि०)	२२६
श्रात्मावलोकन दीप	चद् कासलीवाल	(हि॰)	४०	श्राराधनास्तवन वाच	क विनय विजय	(हि॰)	१००
श्रादित्यवार् कथा		(हि०)	१५२	श्राराधनासार	देवसेन	(সা০)४০,	११०,
श्रादित्यवारकथा ह	ा ० ज्ञानसागर	(हि॰)	२६६			१३२, १३४,	888
श्रादित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि०) = १	,, १३	श्राराधनासार माषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	\$ 3 \$
	११७, १३⊏, १		' i	श्रालापपद्धति	देवसेन	(स॰)	१६६
	१६१, १६७, २	દર, રદ⊏,	३०६	श्रालोचनापाठ		(সা৹)	909
श्रादित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	(हि॰)	5 1	श्राश्रवत्रिमगी		(हि॰)	१७६
श्रादित्यह्दयस्तोत्र		(स॰)	३१०	श्राश्रवत्रिमगी	नेमिचद्राचार्य	(সা৹)	9
श्रादित्यवार वतोद्यापन		(स॰)	२०४	श्रासावरी की बात		(हि॰)	२७¤
श्रादिनाथपूजा		(हि॰) ४	०,१२६		-		
श्रादिनाथपूजा	श्रजयराज	(हि०)	१३०		হি		
श्रादिनाथपूजा	रामचंद्र	(हि॰)	४०	इक श्रवर श्रादि वत्तीर	ती —-	(हि॰)	₹
श्रादिनाथ जी का पद	कुशलसिंह	(हि०)	१६५	इकवीस गिनती को प	ाठ —	(हि०)	ą
श्रादिनाथ का षधावा	-	(हि०)	१५३	इक्कीस गियाती का स	वरूप —	(हि॰)	१
श्रादिनायस्तवन		(हिं०)	१५८	इकवीसठायाचर्चा		(সা০)	१
श्रादिनाथस्तवन	व्र० जिनदास	(हि॰)	२६६	इन्द्रघ्वजपूजा	भ० विश्वभूषगा	(स०) ५०	,88=
श्रादिनाथस्तवन	विजयतिलक	(हि०)	१४०	इष्टछचीसी		(स॰)	१०१
श्रादिनाथस्तुत <u>ि</u>	चन्द्रकीर्ति	(हि०)	२७२	इ ष्टबचीसी	बुधजन	(हि०)१०१	,१७२
श्रादिनाथपचमगल	श्रमरपाल	(हि॰)	१६=	इष्टक्रचौसी		(हिं०)	-
श्रादिपुराण	जिनसेनाचार्य	(स॰) ध	३३,२२२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(स॰)	
श्रादिपुराग	पुष्पदन्त	(श्रपभ्र'श)	२२२	इर्कचिमन	नागरीदास	(हि॰)	२४८
त्रादिपुराया ३	म० सकलकी र्ति	(स॰)	६३			•	
श्रादिपुराण माषा	दौलतराम	(हि०) ६	३, २२२		उ		
धादीश्वर का बधावा	कल्याग्यकीर्ति			उत्तरपुराण	गुगभद्राचार्य	(सं०) ६४	१२२ २
थ्याप्तपरीचा	विद्यानदि	(स॰)	११६	उत्तर ुराण	पुष्पद्त	(শ্বণ•)	६७
श्रायुर्वेद के नुसखे		(हि०)	१३०,	ब चरपुराया	खुशालचद	(हि॰)	ξ¥
१३६, १४	⊏, २६०, २६४	, २७४, २७४	, २८७	उदरगीत	छीह्ल	(हि०)	११६
धारती विनती	*****	(हि०)	१५८	उनतीस घोल दंडक		(हि॰)	१४१

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	र्भन्थ नाम	लेखंक	भाषा	्र पत्र स०
उपदेशजखडी	रामकृष्ण	(हि॰)	• ₹ ७	एषणादोष (छि	ायालीस दोष) ¹ भगव		१ ⊏३
उपदेशपच्चीसी	वनारसीदास	(हि॰)	१४६			. (,)	•
उपदेशवत्तीसी	राज	(हि॰)	१ ५१		ऋौ		
उपदेशमाला	=	(स॰)	३१०	श्रीपधिवर्णन	***	(हि॰)	'२७६
उपदेशशतक	वनारसीदास	(हि॰)	દ૪				
उपदेशारतमाला	सकलभूपण	(स॰)	२ ३	1	H		
उपदेशसिद्धान्तरत्न	गला भडारी ने	मिचद (प्रा०)	२३	श्र् षभनाथचिरत	भ० सकलभूषा	ण (स॰)	₹•8
उपदेशसिद्धान्तरत्नम	ाला माषा —	(हि॰)	२३	ऋषमनामवेलि		(हि॰)	१६७
उपदेशसिद्धान्तरत्नम	ाला माषा भागच	बद्र (हि॰)	२४	ऋषमदेवस्तवन		(हि०)	१४०
उपासकदशासूत्रविवर	ण श्रभयदेव स	गूरि (स∘)	२४	ऋषिम डलपूजा		(स॰)	३०७
उपासकाचार	पूज्यपाद	(स॰)	१३२	ऋषिमडलपूजा	श्रा॰ गणिनदि	(स॰)	२∙४
उपासकाचारदोहा	लच्मीचद्र	(য়प०)	२४	ऋषिमंडलस्तोत्र		(स॰)	२६२
उपासकाष्ययन	वसुनदि	(स॰)	१⊏३	ऋषिमडलस्तोत्र	गौतम गण्धर	(स॰)	१०१
उपसर्गस्तोत्र	_	(स०	₹≒⊏		क		
उमामहेश्वरसवाद		(स॰)	३०७	¹ कका	7'	(6.)	011
उषाकषा	रामदास	(हि॰)	२६७	^{ने} क्षाबचीसी		(हि०) (चिर्)	१ ६६
	Ų			¹ ककाबचीसी	गुलावराय	(हि०) (ि- \• ३:	१५३
	•	(6.)		^५ ककावचीसी	श्रजयराज	(हि॰) १३३ (कि॰)	२६६ २
एकमीघठावन वर्तो		(हि॰)	२५६	^{भवगपणसा} कछवाहा राजाश्री	सी व्यावधि	(हि•) (हि∘)	₹ <u>₹</u> €
एकमोद्याठ नामीं की			१०१	¹ कसलीला	का वशावाल	(हि॰)	६२८ १३६
एकसोग्रनहत्तर जीवप			j	्रक्तलाला । कमलचन्द्रायण कश		(हु॰) (स॰)	२२४ २२४
एकसोगुनहत्तर पुण्य			१ ६३	कमलचॅन्द्रायणवतः		(स॰)	ķo.
पुकान्तरनाममाला -	सुधाकलश	(स॰) (स॰)	==	कर्मघटावलि	्र कनककीति		१ ४६
एकीमावस्तोत्र	वादिराज	(स。)	1	कर्मचरित्रबाईसी	रामचन्द्र	(हि॰)	२४
		र, २३⊏, २७⊏, ८ ६ - \	- 1	कर्मचूरवतोद्यापन	-		२०४
एकीमावस्तोत्र	द्यानतराय	(हि॰)	1	कर्मदहनपूजा		(हि॰)	ሂ ፡
एकीमावस्तोत्र	जगजीवन	(हि॰)	i	कर्मर्दहनपूजा		(सं॰)	} o
एकीमावस्तोत्र	भूधरदास	(हि०) २३८, (हि०) १७२,	1	कर्मदहनपूजा कर्मदहनपूजा	टेकचट	(हि॰) ४०,	1 85
पुकीमावस्तोत्र		•		कर्मदहनपूजा कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	•	८०४
		. ,	· · •	· •	9	•	

यन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र	स०∫
कर्भदहनवतपूजा	-	(स॰)	४१
कर्मदहनवतमत्र		(स॰)	ሂባ
कर्मप्रकृति नेसिन	वन्द्राचार्य (प्रा०)	३, १३४,	१७६
फर्म प्रकृतिवर्ण न	(स॰) ६,	१५३
		१४६, १६६,	२६६ ॑
कर्मेत्रकृतिविधान	वनारसीदांस	(हि॰) ४,	१११
कर्मप्रकृतियों का व्योर	T	(हि॰)	Ł
(कर्भप्रकृति	चर्चा)		}
कर्मप्रकृति वृत्ति	सुमतिकीर्ति	(स०)	१७६
क्रमें छत्तोसी	Plan	(हि॰)	१६३
कर्मवचीसी	श्रचलकीर्ति	(हि॰)	११४
र्फ्सस्वरूपवर्णन छ	ाभिनव वादिराज		٤
(प० जगन्नाथ)		
कर्मविपाकरास	व्र॰ जिनदास	(हि० गु०)	۶ ت
कर्महिंडोलना		(हि॰)	१ २⊏
कर्म हिं खोलना	हर्षकीर्ति (हि॰) १६७,	२७२ ः
कृष्ण का वारहमासा	धर्मदास	(हिं०)	ં વ ક્
कृष्णदास का रासा	_	(हि॰)	२७७
कृष्ण बकमणी वेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि॰)	११८
फृ प्यालीलावर्यान	-	(हि०)	2=0
फृ ट्णबालचरित		(हि०)	२७१
फृ ष्याकवच		(*, °,)	३०२
करूणासरन नाटक	लच्छीराम	(陵。))
करूपाष्टक		(स॰)	११२
क्लमषकुठार	रामचन्द्र	(हिं०)	२८८
कल्यां प्रकवर्णन	मनसुख	(श्रप०)	१३७
क्ल्याग्यमदिरस्तोत्र	कुसुद्चद्राचार्य	(स॰)	२०२,
११२, १२२- १	२६, १३६, १४६	, २३८, २७३,	३१२
कल्याणमंदिरस्तोत्रमा	षा (हि०)	१२२, २६७,	३०१ }

लेखक भाषा पत्र स० प्रनथ नाम (हि०) '१०२, क्ल्याणमंदिरस्तोत्रमाषा वनारसीदास ११३, ११४, १२४, १४६, १४३, १४८, १७२, २३८, २६६, ३११ कल्यायामदिरस्तोत्रभाषा (हि०) १०२ श्रखयराज कलिकु डपूजा (स०) 3 \$ \$ कलिकु डिपार्वनाथपूजा 8€= कलियुग की वीनती (हि॰) **नहादेव** १७७ फलियुगचरित (हि॰) ११२ भुवनकीर्त्ति (हि॰) कलावतीचरित्र ६७ कवित्त पृष्वीराज चौहाण का — (段) १२४ (स॰) ج ۶ कवलचन्द्रायण व्रत कथा (हि॰) कवित्त गिरधर १३६ (हि॰) पृथ्वीराज कवित्त १३६ खेमदास (हि०) १३७ कवित्त (हि०) १३६,२७३ कविरा कवीरदास (हि०) कवीर की परचई २६७ कवीर धर्मदास की दया (हि०) २६७ (हि॰) कविकुलकठाभर्ण दूलह 388 कवीर धनी धर्मदास की माला (हि॰) ३०५ (सं ०) **कांजीव्रतोद्यापन** २०५ कातिकेयानुत्रे चा स्वामी कातिकेय (সা০) 139 कार्तिकेयानुत्रे चा (हि॰६) जयचद् छाबड़ा 939 कामदकीयनीतिसार भाषा (हि॰) २३४ काल श्रीर श्रन्तर का स्वरूप 🕳 (६६०) ሂ कबीरदास (हि०) २६७ काया पानी कवीरदास (侵。) कालचरित्र 70E (स॰) कालज्ञान २४६ कालिकाचार्यक्यानक भावदेवाचार्य (সা৽) २२५ किशोशकल्पद्र म शिवकवि (हि०)

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पः	त्र स०	यन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र स०
किराताञ्च नीय	भारवि	(स॰)	२०६		ग	
कियानोष माषा कियानोष माषा कु इत्तिया कुदेवनर्णन कुदेव स्वरूप वर्णन	किशनसिंह दौलतराम — —	(信。) (信。) (信。) (信。) (信。)	२४ १ द द १ द द १ १ द १ १ व	गज मावना गणधर मुख्य पाठ गणधरवलयपूजा गणधरवलयपूजा गणधरवलयपूजा गणधरवलयपूजा	भूधरदास — — - शुभचन्द्र सकलकीर्त्ति	(हि॰) ३११ (हि॰) २ (स॰) ३०= (स॰) १६= (स॰) ४१
क्रुमतिनिघटिन श्रीम		(हि॰)	१०७	गणधरस्तवन		(प्रा०) ३ १२
कुमारसमव कुवेरस्तोत्र कुवलयानदकारिका कोकसार	कालिदास — — श्रानद कवि	(स॰) (स॰) (स॰) (हि॰)	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	गणनायक हेमक्र्य जन्मोत्पत्ति गणमेद गगायात्रावर्यम	धर्मसिंहसूरि रघुनाथसिंह सूरि —	(हि०) २८६ (हि०)प २४२ (हि०) १३६
कोलकुत्हल चपणासार ऋ	ब्रह्म ज्ञानसागर — गाचार्य नेमिचद्र	(हि॰) (स॰) (प्रा॰)	२६४ १ह⊏ ४	गगाप्टक अन्थसूची अहवलविचार	शकराचार्य — —	(स॰) ३०१ (हि॰) १६१ (हि॰) २८७
च्यपासार टाका + च्यपासार भाषा चमावचीसी चीरार्णव चेत्रपाल का गीत चेत्रपालपूजा चेत्रपालस्तोत्र चेत्रपालपूजा	ाधवचन्द्र त्रैविद्यदेव प० टोडरमल समयसुन्द्र विश्वकर्मा — — — —	(स०) (हि०) (हि०) (स०) (हि०) (हि०) (स०)	१२६ २४४ १४= ४,२७५	ग्यारहप्रतिमावर्णन ग्यारहप्रतिमावर्णन गिरनार सिद्धचेत्र पूर् गिरनारचेत्रपूजा गीत गीत गीत ग्रेणतीसी मावना ग्रेणगाथागीत गुनगजनम	मुनि कनकामर — जा इजारीमल्ल — चन्द्रकीर्ति मुनि धर्मचन्द्र — नह्य वर्द्धमान	(हि॰) ११७ (हि॰) १६४ (हि॰) १६५ (हि॰) २७२ (हि॰) २७२ (हि॰) २६३ (प्रा॰) २६ (हि॰) ११६,१६४ (हि॰) १०४
खग्डेलवाल गोत्रीत वर्णन खीचडरासो	यिचि - 	(हि॰) (हि॰)	१ <i>६</i> १ २५७	ग्रुगरमानचर्चा ग्रुणस्थानचर्चा ग्रुणस्थान जीव सर्व्य समूह वर्णन ग्रुणस्थानचर्चा ग्रुणस्थानवर्णन	- 41 -	(हि॰) २०४ (स॰) १५६ (हि॰) १४६ (हि॰) ६ (हि॰) १४१

यन्थ नार्म	लेखक	भाषा	पत्र सं०	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र	त्र स॰
ग्रुणविवेकवारनिसाणी'		(हि॰)	, इं०	चडसरंख परिकरण		(हि०)	\$ 8'o
ग्रणीचरमाला	मनराम	(हिं०)	. 1	चकेंश्वरीस्तोत्र		(स॰)	२ ८८
युक्वीनती	entered.	(हि॰ ⁽)	1	चतुर्गतिबेलि	हर्षकी र् ति	(हि॰ [,])	३०२
गुरुमिक्तस्तोत्र	-	(সা ০	1	चतुर्दशीकथा	हरिकृष्णं पाएंडे	(腹。) [}]	१४४
	नहीगुंलाल	(हि॰)	1	' चतुर्विधिसिद्धचकपूज	ं भानुकीर्त्ति ⁻	(स॰)	५२
गोत्रवर्णन	-	(हिँ°	. 1	· चतुर्विशतिजिनकल्या	गकपूजा भानुकीर्त्ति	(हिं०)	१५१
गुरोपदेशश्रावकाचार	डाल्राम	(हिं∘ <u>ं</u>	_ 1	चतुर्विशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि॰) ४	२ , १ १ १
गोमष्ट की जयभाल		(`हिं०		``		११२,	335
गोमट्टसार (जीवकाएड)	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०	i	चतुर्विशतिजिनपूजा	वृन्द्।वन	(।ह-) ४	
गोमट्टसार (जीवकारुड)		')७,८,११७		सेवाराम	(हि०, ४	33'9,'8
गोमट्टसार (कर्मकारंड)	_		'''			(हि॰)	 ሂ ዓ
गोमदृसार (कर्मकायड)		-) =,१०	चतुर्विशतिजिनस्तुति	पद्मनदि	(स॰)	५३(६'
गोमट्टसार टीका (कर्मक				⁽ चतुर्विशतिजिनस्तोत्र	जिनरग सूरि	(हि॰)	१४०
गोमट्टसार (कर्मकाएड)	हेमराज	(हि॰) =,१०७	चतुर्विशतितीर्थं करपूउ	ar —	(सं॰)	५२
गोरखवचन	बनारसीदास	(हिं	•) ২ ⊏৭	चतुर्विशतिस्तुति	समयसुन्दर	(हि०)	१४२
गोरसविधि		(स ०) ২ ধ্	चतुर्विशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि॰)	१४४
गोरीकालीवाद		(हि०	')` રદજ	चतुर्विशतिस्तुति	शुभचन्द्र	(हि॰)	१४३
गोविन्दाप्टक	शकराचार्य	(स०) ই'৽ং	चतुर्लोकी गीता		(स॰)	३०२
गौडीपा थ^रस्तवन '	******	(हि॰) १४२	चन्दनषष्टिव्यतपूजा		(स॰) ४	५, २०४
गौतमगणधरस्तवन		(ःस०) ३१०	चन्दनषष्टिव्रतकथा	खुशालचद	(पहि॰)	२६७
गौतमपृच्छा	` 	(সা৹	, ३१०	चन्दनषप्टिव्रतकथा	व्र॰ ज्ञानसाग र	('हिं०)	२६५
	धर्मचन्द्राचार्य	(स०), ६७	चन्दनषिटव्रतकथा	विजयकीर्त्ति ⁻	(सं ०)	= ર
गौतमरासा	विनयप्रभ	(हि०	\$∘\$ (चन्दनाचरित्र	शुभचन्द्र∕	(सॐ⁻)	२१०
	घं			चन्द्रगुप्त के सोलह	स्वप्न —	(हिं०)	१६६
घटावरण मत्र	-	(स	, १०२) -	ेखपाँ भावभद्र	(⁽ हि॰ ')	
पटापराय कर		(" -		चन्द्रगुप्त के सोलह	स्वप्न व्र ० रायम िल	(हि॰)	१६३,
	च					३०४	, ३०६`
चउनीसतीय करविनर्त	_			चन्दराजा की चौप		(हिं०)	१२७
चउनीसतीर्थं करस्तुति	सहजकीर्त्ति	(हि	०) १४७	(चदनम्ल्या	गिरि कथा)		

यन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
चन्द्रप्रमस्तुति	-	(हि॰)	१४८
चन्द्रशमचरित्र	कवि दामोदर	(स)	६७, २१०
चन्द्रप्रमचरित्र	वीरनदि	(स॰)	६=, २१०
चन्द्रायणवृतपूजा	म० देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं॰)	१ 88
चन्द्रहसकथा	टीकम	(हि०)	5 3
चमत्कारचिन्तामि	नारायण	(सं०)	२४५
चरखाचढपई	श्रजयराज	(हि०)	१५६
चर्चावर्णन		(हि॰)	٤
चर्चाशतक	चानतराय	(हि॰ ६	,१३४,१७७
चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	ह, १७७
चर्चासमह		(हि०) ६,	৭৬৬,३०३,
चर्चासागरमापा		(हि०) इ	२०८,१८४
भ ुचरित	-	(हि॰)	ટ ફેદ
चाणक्य नीतिशास्त्र	चाणक्य	(स॰)	१११, २३४
			२७४
चार ध्यान का वर्णन		(हि॰)	४०
	_	(हि०)	१४३
चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचद्र	(स०)	५२
चारित्रसार		(स॰)	२४
(सावनासार समह			
चारित्रशुद्धिविधान (१२३४ वृत		(स॰)	988
चारित्रसार पजिना	_	(स॰)	ર્ય
चारित्रसार माषा	मन्नालाल	(हि॰)	२४
चारोंगति दु ख वर्ण	a — ,	(हि•)	१३२
चारित्रपाहुड माषा			१६२
चारुदच चरित्र		(हि॰)	२१०
चित्रसेनपद्मावती कथ		त्रभ (स०)	⊏ ३
विद्वी चदाबाई की र			1
चद्विलास	दीपचन्द		

लेखक प्रनथ नाम भाषा पत्र स० चिन्तामणि माननावनी मनोहर कवि (हि॰) ११२ चिन्तामणि, पार्श्वनाथ पूजा --(स。) 3\$ चिन्तामणि पूजा (स०) 388 चिन्तामिणपार्श्वनाय स्तवन जिनरग (हि॰) 180 चिन्तामणि पार्श्वनाय स्तोत्र भुवनकीर्त्ति (हि॰) 280 चिन्तामि स्तोत्र (हि॰) 217 चिन्तामिं स्तोन्न (स。) २⊏⊏ चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति (हि॰) 3 = € चिन्तामणि महाकाव्य (स。) ₹00 साधुकीत्तिं (हि॰) चूनडी 838 चेतनकर्मचरित्र भगवतीदास (हि॰) ६८, १३३ (हि॰) चेतनगीत २७२ जिरादास (हि॰) ११६,३०४ चेतनगीत देवीदास चेतनगीत (हि॰) २७२ चेतनवधस्तोत्र (स॰) २८८ चेतनशिचागीत (हि॰) १२= किशनसिद्ध (हि॰) चेतनशिचागीत १३१ चैत्यवदना (स॰) **२३**= चैत्रीविधि श्रमरमाणिक (हि॰) १४७ चौदहमार्गणाचर्चा (侵) ११६ चौबीमठाणा चर्चा नेमिचन्द्राचार्य (प्रा०) ६, १७० चौबीसठाणा चर्चा माषा (हि॰)१०,११३ (वालबोधचर्चा) १५६, ३०० चौबीसठाणापीठिका (हि॰) साह लोहट (ि०) चौबीसठाणा चौपई 988 चौशीसठाणान्योरा (हि०) 141 (हि॰)२७,११२ चौबीसदडक चौबीसदहक दौलतराम (हि०) २८, १८४ **३१२**

प्रनथ नाम	ले बक	भापा	पत्र सं० ,	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा प	त्र सं ॰
चौबीमतीर्थं करजयमाल		(हि०)	५ २	जखडी	श्रनन्तकीर्त्ति	ं (हि॰)	१४६
चोबीसतीर्थं करों के नां	व गांव वर्णन	(हि०)	१२४	जबढी	दरिगह	(हि०)	3 \$ \$
चौबोसतीर्पकाप रिचय		(हि०)	३१०	जखडी	भूधरदास	(हि०) १	३७,३१२
चीवीसतीर्यकरपूजा	ऋजयरा ज	(हि॰)	१३०,१५३	जबडी	रूपचन्द	(हिं) ११	१६, १२६
चौबीसतीर्यंकरपूजा		(स०)	१६६,२७३			१६४, २७	२, २६७
चौबीसतीयंकरप्जा	मनरगलाल	(हि०)	988	जखडी	इरीसिंह	(हि॰)	983
चौबीसीनामनतमडला	वेधान —	(स॰)	२०४	जखडी		(हि०) १	४६,१७०
चौबीस महाराज की व	वीनती रामचन्द्र	(हि०)	902	जखडी	विहारीदास	(हि०)	38,5
चौबीसतीर्थंकर समुच्च	य पूजा —	(स॰)	338	जखडी	जिनदास	(हि०)	२७३
चौबीसजिनस्तुति	शोभन मुनि	(स。)	२३६	जतर चोवनो	-	(हि॰)	ર્
चौवीसतीर्थंकरस्तवन	ललित विनोद	(हि॰)	२३६	जम्बूद्वीपपूजा	जिग्गदास	(म॰)	१३१
चौबीसतीर्यंकरस्तुति	श्रजयराज	(हि०)	१३०	जम्बूस्वामीचरित्र	व्र० जिनदास	(积) (⊏,२१०
चौबीसतीर्थंकरस्तुति		(हि॰)	१४७,२६६	जम्बूस्वामीचरित्र	पांडे जिनदास	(हि०) ६	£,१३१
चौरासी श्रासन भेद		(स०)	80	जम्बूस्त्रामीचरित्र	वीर	(श्रपभ्र'श)	६⊏
चौरासीबोल	हेमराज	(हि०)	२७, ११२		नाथूराम	हि॰)	२१०
चौरासीगोत्र		(हि०)	१५३	जम्त्रूस्वामीप्जा	पारुडे जिनराय	(हि॰)	११४
चौरासी ग त्रोत्पत्ति व	र्णन नन्दानद	(हि०)	२४३	जयचन्द्रपच्चीसी	_	(हि॰)	ર
चौसठऋद्धि पूजा	स्त्ररूपचद	(हि०) ।	(3, 200	जयपुरवदना	वलदेव	(स॰)	२२४
				जयमालसमह	-	(সা০)	११ ८
	छ			जलगालनिकया	न॰ गुलाल	(हि॰)	४३
छन्दरत्नावित	इरिराम	(हि॰)	55	जलहरतेला की पूज	T —	(सं०)	२०१
छंदशतक	वृन्दावन	(हि०)	==	ब्वालामालिनीस्तो त्र		(स०) १	०२,२३६
छवितरंग	महाराजा रामसिह	ह् (हि०)	२७६				२८८
छह्दाला	द्यानतराय	(हि०)	१३७,३११	जानकीजन्मलीला	वालचद्र	(हि॰)	२७=
छहजीव कथा		(हि०)	२६०	झानचर्चा	मनोहरदास	(हि०) २ः	- ,२३५
घहटाला	चुधजन	(हि०)	१४१			१३१	, የሂ३
धियालीसदीय रहित	श्राहाखर्णन	(हि०)	9 ሂ ሂ	ज्ञान किया सवाद	_	(46)	
	জ			झानप ≂चीसी		(हि०) २०	•
• •			. 1	हानपच्चीसी		(हि॰) ११४,१	
जइतपद बेलि	कनकसोम	(हि॰)	३ ह ३ €	ह्मानतिलक के पद	कवीरदास	(हि॰)	२६७

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पः	त्र स०	यन्थ नाम	लेंखक	- भाषा	पत्र सं०
ज्ञानपच्चीसी मतोद्यापन	ं सुरेन्द्रकीत्ति	(e B)	२०५	जिन राजस्तु तिं	कनककीर्त्ति	(हि०)	ર્ધક્ર
ज्ञानपूजा		(-स∘)	•00	जिनराज विनती		(हि ['] °')'	१४३
न्नानसार र्	्रघुनाथ	(हि॰) प	२६●	जिनशत्रिवतकथा	त्र० ज्ञानसागर	(हिं01)	२६४
ज्ञानसूर्योद <i>यं</i> नाटक	वादिचन्द्र सूरि	(स॰)	3⊐	जि णला ह्रगीत	व्र॰ रायमल्ल	(हिं°)	११७
्ह्यानसूर्योर्दय नाटक मा र्	ग पारसदास नि	गोत्या (हि०)	0 3	जिनविनती	सुमतिकीर्त्ति	(हि॰)	१६४
ह्मानमार्गणा		(हि॰)	२⊏	जिनय ज्ञकल् गः	त्राशाधर	(स∘≀)	२००
ज्ञानसारगा था		(সা০)	१३२	' (प्रतिष्ठापाठ-)		•	
ज्ञानव चीसी	वनारसीदास	(हि॰)	१६३	जिनस्तुति	mann ?	(हि॰°)	१०३
झा नसूघडी	शोभचद्र	(हि॰)	१२६	जिनस्तुति	रूपचद	(हि॰)	रेप्र२
ह्मानानद श्रावकाचार	रायमल्ल	(हि०)	२⊏	जिन स्तुति	श्रीपाल	(हि॰)	३११
ज्ञानार्णव	श्रा॰ शुभचद्र	(स०)४०,	165	जिनवाणीस्तुति		(सं॰)	१ १४
ज्ञानार्णव माषा	जयचन्द छान्रडा	(हि॰)	४०	जिनसहिता		(स॰)	٤ą٠
ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण ट	ीका	(हि॰)	२६२	जिनस्वामीविनती '	सुमतिकीत्ति	(हिं०)	११७
जिनकुरालध्रि छद		(हि॰)	.00	जिनसहस्रनाम ः	जिनसेनाचार्य	(स०)	१०२
जिनगीत	श्रजयराज	(हि॰)	१६३	१	०७, ११६, २०४,	२३६, ३०१	, ३७३
जिनगुणसपचिवतपू जा	भ० रत्नचद्र	(स。)	३०⊏	जिनसहस्रनाम प् जा	धर्मभूषग्	(स॰) ५'	₹,३१४
जिनगुणसपिनतोचाप		(祝)	२०५	जिनसहस्रनाम प् जामां	ग स्वरुपचद विल	ाला⁵(हि॰)	¥ ख्
जिनगुणसपत्ति व्रतक्था	वर्ष ज्ञानसागर	(Pa)	२६६	जिनसहस्रनाम	श्रांशाधर	(सं) ।	XEC C
	sis dilitari	(16.2)	. , ,		-11/11-17	\ '' \	• 1, 140
जिनगु णपच्चीसी		(हि॰)	75		211/11/41	२०४, २३६	-
जिनगुणपच्चीसी जिनदत्तचरित्र	— गुणभद्राचार्य			जिनसहस्रनाम स्तोत्र			, = ६२
		(हि॰)	۶ د			२०४, २३६ (स०)	, ३६२ ३८८
जिनदत्तचरित्र जिग्गयतचरित्र (जिनदत्तचरित्र)	— गुग्गभद्राचार्य प० लाखू	(हि॰) (स॰) (श्रपभ्रश)	ים ובי ובי וז פו כון	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका	— मू० श्राशोधर टीका० श्रुतसागर	२०४, २३६ (स०) (स०) 1 सूरि	, ३६२ ३८८ १८८ १२३१
जिनदत्तचरित्र जिग्गयतचरित्र	— गुग्गभद्राचार्य प० लाखू	(हि॰) (स॰) (श्रपभ्रश)	ים ובי ובי וז פו כון	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका	— मू० श्राशोधर टीका० श्रुतसागर	२०४, २३६ (स०) (स०) 1 सूरि	, ३६२ ३८८ १८८ १२३१
जिनदत्तचरित्र जिग्गयतचरित्र (जिनदत्तचरित्र)	— गुग्गभद्राचार्य प० लाखू	(हि॰) (स॰) (श्रपभ्रश)	ים ובי ובי וז פו כון	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका	— मू० श्राशोधर टीका० श्रुतसागर श्रमरंकीर्त्ति	२०४, २३६ (स०) (स०) ११ सूरि (स०) (हि०)	, = E R = E E = R = R = R = R = R = R = R = R = R = R
जिनदत्तचरित्र जियायतचरित्र (जिनदत्तचरित्र) जिनधर्भपच्चीसी	— गुग्गभद्राचार्य प० लाखू) भगवतीदास	(हि॰) (स॰) (श्रपश्र श) (हि॰) (हि॰)	3 E E E S	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका जिनसहस्रनाम टीका जिनसहस्रनाम टीका	— मू० श्राशाघर टीका० श्रुतसागर श्रमरकीर्त्ति बनारसीदास	२०४, २३६ (स०) (स०) 1 सूरि (स०) (हि०)	, = E
जिनदत्तचरित्र जियायतचरित्र (जिनदत्तचरित्र) जिनधर्भपच्चीसी जिनदेवपच्चीसी	— गुणभद्राचार्य प० लाखू) भगवतीदास नवलराम	(हि॰) (स॰) (श्रपभ्रश) (हि॰) (हि॰) (स॰)	3 147 147 34 8 3 147 147 34 8 7 17	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका जिनसहस्रनाम टीका जिनसहस्रनाम माषा जीवों की सख्याःका	— मू० श्राशाघर टीका० श्रुतसागर श्रमरकीर्त्ति बनारसीदास	२०४, २३६ (स०) (स०) । सूरि (स०) (हि०)	, = E = R = R = R = R = R = R = R = R = R
जिनदत्तचरित्र जियायतचरित्र (जिनदत्तचरित्र) जिनधर्भपच्चीसी जिनदेवपच्चीसी जिनदेवपच्चीसी	— गुग्गभद्राचार्य प० लाखू भगवतीदास नवलराम कमलप्रभ	(हि॰) (स॰) (श्रपञ्जश) (हि॰) (हि॰) (स॰) (१ह०)	3 15 15 15 27 27 27 28 28 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका जिनसहस्रनाम टीका जिनसहस्रनाम माषा जीवों की सरूपा का जीतकल्याव चूरि	— मू० श्राशोधर टीका० श्रुतसागर श्रमरंकीर्त्ति बनारसीदास वर्णन — —	२०४, २३६ (स०) (स०) । सूरि (स०) (ह०) (ह०) (ह०)	, > E R > = = = = = = = = = = = = = = = = = = =
जिनदत्तचरित्र जियायतचरित्र (जिनदत्तचरित्र) जिनधर्भपच्चीसी जिनदेवपच्चीसी जिनपजरस्तोत्र जिनपूजापुरदर कथा जिनदर्शन	— गुग्गभद्राचार्य प० लाखू भगवतीदास नवलराम कमलप्रभ खुशालचद —	(हि॰) (स॰) (श्रपभ्रश) (हि॰) (हि॰) (स॰) (म॰) (मा॰)	3 E E X	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका जिनसहस्रनाम टीका जिनसहस्रनाम माषा जीवों की सरूपा का जीतक्ल्पाव चूरि	— मू० श्राशाघर टीका० श्रुतसागर श्रमरकीर्त्ति बनारसीदास	२०४, २३६ (स०) (स०) । सूरि (स०) (हि०) (हि०) (हि०)	, = E =
जिनदत्तचरित्र जिण्यतचरित्र (जिनदत्तचरित्र) जिनधर्भपञ्चीसी जिनदेवपञ्चीसी जिनपजरस्तोत्र जिनपूजापुरदर कथा	— गुग्गभद्राचार्य प० लाखू भगवतीदास नवलराम कमलप्रभ खुशालचद —	(हि॰) (स॰) (श्रपभ्रश) (हि॰) (हि॰) (स॰) (म॰) (मा॰)	3 15 15 15 27 27 27 28 28 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29 29	जिनसहस्रनामस्तोत्र जिनसहस्रनामटीका जिनसहस्रनाम टीका जिनसहस्रनाम माषा जीवों की सरूपा का जीतकल्याव चूरि	— मू० श्राशोधर टीका० श्रुतसागर श्रमरंकीर्त्ति बनारसीदास वर्णन — —	२०४, २३६ (स०) (स०) । सूरि (स०) (ह०) (ह०) (ह०)	, > E R > = = = = = = = = = = = = = = = = = = =

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र	स०	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पः	त्र स०
जीव की मावना		(हि०)	150	तत्वार्थसार		(स॰)	१६
जीयसा गीत	-	(हि०)	१६७	तत्वार्थसार	त्र्रमृतचद्र सूरि	(स॰)	३७१
जै न शतक	भूधरदास	(हि०) ६४	, १३४,	तत्वार्धसूत्र	उमास्त्रामि	(स०) ११	, १२,
	•	845,	२३४	,	x=, २०७, १११, ^५	११२, १३४.	१६७,
जैनगाय त्री		(स॰)	१३३	;	१७२, १७६, २६४,	२७२, २७४,	३०२,
जैनगसो		(हि०) १४	२,१६१			₹∘⊏,	३०६
जैनपच्चीसी	नवलराम	(हि०)	१५३	तत्वार्थसूत्र टीका	श्रुतसागर	(स॰)	१३
ज्येप्ठजिनवरक् था		(हि०)	१५६	तत्वार्थसूत्र टोका (टब्ब	•	(स० हि०)	१७६
जैनमार्त्रखपुराण	भ० महेन्द्रभूषण	(स॰)	३४४	तत्वार्थसूत्र वृत्ति	-	(स。)	₹ 3
जैनविवाहविधि	जिनसेनाचार्य	(40)	२००	तत्वार्थसूत्र वृत्ति	योगदेव	(स॰)	१३
जैनरवास्तोत्र		(हि०)	3 ∘ €	तत्वार्धसूत्र माषा	कनककीर्त्ति	(हिं०) ध	३, १७₹
जैनेन्द्रव्याकरण ्	देवनंदि	(स०)	⊏ ७		जयचंद छाबड़ा	(हि०)	*8
जोगीरासा	जिग्दास	(हि०) ११		्र तत्वार्थसत्रभाषा सद	पुख कासलीवाल	(हि०)	ξ¥
	-	१३२, १४३		(श्रर्ष प्रकाशिव			
च्योतिषरत्नमाला रेटिनरंग्ने	श्रीपति भट्ट -	(स०) ()	२४४	_	,	(B) \ 0.	
च्योतिष सर्वधी पा		(२०)	र⊏⊏	तत्वार्षसूत्र भाषा		(हि०) १	
	ट			तपोद्योत्तनश्रधिकार स	_	(स॰)	१ई६
				तमाखू की जयमाल	श्राग्रद मुनि	(हि०)	* & 6
टहाणागीत		(हि०)	૨૬ ૬	तमाखूगीत	त्रा ग्यद् मुनि	(हि०)	२१२
	ढ			तमाख् गीत	सहसकर्ण	(हि०)	२६१
दालगया	(सूरत)	(हि०)	₹ ⊏	तर्भमह	ऋन्नभट्ट	(स०) ४६	
दालगण	((3/4)	(हि•)	१३४	तारातवील की वार्चा		(हि०)१	ध=,१३€
GIRTH		(160)	140	त्रिपचाशत्कियावतो	द्यापन —	(स॰)	308
	त			त्रिभुवनविजयीस्तोत्र		(स॰)	१ ३५६
तत्वसार	देवसेन	(সা৽) १	०,११०	त्रिमगीसमह	नेमिचद्राचार्य	(সা০) १	६, २०
तत्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र	ह (हि ०)	વેહદ	त्रिमगीसार	श्रुतमुनि	(সা০) १৬	9€,१६
तत्वार्थनोध माषा	बुधजन	(हि॰)	१ ५	त्रिलोकदर्पण कथा	खङ्ग सेन	(हि॰)	દ ચ્
तत्वार्धरत्नप्रमाकर	प्रभाचद	(स•) १	४,१७=	त्रिलोकदर्पेण	_	(सं॰)	€ 3
तत्वार्थराजवार्त्तिक	भट्टाकलकदेव	(सं॰)	ዓዩ	त्रिलोकसार ने	मिचद्राचार्य	(शा•) ह	२,,३३
तत्वार्थश्लो व वारि	वेकालकार आ० विद्य	ानदि (स०)	१४	त्रिलोकमार भाषा	-	(हि०) ६३	• \$, 3 ,
							شو

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
श्रिलोकसार मावा	उत्तमचन्द	(हि॰)	६३	त्रेपनिकयावतोद्यापः	न देवेन्द्रकीत्ति	(स॰)	205
त्रिलोकसार बध चौपई	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	६२,११८	त्रेपनभाववर्णन		(हि•)	३००
त्रिलोकसार सदृष्टि	नेमिचन्दाचार्य	(সা০)	₹ 5 0	तेरहकाठिया	वनारसीदास	(हि॰)	२⊏२
त्रिलोकप्रज्ञ ^{दि} त		(গা৽)	१५६	तेरहद्वीपपूजा		(हि॰)	१३
त्रिलोकप्रह्मित	यति वृपभ	(সা৽)	२३४	तेलावत की पूजा		(स॰)	२०१
त्रिलोकसार सटीक मृ		•	१०) २३४	त्रेसठशलाकापुरुष		(हि॰)	१६३
दी	का० सहसकीर्त्ति			त्रेसठशलाकापुरुषी	व्र॰ कामराज	(हि॰)	१४३
त्रिमगीवर्णन	-	(हि०)	२६३	का वर्णन		(, ,	
त्रिवर्णाचार	सोमसेन	(46)	१⊏४	त्रेस ठशलाकापु रुष	_	(हि॰)	१५६
र्त्रिशतिकाटीका		(स॰)	283	नामावित			
तिंशचतुर्विशति प्जा	शुभचद्र	(स०)	२००	त्रैलोक्यदीपक	वामदेव	(o #)	६३
तीनचोबीसी		(हि॰)	११	त्रैलोक्यतीजकया	त्रह्य ज्ञानसागर	(हि० प०)	३ ६ ४
तीन चौबीसी तीर्थंकरों	की नामाविल	(हि॰)	६४७,१४=		_		
तीनचौबीसीप्जा		(स॰)	<i>५०४</i> ,२००		द		
तीर्थ करविनती व	ज्ल्या ग् कीत्ति	() ()	१४१	दिवणयोगीन्द्रप्जा	श्रा० सोमसेन	(स०)	२०१
तीर्षमालास्तोत्र		(स॰)	१३३	दशकेत्रों के चौबीस	नाम —	(हि॰)	१२७
तीर्थंकरवर्णन		(हि०)	3	दशस्थजयमाल		(মা ›)	920
तीर्घकरों की गर्भ जन्म कल्यायों की ति		(हि॰)	११७	दशलक्षणजयमाल		(য়৽) ধ	
तीर्थंकरजयमाल		(हि०)	१४२	दशलचणजयमाल		` '	५४,६१
तायकरजयकारा तीनलोक के चैत्यालयं	 क्रिस्त नगीन	(हि॰) (हि॰)		दशलच्याजयमाल	भावशंमी	(সা॰) ধ	
	ા મામપાય -	, ,			सदासुख कांसलीवा		
तीनलोककयन	<u> </u>	(हि॰) (ि)		दशल्वसण ३र्म वर्णन		` ' '	२=,३६
,	टेकचद	(हि०)		दशल चणप्जा	***	(स॰) ४	
	लोहाचायं	(গা॰)				/ m. \	३०७ २०१
तीसचीबीसी के नाम	-	(हि॰)	1		श्रभयनंदि	(स०)	
तीसचीबीसीपाठ	_	(हि०)	₹	दशलच्या प्जा	सुमति सागर	(स०)	48
तीस चौबीसीप्जा मा	।। वृन्दावन -	(हि॰)	५३	दशलवण पूजा		हिं।)	≎⊏ដំ
तीतचौबीसीपूजा माव	ı —	(हि॰)	5 ₹	दशलव्या व्रत कथा		(हि॰)	२ ८४
त्रंपनकियाविधि	दौलतराम	(हि॰)	۶==	दशलक्षणवृतोद्यापन	पूजा —	(हि०) र	
त्रेपन किया	ब्रह्म गुलाल	((()	₹	दशस्थान चौनीसी	द्यानतराय	(हि॰)	३५६

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०।	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
दर्शन	*****	(e B)	३३६, ३०२	दोहाशतक	रूपचन्द	(हि०)	११४, ११६
दर्शनकथा	भारामञ्ज	(हि०)	=3	दोहाशतक र	योगीन्द्र देव	(থ্ন ॰)	१६२
दर्शनदशक	चैनसुख	(हि०)	१०३	दोहे	वृन्द	(हि०)	१ ३६
दर्शनपच्चीसी	श्रारतराम	(हि०)	२⊏	दोहे	दादूदयाल	(हि॰)	२७१
दर्शनपाठ	-	(हि॰)	१ ०३	दहक्षट्चिशिक	T —	(4°)	२४०
दर्शनपाठ		(स॰)	११२, १४=	द्रव्यसग्रह इ	प्रा० नेमिचन्द्र	(মা৽)	११, १६, १३/
दर्शनपाहुड	पं० जयचंद्	(हि॰)	339		१३६,	१८०, २७४	, ३०३, १०७
दर्शनसार	देवसेन	(গা॰)	१४६, १६६				११२, १२२
दर्शनाषुक	•	(स॰)	२४०	द्रव्यसंग्रह भाषा	जयचंद छावड़ा	। (हि॰)	٦٤
दसकरणपाठ	-	(हि०)	२₌	द्रव्यसम्रह् भाषा	. _	(हि॰)	9 =
(दसबधभे	द वर्णन)			द्रव्यसप्रह् भाषा		(हि॰)	१ =
दस्तूरमालिका	वशीधर	(हि॰)	१७०	द्रव्यसंत्रह भाषा	पर्वतधर्मार्थी	(यु॰)	₹६, १७, १=०
दसोत्तरा (पहेलिंग	af) —	(हि०)	१३६	द्रव्य का व्योरा		(हि०)	3\$
दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	=3	द्रव्य सम्रह वृत्ति	त्रहादेव	(स॰)	१७, १८०
दानशीलचौपई	जिनदत्त सूरि	(हि०)	२ ११	द्वादशांगपूजा	Terroria.	(हि॰)	१४
दानशीलसंवाद	समयसुन्दर	(हि॰)	१४१	द्वादशानुप्रेना	-	(গা॰)	*0
दानशीलतपमाव	ना —	(हि॰)	२६४	द्वादशानुप्रेना		(हि०) ४	०,११६,१६५
दुर्गपदप्रबोध १	र्गी वल्लभवाचक	(स॰)	२३०			120	, १३⊏, १२२
	हेमचन्द्राचार्य			द्वादशानुप्रेना	लत्त्मीचन्द	(গা॰)	११ ⊏
_		(हि•)	१४	द्वादशातुत्रेचा	श्रोधू	(हि॰)	११६
	जयनदि सूरि		२४०	द्वादशानुत्रेना	श्राल्	(हि॰)	१६३, १६२
देवपूजा			४, ४४, २०१	द्वादशानतपूजा	देवेन्द्रकीत्ति	(祖•)	२०१, २०१
देवपूजा वेनिक सन्दर्भ			የ ሂ=	द्विसधान काव्य	सटीक नेमिचन्द	a(स∘)	3 ₹
देवसिद्ध प्जा	-	•	१११		ঘ		
देवसिद्धपूजा डेन्सम्परकेल =	***	(स∘) (कः)		•			
	ग० समंतभद्र 			Í	ा धनंजय	•	
	षा जयचन्द छा रे के सम्पन्ति	-		1	त्र सकलकीर्त्ति	•	•
				§	प्रज्ञ० नेमिद्त्त		
देहव्यथा कथन					त्र खुशालचन्द त्र गुणभद्राचार्य		
दोहाशतक	ह्मराज	1 160)	558	। वन्यकुसार परि	र गुणमद्राचाय	(40)	२१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०) प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
धमाल	धर्मचन्द्र	(हि॰)	१६४	नंदबत्तीसी	मुनि विमलकीर्त्त		
ध्यानवत्तीसी	बनारसीदास		१४३, २⊏२	नदवत्तीसी		. (स०)	
धर्मचक	रणमल्ल	(स०)	२ १०	नंदवत्तीसी	हेम विमल सृरि	, ,	
धर्मचकप्जा		(स॰)	३०⊏	नदीश्वरपूजा		(स∘)	XX
धर्मचकपूजा	यशोनदि	(報。)	٤×	नंदी श्वरपू जा	श्रजयराज		
घर्मतर गीत	जिग्दास	(हि॰)	१०३		_	(সা॰)	२०१
धर्मपरीचा		(स∘)		नदीश्वरउद्यापन [्]	ग् जा	(स॰)	ሂሂ
धर्मपरीचा मन	ोहरदास सोनी	•	['] २६	नंदीश्वरजयमाल	•	(हि॰)	ሂሂ
घर्म परीचा	हरिपेश	(ঘ৽)	₹ ⊏४	नदीश्वरव्रतविधा	न —	(हि॰)	પ્રક
धर्मपरीदा माषा		(हि॰)	₹ ⊏४	नदीश्वरव्रतकथा	शुभचद्र	(स०)	> २ ₹
धर्भपरीचा साषा	वा० दुलीचद	(हि॰)	₹ <i>६</i>	नदीश्वरविधान	-	(हि०)	**
धर्मरत्नाकर े	जयसेन	(स॰)	१⊏५	नदीश्वरविधान	रत्ननिद	(सं॰)	२०२
धर्मरसायन	पद्मनंदि	(সা০)	∍ દ, ₹⊏ ધ	नदीश्वरविधानक	या —	स∘)	२२६
धर्मरासा		(हि॰)	१३१	नद्सप्तमीवतपूज	T —	(स॰)	२०२
धर्म विलास	द्यानतराय	(हि०) ३६	, १३४, ३१०	नमस्कार स्तोत्र	_	(हि॰)	३०१
धर्म प्रश्नोचर	चपाराम	(हि॰)	ą .	नयचनमाषा	· _	(हि॰)	४७
श्रावकाचार सा	भा			नयचक	देवसेन	(e b)	११६
धर्मशर्माभ्युदय	हरिचन्द	(स॰)	₹१०	न क के दोहे		(हि•)	३००, १२७
धर्मसहेली	मनराम	([go])	१६७	नरक दुख वर्णन		(हि॰)	20
धर्मसमहश्रावकाच	गर ५० मेधावी	(40)	३०, १८४	नरक निगोद वर्ण	न	(हि०)	£
घर्मसारचोप ईप	० शिरोमणिदा	स (हि॰)	२६	नरकत्रर्णन		(हि०)	१,१३८
धर्मोपदेशश्रावकाः	चार व्र ० नेमिद न	त (म ॰)	३०, १=४	नलदमयती चौप	•	(हि॰)	₹£\$
घातुपाठ	वोपदेव	(स॰)	२३ ० ।	नवमह श्ररिप्टनिक	~	(हि०)	२०२
धूचरित	सुखदेव	(हि॰)	२⊏०	नवमह निवारण	•	(स॰)	ሂሂ
धूचरित		(限。)	२८४	नवमहपूजा विधा		(स∘)	२६२
	=			नवतत्ववर्णन		(हि०)	280
	न	(0)		नवतत्ववर्णन		(स॰)	१ २ <i>१</i>
नह्यसिख वर्णेन		(हि∘)	१७१	नवतत्त्रवालावोध		(गु॰ हि॰) (डि॰)	१६ ^२ २७७
ननद मौजाई का	श्रानंद,वर्धन	(हिं०)	१४४	नवरत्न कवित्त		(हि०) (हिं•)	₹ 00 ₹ ₹₹
भूगहा				नववाडी नो सिङ	माय ((14 -)	16,

	,		(३२	ε)			
श्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र	स॰	त्रन्थ नाम	लेखक	भाषा प	त्र स०
नव वाडी सिंग्भाय	जिनहर्प	(हि॰)	385	नित्यविहार (राधा मा	घो) रघुनाथ ((हि॰ प॰)	∍ દે રે
न्हव न	-	(सं॰)	२८८	नियम सार टीका पद	ाप्रभमल धारि दे	त्र (स०)	१८४
न्हवन विधि	***	(40)	२६७	निर्वाणकाएड गा्था		(प्रा०)१०	३,११२
नाकोडा पार्श्वनाथ स	तवन समय सुन्दर	(हि॰)	१४२				318
नागकुमार चरित्र	नथमल् विलाला	(हि० प०)	===	निर्वाणकाएड भाषा		(हि०) १४	•
नांदी मंगल विधान	-	(0月)	४४	_	_	२४०, २६३	
नागकुमारपचमी कष	। मल्लिपेश सृरि	(年。)	3 = Ę	निर्वाणकागढ माषा			
नागदमन कथा		(हि०)	१३ ४.		• २०, १२६, १ ^३		
नागदमन क्या	~ ~	(हि० ग०)	३०१	~	चानतराय		
(कालिय नागः	णी सवाद)			निर्वीणपूजा		(स०)	
नागश्रीकया		(中の)	¤ ३	निर्वाणसेत्रपूजा	-	, , ,	५ ६
(रात्रिमोजन ह	था)			निर्वाणकेत्र पू जा	स्त्ररूपचद्र	(हि०)४६	
नामकर्मप्रकृतियों का	वर्णन —	(সা৹)	9=0	निश्चयव्यवहारदर्शन	*********	(हि०)	१२४
नाममाला	धनजय	(सं०) ८८	-,११२	निर्ल्याष्ट्रमी कथा	त्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२६५
न्यायदीविका	यति धर्म भूपगा	98 (OF)	,885	निशिमोजनत्यागवधा	भारामल्ल	् (हि०) = ì	४, २२६
न्यायदोधिका भाषा	पन्नालाल	(हि०)	४७	नीतिशतक	चाग्यक्य	(स०)	88
नारी चि(त्र		(हि०)	१५१	नीतिशतक	भर्तृ हरि	(सं०)	२३५
नारायण लाला		(हि०)	२≂७	नीतिसार	इन्द्रनदि	(46)	२३४
नासिकेतोपाख्यान	नददास	(हि०)	3 इ. ६	नीलकठ व्योतिष	नीलकठ	(स॰)	288
नास्तिकवाद		(सं॰)	१= k	नुसखे	•	(हि०)	११=
नित्यपूजासम्रह		(स॰)	ક ફ	नूर की शक्कनावित	नूर	(हि०)	۶8=
नित्यपू जा		(स॰)	५ ६	नेमीकुमार नारहमास	T	(हि०) ११	xc,852
नित्यपूजा		(সা॰)	४६	नेमिनाथ के दश मध	a —	(हि॰)	= 6
नित्यपू जा	-	्(हि०)	१५२	नेसिनाथ का वारहम	प्रसा श्या मटा स २	गोधा (हि॰)	१६६
नित्यपूजापाठ		(स•) ४	६,१६४	नेमिगीत		(हि•)	१६७
नित्यपूजामग्रह	gradelli,	(हि०) ४	६,१७१,	निमराज्ञलगीत हू	गरसी वैनाडा	(हि॰)	१६७
		२६३, २६३	, ३००	नेमिराज्जलगीत		(हि॰)	२६०
नित्यनियमपूजा		(स०) २०	२,२६०,	नेमिराज्ञलस्तवन	ज्ञिनहर्ष	(हि॰)	280
			२६३	नेमिराजमतिगीत		(हि०)१	६ ७,२६ २
नित्यनियमपूजा	-	(সা॰)	२६०	नेमिजी की लहर	प० इ गो 🕝	(हि०)	१६४

प्रन्थ नाम	ले खक	- भाषा	पत्र सं ०	। प्रन्थ नीम	लेखक	भाषा	पंत्र सं०
नेमिजी को व्याहली	लालचद्	(हि०)	३०३	नेमीरवर लहरी		(हि०)	११ं२
नेमि व्याहलो (नव म	गल) हीरा	(हिं०)	⊏ 8	नेमीश्वर विनर्ता		(हि०)	fkk
नेमिनाथ का व्याहला	नाथू	्हि०)	120	i	नी) के व्यापार का प्रा		
नेसिराजमति वेलि	ठ क्कु र्सी	(हि०)	११७	नैमितिक पूजी		(हि॰)	रंधर
नेमिनाथराजुल गीत	हर्षकीर्त्ति	' (हि०)	१६६	पट्टावलि मंद्र नांहु	से पद्मनदि तंक	(((((((((((((((((((१ ईं ७
नेमिनाथच्रित्र	श्रज्यराज	(हि॰)	२१⊏	पत्रिका		(₩•)	रंउर
नेमिजिनपुराण	ब्र॰ नेमदत्त	(根 o) き	४, २२३			१ :	११, १३२
नेमिनाथ मगल		(हि॰)	१२३	पंद	श्रजयराज		१ंई०,१६३
नेमिराजमति गीत	जिनहर्प	(हि॰)	१४७	पंद	कनककीत्ति	(हिं)	₹00
नेमिराजमति जखडी	हेमराज	(हि०)	१५२	पद	कृष्ण गुलाव	(हि०)	१४४
नेमिदूत काव्य	विक्रम	(40)	२ १०	पद	कवीरद <u>ा</u> स	(हिं ५)	२६४
नेमिदूत काव्य सटीक	टीका० गुग्ग विन	नय (स०)	२८१	पद	कालिक सूरि	(हि॰)	२६३
नेमिनाथस्तवन	धनराज	(हि०)	ર્≒દ	पद	किशनसिंह	(हि॰)	१६३
नेमिनाथस्तवन	_	(हि०)	२६४	पद	कुमुंदचंद्र	(हि॰)	२७३्
नेमिनाथस्तवन		(स०)	३ ० ≧	पद	किशोरदास	(tē o)	१२७
नेमिनाथस्तोत्र	— 、	(हि॰)	ર⊏દ	पद	खुशालचद्र	(हि॰)	२६७
नेमिनाथस्तोत्र	शालि पडित	(स०)	> % o	पद	चरनदास	(हि॰)	२७५
नेमिशीलवर्णन	_	(हि॰)	१३्८	पद	छीहल	(हि०-)	११७
ने मीश्वरगीत	जिनहर्प	(हि०)	१४६	वद	जगजीवन	(हि॰)	₹ > 0
नेमीश्वरगीत	ह र्षेकीर्त्ति	(हि॰)	१६६	पद	जगतराम	(हि॰)	१३३,१३७
नेमीश्वरराजमतिर्गात	विनोदीलाल	(हि॰)	१५६				? % ¥
नेमीश्वरराज्मति गीत		(हि०)	१ ६६	पद	जगराम	(हि॰)	१६२
नेमीश्वरराज्ञल सवाद			३०६		जिनकुशलसूरि		~ 6 3
नेमीश्वर के दशसवांत	र व्र० वर्मरूचि	(हि०)	१५७	पद	जिनदत्त्त्सूरि		
नेमीश्वरगी त	छीहल	(हि०)	११७	पद	जिनदास	(हिं०)।	
नेमीश्वरजयमाल भ	ांडारी नेमिचद्र	(अप्०)	११७	1	•		१५५
नेमीश्वररास	त्र॰ रायमल्ल	(हि०) १	१३,१३२,	,	जिनवल्लभ	(हि॰)	
•		1	२२⊏⊏	पद	जीवनराम	(हि॰) (हि॰)	
नेमी रवररा स	नेमिचद	(हि॰)	१२७	पद		्हि०)१३ े०	
(हरिवशपुगण)			पद	जीहरीलाल -	(हि॰॰)	६७६

र्वन्थ नीम	लेखक	भाष । पत्र	ा सं ० े	त्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स॰
पंदसग्रह	देकचंद।	(हि॰)	११३	पद	वखतराम	(हि०)	१३७
पद	टोडर '	(हि॰)	१२=	पद	वृन्द	(हि०)	१३२
पद	डाज्राम	(हि॰)	१४७	पद	विश्वभूषण	(हि॰)	, ३१ _, १३२
पद	सघपति राइ'डू गर	(हि०)	२६३ ∫	पद	श्यामदास	(हि०)	8 € &
प दसंग्रह	त्र० द्याल	(हि०)	908	पद्र	सालिग	(हिः)	१६२
पद	द्यानतराय	(हिं•) १ २६	.,१३७	पद =	हवि सुन्दर	(-हि॰)	• ६ ७,२ <u>२</u> ६
		१६३,	₹ 30	पद	सूरदास	(हि॰)	२८८
-पदसम्रह	् दीपचन्द्र	(हि०) ११३	,१५२,	पृद	सोभचद	(हि०)	१ १ १
	१४३, १६	३, २ <i>६६</i> , १ ३७	, १३७	पद हरखचद ((धनराज के शिष्य)	(हिं०)	₹=8
पदसमह	र्मदास:	(हि०)	११३	पदसमह	हर्षचद	(हिं,०)	११३
पद	नद्दस	(हि॰)	3,८६	प्रद	हर्षकीचिं	(हिं•़)	११७
पद	नवल्याम	(हि०) १३	· ·	प्रद	हरीसिद्द	(हि०)	१२७,१३७
		. 6	१६२			•	1, &2
पद	नाथू 	(हि०)	3-0	पदसम्रह		(हि०)	403,20K
पद	नेमकीर्त्त <u>ि</u>	(हि०)	₹0-€	ı	१२६, ३८०	, ,१२⊏, ,≀	183, 88k
पद	- पूनो	(हि॰) (ि)	१ ३२		१४६, १४६	, १ ४१, १	१,४३, १४=
पद	परमानद	(हि०) < िः	११६		१६३, २६३	, २ ६४, ३	१६ ६, ३०३
पद	बुधजन	(हि०)	٩٩٥		१३४, २८८		
पद	बालचन्द	(हि॰)	,१२ ,३	पृदसग्रह '	साधुकीर्त्ति	(हि०)	२७३
पद	भागचन्द	(हि०)	₹ ६,२	(सत्तर प्रव	गर पूजा प्रकरण)		
पद	चनारसीदास	(हि०) १ १		पद्मपुराया	रविषेणाचार्य	(स०)	२२३
पद	भूधरदास	१४४, १६१ _. (हि०) ११		पद्मपुराख	· ·	(हि॰)	३०१
15	સુવરકારા		, ९४५ , १४ <i>६</i> ं	(उत्तर ख	एड)		
ं पदसग्रह	मनरा म	(हि०) १ १		पद्मनदिपचिवश	ति पद्मनिंद	(মা৽)	३०, २४६
		२०, १४२, ३०		1 ~ ~ ~	मन्नालाल खिन्दुका	(हि०)	३१
पद	मलजी	(हि॰)	१३७	पद्मपुराणभाषा	खुशालचंद		€ ४
पद	रामदास	(हि०) १	१६,०३२	II.		(हि०)	६४, २२३
पद	ऋषभनाथ	(हि०)		1	বি —	(स॰)	1208
पद	रूपचद			,पद्मावतीकवृत्त	-	('Ae')	_र ू२०२
		६, १२६, ,१६३	,≀१६४	/~पद्मावतीपटल		(स०)	_ृ २० २

त्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	प्रन्थ नाम	लेखक '	भाषा व	गत्र सं०
पद्मावतीपूजा	•	(स०) २	०२,५६	पचपरमेष्टीपूजा		(हि॰)	२०३
			१४⊏	पचपरमेप्ठीपूजा	शुभचन्द	(स॰)	२०४
पद्मावतीकथा		(हि॰)	१८०	प चपरमेप्ठीग्रणस्तव	न प० डालूराम	(हि॰)	2 % •
पद्मावतीस्तो		(स॰) १	०४,२०२	पचपरमेप्ठीस्तोत्र		(स॰)	२ ७५
1			२७१	पचपरमेष्ठियों के मृ	् लगण	(हि॰)	₹००
पद्मावतीस्तोत्र 🌷		(हि॰)	१०४	पचपरमेटिवयों की न	वर्ची —	(हि॰)	२७३
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	`	(40)	२०४	पचपरमेष्ठीम त्रस्तव	न प्रेमराज	(हि॰)	988
पद्मावतीसहस्रनाम-	_	(हि०) २	.०२,२०४	पचतंत्र	~-	(हिं०)	3•€
पद्मावतीस्तोत्रकवच	—	(स०)	२४०	प चमकाल का गण	मेद करमचद	(हि॰)	३००
पद्मावतीचउपई	जिनप्रभसूरि	(हि०)	309	पचमीस्तवन	समय सुन्दर	(हि॰)	180
प चकल्यायाकपूजा	पर्जिनदास	'(स•)	५६	पचमीरतुति		(स॰)	१४२
पचकल्यागावपूर्गा	सुधासागर	(स。)	५६	पचमास चतुर्दशी ((भ० सुरेन्द्र की	र्त्ति) (स॰)	२०४
प चकल्यायकपू जा	-	(हि०)	४७, २०३				
प चकल्याणकपूजा	लद्मीचन्द्र	(हि॰)	२०३	पचमीवृतोद्यापन		(स॰)	508
पचकल्याण कपूजा	टेक्चन्ड	(हि॰)	२०२, ५०		टेकचद	(हि॰)	Ł 👁
पचकल्याणकपुजा	_	(4 。)	३०४	पचमेरपूजा	भूधरदास	~(हि०) ४	७, ३११
र्पं चकल्याणकवडा	كميت	(हि॰)	२६६	पचमेरपूजा	विश्वभूषण् ु	(हि॰)	१४२
प चकुमारपूजा	जवाहरलाल	(हि०)	५०	पचमेंरपूजा	-	(हि०) २०	•
पचकुमारपूजा	_	(हि॰)	308	प चमेरुपूजा	भ० रब्नचढ	(स॰)	
प्चमगल	रूपचन्द	(हिं०) !	०४,१११	पंचमेरपूजा	श्रजयराज	(हि॰)	? ३ ०
	११६, १३	₹ø, १२३, १	८१, १४६	पचमघावा		(हि०) १४	•
	9 (A) 4	y 240. 8	६१. २४०		प० हरीवैस	(हिं०)	२ - २ १६४
	≥⊏₹, ५९	×, ₹0k, ³	०७, २११	५ प् ष याया - -	4 × QX1441	(स॰)	P & &
पचमगतिवेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	११७,१३०	प प ला व्य	riπ	(स॰)	१⊏५
	•		१६४	पचससारस्वरुपनिरूष	4W —	(स॰)	२३०
पचदशशरीरवर्णन		(स०)	३ ४ ६	पचसिष		(स॰)	200
प चपरमेष्ठीपूजा	यशोनिं	(स॰)	४७	प्चर्सधिटीका	`		
प चपरमेष्ठीपूजा	डालूराम	≁ (हि॰)	¥	पचस्तोत्र	_	(स॰)	२३०
प चप्रमेष्टीगुण		(हि॰)	१३१	पचस्तोत्र	~	(स०) (कि)	२०४
पचपरमेष्टीपूजा		(円0)	२ <i>०</i> ३	पचमहेली	छीहल	(हि॰)	₹£ ₹

प्रन्थ नाम	लेखकी	भाषा	पत्र सं०	त्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पचाल्यान (पचतत्र)	निरमलदास	(हि॰)	२६१	परिमाषापरिच्छेद	पचानन भट्टाचार्य	(स०)	98#
पचाणुवत की जयमाल	बाई मेघश्री	(हि०)	₹, &	(नयमूलसूत्र	·)		
प चास्तिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	(সা০)	१६, १८०	त्रथमशुक्ल च्यानप न	चीसी —	(हिं)	३
पचास्तिकाय टीका	ऋमृतचन्द्रा चार्य	(स०)	98, 8=0	प्रकिथारूपावली	प॰ रामरत्न शर्मा	(स०)	⊏ ७
पचास्तिकायप्रदीप	प्रभाचन्द्र	(स॰)	38	प्रतिकम ण		(গা॰) (स ०) ३ १
पचास्तिकायमाषा '	हेमराज -	(हि०)	१६, १८	प्रतिकमगसूत्र	****	(সা০)২	५६, ३१२
पचास्तिकाय साषा 🕛	बुधजन 🤭	(हि॰)	१८ र	प्रतिमा र तवन	राजसमुद्र	(हि०)	१४१
पर्चेद्रियवेलि	ठक्कुरसी ((हि०) १	१७,११६	प्रतिप्ठापाठ	श्राशाधर	(स०)	१७२
		१	६४,२६६	पृथ्वीराजवेलि	पृथ्वीराज	(हि०)	३०२
पन्थीगीत	े छीह्ल		११४,११६	प्रतिप्ठासारसग्रह	वसुनदि	(स。)	५७
	•		६४, ३०४	प्रबोधसार	प० यश कीत्ति	(स०)	₹
पद्रहत्रकार के पात्र व		(हिं०		प्रद्युम्नचरित्र		(हि॰)	৩০
पन्नाशाहजादा की बा	-	(हि०)		प्रध् म्नचरित्र	सधारु	(हि॰)	60
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव		४१,११४	प्रधुम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(स॰)	२१३
परमात्मत्रकाश टीका	_	ारर, । (स०)	७१, १६३) ४१	्रप्रधुम्नचरित्र	कविसिंह	(প্রব ০)	२ ५ ३
परमात्मत्रकाश भाषा	-	(हि॰		प्रधुम्नकान्य परि	तका <u>—</u>	(সা০)	२ १ ३
परमात्मपुराख	दीपचद) । ४१) । ४१	प्रद्युम्नरासो	व्र० रायमल्ल	(हि०)	१३२,३०७
	भगवतीदास -	(हि०) (हि०)					१ १३
परमार्घगीत	रूपचद		/	प्रवोधवावनी	जिनरग	(हि०)	१४१
परमार्घदोहाशतक	रूपचद	(हिं°)		प्रबोधचन्द्रोदय	मल्लकवि	(हि०)	60
परमानंदस्तोत्र			,	प्रबोधचन्द्रोदय न	ाटक कृष्ण्मिश्र	(स॰)	२३३
			°==, ₹•२	1	विनोदीलाल	(हि०)	३०१
परमानदस्तोत्र	पूज्यपाट स्वामी	(स ०]) २६६′	1	गोपालदास	(हि०)	२६१
परमञ्योति	बनारसीदास			प्रमेयरत्नमाला ।	अनन्त ग्रीर्य	(स०)	¥=
			३११	1		(祖)	
परमञ्योतिस्तोत्र) २८७	1	कुन्द्कुन्दाचार्य		४२,१६३ -
पर्वतपारणी का रासं	1) २ <i>०७</i>	1	हेमरा ज		०) ४२,
परीवर विवर ख	2 2) ३१, ३०।	l			११, १६३
_	गर्य माणिक्यनंदि 			}	• •		४२ ः
पराशमुख	जयचद् छावडा	(हि) A=	। प्रवचनसार माप	ग इमराज	(हि०प	०) १६३

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा प	ात्र स॰	प्रन्थ नाम	लेखकः	ं भाषा	पत्र म०
प्रवचनसार सटीक	श्रमृतचद्र सृरि	(सं०)	१६३	<u> </u>	विजयकीर्त्त	(हि॰)	१ / १
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	बुलाकीदास	(हि०) ३	1,2=4	पार्श्वनाथस्तवन			105,300
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीत्तिं	(स०)	११, ३२,			,	११२
			१⊏६	पार्श्वनाथनमस्कार	श्रभयदेव	(য়া৽) :	: · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
प्रश्नोच रमा ला		(हि॰)	१३७	पार्श्वदेशान्तर छन्द		(हि॰)	260
प्रशस्तिका		(40)	२५६	पारर्भनायस्तुति		(हि॰)	१६४
प्रसग सार	रघुनाथ	(हि॰)	२६२	पार्वनामस्तृति	भार कुराल	(हि॰)	१४६
प्रस्ताविक्दोहा	जिनश्ग मूरि	(हि०)	१४१	पार् र्धनावस्तोत्र	_	(स∘) १	
पत्यविधान पूजा	रत्ननदि	(स॰) ४	¤, १७२	•		१४७, २ ४	•
पल्यविघान		(६०)	१ ५७	पार्श्वनायस्तोत्र	_	, (प्राचीन हि	-
पल्यविधानकथा		(स॰)	११७	पार्श्वनायस्तोत्र	जिनराज सृरि	(स。)	१ ४०
पल्यव्रतोद्यापनपू जा	शूभचद्र	(स॰)	२०५	पार्खनायस्तोत्र	कमललाभ	(हि॰)	{ ¥0
पल्यविधानकथा ह	न० ज्ञानसागर	(हि॰ प॰) २६४	पार्स्नायस्तोत्र	मनरग	(हि॰)	{ ¥0
पहेलियाँ	Process.	(हि॰)	१३६	पार्श्वनाधरतोत्र	जिनरग	(हि०)	१ ४०
पाखरहदलन	वीरभद्र	(स॰)	१⊏१	पार्श्वनाथस्तोत्र		(हि॰)	११२
पाखीसू न	कुशल मुनिद	(সা॰)	3,2	पार्र्वनायस्तोत्र	मुनि पद्मनिट	(स०)	२४०
पाठसमह		(সা০)	१७२	पार्श्वनायस्तोत्र	राजसेन	(46)	२६६
पाठसमह	-	(हि०) १	७२,३१०	पार्वनायलघुस्तोत्र		(हि॰)	980
पा ठसम ह		(स०)	१७२	पार्श्वनाय का साले		(हि०) ३	
प्राकृतव्याकरण	चड	(स॰)	२३०	पार्श्वजिनस्यान वरा		(हि०)	१ ४७
प्राकृतव्याकरण	_	(स॰)	२३०	_	भ० सकलकीत्ति	(स॰)	२१३
पांडवपुराख	बुलाकीदा स	(हि०)	६४	पार्श्वपुराग	भूधरदास	(हि०) ७	۶,१११,
पांडवपुराया	भ० शुभचद्र	(स०) ६	४, १२३	•	·		> 9 ₹
पार्श्वनाथपूजा	_	(हि॰)	Ł =	पार्श्वलघुपाठ		(সা৹)	408
पार्श्वनामजयमा ल		(स॰)	१५६	पार्वस्तोत्र		(स०) ११	
पार्श्वनाथ की वीनती	-	(हि॰)	१५२	पार्श्वस्तीत्र	पद्म प्रभदेव	(स॰) ११	•
पार्श्वनामजिनस्तवन		(स॰)	980	पार्श्व मजन	सहज कीर्त्ति	(हि०)	980
पार्श्वनाथस्तवन		(हि०) १	1		द (धनराज के वि		
		_	२६१	प्रायश्चितसम् प् चय	नदिगुरु	(स॰) ३१	•
पार्वनायरत्तवन	रंगवल्लभ	(हि०)	880	प्रायश्चितस म ह	श्रकलक देव	(स॰)	१⊏६

यन्थ नाम	लेखक	भाषा	कि स०	यन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पाशाकेवली		(स॰)	२४५	पूजा एव श्रमिषेक विधि		(सं०)	२०३
पाशाकेवली	entrante.	(हि॰)	१२४	पूजाटीका		(स०)	२०५
(श्रवजदकेवल	î)	, .		् पूजा स्तोत्रसमह	-	(हि०)	ર ૪ દ
पाद्यिकसूत्र		(初)	१⊏१	पोसापडिकम्मण उठावन	ा विधि	(हि०)	१४७
पीपाजी की चित्रावन	नी —	(हि॰)	२८०		~=		
वीपाजी की परिचई		(हि०)	३०१		फ		
प्रीर्तिकरचरित्र	व्र० नेमिद्त्त	(सं०)	į	फलपासा		(हि०)	१४२
प्रीतिंकरचो पाई	ने मिचंद	(हि॰)	१२७	(फलचिंतामणि)			
पुरव्हरीकस्तोत्र	-	(स॰)	ĺ	फलवधी पार्श्वनाथस्तवन	। पद्मराज	(हि॰)	१४०
	च्चीसी भगवतीदास		1	फुटकरकवित्त	_	(हि०)	१५२
पु एयसारकथा	पुण्यकीर्त्ति	(हि॰)	- 1	फुटकरगाथा		(গা॰)	२५७
-	दौलतराम		२२६,८४	फुटकरं दोहे तथा	गिरधरदास	(हि०)	१३७
पुरयाश्रवकथाकोष		(हि∘)	•	कु डलिया			
पुरायाहवाचन		(स०)			=		
पुरन्दरचौपई	मालदेव	(हि॰)	⊏४, ११ ४		ब		
_	भ० सकलकीत्ति	(स०)	•	बहाक्का	मनराम	(हि॰)	१४३
	श्रमृतचंद्राचार्य		^३ २, १ ⊏४	बडाकल्याण		(हि॰)	१४७
_	। प० टोडरमल	(हि०)	•	वड़ादर्शन		(स॰)	१०४
पुरूषार्थसिद्धयुपाय		(हि॰)		वचीसी	मनराम	(६०)	335
	गोविद	(सं०		नधाई चा	लिक श्रमीचद	(हि०)	१३७
-	हेमचंद्र सूरि	(সা৹)) १ ८६	बधावा	-	(हि०)	१३१,१६२
पुष्पांजलिवतोद्याप	।न —	(स॰)	२०४, ५८	वनारसीविलास	बनारसीदास	(हि०)	४, ११४,
पुष्पांजलिवतकथा	त्र॰ ज्ञानसागर	(हि०प	10) २ ६४		११४, ११०	=, १२०, १	३७, १७३
पूजनिकयावर्णन	बाबा दुलीचद	(हि०)	४८	वलभद्रपुराण	रइधू	(স্থप॰)	२२३
पूजासमह		(हि०)	४=, २७४	बहत्तरिजिनेन्द्र जयमाल	•	(स०)	१३६
		<i>(</i> - \	२७७	बाईस परीषह	भूधरदास	(हि॰)	११४
पूजासमह * प्रचासग्रह		_	४⊏, ४६ ,१९२ (०}	बाईसपरीषह	•		१=७,१६२
र् पूजासमह		/ // * 18	,२१५ ५ ज् २ १७			- -	३२, ४१
पूजावाठसमह		(हि०) १	ξ γ, ξχ=,	बाल्यवर्णन इ	प्रजयराज	(हि॰)	१३०
•	१६३, १६७, २६३		•	1	रूपदीप	(हि०)	३
							*

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
बारहबनुप्रेचा	डाल्राम	(हि०)	१४७	वक्चोरकमा	नेथमल	(हि॰)	२२७
नारहखडी	सूरत	(हि०)	१४१,१६१	ं (धनदत्तरोठ	कीक्था)		
,		٦!	k७, ३११	मं देतानजयमाल		(स०)	१६७
बारह खडी		(हि॰)	१४३,१ ६७	वदना	श्रजयराज	(हि॰)	₹ 3 o
भारहस्रडी	श्रीदत्तलाल	(हि॰)	१६२,१६६	वंधवोल		(हि॰)	₹
बारहमावना		(हि॰)	२६३,३००	नहाविलास	भगवतीदास	(हि०)	3 3
		1	१३६	नहा वर्यनववाडि व	र्णन पुठएय सागर	. (हि॰)	१४८
नारहमावन्।	भूधरदास	(हि०)	१५७				
बारहम वना	भगवतीदास	(हि०)	१६२,१६६		भ		
बारहमासा		(हि॰)	२१०	मक्तमान		(हि॰)	१३१
बा(हवतीचापन	_	(40)	૨ ૪૭	मसामरपूजाउद्यापन	श्री भूपण	(सं०) ४	800,3
(द्वादसन्रत्नि	धान)		ļ	मकामरस्तोत्रपूजा	श्रा० सोमसेन	(स॰)	२०३
बाहुवलिचरिए	प० धनपाल	(श्रप्र)	ډو	मसामरपूजा		(स॰)	१४८
(बाहुबलि दे	व चरित्र		1	मक्तामरमापा	गगाराम पांड्या	(हि॰)	१२६
मीसतीर्थं करजखडी	भूधरदास	(हि॰)	३११	मकामरमापा		(हि०) 1	२४,२६० ्
नीसतीय करों की उ	तयमाल	(हि०)	928	_	_	३०१, ३०३	
वीसतीयंकरों की न	ामावलि 🗇	(हि०)	१५७		।चिर्य मान्तु ग		
बीसतीर्घक्रों की पू	जा श्रजयराज	(हि०)	१३०	٩	०६, १०७, १११,		
	पत्रालाल सघी,	(हि०)	50€		१६२, २४, २	•	=
बीसतीर्थं करपूजा		(स०)	२०४		२=٠, ३००,		1
ीसतीर्यकरस्तुति	~_f_ *	(हि॰)	१४७	मक्तामरस्तोत्र माषा	, ,		
बीसविरहमान के न	= -	(हि॰)	928		-	१३४, १ ३६ २६३, २६६	
नीसमिरहमानस्तुति	L 1	(हि०)	१४७			₹0=	1 7 7
बीसविद्यमानतीर्थ व	, ;		í	मक्तामरस्तोत्रटीका		स॰) १०५	, १८६,
बीसा यत्र	-	(हि॰)	२८७				5 4 9
पु धजनविलास	वुधज न ्		१७३,३१२	मक्तामरस्तोत्र टीका	श्रखयराज श्रीमाल	(हि॰)	१र४
बुधजन सत्तंसई		(हि॰)	8.8	मक्तामरस्तोत्रवृत्ति	त्र० रायमल्ल	(स॰)	१०६ े
बुधरास ्	-	(हि॰)	१५०	मक्तामरवृत्ति	भ० रतनचन्द्र सूरि	(OF)	२४१
नेलिकेविषेकथन	इर्षकी र्त्ति	(हि०)	१ २=	मक्तामरस्तीत्र माषा	ज्यचन्द्जी छाबड	1 (हि॰)	582
बोधिपाहुड मावा	जयचद छावड़ा	(हि॰)	१६४,	मक्तामरस्तोत्रमावा	क्या सहित नथमल	(हि•)	२४२

भक्तामरमत्रसहित — (स॰) ३९६ मत्तवैराग्यशतक — (अप॰) भक्ताभरस्तोत्रकथा — (स॰) ३९६ मागवत महापुराण माषा नददास (हि॰)	२६ १ १६४ २६६ २ <i>५</i> ३
भक्ताभरस्तोत्रकथा — (स॰) २६६ मागवत महापुराण साथा नददास (हि९)	રક્દ
§	२ ४ ऱ
भिनतमानती — (हि०) २५५ मारतीस्तोत्र = (स०)	
मिनतमगल वनारसीदास (हि॰) १६२ मावनावरीसी ऋमितिगति (स॰)१५६	,३५७
भिनतमर्गन — (प्रा०) १६६ भावतावर्णन — (हि०)	٤٤
मगवती श्राराधनामावा सदा दुख कासलीवाल (हि•) ३३, मावसग्रह देवसेन (प्रार) २०,	₹ ⋷ >
१ _{८७} मावसम्रह श्रुतसुनि (प्रा०)२१,	१=९
भगवतीसूत्र — (प्रा०) १६१	१⊏१
ं भावीका कथन — (हि॰) '	≀३७
भास मनहर्या (हि॰)	१६२
भाषापुर्वे सहाराज जसवतासह (१६०)	30
भवनेश्वरस्तोत्र समिकान्ति (स०)	ર હ્ય
प्रधाविनास भघरदास (हि॰) ह	१२
भवालचत्रविंशति भवति कवि (स०)१०६.	२४२
	?♥¤
माजपारत पाठक राजभएसम (स॰)	48
माजमबंध ५० अल्लारा (५०)	११६
	े ^{कु}
	१६३
AUTHORITY NO PER PORT TO A TOP	1 & 8
	•
A contract of the contract of	ह ्ष २२७
	ŧ
	१ ६७
भिविष्यदत्त्वीपई व्र ायमल्ल (हि०)१११,२१६ मधुमालती कथा चतुर्भु ज ा स (हि०)२=१	
	२ २३६

and the second s

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा प	क्त स॰	थ्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
मनुष्य की उत्पत्ति		(हि॰)	9 % १	मुनिमाला		(हि॰)	१४=
मनोरथमाला		(हि०)	१६४	मुनिवर्णन	*********	(हि॰)	3
महादेव का व्याहली		(हि॰)	35 P	मुनिवर स्तुति		(हि॰)	१५१
महामार्तक्था	लालदास	(हि०) १	३६,२६७	मुनीश्वरों की जर	ामाल जिएदास	(हि)	१६४,३०५
महामारत कथा		(हि॰)	३०१	मुनिगीत		(हि०)	२६२
महावीर वीनती	-	(हिं०)	१५ह	मुनिसुवतानु प्रेचा	योगदेव	(श्रपः) १	१७,१३१
(चांदनपुर)				मुक्तावलि वतकथा	खुशालचन्द्र	(हि॰)	२२७
महावीरस्तवन	जिनबल्लभ	(स。)	१४१	मुक्तावलीवतोद्याप	J	(स∘)	२०६
महावीर स्तवन		(हि॰)	३ ह १		त्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२ ह
महाबीर स्तवन	-	(स०)	30-		गा खुशालचन्द	(हि०)	२६७
महीमट्टी	भट्टी	(स०)	وء	मूढाषुकवर्णन	भगवतीदास भगवतीदास	(हि॰)	१३२
महीपालचरित्र मु	नि चारित्रभृषण	(中。)	७४		भः सकलकीर्ति	(हि॰)	३ ३
महीपालचरित्र	नथमल	(हि॰)	२१६	मूलाचारमाषा टीव		(हि॰)	₹ ₹
मांगीतु गी तीर्घ वर्णन	परिखाराम	(हिं०)	११४	मेघकुमारगीत	्र गृहस्तकात पूनो	(हि०)१	
मांगीतु गी की जखडी	रामकीर्ति	(हि॰)	د و د	443/41/41/1		o, १५१, १६	•
मांगीतु गी स्तवन		(हि०)	३०३	मेघकुमारगीत	कनककीत्ति	७, ९३०, ७५ (हि०)	२२७ २२७
मतिञ्जचीसी	यश कीत्ति	(हि०)	२६२	मेभदूत • सेभदूत	कालिदास	(स॰)	२१७
मातृकापाठ		(हि॰)	१ ४=	गन्यूरा मेघमालाउद्यापन		(स॰)	208
मानबावनी	मनोहर	(हि०)	११६	मेघमालावतकथा	त्र० ज्ञानसागर	(ह-)	> ६ ह
मानमजरी	नददास	(हि०) २	७=,२ ६३	मेघमालावतक्था	युशालचन्द्र खुशालचन्द्र	(हि॰)	280
मानवर्णन		(स॰)	२१७	मोचपैंडी	वनारसीदा स	(हि॰) ३	
मारीस्तोत्र		(明)	३१०			186, 86	
मालपच्चीसी	विनोदीलाल	(हि०)	240	मोत्तमार्गप्रकाश	प० टोडरमल	(हि०) ३	४, १ ७७
मालामहोत्सव	विनोदीलाल	(हि)	३३	मोस्सुखवर्णन	erecon.	(हि०)३/	٠, ٤,
मासीरासा मासीरासा	जिग्रदास	(हि०)	986	मोड़ा	हर्पकीर्ति	(हि॰)	१४८
मासांतचतुर्दशीपूजा	त्रज् ा स त्रज्ञचराम	(स॰)	२०४	मोरष्वज लीला		(हि०)	१३६
_	अपापराम घीसा	(हि॰)	३१२	मोहउत्ऋष्टस्यिति प	ाचीसा —	(हि०)	ą
मित्रवितास ०		(स॰)	χ ε	मोहमर्दनक्या		(हि॰)	२⊏७
मितभाषणीटीका	शिवादित्य		9=.6	मोहिववकयुद्ध	वनारसीदास	(हि०) <i>६</i> ९	
भिष्यात्वखडन	वखतराम साह	(हि॰) (कि॰)	ļ	41612 1 1.2 or	7111/11/11/11	(, , , -	१७६
मिध्यात्वनिषेध	वनारसीटास	(हि०)	१८७ }				v - v

ग्रन्थ नाम	लेखक	भापा	पत्र सं०	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
मीनपुकादशीव्रतम्य	। व्र ज्ञानसागर	(हि०)	२६४	यादवरासी	पुण्यरतनगरिए	(हि०)	२ ६ २
मोनित्रतीचापन	gaments.	(स॰)	२०४	यादुरासी	गोपालदास	(हि०)	<i>२६</i> २
मं गलाष्टक		(40)	१०६	योगशत	अमृतप्रभ सूरि	(स॰)	÷४७
मगल	विनोदीलाल	(हि०)	१३ १	योगसमुच्चय	नवनिधिराम	(स॰)	188
मजारीगीत	जिनचन्द्र सृरि	(हि०)	२६४	योगसार	योगचन्द्र	(हि०)	१६४ ३०५
मत्रस्तोत्र	-	(हि०)	१४=	योगसार	योगीन्द्रदेव	(श्रप०)	४२, ११४
मत्रशास्त्रपाठ		(सं॰)	२७४			8 8	६, १२⊏
मृगीसवादवर्गान	-	(हि०)	१२५	योगमारभाषा	बुधजन	(हि०)	४२
मृत्युगहोत्मव मापा	दुलीचन्द	(हि०)	42	योगीरासा	पाडे जिनदास	(हि॰)	४२, १२०
मृत्यु महीत्मव		(स॰)	१०७			१२	२, १६७
मृत्युमहोत्सव	बुधजन	(हि०)	१६४		T		
	****				र		
	य			रतावधन क्या	_	(हि॰प॰)	२६४
यत्याचार	वसुनदि	(46)		रघुवश	कालिटास	(स॰)	२१⊏
यपचिन्तामणि		(हि॰)	२६४	रजस्वला स्त्री फे	दोप —	(स॰)	9 ४ ६
यत्रलिखने व पूजने	विधि	(स ~)	३०२	रत्न र एडश्रावका	चार समन्तभद्राचार्य	(स॰)	₹ ^
यशस्तिलकचम्पृ	सोमदेव	(स०)	৬४	रतकरण्डश्रावका	वार टीका प्रभाचन्द्र	(स॰)	ද ී &
यशोधरची प ई	भ्रजयराज	(हि०)	હ છ	रतकरण्डश्रावका	चार सदासुख काशर्ल	ोयाल (हि॰)	₹¥, (=>
यशोधरचरि व	खुशालचन्द	(g °)	७६,१२४	मापा			
यशोधरचरित्र	झानकोत्ति	(初)	७४, २१७,	रवक्र्यन्ड आवना	चार भाषा थान जी	(हि॰)	1=0
			४=, २६७	रवत्रयज्ञयमाल		(हि०)	7 6
यशोधरचरित	परिहानद	(हि०)		रतत्रयजयमाल	नथमल	(हि०)	€ ₹
यशोधरचरित्र	लिखमीदाम	(हि०)		रवत्रयज्ञयमाल	***	(মা৽)	3 o €
यशोधरचरित्र	पद्मनाभ कायस्य	(स०)		! स्तत्रयपूजा		(म०) ५	1,,,,,
यशोधत्वरिय	वादिराज सृरि	(₹0)					२०६
यशोधरचरित्र	सकलकीचि		७४, २१७	रनवयपुजामावा	चानतराय	(Pe)	4.5
यशोधरचरित्र 	त्रासवसेन 		38, 490	रतत्रयप्जामाथ	Americano	(हि0)	\$. \$. \$
यशोधरचरित्र	सोमकीत्ति		७४, २१७				२≡३
यशोधाचरित्रसस	सोमदत्त सृरि	(हिट)		श्लतयप् ता	केशव सेन	(前5)	3 = 1
यशोधाचरित्र हिप्य	u —	(a b)		रनजयपृङा	श्रागाधर	(€5)	205
याग मक्ल	-	(सं०)	7==	ग्नत्रयत्र तक्षा	व्र॰ ज्ञानमागर	िहिल प्र	3 # 1 %

· 🛴

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	्र यन्थ नाम	लेखक	भापा	पत्र स०
रत्नत्रयवतोषापन	Феципа	(स०)	२०५	रेखता	वचीराम	(हि०)	£ Ł
रमावलीवचोद्यापनः	रूजा —	(स॰)	२∙४	रेखता	कवीरदास	(हि॰)	२ ह७
रनस चय	विनयराज गणि	(গা॰)	१ = १	रेदवतक्था	देवेंद्रकीत्ति	(स०)	٠ २ २७
रयणसार	कुन्दकुन्दाचार्य	(সা০)	9-0	∤ रोगपरीचा			०)२४७
रगनाथ स्तोत्र		(स॰)	३०१	रोष (कोध) वर्णन	गोयम	(প্র प ০)	
रविव्रतप्जा		(स०)	३० ६	रोहिणीकचा		(स∘)	= k
रिवार कथा		(हि॰)	१४६	रोहिणीवतक्या	त्र॰ ज्ञानसागर्	· · · · ·	
रविव्रतिवधान	देवेन्द्रकीत्ति	(स॰)	₹0=	रोहिणीवतकथा	भानुकीत्ति	(स०)	,
रसरहसमु च्चय	****	(स॰)	२४७	रोहिणीवतोद्यापन पूज	_	(स॰)	२०४
रसराज		(हि॰)	>⊏0	रोहिणीवतोषापन	केशवसेन	(स०)	¥€
रससार		(स。)	२४७				
रसिक्तिया	केशवदास	(हि॰)	२४१		ल		
रागमाला		(स० हि॰) १७३	लच्याचीवीसमेद	विद्याभूपग्	(हि०)	२६४
रांगमाला	साधुकीत्ति	(हि॰)	२७३	ल दमीस्तोत्र	पद्मनदि	(明 0) 1	६,२४२
रागरागिनी भेद	-	(हि०)	४३५	लह्मीस्नोत्र	पद्मप्रभदेव	(स॰)	005
राजनीति क्वित	देवीदास	(हि॰)	२२६	लदमस्तो त्र		(स०)२७	६, २८८
राजमती नो चिट्ठी		(हि॰)	२६१	त्तघुत्ते असमाय		(स०)	₹७₹
राजाचद की चौंपई		(हि॰)	24	त्तघुबावनी	मनोइर	(B .)	355
राजाचद की क्था	प० फूरो	(हि॰)	२⊏६	लघुस्नप न विधि		(हि॰)	₹⋨⊏
राज्जल का बारह मा	सा पदमराज	(वृहं)	? Y 0	लपुमगल	रूपचद	(हि०)	३१२
राज्जलबारहमासा	-	(हि॰)	१४६	लघुचा ण क्यनीति		(स॰)	२०२
राज्ञलपच्चांसी	_	(हि०)	د لا	ल घुसहस्रनाम		(स०) १२	२,१५७
राञ्चलपच्चीसी ला	लचद विनोदीलाल	(हि॰)	१३१				282
	१३२ १४६,	> {>, १६६	, २२७	लघु सामायिक पाठ		(स॰)	१∞६
रामकथा भाषा	-	(हि॰)	२६६	लन्धिविधान उद्यापन प	[al	(स०) २२	P = F,
रामस्तवन		(स॰)	३०२	लन्धिविधानपू ना		(हि०)	306
रामकृटंगकाव्य	प० सूर्यकवि	(स॰)	28⊏	लिधिविधानवतोद्यापन	-	(स॰)	≎ ० द
रामपुराण	भः मोमसेन	(स०)	२२३		१० ज्ञानसागर	(हि॰)	२६५
(पद्मपुराण)				लिघविधानवतकया	खुशालचद	(हि०)	२६७
रूपदीर पिंगल	जैकृष्ण	(हि०)	==	लिंधसारमाषा	प० टोडरमल	(हि०) ७	, २२

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं २	ग्रन्थ नाम	न्यक	भाषा	पन्न स
लियसार	श्रा॰ नेमिचन्द्र	(সা০)	21	गृच मा स	भट्ट केदार	(祝5)	२३३
लाटीमहिता	राजमल्ल	(40)	१⊏उ	इतोषीतनभादमाचा	र सभदेव	(संघ)	3 #
लावणी		(層)	₹ 50	वृत्तग्नानरदीका	नोमचन्द्र गणि	(As)	२३३
लिंगानु शायन	हेमचन्द्रावार्य	(40)	230 j	। वृन्द्रिनोदसतसर्द	बुन्द	(民)	* 1,1
लीलावती		(40)	2, হ ও	वृहरमतिनमग	September 1	(সা০)	şγ
नौलावती भाषा		(हि॰)	१७३	रहद्गांति विधान	-	1月4)	ţ,
			1	गृहदशान्ति स्तोष		(प्रा॰) (मं	oj žrš
	व			<u>बृहदभान्तिस्त्यन</u>	4	(Re)	हे १ ०
यहसर्गागीत	-	(हि०)	₹₹ <	पृहरभिद्ध चन पृजा		(Ao)	30=
बच्यसञ त्यसञ	वांवई जिनदेय सृरि	((((()	2 • હ	प्यमनगजन र्थन	टेकचड	1 Re)	₹5₹
वज्रदन्तचमनधी व	। मावना—	(段0)	\$23	बर्धास		((()	207
बग्रनामि नमप्री	यो मावना भूधरदाम	(Bo)	१ १४.११७	बाय गीला का मन	- disappoint	1 100 3	ž¥ε
			११२	वाईसप्रीपर्यनंन		(Ro)	₹०≇
बक्रपं ज्यस्तीय	-	। में ०)	२७४	वाईस प्रापद	भृथरदान	1 (80)	医类类
पिष्यिनिया	किं मुखदेन	(bg o)	* > \$	यासपटचा	महाकवि सुवधु	1801	= !=
बट्टमाछ परा	पं० जयमित्रहल	(ध्रपः)	७६	पंचक विचार		(B*)	275
(वर्ष्य मानय	त्य)			विमगनद्भराम	विनय ममुद्र	(P =)	२१₂
विद्यसिस्य	म्पचंद	(Bo)	\$ 5.3	विभर्गतीत्र	-	(Al*)	120
गगगगीव	पर्क मान भट्टारफ	(मंग)	40,21=	विचादऽ[त्रशिका	भवलचड् के शिष	स (मः)	- (7
वद् गानभीय	सक्दर्गीर्न	(no)	20,532		ग्रन्थम		
यदं मार्यस्टिटि		(Tin)	ët t	पिनपगढ निज्ञा	मूरि हपरीनि	1800	*: 1
पद्धं मार्गरे स्वारि			養養を				
	ग प॰ पेनरोनिंद्द					र श्रम् ८)	
	71			िद्धाः मृत्यस्टन			14.54
anghar dans	idge —	ites		डिएए क्टॉन्ट्रॅ रेस्			t *
बहु द्वाराम्भी ह	Mary search	13,0	<i>}</i>	िएतान वे गर्भ, तेव	एस सिंहिंगिक	18=1	
*#45 2 62,8		f Fre	: * \$\$ r	क्षेत्रका प्रकाशिक	कालामु दर	Buck	~ # ¥
इक्कर केंग्स कार	ण स्वाराहर	2 1	, 22 224	[[S # #]	عدما والمحالة	De :	124
	र मुस्ताम्		इ.स.ह	1			171
1 4 6 2 2 4 4 5 4	सम्मानी दीरावरास	i Pro	2 克勒亞	i stant	2 militage of	· Ex	127,145

~ " pu~

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र स०	प्रन्थ नाम लेखक	भाषा पत्र स०
विनती	किशनसिंह	(हि०) १०४	वैचलच्य वनारमीदास	(हि०) २=१
विनती	जगतराम	(हि०) १२६	वैनिवलास नागरीटास	(हि०) ३५०
विनतीसग्रह	देवात्रह्म	(हि०) १३२	वैराग्यवच्चीक्षी भगवतीदास	(हि० प०) ४३,
विनती	पूनो	(हि०) १३१		१३३, १७२
विनती	मनराम	(हि०) ३०६,३१७	हेराग्यशतक	(সা৽) ৫३
विनतीसमह		(हि॰) १०४,१३८	वैराग्यशतक भट्ट हरि	(सः) १४२
r	1	११७, २७३	वैराटपुराण प्रभु कवि	(हि०) २६३
विनतीसमह		(हि०) १४८,२८०	1	(हि॰) ३११
विमल्नायपूजा		(स॰) ६०		
विमर्लनाथपूजा		(हि०) ६०	श	
विमलनाथपूजा	रामचद	(हि०) २०६	शकस्तवन सिद्धसेन दिवाकर	(स॰) ३०१
विवेकचोपइ	त्रहागुलाल	(हि॰) ३०४	शतकत्रय भट्ट हरि	(स्०) २३६
विरहनी के गीत		(हि०) २७४	शन्दानुशासन वृत्ति हेमचन्द्राचार्य	(स०) २३३
विवेकजख ड ी	-	(हि०) ३७२	शब्द व धातु पाठसमह —	(स०) २६४
विष्णुसहस्रनाम		(स०) २७४	शब्दरूपावली —	(स०) ८७
विषापहार		(हि०) ३११	शत्रु जयमुखमड्ल श्रीद्यादिनाय स्त्वन	(स॰) ३१०
विषापहार टीका	नागचद्रसूरि	(कि) १४३	शत्रु जयमुखमडनस्तोत्र विजयतिलक	(गु॰) २४३
विषापहारस्तोत्र	धनजय	(स०) १०६,१०८	(युगादिदेव स्तवन)	
	१५७, १५=	, २४३, २७८, २८७	शतु जयोद्धार प० भानुमेर का शिष्य	(हि०) १२६
विषापहारस्तोत्र भाषा	श्रचलकी र्त्ति	(हि०) १०६,१२४	, नयंसुन्दर	t
		१ २६, १३१, २४३	शनिश्च (देव की क्या —	(हिं०) २६७,=५
विशेषसत्तात्रिभगी		(हि०) १८२	1	१३४, १३⊏
विहारीमतसई	विहारी	- 1	शनिश्चरस्तोत्र दशरथ महाराज	(মা৽) १४०
विनतीसमह	भूवरदाम	(हि०) ३११	शनिश्चरस्तोत्र —	(हि०) २७४
वोतरागाष्टक	-	(स०) ३१०	शान्तिकरणस्तोत्र —	(प्रा॰) २८८
वी रतपस च्भाय		(हि॰ गु॰) १०६	शान्तिचकपूजा —	(स॰) ६०, २०४
वीरस्तवन		(सं०) ३०६	, ,	(स०) २०७
बैतालपच्चीसी		(हि॰) २६४	शान्तिनायपुराण अशाग	(स॰) ६६
वैतालपच्चींसी		(हि०ग०) ⊏र	शान्तिनायपुराण सकुलुकीर्त्ति	(स०) ६६,१२४
वैधजीवन	लोलिम्बराज	(सः) २४७	शान्तिनाथनयमाल ऋजयराज	(हि०) १३०

यन्थ नाम	त्तेखक	भाषा	पत्र स०	यन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र स०
शान्तिपाठ		(स ·)	8 x 8	शुभाषितार्णव		(स०) १६३
शान्तिनाथस्तवन	केशव	(हि०)	२६१	श्रद्धाननिर्णय	********	(हि०) ३४
श न्तिनाथस्त्वन		(हि॰)	२६२	श्रावकाचार	स्त्रमितगति	(सं०) ३६
	रुभद्र (गुणभद्र)	(स॰)	११७	श्रावकाचार	गुगाभूपगाचार्य	(स॰) ३६
_	कुशलवर्धनशिष्य	(हि०)	२४३	श्रावकाचार	पद्मनंदि	(स०) ३३
	नगागिए			श्रावकाचार	. <u>पू</u> ज्यपाद	(स०) ३४
शान्तिनायस्तोत्र	मालदेवाचार्य	(सं०)	३१२	श्रावकाचार	योगीन्द्रदेव	(घ्रप०) १⊏६
शान्तिस्तवन		(स॰)	३१०	श्रावक्।चार	वसुनदि	(स०) ३५
शान्तिस्तवनस्तोभ		(हि॰)	७०९	श्रावकाचार	***************************************	(সা০) ३২
शालिमद्रचौपई	जिनराजसूरि	(हि॰)	७=,२=६	श्रावकाचार	1	(स॰) ३४
शालिमद्रचौपई	-	(हि०)	२७२	श्रावंकांचार		(हि०) १ ८८
शालिमद्रसर्नभाय	मुनि लावनस्वामी	('हि॰)	१७४	श्रावकाचारदोहा	लदमीचद्	(प्रा०) ११०
शालिहोत्र	प० नंकुल	(स० हि	७) २६६	श्रावकों के १७	नियम —	(हि•) ४
शास्त्रपूजा	द्यानतराय -	(हि०)	Ęο	श्रावकियावर्णन		(हि०) ३४
शास्त्रमस्लपूजा	ज्ञानभूपंग	(स०)	२०४	श्रावकधर्भवचनिः	हा '	(हि०) हुरू
शिखरविलास	मनसुखरोम	(हि०)	9==	श्रावकदिन ऋत्यवर	[न — ं	(हि०) ३४
शिखरविलास		(to)	१२६	श्रावक प्रतिकमण	सूत्र —	(प्रा०) ३४,२६४
शिवपच्चीसी	वन⊦रसीदास	(हि॰)	3=4,7=8	श्रावकनी सङ्भाग	। जिनहर्ष	(हि०) २४३
शिवरमखी का वि	वाह श्रजयराज	(हि०)	१६३ ′	आवक्धर्मवर्णन		(हि०) १७३
शिशुपालवध	महाकवि माघ	(स。)	≥ 9 €	श्रावकसूत्र		(प्रा॰) २६०
शिप्यदीचाबीसा प	गठ —	(हि०)	२	श्रावणद्वादशी क	था त्र० ज्ञानसागर	(हि०प०) २६४
शीघवोध	काशीनाथ	(40)	२४८	श्रीपालचरित्र	कवि दामोद्र	/ mm .
शीलगीत	भैरवदास			श्रीपालचरित्र	दौलतराम	(अप०) ७५ (हि०) ७५
शीतंलनाथस्तवन	धनराज के शिष्य	(हि०)	ર્∹= દ	श्रीपालचि(त्र	व्र ं नेमिद्त्त	(स०) ७८।१११६
	हर खंचदं			श्रीपालचरित्र	परिमल्ल	(हिं०) १७६, २१४
शीलकथा	भारामल्ल	(हि॰)	⊏४,२=७	श्रीपालचरित्र		(हिं० ग०ः)। एहं
शीलतरगिनीकथा	ऋखैराम लुहाहिया			श्रीपालदर्शन		(हि) 11 E V3
शोलरास	विजयदेवसूरि		1	श्रीप लरास 🕦	वर् रायमल्ल	
शुकराज कथा	माणिक्यसुन्दर	'(स०)	२२६	16 6	२७२, २८१,	₹==, ₹0%, ₹00 /
(शत्रुं जयंगि	ारं स्तवन)			श्रींपाल की स्तुंति		(हि॰) १२३(१३१) २८८, ३०४, ३०७ (हि॰) १२८(१०)
			•)	, ,

थ्रन्थ नाम	लेखक	भाग	पत्र स०	यन्थ नाम	तेखक	भापा	पत्र स०
श्रीपालस्तोत्र		(f(°)	१ ४३	षट्मसि.पाठ		(स॰)	१३४
श्री श्रजितशान्तिस्तोः	7	(গা ০)	१४०	षट्माखवर्णन	श्रुतसागर	(हि॰)	• ∀ ₹
श्री जिनकुशलसूरिस्तु	ति उपाध्याय जयम	ागर (हि	0) १४०	पष्टिशत भग	_		₹90
श्री जिननमस्कार	यशोनंटि	(हि०)	१६७	षोडशकारणजयमाल		(हि०)	ξø
थी जिनस्तुति व	o तेजपाल [']	(हि०)	१६७	षोडशकारगाजयमाल	रइधू	(য়ঀ৽)	Ęγ
श्रुतज्ञानवर्णन		(हि॰)	8	षोडशकार ण जयमाल		`(स॰)	દ ⊁
श्रुतह्मानवतोद्यापन		(स०)	२०४	षोडशका(गपुजा		(स॰) ६	
श्रुतहानपूजा		(सर्)	२०७	षोडशकारण पृजा उद्या	पन केशवसेन	् (सं०) २	•
श्रुतोद्यापन		(हि॰ [°])	Ę۰				ο=, ξ•
श्रुतबोध र	मा लिदा स	(स॰)	= १,२३३	षोडशकारगानतोदापनपृ	ज़ा व्र॰ ज्ञानसार		•
श्रुतस्कथकथा व्र	ज्ञानसागर	(हि॰)	२६५	षोडशकारणमावना वर्ण		(हि०) ३	
अधिकचरित्र गुर	ाचन्द्र सूरि	(हि०)	२६३	षोडशकार स प० सद	ासुख कासलीवात	त (हि॰)	₹ ⊏⊏
भ्रे णिकचरित्र उ	ायमित्र ह ल	(ঋ্বব)	, ७१	सावना			
	विजयकीत्ति	(हि०)	હદ	षोडशकारणवत कथा	खुशालचद	(हि॰)	२६७
	शुभचन्द्र ,	(स०)	२१६	षोडशकारणवत कथा	व्र ज्ञानसागर	(हि॰)	२६४
70 0 1	7						
श्रीणिकचरित्र की कर	11 —	(हि०)	१२७				-
श्रीयकचारत्र का कर श्रु गारपण्चीसी	ग — छविनाथ	(हि॰) (हि॰)			स		•
				सकलीकर् ण विधान	स —	(स॰) २	==, ₹६७
शृ गारप [€] चीसी	छविनाथ कालिटास	(हि०)	२५१	सकलीक्र्य विधान सुगुरुसीख	स — मनोहर	(स ०) २ (हि०)	==,२६७ १६४
शृ गारप [€] चीसी	छविनाथ कालिटास ष	(हि०)	२५१				
शृ गारप [€] चीसी	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं	(हि०) (स०) (ख्र प ०)	२५१ २५१ १८८,७८	स्राचसीख		(हि०)	१६४
श्र गारप ^{च्} चीसी श्र गारतिलक	छविनाथ कालिटास ष	(हि०) (स०) (ख्र प ०)	२५१ २५१ १८८,७८	स्गुरसीख सञ्जनचित्तवल्लम	— मनोहर —	(हि॰) (स ॰)	१६४ १४६
शृ गारपच्चीसी शृ गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कारिक पाठ	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्त्ति	(हि०) (स०) (श्रप०) (स०) (हि०)	२ ५ १ २ ५ १ १ द द , ७ द १ द द ,	स्रगुरसीख सञ्जनचित्तवल्लम सञ्भाय	— मनोहर —	(हि॰) (स॰) (हि॰)	१६४ १४६ १७४
श्र गारपच्चीसी श्र गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कारिक पाठ वट्क्रिंशिका	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्त्ति — महावीराचार्य	(हि०) (स०) (श्रप०) (स०) (हि०) (स०)	२५१ २५१ १८८,७८ १८८ २ २	स्युरुसीख सञ्जनचित्तवल्लम सञ्भाय सञ्भाय सञ्भाय सत्तरिसय स्त्रोत्र	— मनोहर —	(हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰)	१६४ १४६ १७४ २६१
श्र गारपच्चीसी श्र गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कारिक पाठ वट्त्रिंशिका वट्दर्शन समुच्चय	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्त्ति	(हि०) (स०) (श्रप०) (स०) (हि०) (स०)	२ ४ १ २ ४ १ १ = = , ७ = = १ = = २ ४ = १ = ६	स्युरुसीख सञ्जनचित्तवल्लम सञ्भाय सञ्भाय सज्देशस्य स्त्रोत्र सत्तयुरु महिमा	मनोहर — विजयभद्र —	(हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰)	१६ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
शृ गारपण्वीसी शृ गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मिक पाठ वट्किशिका वट्दर्शन समुच्चय वट्दर्यनर्चा	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्त्ति — महावीराचार्य	(हि०) (स०) (श्रप०) (स०) (स०) (स०) (हि०)	2 x 8 2 x 8 2 x 9 x x 9 x x 8 x 8 x 8 x 8 x 8 x 8 x 8	स्युरुसीख सञ्जनचित्तवल्लम सञ्भाय सञ्भाय सञ्भाय सत्तरिसय स्त्रोत्र	मनोहर — विजयभद्र — — चरनदास	(हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (हि॰)	१६ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
श्र गारपच्चीसी श्र गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कारिक पाठ वट्त्रिंशिका वट्दर्शन समुच्चय	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्त्ति — महावीराचार्य हरिभद्रसूरि —	(हि॰) (स॰) (श्वप॰) (स॰) (स॰) (स॰) (हि॰)	२ ५ १ २ ५ १ १ ८ ८ १ ६ ६ १ २ ५ २ २ १ ३ ८ २ २ १ ३ ८	स्यरसीख सङ्जनचित्तवल्लम सङ्भाय सङ्भाय सत्तरिसय स्त्रोत्र सतग्रद महिमा सद्भाषितावली	मनोहर — विजयभद्र — — चरनदास	(हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (हि॰)	१६ १ १५ ६ १७४ २६१ ३१० २६६) २६६
शृ गारपण्वीसी शृ गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मिक पाठ वट्किशिका वट्दर्शन समुच्चय वट्दर्यनर्चा	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्त्ति — महावीराचार्य	(हि॰) (स॰) (श्रप॰) (हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰)	२ ५ १ २ ५ १ १ ८ ८ ५ १ २ ३ ६ १ २ ३ ६ १ ३ ३ ६ १ ३ ३ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	स्युरुसीख सङ्जनचित्तवल्लम सङ्भाय सङ्भाय सङ्भाय सत्तिय स्त्रोत्र सत्युर महिमा सद्भावितावली	मनोहर — विजयभद्र — चरनदास पन्नालाल	(हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (स॰) (हि॰)	१६ १ १५ १ १७ ४ १६ १ १६ १ १६ १ १६ १ १६ १
शृ गारपण्वीसी शृ गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मिक पाठ वट्किशिका वट्दर्शन समुण्चय वट्दर्शन समुण्चय वट्दर्शन समुण्चय	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्ति — महावीराचार्य हरिभद्रसूरि — कुन्टकुन्दाचार्य	(हि॰) (स॰) (श्रप॰) (हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) १३२, १	२ ४ १ २ ४ १ १ = -, ७ = - २ = - २ ६ ४ = - २ २ ३ , १ ७ ४ १ ३ , १ ७ ४	सुगुरुसीख सञ्जनचित्तवल्लम सञ्भाय सञ्भाय सञ्भाय सत्तरिसय स्त्रीत्र सतग्रर महिमा सद्भाषितावली सद्भाषितावली	मनोहर — विजयभद्र — चरनदास पन्नालाल	(हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰ ग॰	* E * C E E O L E E E O L E E E E O L E E E E O L E E E O L E E E O L E E E E
श्र गारपच्चीसी श्र गारतिलक वटकर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मोपदेशमाला वट्कर्मिक पाठ वट्किंशिका वट्दर्शन समुच्चय वट्द्व्यचर्चा वट्द्व्यवर्णन	छविनाथ कालिटास प श्रमरकीत्तिं भ० सकलकीर्ति — महावीराचार्य हरिभद्रसूरि — कुन्टकुन्दाचार्य भूधरदास	(हि॰) (स॰) (श्रप॰) (हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰)	२ ४ १ २ ४ १ १ ८ ८, ७ ८ ८ २ २ ६ ६ ४ २ २ १ ३ ६ ४ ३ १ १ ४ ४ १ १ १ ४	स्युरुसीख सङ्जनचित्तवल्लम सङ्भाय सङ्भाय सङ्भाय सत्तिय स्त्रोत्र सत्युर महिमा सद्भावितावली	मनोहर — विजयभद्र — चरनदास पन्नालाल	(हि॰) (स॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰) (हि॰ ग॰ (हि॰)	*

मखेश्वर पार्श्वनाथस्तुति रामिवजय (हि॰) १४० सम्मेदशिखरमहात्म्य दीचित देवदत्त (स॰) ३६, सखेश्वर पार्श्वनाथस्तवन — (हि॰) १४० सम्मेदशिखरमहात्म्य मनसुख सागर (हि॰) मंथारा विधि — (स॰) ३१२ सम्यग्यकाश डाल्र्राम (हि॰) पन्मतितर्क निद्धसेन दिवाकर (स॰) १६६ सम्यग्दर्शन के श्राठ श्रंगों की कथा— (स॰) सस्हतमजरी — (स॰) ३०० सम्यक्तकीमुदी मुनि धर्मकीर्त्ति (स॰)	
मंगारा विधि — (स॰) ३१२ सम्याप्रकाश डाल् राम (हि॰) पन्मतितर्क गिद्धसेन दिवाकर (स॰) १६६ सम्यादर्शन के श्राठ श्रंगों की कथा— (स॰)	₹ ६ □ ६ □ ६ २ २ ४
पन्मितितर्क सिद्धसेन दिवाकर (स०) १६६ सम्यग्दर्शन के आठ अंगों की कथा— (स०)	= ६ = ६ = ६ २२ ४
पन्मितिक गिद्धसेन दिवाकर (स०) १६६ सम्यग्दर्शन के श्राठ श्रंगों की कथा— (स०)	= ६ = ६ २२ ५
	= ह २२ ५
	२२५
यप्तपदार्था श्री भावविद्ये श्वर (स०) ८८ सम्यक्तवकीमुदी कथा जोधराज गोदिका (हि० प०)	
सप्तऋषिपूजा — (स०)१६६,२०७	<u> </u>
मप्तपरमस्यान कथा खुशालचंद (हि०) २६७ सम्यक्तकोमुदो कथा — (हि०)	43
मप्तपरमस्थान पूजा — (स०) २०४ सम्यक्त के श्राठ श्र गों — (हि०)	१०८
म'तपः संस्थान विधान कथा श्रुतसागर (स॰) ८६ का कथा सहित वर्णन	
सप्तव्यसन कथा आ० सोमकीर्त्त (स०) = ६,१२६ सम्यक्चतुर्दशी — (हि०)	3
सन्तन्यसन कवित्त — (हि॰) १४४ सम्यक्तवपच्चीसी भगवतीदास (हि॰)३६,	१७२
	३१०
	१५२
when the state of	१६४
महोषा वर्षिका विश्वनाच्या (वि.) ११४	, o =
सबोधपचासिका द्यानतराय (हि०) ३७, ११६ (वृहद् स्त्रयपू स्तोत्र)	
१२३, २७३, ३११ । सम्बस्यकल्या स्रमतचन्द्राचार्य (२०) ४३	7.38
समाधपचासिका द्वसन (प्रा०) ११८	२५६
सबोधपचासिका चिहारीदास (हि०) १५३ समयसारगाथा कुन्दकुन्दाचार्य (प्रा०) १	₹२,
मबोधपचासिका (प्रा०) १३६ १६४,	•
सबोधपचासिका — (हि०) ३०० समयसारटीका स्त्रमृतचन्दाचार्य (स०)	४३
मबोधपचासिका टीका (प्रा० मं०) १८६ समयसारनाटक बनारसीदास (हि०) ४४,	, 43
सबोधपचासिका र डधू (श्रप०) ३६ ११४, ११८, १२८, १२०,	१४⊏
सबीधसत्तरी सार — (स०) ३७	३०ऽ
मम्मेदशिखरपूजा जवाहरत्नाल (हि०) २०७ समयसारमाषा राजमल्ल (हि०)४,	124
ममोदशिलरपूजा नदराम (हि०) २०७ समयसारमाषा जयचद छात्रङा (हि०)	14
सम्मेदशिखरपूजा रामचट (हि॰) ६३ समयसारवचनिका — (हि॰)	१६३
सम्मेदशिखरप्रज्ञ (हि॰) ६३, ११६ समवशरणपूजा पन्नालाल (हि॰)	इं ०७
सम्बेदिशिषरपूजा — (स०) २०७ ममवशरणपूजा लालचढ विनोदीलाल (हि०)	? 1 &

यन्थ नाम	लेखक	भाषा	गत्र स०	यन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
समवश्रखप्जा	ललितकीत्ति	(स॰)	२०७	सर्वेया	वनारसीदास	(हि॰)	
ममवशरणस्तो त्र		(स०)	-४४,२६६	सहसग्रणितपूजा	भः शुभचद		६२,२०≈
समाधितत्र मापा	पत्रेत धमार्थी	(गु०)४	४, १६४	सहस्रयणपूना	भ० धर्मकीर्त्ति	(स० <i>)</i>	•
ममाधितत्र मापा		(हि॰) ४	(४,२६२	सहस्रनामपुजा	धर्मभूपण	(ग-)	
		३ ६	३, २⊏५	सहस्रनामपुजा	चैनसुख	(हि०)	205
समाधिगरण माया	-	(हि०) ४	४, ४ ६,	महस्रनामस्तो त्र			∃⊏, १७ २
			१ ६५	सहेलीगीत	मुन्दर	(हि॰)	> 2 >
समाधिमर ए	_	(গা০)	१ ४⊏	सहेलीसबोधन	~_	(हि॰)	
ममाधिमर ग	चानतराय	(हि॰)	१६२	सागारधर्मा रुत	प० श्राशावर	(स॰)	:0,160
समस्तकर्म सन्यास म	ावना 	(40)	२१७	साखी	कत्रीरदाम	(हि०):	२६७,३०४
समाधिशतक	ममतभद्राचा र्य	(स॰)	8 ‡	साठि सवत्सरी		(हि०)	२६६
ममाधिशत ^{ङ्}	पूज्यपाट	(सं॰)	११०	सात प्रकार वनस्य	ति उत्पत्ति पाट	(हि °)	ર
ममुच्चय चौबीसा पृ		(हि॰)	११६	सातव्यसनसङ्भाय	च्रेम कुश त	(हि०)	₹ड१
ममुच्वय चौबीमी तं	र्गिक्र श्रजयराज	(हि०)	११७	साधर्मी माई राया	मन्स रायमन्त	(हि०)	108
पूजा			i	की चिट्टी			
ममुच्चय चौबीस ती	र्धकर जयमाल	(हि॰)	2 ¥ F	साधुवदना		(हि०)	>05
ममोसरणवर्णन		(हि०)	8			(हि०)	150
सयमप्रवहण	मुनि मेघराज	(हि० प०) १ =६	४६ दोषों क	ा वर्णन		
म रस्वतीस्तो त्र	विरचि	(स॰)	१०७	साधु वदना	बनारसीदाम	(हिंद) १	३६,१६१
मर् स्वतीजयमाल		(स॰)	२७७			३०४, ३०६	
मरस्वतीपूजा		(OB)	1 X E	सामायिकगढ		(स०) १	-
म(स्वतीपूजा		(हि०)	દ ર			२==, ३००	-
मरस्वतीपुजा भाषा	पन्नालाल	(हि॰)	६१	सामायिकपाठ	~~~	(हि॰) (६०)	
सर्वेड्यर समुच्चय द	र्षण —	(स०)	•४७	सामायिकपाठभाषा			१०=
मर्वसुख के पुत्र स्रम पुत्री (चांदवा	पचदकी) ई)की जन्मपत्री)	(हि०)	न३६	साम।यिकपाठभाषा	जयचद छात्रडा	(हि० ग०	3 0 8
सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाट	(स॰)	२२	सामाथिकटीका		(ৰ্ণ সা	
मर्वा धि प्टायकस्तोत्र		(সা০)	१४०	सामायिकमहात्म्य		(हि॰)	३७
मर्वाधिष्टायक्रम्तोत्र		(हि॰)	308	सामायिक्षिधि		(सं०)	3 \$ 2
मवेया	केशवदास	(ko)	18X 1	सामुदिक श्लोक		(स०))

प्रनथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
सारमनोरथमाला	साह श्रचल	(हि०))) to
सारसमुच्चय	कुलभद्र	(स॰)	३७
सारसमुच्च य	दौलतराम	(हि०)	३⊏ ॄ
सारस्त्रत धातुपाठ	हर्षकीर्त्ति	(4,0)	२३१
सारस्वत प्रकिया	नरेन्द्र सूरि	(स॰)	२३१
सारस्वत प्रकिया ऋ	नुभूति स्वरूपाचार्य	(स॰)	८७,२३३
सारस्वत प्रक्रिया टीक	ा परमहस	(स०)	२३१
1	परित्राजकाचार्य		
सारस्वत रुपमाला	पद्मसुन्दर	(40)	२३१
सारस्वत यत्र पूजा		(祖 o)	३०⊏
सास वहू का भागडा	Phone	(हि०)	१७२
सास वह का भंगडा	देवा ब्रह्म	(हि॰)	= १७
माद्ध द्वयद्वीपपूजा	विश्व भूषण	(स॰)	२०=
सिद्ध सेत्र पूजा	-	(हि॰)	२०=
सिद्धचककथा	नरसेन देव	(শ্বप॰)	3 છ
सिद्धचनपूरा	नथमल विलाला	(हि०)	2 o =
(श्रष्टाहिका प्र	ñ T)		
सिद्धचकपूजा	द्यानत राय	(हि०)	६२
मिद्ध चक्रवतक्षा	नथमल	(हि०)	≂ ξ
मिद्धचक स् तवन	जिनहर्ष	(हि०)	१४७
मिद्ध प्रियस्तोत्र	देवनदि	(सं०)	१०६,१४१
		> 4	18,286
सिद्धप्रियस्तोत्र दीना	-	(हि०)	१६४
सिद्ध प्रियस्तोत्र		(明)	२⊏७
सिद्धपूजा	पद्मनदि	(40)	२०८
सिद्धपूजा		(हि॰)	२८६
सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(स॰)	२२१
(ऋदन्त प्रकार	•		
सिद्धान्तचदिका वृत्ति	सदानद	(स०)	-31
सिद्धस्तुति	श्रजयराज	(हि॰)	१३० '

यन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
सिद्धान्तसारदीपक	भ० सकलकीर्त्ति	(स॰) २	१२,१=२
सिद्धान्तसार दीपक	नथमल विलाला	(हि०)	૨ ર
सिद्धान्तसार समह	श्रा० नरेन्द्रकीर्त्ति	ां (सं०)	•⊏२
सिद्धो की जयमाल		(हि०)	3 o R
सिद्धाप्टक		(हि॰)	१४७
सिंहासन द्वात्रिशिका	*******	(日 0)	ર • દ
सिंहामन वत्तीसी	••••	(हि०)	5 3 5
सिन्दूर प्रकरण	चनारसीदा स	(हि०) ४	,११४,
	११४, ११=	, १३३, = ३	१६, २ ⊏२
सीख गुरुजनी की	-	(हि०)	१५८
सीता चरित्र	गमचन्द्र 'बालक'	(हि० प०) ve,
		8 8.	४, २५१
सीता की धमाल	लच्मीचद	(हि•)	150
सीता स्व्यबरलीला	तुलसीदास	(हि०)	२७⊏
सीमधरःतत्रन	Margaria.	(हि०)	१८७
सीमधर स्तवन उपा	ध्याय भगत लाभ		180
सीमधरस्वामी जिन	स्तुति —	(हि०)	२६०
सीमधरस्तवन	गिंग लालचट	(हि०)	२६ं०
सीमंधर स्वामी स्तव	т —	(। ।	306
सुकुमाल चरित्र माप	। नाथूलाल दोसी	(हि० ग०) २१६
सुकुमाल चरित्र	भ ? सकलकीत्त	(स०)	२१६
सुगुरुशतक	जिनदाम गोधा	(हिं०) ३	i=, १ ६२
सुगन्धदशमीपूजा	**************************************	(हि०)	ર્દ ર
सुगन्धदशमी व्रत कर	म नयनानद	(श्रप०)	= Ę
सुगन्धदशमी व्रतोद्या	पन	(स०)	२ ० ⁱ ऱ
सुगन्धदशभी व्रतक्थ	। त्र० ज्ञानसागर	(हिं०)	२६४
सुगन्धदशमी पूजा व	_	(46)	२६६
	भ० सकलकीर्त्ति	(祝。)	@ £
सुदर्शन चरित्र	विद्यानंदि	(स∘)	૩ ૬
सुदर्शन जयमाल		(प्रा॰)	, 5 4

प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा प	त्र सः ,	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स॰
सुदर्शनरास	त्रह्य रायमुल्ल	(हि०) ११	१,११३	सोलहघडी जिनधर्म	पूजा की	(हि०)	१६४
•	•	٠३٠,	१ ३२	सोलह सतीस्तवन		(हि॰)	१४१
सुर्धितरगिणा	टेकचढ	(हि॰)	१६०	सोलहरवप्न	भगवतीदास	(हि॰)	925
मुदामा चरित्र	-	(हि॰)	356	(स्वप्न मत्तीर	र्स)		
सुप्पय दोहां	and the same of th	(সা০)	र१र	सोमट बध	कवीरदास	(हि॰)	२६७
मुत्राहुरिषिसधि	माणिक सूरि	(हि॰)	,8=	सोल्यकाख्य	श्रन्यराम	(स०)	३०६
सुबुद्धि प्रकाश	थानसिंह	(हि॰ प०)	દ્ય	व्रतीयापन वि	धि	ξ:	, २०५
ग्रमा पित		(हि०प०)	33	स्तमनपार्श्वनायगी	न महिमा सागर	(हि॰)	२७३
सुमाषितरवाविल	भ० सयलकीनि	(म०) ६६	, ३३७	स्तवन		(हि॰)	२६•
सुमावितस्वयन्दोह	श्रमितर्गात	(स॰)	२३६	स्तवन	-	(हि॰)	२४⊏
सुभाषितसमह		(स॰)	३३६	स्तवन	जिनकुशल स्रि	(हि॰)	g o o
मुमापितार्गा व		(म०)	33	स्तुति		(हि॰)	₹ ₹ •
सुमापितार्णव	शुभचद्र	। स॰)	ى ۋ د	स्तुति	चानतराय	(हि॰)	१३४
सुमःवितावलि मा-	1	(हि॰)	3.3	स्नुतिसमर	चद कवि	(हि•)	२४४
ममद्रामतामञ्काय		(हि०)	२६०	स्तोत्रटीका	श्राशाधर	(40)	283
गूतकवर्णन	_	। स०) १४	6,980	स्तोत्रविधि	जिनेश्वर मृरि	(हि॰)	२०३
स्तफसेट		(हि॰)	र३१	स्तोत्रसमह		(円の) く	0 9, 9 3 2
एकि मुक्तावलि	मोमप्रभ सरि	(स०) १०	0,2.4			186, -86	, २ ऽ६
स्सि समह		(40)	100	स्नपन प्जा	-	(हि॰)	126
त्त्रवाहुड भाषा	जयचढ छायहा	(so)	4 × X	स्नान विधि	_	০ ৮ ০ (৪)) २, ,
सीलहकारण		(हि <i>०)</i>	∍ ⊏ξ	स्पृद्ध पड		(हि॰)	१३३
सोलहकारण जयमा	<i></i>	(अप•)	२०६	स्याद्वादमजरा	मल्लिपेग	(म ०) ४	
मोलहकारण जयम	ाल —	(श्र•)	इष्ट	स्वयम्स्तीव	ममतभद्राचार्य	(स०) ५=	
मोलहकारण पूजा		(हि० <i>)</i>	٤ -	 			, १3°
मोलहकारण प्जा	टेकचढ	· (go)	ទ ៦	स्वर्ग नर्क चीर मीर	उथा वर्णन	(दि॰)	, , E
मीलहकारण प्रजा	यानतरा य	(Re)	٠,5	स्वामी पार्तिकैयानु	स्वामी फातिकेय	(গা০)	٤;
मं(लह्बारण मावन	· -	(हि <i>'</i>)	' ঽ	प्रना			
मीनह कारण मार		(हि०)	, 45		जयचद छात्रहा	i Reg	c*
सालहकारण विश		। সাও।	į ž	त्रेद्या मापा			
सोलहराएम पाय		(सं/)	2> .	1			

(३४६)

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा न	२ स०	त्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पः	त्र सं 🌣
	ह		}	हरिवशापुराण	महाकवि स्वयभू	(শ্বব্ ০),	y E
รสมสะพา (ชีโบ	६) त्र े रायमल्ल	(हि०) व	:৬. १३२	हदयालोकलोचन	-	(स०)	२४२
6340101 (111	t vie (tautei	१६१, २२१		हितोपदेशएकोत्तरी	श्री रत्नंहर्प के शिष्ट श्रीसार	प्र (हि॰)	\$50
हनुमच्चरित्र	ন্ন০ স্মজিत	(स०)	२२१	हितोपदेश की कय		(हि.)	ووت
हसमुक्तावलि	कवीरदास	(हि०)	२६७	हितोपदेशवचीसी	वालचट	(हि०)	100.
हमामावना	त्र० श्रजित	(हि०)	४१७	हितोपदेशमाषा	Department	(हि० ग०)	235
दरिवश पुराय	खुशालचढ	(हि०)	€ 9	हुक्कानिषेध	भूधरमल्ल	(हि०)	१२६
हरिवश पुराण	त्र० जिनदास	(स॰)	२२४	हेमव्याकरण	हेमचद्राचार्य	(स॰)	२३,
हरिवश पुराग	जिनसेनाचा र्य	(40)	€ €	होमत्रिधान	त्राशाधर	(स॰)	و ٥ ډ
हरिवश पुरा गा	दौलतराम	(हि० ग०) ६ ७,	होलिकाचरित्र	छीतर ठोलिया	(हि॰)	5 0
			२२४	होली रेखकाचरित्र	जिनदास	(स०) = व	,,२२३
हरिवशपुराण	महाकवि धवल	(প্রব ০)	१७४	होलीवर्णन		(हि०)	२८७.
हरिवशपुराण	यश कीत्ति	(स०)	२२४			,	•



🛨 यन्थ पशस्तियों की सूची 🛨

क्रम संख्या	ग्र थ नाम	कर्त्ता	रचना काल	प्रथ सची का कमाक
۶.	श्रध्यात्मसर्वेया	रूपचद		६२८
5	श्रागमसार	मुनि देवचन्द्र	स० ५७७६	8
3	श्रादिनाथ के पचमगल	श्रमरपाल		ፍ ሂቼ
8	त्र्यादिनाथस्तवन	त्र॰ जिनदास	-	አ ሄጽ
¥	श्राराधनास्तवन व	ाचक विनयविजय	स० १७२६	६२१
६	इश्कचमन	नागरीदास		४७०
ড	उपदेशसिद्धातरत्नमाना भापा	-	स० १५७२	१४२
\$	उपासकदशासृत्रविवरगा	श्रभयदेव सूरि		१४४
.3	ऊषा कथा	रामदास		384
१०	ण्क सौ गुगाहत्तर जीव पाठ	लच्मगादास	स० १प२४	¥
११	करुगाभरन नाटक	लच्छीराम		५ २६
१२	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य		११
१३	कर्मस्वरूपवर्णन			ा
88	कविकुलकंठाभरण	दूलह		४७१
ŞУ	कामन्दकीयनीतिसार भाषा	कामव		३७ ६
१६	काल श्रीर श्रतर का स्वरूप		Section 201	१=
१७	गणभेद	रघुनाथ साह		પ્ર ૦૭
٤Ę	गुगाचर माला	्मनराम	- Annual Parks	६३२
38	गोमदृसारकर्मकांड भाषा	प० हेमराज		ફહ
२०	गीतमप्रच्छा		••••	788
२ १	चदराजा की चौपई		सं० १६:३	ω ξ ૨
হ্হ	चन्द्रहसकथा	टीकम	स० १७०८	१६२ १८
23	चारित्रसारपजिका		,,,,,,,,	ξ 3 /

क्रम संख्या	त्रन्थ नाम	कत्ती	रचना काल	अंथ सची का क्रमोंक
२४	चारित्रसारभापा	मन्नालाल	स० १८७१	१६२
ર્	चौबीसठाणाचौपई	साह लोहट	सं० १७३६	=६ १
5 Ę	चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	नंदानद		४८३
३ ७	छवितरंग	महाराजा रामसिह		≯ ξω
२म	छंदरत्नावली	इरिराम	स० १७०८	ሂ⊏२
३,६	जइतपद् वेलि	कनकसोम	स० १६२४	६०३
३०	जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम		<i>२</i> ४७
३१	जानकीजन्मलीला	वालवृन्द		५ ६६
३ २	जिनपालित मुनि स्वाध्या	य विमलहर्प वाचक	Sec.	ጟሃ
३३	जैनमात्त्र एड पुराए	भ० महेन्द्र भूपण	_	848
३४	ज्ञानसार	रघुनाथ	****	৩ ০৩
३४	तत्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र		१६
३६	तत्वार्थबोध भाषा	बुधजन	स० १८७६	E §
३७	तत्वार्थसूत्र भापाटीका	कनककीत्ति		चर, हर
३८	तमाखू की जयमाल	श्राणद्मुनि		प०प
38	त्रिलोकसारवधचौपई	सुमतिकीर्त्ति	स० १६२७	૭૧૬, પ્રદેશ
४०	त्रिलोकसारभाषा	उत्तमचन्द	स० १८४१	メ を出
४१.	द्शलच्राव्रतकथा	व्र॰ ज्ञानसागर		288
યુ ર	दस्तूरमालिका	वशीधर	स० १७६४	न ६४
४३	द्रव्यसंब्रह्भाषा	बंशीधर		१२४
88	श्री धू चरित्त			30%
8ħ	नववाडसज्माय	जिनहर्ष		प ्प
કદ	न्यायदीपिकाभाषा	पन्नालाल	स० १६३४	३१२
૪ ૭.	नागद्मनकथा			
8=	नित्यविद्यार (राधामाधो) रघुनाथ साह		২০৩
38	नेमिजी का च्याहलो	,लालचन्द		६२५
	(नवमगल)			V
X٥	नेमिव्याह्लो	हीरा	स० १८४८	ዲ ሂሄ
५१	नेमिनाथचरित्र	श्रजयराज	स० १७६३	3c3

		(३५२)		
		कत्त्ती	रचना काल	ग्रथ मृची का क्रमाक
क्रम संख्या	प्रथ नाम		म० १४६०	४८४
	ात्तीसी -	हेमविमल सूरि	स० १७४४	४७२
४३ नंदर	तमपच्चीमी	नदराम		२६म
५४ पर	गत्मपुराण	द्रीपचन्द	मः १७६३	હેર્
y थ्. पाव	शास्त्र	श्रजयराज पाटनी	-	ಇ ಂ೬
	वेनाथ स्तुति	भावकुरल		ሂሂራ
५७ पुर	दरचौपई	त्र० मालदेव	77. 9.e.E.F	४६७
	यसारकथा	पुएयकीर्त्ति	स० १७६६	५६७
	वाख्यान (पचतत्र)	कवि निरमलदाम		१३२
	वास्तिकायभाषा	बुधजन '	स० १८६२	ሂ⊏ዬ
	बोधचन्द्रोदय	मल्ल कवि	म० १६०१	, 82K
` '	तिष्ठा सार सन्नह	वसुनिं		४६७
	ह्यु म्नचरित्र	सधारु	म० १४११	५८७
	ासगसार ।सगसार	रवुनाथ		58 4
	गरह खडी	श्रीदत्तलाल		ದ ಂದ
	_{बुधरासा}			७३१
·	असामरस्तोत्रभाषा अक्तामरस्तोत्रभाषा	गगाराम पाडे		४२६
	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सरि	स० १६६७	પૂ <i>ષ</i> દ
8 4	भक्तिभावती (भक्ति			२६६ २६६
६६	भ द्रवाहुचरित्रभाषा	चपाराम	मः १८००	४२५ ४२७
9 9.	भद्रवाहुचरित्र भद्रवाहुचरित्र	किशनसिंह	स० १७=३	¥80
ي ۶.	मद्रवाहु पारम मद्नपराजय भाषा	स्वरूपचढ बिलाला	म॰ १६१५	*70.8
હર.	मधुमालतीकथा			४१ ५
७३		लालदास		X2X
હ્યુ.	महाभारत ———	नददास		३ १६
ઝ	मानमजरी मितभाषिखी टीका	शिवादित्य		२ ११ २ ११
ও ξ	मृताचारभापाटीका	ऋषभटास	स० १८६६	७२६
60			_	#69
৩ ল	मृगीसवा <u>द</u>	ह र्षेकीत्ति		५ १४
30	मोडा च्यानिय	परिहानट	म० १६७०	२६३
40.	यशोधरचरित्र	प० सूर्यकवि	<u> </u>	•••
<u> </u>	रामकृष्णकाञ्य			

		•		
कम संख्या	घंथ नाम	कर्त्ता	रचना काल	यंथ स्ची का क्रमांक
≍ ₹.	रूपदीपपिंगल	जयकृष्ण	स० १७७६	メ ニメ
ت ٤.	वच्छराजहंसराजचौपई	जिनदेव सूरि		६३६
۳8.	विश्विकप्रिया	सुखदेव	स० १७६०	७१९
5 ሂ.	वद्धं मानपुराणभाषा	पं० केशरीसिंह	सं० १८७३	४७१
न्द .	वकचोरकथा	नथमल	सं० १७२४	३३४
5 9.	विक्रमप्रबधरास	विनयसमुद्र	सं० १४८३	६०३
독 도.	विद्याविलासचौपई	त्राज्ञासुन्दर	स० १४१६	६०३
<u> ج٤.</u>	वैतालपच्चीसी			५६२, ६०३
03	वैनविलास	नागरीदास		४७२
٤٩.	वैराग्यशतक		L eroborn	२७६
६२.	व्रतविधानरासो	सगही दौलतराम	सं० १७६७	४०४
६३	शांतिनाथस्तोत्र	कुशालवर्द्ध न	-	૪૪૨
		शिष्य नगागिए		
٤٤.	शालिभद्रचौपई	जिनराज सूरि	स० १६७=	\$£&
£¥.	श्टंगारपच्चीसी	छविनाथ	er encedado	४७४
દ્ધ.	षट्मालवर्णन	श्रुतसागर	स० १८२१	બદર
દેખ.	षोडशकारगव्रतकथा	म ् ज्ञानसा गर		*88
<i>٤</i> ५.	सतरप्रकारपूजा प्रकरण	साधुकीर्त्ति	संट १६१८	¥ર્
.33	सप्तपदार्थी	भावविद्ये स्वर		३१७
१००.	सखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुति	त रामविजय	•	ಇಂ ಇ
१०१.	संबमप्रवहरा	मुनि मेघराज	सं• १६६१	83
५०२.	संबोधसत्तरी सार			२४१
१०३.	संबोधपंचासिका	रझ्धू		२३६
१०४.	साखी	कबीरदास		६२६
१०४.	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्त्ति	सं० १म३२	६८७
१०६	सारसमुचय	कुलभद्र	_	২ ৪৪
₹c७.	सारसमुचय	दौलतराम		૨ ૪૪
१०८.	सुकुमालचरित्र भाषा	नाथूलाल दोसी		२ ६३
१०६	सुबुद्धिप्रकाश	थानसिंह	स ्रै दश्ड	क् र १



🛨 लेखक प्रशस्तियों की सूची 🛨

क्रम संख्य	प्रथनाम	कर्त्ता	लेखन काल	मन्थ सूची का क्रमांक
۶.	श्रागमसार	मुनि देवचन्द्र	स० १७६६	१
२	श्रात्मानुशासन टीका	प० प्रभाचन्द्र	स० १४८१	२५३
ą	त्रादिपुराग्ग	पुष्पवत	स० १४४३	? 88
8	त्राराधनाकथाकोप	~~~	स० १४४४	३१७
¥	उत्तरपुराण	पुष्पदत	स० १४४७	४७६
Ę	उपासकाध्ययन	श्रा० वसुर्नाद	स० १८०८	४८
હ	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	स० १६०६	٤
5	कर्मप्रकृति	31	सं० १६७६	' १२
.3	गोमट्टसार	77	स० १७६६	39
१०	चतुर्विशतिजिनकल्याग्	क पूजा जयकीर्त्ति	स० १६८४	३४४
११-	चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचन्द्र	स० १४८४	३४३
१२.	जंव <u>ू</u> स्वामीचरित्र	महाकवि वीर	सं० १६०१	ያ ፍሂ
१३	जिग्यत्तचरित्त	प० लाख्	स० १६०६	४मध
१४.	जिनसंहिता		म० १४६०	3XE
१४	ग्गयकुमारचरिए	पुष्पद्त	सन् १४१७	४६०
१६ -	n	1)	स॰ १४२८	४६१
१७	तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	स०'१६४६	৩দ
१ ८.	तत्वार्थसूत्र वृत्ति		स० १४४७	હિ
39	त्रैलोक्य दीपक	वामदेव	स० १४१६	६०१
२०.	द्रव्यसमह	नेमिचन्द्राचार्य	***	१११
२१	द्रव्यसंप्रहटीका	त्रहादेव	स० १४१६	। २८
२२	घन्यकुमारचरित्र 	मकेलकी चि	स० १६४६	82ફ
२ ३.	धन्यकुमारच रि त	n	स० १४६४	३४१
२४.	धर्मपरीचा	श्चा० श्रमितगति	सं० १७६२	१७७
२५	नद्वत्तीसी	हेमविमल सृरि	सं०१६ :	ጸ⊏አ
२६ .	पद्म नदिपचविशति	पद्मनिं	सं० १४३२	- 686

क्रम संख्या	प्र'थ नाम	कर्त्ता	लेखन काल	प्रथ सूची का क्रमांक
२७	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	स० १४८६	399
र ू.	प्रबोधसार	प० यश कीर्त्ति	स० १४२४	X39
۲. عو.	प्रवचनसारभाषा	हेमराज	स्०,१७११	२७१
₹c.	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलंकीत्ति	स० १६३२	338
₹5. ३१	बाहुबलिदेवचरिए -	प० धनुपाल	स० १६०२	٧oo
२९ ३२	भक्तामरस्तोत्रवृत्त <u>ि</u>	भ० रत्नचन्द्र सूरि	सं० १७२४	४२६
	भगवानदास के पट	भगवानदास	स० १८७३	४२६
३३	भविसयत्तचरिए	मगपानदास पं० श्रीधर	सं० १६४६	प्र०प्र
38	भविसयत्तचरिए	५० श्रावर	स० १६०६	४०६
રૂપુ. રૂદ્દ.	भावसंयहाचारण भावसंयह	" देवसेन	स० १६२१	१३३
₹ <i>५.</i> ३७	"	99	सं० १६०६	१३४
३=	,, ,,	" श्रुतमुनि	स० १४१०	१३४
₹٤.	'' भोजचरित्र	पाठक राजवल्लभ	सं० १६०७	४०७
80.	<i>मृ</i> गीसंवाद		स० १८२३	७२६
88	मूलाचारप्रदीपिका	भ० संकलकीर्त्ति	स० १४८१	78,0
૪ર.	यशोधरचरित्र	वासव्सेन	स० १६१४	२७०
४३	ल ब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १४४१	१३६
88	वड्ढमाण्कह्	नर्सेन	स० १४५४	४१्न
8 ኦ	वड्ढ्मा्ण्कव्व	प० जयमित्रहल	स० १४४०	४१६
પ્રદ	विणिकप्रिया	सुखदेव	स० १८४४	७१६
80	शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	स० १४२४	३६४
8=°	पट्कर्मोपदेशमाला	श्रमरकीर्त्ति	सं० १४४६	५ २३
38	पट्कर्मीपदेशमाला	भ० सकत्तभूषण	स० १६४४	न्द
४०	पट्पचासिका बालाबोध	भट्टोत्पल	स० १६५०	४४६
५ १	समयसार टीका	श्रमृतचन्द्राचार्य	स०१७८८	२८३
४२	77	3 7	स० १८००	₹≒६
४३	म म यसारनाटक	त्रनारसीदास -	स० १७०३	₹€ 0
४४	संयमप्रवह्ग्।	मुनि मेघराज	स० १६=१	€8
¥¥.	सिद्धचक्रकथा	नरसेनदेव	सं० १४१४	Ł ₹₹
38	हरिवशपुराग्	महाकवि स्वयभू	सं० १४⊏२	४ ३६

* यंथ एवं यंथकार *

संस्कृत-भाषा

प्र'थकार का नाम	ग्रंथ नाम	म्रथ सूची की	म थकार का नाम	र्मथ नाम	प्रंथ सूची की
		पत्र स०	1		पत्र सं०
ऋक्लंकदेव—	तत्त्वार्थराजवार्तिक	3 X	श्रमृतचन्द्र	तत्त्वार्थसार	300
	भायश्चित्त समह	१⊏६		पचास्तिकायटीका	18, 158
श्रज्ञयराम—	गमोकारपैतीसी	२०४		प्रवचनसार टीका	* & ≥
	मामातचतुर्दशी	२०५		पुरुषार्घसिद्धच् पाय	३२, ८०१
	सील्यवतीघापनपृजा	६३,२०४,२०६		समयसार कलशा ४	३, १६४, २४६
श्रग्निवेश—	ग्रजनशास्त्र	388		यमयसार टीका	४३
न्रह्म श्रजित	हनुमच्चरित्र	२२१	श्रमृतप्रभसूरि—	योगशतक ' वि	ⁱ २४७
श्रनन्तवीर्य —	प्रमेया लमाला	8=	पं० श्रल्लारी	मोजप्र म ध	२१६
श्रन्नंभट्ट—	तर्कसम्रह	४३, १६६	श्रशग—	शांतिनाथ पुराय	६६
ञ्चनुमूतिस्वरूपाचार्य	-सारस्वतप्रकिया	E0, 23₹	ञ्चानन्द्राम	चौबीसठाणा चर्चा टांब	e la
अभयदेव सूरि-	भन्तग डदशा धी वृत्ति	ı १	श्राशाधर—	जिनय झकल्प (प्रतिष्ठ	००५ (हामा
·	उपासकदशासूत्र विव	हरण २४		जिनसहस्रनाम १०२	, १३४, २०४,
શ્રમયનંદિ—	दशलक्ष पूजा	२०१		·	२३१, २१२
श्रभ्रदेव—	व्रतोघोत्तन श्रावकाच	गर ३४		रत्नत्रयपूजा	२०५
श्रभिनव वादिराज	(पं० जगन्नाथ)			सागारघमीमृत	३७, १६०
	र्धाश्वरूप वर्णेन	ধ		₹तीत्र टीका	२४४
श्रमिनव धर्मभूषण	न्यायदीपिका	४७, १६६		होमविधान	€ 0 €
श्रमरकीर्त्त-	जिनसहस्रनामटीका	२ ३६	इन्द्रनदि—	श्रकुरारोपग्रविधि	Υŧ
श्रमरसिंह—	श्रमरकोश	द्रष्ट _र २३२		नीतिसार	२३८
श्रमितिगति	धर्मपरीचा	२१, १८४	उमास्वामी—	त्तत्वार्यसूत्र ११, १	
••••	भावनानचीसी	१४६, २४७		१११ , ११ २, १ १ १	, १६७, १७२
	श्रानकाचार	ब ६		148, 251, 74	
	समावितरतसदोह	२३६			३∙=, ३० ६

प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	त्रंथ नाम	य्र ंध सूची की पत्र सं०
	श्रावकाचार	ં ફ	चंड—	प्राकृत न्यानर्ण	२३०
कमलप्रभ—	जिनपजर स्तोत्र	, , २	चाग्पक्य	चाणक्यनीतिशास्त्र	१११,२३४,२७४
कालिदास	कुमार समय	२१०		नीतिशतक	8.8
	मेघदृत	२१७	चामुण्डराय	चा{त्रसार	२४
	रष्ट्रनश	२१=		भावनासार समह	२ ५
	श्रुतनोध	≈६, २३३	मुनि चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	48
कालिदास—	दुर्घट काव्य	२११	जयकीर्ति—	चतुर्विशतिजिनक्ल्य	ग्गकपूजा ४१
	श्र गारतिलक	२४०	जयानंदि सूरि-	देवप्रमा स्तोत्र	` २४०
काशीनाथ—	शीवनोध	२४५	जयसेन—	वर्मरलाकर	१ ८५
कुमुद्चन्द्र —	कन्याण मदिर स्तो	त्र १०१, '११२,	पार्छे जिनदास—	पचकत्यायाक पूजा	₹ (₹ ० १६४२)
	, २२, १३ ६ , ,	५६, २३८ २७३	पं० जिनदास—	हो ली रे णुकाचरित्र	≂०, २२१
जुलभद्र —	गारसमु च्चय	३७	व्र० जिनदास—	जम्पूद्वीपपूजा	२००
भट्ट केदार	रुचरनावर	-33		जम्बूस्वामी चरित्र	६=, २९०
केशवसेन (कृष्ण से	न) रनभयपूजा	२०४		हरिवश पुराण	२२४
		४२, २०६	जिनदेव	मदनपराजयनाटक	६१, २३४
	पोडशकारणमङ्कर	[जा ६०,२०७,३०⊏	जिनसेनाचार्य—I	श्राटिपुराग	६३,६४, २२२
	पोडशका(ण प्जा	उद्यापन २०४		जिनमहस्रनाम १०	े, १०७, ११६
गजसार (धवलचद	के शिष्य)			₹.	०४, २३६, ३०१
	वि चारष डतिंशिका	स्तोत २४३		जन विवाह विधि	200
गिएनंदि -	ऋषिसङ्लप्ञा	508	जिनसेनाचार्य—II	हरि वंशपुरा ग	3.5
गुणचंद्र -	श्रनंतवतपू जा	२०४	ज्ञानकीर्त्ति <i>—</i>	यशोधरचरित्र	उर, २१७
श्राः गुग्भद्र—	यात्मानुशासन	32, 988	ज्ञानभूषग् —	श्रवयनिधिन्नतोषापः	7 20 8
	उत्तरपुरागा	६४, २२२		गास्त्रमहलपृजा	206
	जिनदत्तचरि त्र	3 3	ब्रह्म ज्ञानसागर—	चो रशका रणवतीया	रन पूजा ६०
	भन्यकुमार चरित्र	785	दशरथ महाराज-	गनिश्वर स्तोत्र	180
गुरुभद्र—	शतिनाय स्तोत	* १ ७	कवि दामोटर—	चन्द्रप्रभचरित्र	६७, २१०
गुराभूषणाचार्य—		± ±		श्रीपालचरित्र	ভদ
	पुरवाणीनुशासन				य ३६
गौतम गण्धर	भ ष्टिमं ६ लम्नोत्र	₹ ० १	देवनन्दि—	डेनेन्द्रव्याक्र ण	= 3

प्र'थकार का नाम	त्रंथ नाम	प्रथ सूची की पत्र स०	प्रथकार का नाम	ष्र थ नाम	प्रंथ सूची की पत्र स०
	सिद्धिप्रिय स्तोत्र	२०६, १४१	त्र० नेमिदत्त—	धन्यकुमार चरित्र	७०, २१२
		१५६, २४४		धर्मोपदेशश्रावकाच	Πτ ३०, ₹ ⊏૫
देवसेन-	त्रालाप पद्धति) { E		नांगश्रीकथा (रात्रि	भोजन त्याग क्या)
	नगचक	₹ € €			۳₹
म ० देवेन्द्रकीत्ति—	चन्द्रायणवतपूजा	335		नेमिनाथपुराण	६४, २२३
	त्रेपनकियावतोद्यापन	२०५		प्रीतिंकर चरित्र	७२, २१३
	द्वादशवतपूजा	२०१, २०६		श्रीपालचरिन	७⊏, २१६
	रविव्रतविधान	३०८	पद्मसुन्दर	मारस्वत रूपमाला	२३ १
	[े] दव्रतक्था	२ २७	पद्मप्रभदेव—	पार्श्वस्तो त्र	११२
वनजय-	द्विसधानकान्य (सटाव	₹) ६ 8		लच्मीस्तोत्र	१•७
	नाममाला	≍=, २३ २	पद्मप्रभमलधारि देव	-नियमसार टीका	≯ ⊏¥
	विश्रापहारस्तात १८६	. ૧૦૭, ૧ ૫૩	पद्मनिन्दः	प्र हेतपूजा	१६७
		१५६, २४३		पार्वनाथस्तोत्र	२४०
भः धर्मकीर्ति—	महस्रग्रणप् जा	६२		लदमीस्तोत्र १	६, २४२, २ ४४
	मम्य वत् वकोमुर्दा	= ξ	,	गावकाचार	¥X
श्राचार्य धर्मचन्द्र	गातमस्वामी चरित्र	६७	•	सिद्धचकपूजा	२०¤
वर्भदास	विदग्धमुखमडन	७=, २१६	पद्मनाभ कायस्थ—	यशोधरचरित्र	२१७
वर्मभूपण	जिनसहस्रनाम पुजा ।	३, ११४, २०=	परमहंस परित्राजकाच	वार्य—	
प० नकुल	शालिहोत्र	> Ę Ę		मा(स्वतप्रकिया	२३१
नदिगुरु—	प्राथित समुच्चय चू	लिशा ३ ३२	पचाननभट्टाचार्य	परिभाषापरिच्छेट (र	नयमूल सूत्र) १६६
		१≔६	प्रभाचन्द्र	त्रात्मानुशासन टी का	३६, १६१
नरेन्द्रकीर्त्ति—	वीसतीर्थंकरपूजा	208		नस्त्रार्थ रत्न प्रमायः	, , , , see
नरेन्द्रसेन—	सिद्धा ⁻ तसारसम्रह	१=२		तत्त्वार्थंसूत्रटीका	, २
नरेन्द्रसूरि—	गारस्वतप्रक्रिया टीका	२३१		५ चारितकायप्रदीप) }
नवनिधिराम—	योग समुच्चय	835		रत्नकरए इ श्रावकाचा	
नागचन्द्रसूरि	विषापहार टीका	२४३	पार्श्वनाग—	थात्मानुशासन	-10
नारायण—	चमत्कार्चितामशि	२४५	पृज्यपाद	इन्टोपदेश	२६८
नीलकंठ—	नीलकठ ज्योतिष	- 6%		परमानन्दस्तोत्र	₹ €
नेमिचन्द्र	द्विसधानकात्य टीका	* *		रात्रकाचार	37, ,,,

प्रथकार का नाम	त्रथ नाम	प्रंथ सूची की । पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	पंथ सूची की पत्र संं>
	समाधिशतक	- 120		१४८, २४१, २७३	,२७७ ३११
	मर्वार्थसिद्धि	, = 7	मालदेवाचार्य	शास्तिनायस्तोत्र	₹ १२
મદ્રી	महीमट्टी	≂ ७	पं० मेधावी—	धर्मसमहश्रावकाचार	३०, १⊏४
भट्टीत्पल —	प्रत्यचासिका वाला	गोध २४६	पं० यश कीर्त्ति	प्रवोधसार	३ १
भर्तु हरि	नीतिशतक 🕻	, ४२	यशोनंदि	धर्मचकपूजा	ŁŁ
	भतृ हिरिशतक	210		पचपस्मेंष्ठीप्ञा	x
	वैशग्यशतक	385	योगदेव	तत्वार्थसूत्र वृत्ति	१ ३
	शत 🕶 त्रय	~ z ‡	रण्मल—	वर्भचक	२०४
भानुकीति—	चतुविधसिद्ध चकपृज	ग ५२	भ० रत्ननिदः—	ग्रष्टाहिकाक णा	२ २४
Ü	रोहिणीवतक्था	२२७		नन्दीश्वरविधान	२०२
भारवि—	किराताञ्च ^र नीय	308		पल्यविधानपूजा	५⊏, १७२
भावविद्ये श्वर—	सप्तपदार्थी	४=	ļ	मद्रवाहुचरित्र	७३, २१४
भूघर मिश्र	षट्पाहुड टीका	188	रत्नचद्र—	जि नग्र णसम्पत्तिवृतपृज	ग ३०६
भूपाल कवि—	भ्यालचतुर्विशति १	०५, २/२, २६२		प चमेरूपूजा	२०५
-` मल्लिपेग्ग	निशिमोजनकथा	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		मकामरस्तोत्र वृत्ति	२४१
	सञ्जनचित्तवल्लभ	१५६	रविषेणाचार्य	पद्मपुरा ण	२२३
मल्लिपेणसूरि	स्याद्वादमजरी	४=, ४६	राजमल्ल-	ऋष्यात्मकमलमात्त ^र स्य	३ ३ =
महावीराचार्य —	पट्तिंशिका	ع۶ و]	लाटीसहिंता (श्रावक	ाचार) रे⊏७
महासेनाचार्य	प्रयुम्नचरित्र	२ १३	पाठक राजवल्लभ-	- चित्रसेनपद्मावती क्थ	
भ० महेन्द्रभूपण्—	- जैनमात्त एडपुराण	२११		भोजचरित्र '	, 1 , 1
माघ	शिशुपालवध	२१६	रामचन्द्राश्रम—	सिद्धान्त चन्द्रिका	(\$ २३ १
माणिक्यनदि	<u>-</u>	6 5	रामचन्द्राचार्य-		~∈ °.:° ? ₹ o
माणिक्यसुन्दर्—	•	૨૨ ૯	पं० रामरत्न शर्मा-	-	ፍሁ
माधवचंद्र त्रैविद्यदे			व्र॰ स्यमल्ल-		१०६
	च षणासारटीका		लक्सीचन्द्र	·	•
	त्रिलोकसारटीका		ਕਰਿਕਰੀਓ	``	२० २ ^५ -५०७
, •	ल ि धसारटीका	२२, १⊏१	i	-•	-
भानतुगाचार्य	मकामरस्तोत <u>्र</u>	११, १०४, १०६	लोलिम्बराज—	वद्य जावन	२४७
	७०७ ११२, १	·-, '==, १४º	लोहाचार्य	तीर्षमहात्म्य	३६

प्रथकार का नाम	ग्रथ नाम	म्रंथ सूची की पत्र सं-	प्रथंकार का नाम	घ थ नाम	प्रंथ सूची की पत्र स०
वर्द्धभान भट्टारक देव—				भकामरपृजा उद्यापन	४६, २०४
	वरांगचरित्र	७७, २१८	श्रीपतिभट्ट	च्यो तिषरनमा ला	~ > & y
वाग्भट्ट	श्र ष्टांगह्दयस हिता	'' २४६	श्रा० शुभचन्द्र—	न्नार्णव	٠٠, १६२
वादिचन्द्र सूरि—	ज्ञानसूर्योदय नाटक	≃ €	भ० शुभचन्द्र—	थष्टाहिका कथा	≂१, २२६
वादिराज	एकीमावस्तो त्र	107, १२३		🖊 श्रष्टाहिका पूजा	18€
	यशोधर चरित	२ १ ७		क्रमंदहनपूता	702
वामदेव—	त्रेकोन्य दीपक	€ \$		गयाधरवत्तय पृजा	१ ६= 1
	भाव समह	9=9		चन्दना चरित्र	२१ ∙
वासवसेन—	यशोधरचरित्र	७४, २१७		चारित्रशुद्धिविधान	k 4
विक्रम—	नेमिदूत काव्य	२१२		जीनंधर चरित्र	२११
श्राचार्य विद्यानदि –	- श्रष्टसहस्री	٧ŧ		र्त्रिशच्चतुर्विश ति पूजा	२००
	श्राप्तपरीच।	۶٤ ٤		प च परमे ष्ठीपृजा	₹ ♦¥
	तत्त्वार्थशोकवातिकाल	मार १५		पल्यवतीयापन	२०४
विद्यानिद (भ० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य)				पाग्डवपुराग	६४, २२३
	सुदर्शन चरित्र	30		श्रे णिकचरित्र	ं ३१६
विरंचि—	सरस्वती स्तोत्र	१०७		महस्रनामग्री णतपुजा	ξP
	सारस्वत स्तोत्र	· 00		मुमावितार्गीव	२३७
विश्वकर्मा	चीरार्याव	२४४	शोभन मुनि—	चौनीसजिन स्तुति	२₹६
वीरनंदि—	श्राचारसार	-3, 3∈₹	श्रीकृष्ण्मिश्र—	प्रनोधचन्द्रोदय नाटक	२३३
	चन्द्रशसचरित्र	६⊏, २१०	श्रुतमुनि—	निमगीसार	१ ६
वीरभद्र—	पाखरह दलन	? ⊏\		भानसमह	20, 201
बोपदेव	धातुपाठ	२३०	श्रुतसागर —	जिनसहस्रभामस्तोत्र टा	का १०२, २३६
शकराचार्य	गगाप्टक	३०१		तत्त्वार्थसूत्रटीका	१ ३
	गोविन्दान्टक	३०१		त्रतकथा कोश	२२१
शिवादित्य	मितमाविषी टीका	% ⊏		मप्तपरमस्यानविधान क	मा ८६
शालिपडित	नेमिनाथ स्तवन	260	सकलकीर्त्ति	यादिपुरा ण	६२, २०६
श्रीधर—	मविप्यदत्त चरित्र	७४, २१६		गग्धस्वलय पृजा	11
श्रीभूषग्—	त्रनतमतपुता	980		बन्यकुमा(चरित्र	७०, २१३
	चारित्रशुद्धिविधान	\$££		प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	· 17 2m5

मंथकार का नाम	प्रंथ नाम	यंथ सूची की पत्र सं०	्रयंथकार का नाम	त्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०
	पा र्यनाभ चरित्र	२१३	पं० सूर्य कवि	रामऋष्णकाव्य	२१⊏
	पुराणसमह	६४	सोमचन्द्र गिण-	वृत्तरताकर टीका	२३३
	मूलाचार प्रदीप	३३	सोमकीर्त्ति—	प्रध्मन चरित्र	२१३
	यशोधर चरित्र	७ ४, २ १७		यशोधर चरित्र	७४, २१७
	शांतिनाथपुराण	६६, २२४		सप्तव्यसन कथा	द्र ह, २ २६
	सद्माषितावली क्ष	. ક . . ફ. રફ ૭	सोमदेव	यशस्तिलक चम्पू	४४
	सिद्धान्तसारदीप क	२२, १८२	सोमप्रभाचार्य—	सूक्तिमुक्तावली	१०•, २३७
	सुकुमालचरित्र	२१६	सोमसेन-	त्रिवणीचार	१८४
	सुदर्श नचरि त्र	७६		दिचणयोगीन्द्र पूजा	२०१
सकलभूषण—	उपदेशाःल माला	२३, १८८		मकामरस्तोत्र पूजा	२०३
	((षट् कर्मोविदेशरंल मा	ला)		वह मान पुराय	२२ ३
सद्दानंद—	सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति	ચ રૂ ધુ,	हरिचंद—	धर्मशर्माम्युदय	२१२
ञा० समन्तभद्र—	देवागमस्तोत्र	४७, २४०	हरिभद्र सूरि	षट् दर्शन समुच्चय	\$ E E
	रत्नकर्गडश्रावकाचार	3,∕₹,	श्री वल्लभवाचक हेर	मचन्द्राचार्य—	
	समन्तमद्रस्तुति	१०८		दुर्गपदप्रबोध	2 3 \$
	समाधिशतक	< €,	इर्षकीर्त्त-	सारस्वत धातु पाठ	२३१
• 63	स्वयमूस्तोत्रः १०७	. ११२, १३७		स्किमुक्तावली टीका	२३७
सहस्रकीत्तं-	त्रिलोकसार सटीक	२₹४	हेमचन्द्राचार्य	प्राकृतव्याकर्ष	२३०
सिद्धसेन दिवाकर-		१.२६		हेमव्याकरणः	२३१
	सन्मतितर्क	9 १ ७		श्रमिघानचितामियना	ममाला २३२
	शकस्तवन	३०१		श्चनेकार्थसमह	२३२
सुधाक्लश	एकाच्रनामभा ला	5 5		- 4	
सुधासागर—	पचकल्यायाक प्ञा	¥ €∙	Я	कृतं—भाषा	
सुबन्धु—	नासवदसा	२ १ ⊏	श्रभयदेव—	पार्श्वनाथ स्तवन	२६४, ३०१
सुमतिकीर्त्ति—	जिन विनती	१६४	स्वामी कात्तिकेय-		¥\$, ₹£₹
	कर्मप्रकृति वृधि	१७६	श्राचार्य कुन्दकुन्द—	- ग्रप्ट पाहुड	₹ €
	गोमदृसार कम्क्रांहर्टाः	₹\	1	हादशानुप्रेचा	१६२
सुमतिसागर—	दशलक्य पूजा	AA	! !	पचास्तिमाय	* E , ?= e
सुरेश्वरकीर्त्त—	शान्तिनाम प्जा	२०७		प्रवचनसार्'	४२. १६३

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र स०
	स्यणसार	१ ८७		विशेषसत्तात्रिमर्गा	9 8
	षट्पाहुड ४३, १	११०, १३२, १६४		सत्तात्रिमंगी	१६
	समयसार	१३२, १६४, २८७	पद्मनन्दि—	धर्मरसायन	२६, १⊏१
गौतम स्वामी	सबोधपचासिका	१२३, १⊏६		पद्मनन्दिप चविंशति	३०, २५६
देवसेन	श्राराघनासार	४०, ११०, ११७,	भावदेवाचार्य-	कालिकाचार्य क्थान क	२ २५
	ş	११=, १६१, ३१२	भाव शर्मा—	दशलचया जयमाल	५४, २०१
	_ तत्वसार	२०, ११०	विनयराज गिर्ण-	रत सचय	१८१
	दर्शनसार	१४६, १६६	यति वृषभ —	त्रिलोक प्रमस्ति	२३४
	भावसमह	२०, १⊏१	हेमचंद्र सूरि-	पुष्पमाल	१८६
	सबोधप चासिका	११⊏	277		
धर्मदास गणि—	उपदेशसिद्धांतरलम	ाला २३	3 31	पभ्रंश भाषा	
भडारी नेभिचन्द्र—	उपदेशसिद्धांतरलम	ाला २३	त्रमरकीर्त्त —	षट्कमीपदेशास्नमाला	هد, الدد
	षष्टिशतप्रकर्ण	३१०	गोयमा —	रोप (कोध) वर्णन	११७
नेमिचन्द्राचार्य	ग्राश्रवित्रमगी	q	जयमित्र हल	वद्ध भान काव्य	<i>و</i> و
	उदय उदीरणा त्रि	भगी १६		श्रे थिक चरित्र	45
	क्में प्रकृति	३, १३४, १७६	धनपाल	बाहुबलि चरित्र	७२
	चपणासार	Ę		मविसयत्तपंचमीकहा	७३, २१६
	गोमट्सार	६, १७७		(मविष्यदत्ता पचमी	∓था)
	गोमट्टसार (कर्मक	ाग्ड गाया) ११२	धवल—	हरिवशपुराख	१७४
	चौबीस ठाणा चच	ર્ગ દ, ૧૭૭	नयमानद्—	सुगधदशमीवत कथा	= &
	जीव समास वर्णः	न १०	नरसेन देव	वद्ध मान क्था	৩৩
	त्रिमगीसार	११०, १७६		सिद्धचक कथा	98
	त्रिमगीसारसदृष्टि	१८०	भडारी नेमिचन्द्र—	नेमीश्वर जयमाल	११७
	त्रिलोकसार	६२, २३४	पुष्पदंत—	त्रादिपुराण	२२२
	द्रव्यसम्रह १६,	२०७, ११२, १२२		उत्तरपुराण	६७
		१४४, १८०		नागकुमारचरित्र	६१
	वधित्रमगी	9६	मनसुख—	कल्यायाक वर्षान	१३५
	मात्रत्रिभगी	१ ६	यश'कीर्ति—	हरिव श पुराण	२ २ ४
	ल न्धिसार	ا ره ۶	पं॰ योगदेव—	मुनिष्ट्रवतानुप्रेचा	११७

प्र'थकार का नाम	म्थं नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	त्रंथ नाम ः	पंथ सूची की पुत्र संश्
योगीन्द्रदेव—	दोहा शतक	739		कक्का बत्तीसी	१३२, १४१
	परमात्मप्रकाश १	८१, ११४, ११=		चरखा चउपई	ጓሂሂ
		३१, १७१, १६२		चार मित्रों नी कथा	१५३
	योगसार ४२, १	१४, ११६, ११=		चौबीसतीर्धकर पूजा	१३०, १४३
	•	६४, १६४, ३०५		चौवीसतीर्यंकर स्तुति	930
	थ्रावकाचार दोहा	१८६		जिनगीत	१६३
	(सावयधम्मदोहा)		जिनजी की रसोई	४२६
1 84 —	श्रात्मसबोधन कान्य			यामोकर सिद्धिः	रइर
145	दशलच्य जयमाल			चदीश्वर पूजा	₹₹0
	वलमद्र पुराण	२२३		नेमिनाथ चरित्र	२६=
	षोष्ट्रशकारण जयम	ाल ६१		पद १३०, १३२	, १६३, १६३
	सबोध पचासिका	३ ६	į	पंचमेर पूजा	१३०
पं० लाखू—	जिषायत्तचरित्र	६६		पार्वनाथजी का साले	हा १३०
धीर	जम्बूस्वामीचरित्र	ξ =		चाल्यवर्णन	१३०
स्वयंभू	र्रिवश पुराण	હદ		वीसतीर्थेकरों की जयम	াল १ ३०
कवि सिंह—	प्रधुम्न चरित्र	२१ ३	<u>{</u>	यशोधर चौपई	৬৩
इरिषे ग्ण─	धर्मपरीचा	१८४		चदना	१ ३ <i>०</i>
~				शांतिनाथ जयमाल	१३०
1Ē	ह्न्दी भाषा			शिवरमणी का विवाह	7 € ३
घ्यवयराज (श्रीमात्त)	कल्याणमदिरस्तोत्र	सावा १०२		विनती	र११
	मकामरस्तोत्र माष	ा १ १ ४	ब्रह्म श्रजित—	हंसा मावना	११७
श्रवयराम लुहाडिया			श्रनंतकीर्त्ति—	जखडी	4 86
	शीलतरगिनी कथ	⊺ ⊏ई	. ~		
साह श्रचल—		११७	श्रमरपाल—	_	ल १६=
श्रचलकीर्ति—		<i>000</i> 9			१४७
		माषा १०६, १२४	1		१३७
		२६, १३१, २४३	" \	-	११६
म्प्रजयराज (पाटग्री	-		त्राज्ञा सुन्दर—	विद्याविलास चोपई	₹ & \$
	म्रा दिना थ पूजा	१३०	श्राणंटमुनि	तमाख् मी जयमाव	१४०, २६२

प्रथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथर पत्र	दूची की । सं०	\ प्रंथकार का नाम	म श्र नाम	मंथ सूची की पत्र स०
त्र्यानंद कवि 	भोक्सार	१४०		सोसट मध	. २६७
श्रानन्द वद्ध [°] न—	न्नद सौजाई का भगवा	• ሂሂ		ह्स मुक्तां वृत्ति	२६७
श्रारतराम—	दर्शनपच्चीसी	२=	कामन्द्	कामन्दकीय नीतिसार	२३४
भ्रा ल्—	द्राद्शानुत्रेका १६३, १६	^२ , ३११	व ्कामराज —	त्रेसठ-शलाकापुरुषोंक	वर्णन १४३
उ त्तमचन्द्र—	त्रिलोकसार भाषा	દક્	कालकसूरि—	पद	3 83
ऋषभनाथ —	पद	१ ३१	कृष्ण गुलाव—	पद	? ¼ Ł
ऋषभदास—	मूलाचार माषा टाका ३३,	१ ८८५	किशनसिंह—	आदिनाश का पद	9
मुनि कनकामर—	स्थारह, श्रुतिमा वर्णन	११७		एकावृ लीवृत्कथा	· •₹
क्नककीत्ति—	कर्मघटा, वृह्लि	१४६		कियाकोसः	२४
	ज़िनग़ज़ स्तुति	१५२		गुरमिताीत	७३
	तृत्वार्थसूत्र, माषा टाका १	३. १७६		चतुर्विशति, स्तुति	७३
	पद	३००		चेतनः गीत	७२, १३१
	मेथकुमार्गीत	२२७		चेतृन। सौरी	७३
	विनती। १३	१, १४६		चौनीस।दडक	७३,
	श्रोपाल _। स्तुति	१४३		जिन् म हित्गीत	৬३
कनक्सोम—	जइत्, पद बेलि २६३,	, १६२५		यमोकार,रास	હર્
कृमललाभ—	पार्श्वना्थ,स्तोत्र	१४०		नागश्रीकृथा,	७३ _{,,} ८३
क्र्मचंद—	पचमकाल का गण मेद	300		(रात्रि मोजन त्याग क	था)
महाकवि कल्याग् —		२७४		निर्काण कांड सांवा	
कल्याग्यकीर्ति—	श्रादीपृत्जी का मधावा	१४२		पद	早長 漢。
	तीर्पंकर विनृत्री	98 ₹ ,	1	पद, समृह्	10X
क्वीरदास—	कवीर की चौ्वई	२,६७ ,,	1	पुरसाक्षवकथाकोहा	१२
4-	कनीर,धर्मदास की दया	રફ્ર્		महत्राहुचित्रित्र माषा ७	३,२१६,२७०
	काया, पाजी,	२६७,		लङ्गिविभान कथा	७३,
	कालचुरित्र	३ ୧ጵ,		विनती _{, स} म्रह्	tok
	भानतिलक् वे पट	۔ 'ولاغ د	; ;	श्रावक्सुनिवर्ग्यन गीत	এ ই
	पह्	२६,४	किशोरदास-	पद	१ २७
	रेबृत्	२६७ ,	कुमुदचंद—	पद	२७ ३
	साखी,	>§•,¹	' į	विज्ञत्),	३०७

मं थकारःकाः नाम	प्रंथ नाम	मंथ सूची की पत्र सं०	थ्र ं थकॉर [े] का नाम		पूँची की व सं०
कुशलेलाभ—	थर्भणपीर्द्वने। थस्तवः			फुटकर दोहे तथा कु डलिया	
कुशलवद्ध ^र न (शिष्य	। नगागींएं)		गुर्यासागर—	शान्तिनाथ स्तंवन	२१ ३
	शांतिनाथ स्तोत्र	२ ४३	गुलाबराय—	क व का वर्त्तीसी	१५३
पं० केशरीसिंह—	वद्ध मौनपुरार्थ भाष	ा ६५	व्र ंगुलाल —	ग्रलाल पच्चीसी	£ A
केशवदास—	रसिक्त्रिया '	२५े र -	J	जर्लगालनिकया	χį
केशवदास-	श्रात्महिं डोलना	१६३		त्रेपनिकया	₹00
	शान्तिनाथ स्तवन	२६१		विवेक चौपई	३०४
	सर्वेथा '	?	गोपालंदासं—	प्रमादीगीतें -	÷ E 8
न्तेमकुशल—	सातव्यसन संदेभाय			यार्डुरासो	२६३
ख द्गसेन —	त्रिलोकंदर्पण कथा	ह २	घीसा—	मित्रविलोसं मित्रविलोसं	३१ २
खुशांलचन्द—	उत्तरपुं(ाणभाषा	8.8	चतुर्भु जदास—	मधुमालती कथा २≂	१, ३०६
	 चन्दनपिष्ठत कथा 	२६७	चंद्रकीर्त्ति	श्रादिनार्थ ^{स्} तुति	२७३
	 जिनपूँजा-पुरँदर कः 	या २६७		गीत ^{' ।}	₹७३
	भन्यकुमार चरित्र	७०, २१२	चंपाराम—	थर्मे प्रेरनोत्तर [े] श्रावकाचार	₹ ৹
	पढ	२६७		भद्रं बाहुं चंरित्रं	२१ ¥
	पद्मपुरागमाष।	£¥	चरनदास—	पद	४० ६
	* मुक्तावर्षिमत कथा	२२७	चन्द्र-	श्रजित जिननोथ की वीनती	१४३
	 मुकुर्दसप्तमीवत व 	वा २६७		स्तुतिसंत्रहें	4¥€
	# मेघमालावत कथा	૨૯ 'હેં ^દ	चैनसुख—	ष्ट्रंतिम चैत्यालय पूजा	४१
	यशोधरचंरित्र ७६,	१२४,२१=,२१७	•	दर्शे नदॅशके	₹0₹
	 लिधविधानवत क 	था २६७		सहस्रनामिपूर्जी	२०८
	नतक्याकोश	=१, २२६	छ्विनाध—	श्र गारपं चे चीसी	સ્પ્રેષ્ટ્
	• षोडशकारणवत क	पर २६७	ञ्जीतर ठोलिया—	होलिंकीचरित्रं	50
	 सप्तप्रमस्मान कथ 	२ ६७	छीहल—	उदर्रगीतं'	२ १ ६
	इरिवश पुराग्	Ęv		खीहल की मा धर्नरे	₹ 01∀ 2
खेमदास-	कवित्त	१३७		पद	₹ ₹ ₩
गंगाराम पांड्या—				पंचसहेली	२६ च
गिरधर—	क्विच ' 	₹ ३'६'		पगीगीत ' ११४, १६४	
* ये सब कथाएँ	मतक्षा कोषं में सम	रीत 'हैं ।'	जगजीवन—	एकीमाव स्तोत्र माषा	₹43

म थकार का नाम	प्रथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं	प्र'थकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र स॰
	पद	950		मंजारी गीत	२६४
जगतभूपण—	पाश्व ^र नाथ स्तोत्र	२४४	जिनदत्त—	धर्मत्रगीत	१ २३
जगतराम—	पदसम्रह १२४, १	३३, १३७,१४४		पदसमह	१२३
	विनती	१२६		(जिणदत्त विलास)	
जगराम	श्राठद्रव्य की भावना	१५३	जिनदत्त सूरि	दानशील वीपई	986
	पद	१६२	जिनदास गोघा—	श्रकृतिम चैत्यालय प्र	ना ४६
जयकृष्ण्—	रूपदीपर्धिगल	55		सुगुरु शतक	३८
जयचन्द्र छावडा—	श्रष्टपाहुन भाषा	३६, १६१	व्र० जिनदास—	त्रादिनाथस्तवन	२६६
	स्त्रा० कार्त्तिकेयानुप्रेह	ा मापा४६,१६१		कर्मविपाक्राम	⊏ ₹
	चारित्रपाहुड भाषा	\$ 6.3	जिनदेव सूरि—	वच्छराज हसराज चौ	क्षे ३०७
	ज्ञानार्णव भाषा	४०	पाएडे जिनदास-	चेतनगीत	११६, ३०४
	तत्वार्धसूत्र भाषा	98		जम्यूस्वामीचरित्र माप	, ६६, १३१
	दर्शनपाहुड	१६२		विरचर जसर्डी	११६
	देवागमस्तोत्र माषा	٠ ٧٠		पद	२७२
	द्रव्यसम्ह भाषा	र⊏		मार्जारासा	१६६
	परीचामुख भाषा	¥⊂		मुनीश्वरों की जयमाल	१६४, ३०४
	बोधपाहुड माषा	988		योगीससा ४२, ११५	, ११६, १२•
	भक्तामरस्तोत्र माषा	२४२		१३१, १३४, १४३,	१६४, ३०४
	समयसार भाषा	४४	जिनप्रभ सूरि—	श्रजितनाथ स्तवन	źRo
ı	सामायिक वचनिका	१०६,१६०,२६२		पद्मावती चौपई	३०१
	स्त्रपाहुड	१९४	जिनरंग—	चतुर्विशति जिनग्तोत्र	१४१
उपाध्यांय जयसागर-	—श्री जिनकुशल ६रि स	तुति १४०		चिंतामणि पार्श्वनाथ	स्तवन १४०
जवाहरलाल	पचकुमार प्जा	ક હ		पार्र्वनाथ स्तोत्र	१४०
•	सम्मेदशिखर पूजा	२०७		प्रबोध वावनी	१४१
महाराज जसवंतर्सिह				प्रस्ताविक दोहा	१४१
	सावाभूवण	રહશ	जिनराज सूरि—	पार्श्वनाम स्तोत्र	१४०
जिनकुशल सूरि—	σद	२७३		शालिमद चौपई	±=, ₹=&
	स्तवन	₹00	पांडे जिनराय—	जम्बूस्वामी पूजा	११ ४
जिनचंद्र सूरि—	पद	३७३	जिनवल्लभ सूरि-	श्रजित-शांति स्तवन	३०१

प्र'थकार का नाम	ग्रंथनाम प्रं	थ सूची की पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	घ्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र संं
	पद 😘	2,80		रोहणीवत कथा	२६ ४
जिनहर्ष—	नववाड सन्भाय	₹8 <i>€</i>		लन्धिविधान कथा	२ ६४
·	नेमिराजमित गीत	184, 780	•	षोडशकारणवत रथ	रह४
	नेमीश्वर गीत	१५६	1	श्रुतस्कघ (क्था)	२ ६ १
	श्रावकनी सङ्भाय	१४१		आवयद्वादशी क्था	२६५
	सिद्धचक स्तवन	180		सुगन्धदशमीनत कम	ा २६१
जिनेश्यर सूरि	स्तोत्रविधि -	२७३	टीकम—	चन्द्रहंस कथा	<i>c</i> 3
जोधराज गोदीका—		•	टेकचन्द—	कर्मदहन पूजा	४०, १६=
•	सम्यव्तवकोमुदी क्या			तीनलोक पूजा	£3
जीहरीलाल—	पद	१७१		पदसम्रह '	* १ ३
	विद्यमान वीसतीर्पंकर प्	जा ६०		पचकल्याया प्जा	२●२
म ० ज्ञानसागर—	धनन्तवत कथा	२६४		पचमगल प्जा	***
	श्रष्टाहिकानत कथा	२६६		पचमेरु पूजा	५७
	श्राकाशप चमी कथा	२६४		व्यसनराज वर्णन	₹७३
	श्रादित्यवार कथा	२६६		सुदृष्टितर् गिणि	980
	कोकिलपचमी कथा	२६ ६		सीलहकारण प्रा	६ २
	चन्दनपष्टीवृत क्या	२६५	टोडर—	पद	१ २=
	जिनगुनसपत्तिवत कथा	२ ६ ६	पं० टोडरमल-	त्रात्मातुरासन भाषा	₹8, ₹8 ₹
	जिनसिमत वधा	÷६४		गोमट्टसार जीवकाएड	भाषा १७७
	त्रेलीवयतीज 🕈 था	२ ६४		गोमट्रसार माषा	<i>9</i> =
	दशलवणवत कथा	- ६५		पुरुवार्ष सिद्ध-धुवाय	
	निशल्पाष्टमी क्या	२६ १		मोद्यमार्गप्रकाश '	₹×, ₹⊏⊅
	प ल्यविधान कथा	२६४		लिधसार मापा	२१
	पुष्पांजलियतविधान क	या २६६	ठक्रमी—	नेमिराजमितं वैखि	110
	मुक्टसप्तमी कथा	२६४		पंचेन्द्रिय येखि ११६	o, ११६, १६४
	मेषमालावत यथा	२६६		, ,	१६७, ३६६
	मीन पुरादशीवत वध	र २६४	डाॡ्राम—	श्रदाईद्वीप पूजा	¥.£
	रहाबधन क्या	न्€्र		ग्रोपदेग श्रावशाचार	> \$
	रमत्रयमत कथा	१३,४ २६८	•	σ ζ	\$Y#

प्रंथकार _् का नाम	प्रंथ नाम	मंथ सूची की पत्र सं०) प्र'थकार⊹का नाम	प्र'थ नाम	प्रंथ सूची की ' पत्र स०
	पचपरमेष्टी ग्रणस्तवन	२४०		रनत्रयपूजामाषा	५=
	पत्वपरमेष्टी पूजा			शास्त्र पूना	ξo
	बारहयसुपेचा	१४७		समाधिमर्गः	१६२
	सम्यग्तकाशः	३६	1	सिद्धचक पूजा	£ 2
संघपतिराय हूंगर-	- 9द.	२ १३	,	सोलहकारण 'पूजा	ŧ٩
दूगरसी बैनाडा—	श्री, जिनस्तुति	१६७		समोधपंचासिका	३७, ११६, १३२
पं० हू गो—	नेमिजी :की लहर	1 E &			२७३} द११
तुलसीदास—	सीतास्त्रयनर ख़ीला	२७६		स्तुति '	१३४
ब्र॰ तेजपाल —	चढवीसतीर्भकर विन	ता २६६	दादूदयाल	दोहा	२७४
	श्रीजिनस्तुति	१६७	दीपचन्द—	श्रनुमव प्रकाश	२३, १६२
त्रिभुवनचन्द्र—	अतित्य प्रचाशिका	४, १६४		घातमावलोकन	¥°
_	सबोध ।पचासिका	* १४		चिद्विलास ।	१७
त्रिलोकेन्द्रकीर्त्त—	सामाथिकपाठः मावा	705		पद समह~ १	, १२७, १३२
श्रीद्त्तलाल—	मारहसदी ।	१६२		१४१, १५	.व, १६३, २६१
थानसिंह -	रलकाराड श्रावकोचार	? = ७		परमात्मपुराण	¥ŧ
	सुबुद्धिप्रकाश	દ્રષ		विनती :	३०७
नहाद्याल—	पद समह	१०४	वावा दुलीचद	घर्मपरीका-भाषा	२ ह
दुरिगह—-	ः जरव्€ी ™	१३६		प्जनकिया, वर्णन	५ द
चानतराय-	श्रष्टाहिका पूजा	70		मृत्युमहोत्तव भाषा	४२
	१०= नामों की गुरास	।ति। १०१	दूलह	कविकुलकंठाम रेण	२४६
	एकीमावः स्तोत्रः भाषा	२ ह ७	कवि देव—	अष्टनाम ा	२७१
	चर्चाशतक ६	, २३४, १७७	मुनि देवचद्र—	यागमसार 🗝	२ ७ ४
	छहदाला	१३७, ३११	देवाब्रह्म—	विनतीः।	१३२
	्दशस्यान् चीनीसी	३५६ √		सास-ब्रह्मा भगवा	२५७
)	घर्मविलासः २६	. १३४, ३१० │	देवीदास—	राजनीति कविना	२३६
	निर्वाणकाण्ड प्जा	1	देवीदास नन्दन गरि	Ū	
	वदसम्रह्, १०६	, १२६, १३७	, !	चेतनगीत।	२ ७२
		१६३, ३००		वैराग्व शीतः	१ २२
	वार्वनाथ स्तोत्	244	संगेही दौलतराम-	वतविश्रान रासी	र्धव

त्र थकार का नाम	घंथ नाम	यंथ सूची की । पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
दौलं <mark>त्र्</mark> गम—	श्रध्यातम बारहखडी	₹= ;		सिद्धचक पूजा (श्रष्ट	ग़िंदिका) २०⊏
	श्रादिपुराण मापा	६३, २२२		सिद्धचक्रवतं कथा	द ६
	कियाकोश	१⊏३		सिद्धांतसार दीपक म	ाषा २२
	चौबोसदडक २	=, १५४, ३१२	नंद	यशोधर चरित्र	97
	त्रेपनिकया विधि	र⊏	नंददास—	मानमजरी	२७८, २८३
	पद्मपुराणभाषा	६४, २२३		नासिकेतोपाख्यान	3 € 9
	परमात्मप्रकाश टीका	88		स्रनेकार्थ मजरी	२ ३ २
	पुरवाश्रवक्थाकोश	⊏४, २२ ६	नन्द नन्दन—	चौरासी गोत्रोत्पत्ति व	णन
	पुरु वार्धसिद्धचुपाय	\=X	नंदराम—	सम्मेदशिखर पृजा	ર હ
	श्रीपाल चरित्र	৩ =	नागरीदास—	इर्कचमन	२४⊏
	मा रसमु च्चय	३६		वैनविलास	२४०
	हरिवशपुराण	६६, २२४	नाथू—	नेमिनाथ का व्याहल	१२०
धनराज—	नेमिनाथ स्तवन	₹ ≈ 8		पद	१२७
मुनिधर्मचद्र—	गीत	२७२	नाथूराम	जम्बूस्वामी चरित्र	२१०
	धर्म धमाल	१६३, १६४	नाथूलाल दोसी-	सुकुमाल चरित्र	२१६
धर्मदास—	कृष्ण का वारहमास	ा २७१	मुनि नारायण-	श्रहमताकुमार राम	१६≂
_	पद सम्रह	११३	नूर	नूरकी शकुनावली	१४≂
त्रह्म धर्मरुचि—	नेमीश्वर के दश स	वातर १५७	कवि निरमलदास—	पचाल्यान (पचतत्र	ा) २६१
धर्मसुन्दर (बाचन			नेमकीर्त्त—	पद	30€
	द्यष्टापदगिरिस्त् न न	२७३	नेमिचन्द्र—	हरिवशपुराग्	१२७
नयसुन्दर—	गन्नु जयोद्यार	१ २६		प्रीत्यकर चौपई	१२७
नवलराम—	निनदेव पर्चासी	३११		नेमीश्वरत्य	१२७
ŧ		२७, १४३, १६२	पद्भराज	फलनधी पार्वनाय	
_	ननती	३११		राज्जल का बारहमान	
नथमल विलाला-		⊏३	पद्मनाभ—	इ गर की वावनी	३०४
	चकचीर क्या	२२७	पन्नालाल—	त्राराधनामार सावा	
	(धनदृत्त सेठ की			न्यायदीपिका भाषा	<i>8</i> 8
		षा क्या सहित २४१	1	सद्भाषितावली	२३६
	सहीपाल चरित्र	२ १ ह	ł	समवशरण पूजा	२०७

श्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	प्र थ नाम	प्रथ सूची की
	्सरस्वती पूजा	ξ ξ	3W3777	A	पत्र सं०
	सुमाषितावली	२३ ६	बखतराम—	श्रासावरी	१६०
पत्रालाल संघी—		२०३)	पदसमह	१ ३७
पृथ्वीराज राठौड—	· •	-		मिष्यात खंडन	१ ⊏६
2-11/11/10/0	क वित्त	११५	वनारसीदास—	श्रध्यातम बचीसी	२ ५ २
		१३६		श्रद्ध ^र क्यानक	१ 58
	पृथ्वीराज बेलि	३०२		उपदेश प च्चीसी	988
•	(फुप्प हक्मणि बेलि	i)		उपदेश शतक	१४
प्रभु कवि—	वैराट पुराण	२६३		कर्मप्रकृति वर्णन	* * *
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसमह बाल बोधि	नीरीका १६,		कर्मप्रकृति विधान	४, ११५
		१७, १८०		कल्याणमदिरस्तोत्र ।	मात्रा १•२,
	समाभितत्र माया	૪૫, ૧૬૪		११३, ११४, १२४	
परमानंद— -	पद	११६			=, ३६६, ३११
परिखाराम—	मांगीतुंगी तीर्थ वर्ण	i i		क्षित्त	१६२
परिमल्ल—	श्रीपाल चरित्र	७६, २१६	`	गोरख वचन	• # 1
पारसदास निगोत्या-				जिनसहस्रनाम भाषा	
	भ्रानसूर्योदय नाटक	€0 }			384
पुण्यरत्नगणि— ————	यादवरासो	२१२		भानपच्चीसी ११ ४	
पुख्यकीर्त्ति—	पुर्यसार कथा	२८४		(0.41 HOL (4.5)	२# १
पुरुयसागर	त्रहाचर्य नववाडि वर्ण	न १४८			
	सुनाहु ऋषि सिध	१४⊏		झानमसीर्सा	१६३
पूनो—	पद	१₹२		तेरहकाठिया	२ द?
	मैचकुमार गीत ११४			ध्यानबचीसी	१४३, २८२
		, १४६, १६४		पद समह ११३	•
•	विनती	१३१		परमञ्योति	२७७, ३११
प्रमराज—	पचपरमेष्ठि मत्र स्तवन	१४१		बनारसी विलास ११४	
	वीप्तविरहमान स्तुति	188		120,	१३७, १७३
	सोलह सती स्तवन	१४१		भवसिंघु चतुर्रशी	२ ¤ १
पोपट शाह—	मदनमजरी क्या प्रवध	. २२७		मांभा	१२४
प ० फूरो—	राजाचद की कथा	२⊏६		मिष्यात्व निर्वध	१५५
बन्नीराम—	रेखता	4 %		मोच पैडी ३३, ११३,	₹₹₹,₹08

		,		_	
प्रथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं २	प्रथकार का नाम	प्रंथ नाम	य्रंथ सूची की पत्र सं०
	मोहविवेक यद्ध	६०, ६२, १६४	विहारीदास—	जखड़ी	∍ રૄ દ
	वैध लहण	२५१	•	सबोध पचासिका	१५३
	शिव पच्चीसी]	वूचूराम—	गीत	११७
		४, ११५, ११८,	of or	मदन दुद	308
		२०, १६५, ३०७	उपाध्याय भगतिलाभ	-	
	संवैया	१ ४६, १ ६२		सीमंघरस्वामी स्तवन	740
		₹€, १ € १ , ३०४	भैया भगवतीदास-	- एवणा दोष	१⊏३
	(113 4411)	₹०६, ३११		चेतन कर्म चरित्र	६८, १३३
	मिन्टर प्रकारण	४, ११४, ११४,		जिनधर्मपच्चीसी	***
	•	१ ८, १३३, २३ ६		निर्वाणकायः मावा	१• ३, १२० .१ ११
बालचन्द्र	पद सम्रह	923		परमात्म छत्तीसी	३ ०३
Aid A.X	हितोपदेश पच्चीस			पुरुय जगमूल पच्ची	
कवि बालक(रामचन्द्र		i		महाविलास	३२
बालवृन्द	जानकी जन्मलील	২৩ চ		बारह मावना	१ ६६
बुधजन—	इष्ट क चीसी	१०१		म्दाष्टक वर्णन	१ ७२
	छह दाला	१ ५५		चैशाय पच्चीसी ४	(२, १ ३४ , १७ २
	तत्वार्घ बोध	१ ५		सम्यक्त पच्चीसी	३६, १७२
	पचास्तिकाय भाष	3 9 T		साधुत्रों के त्राहार	के तमस १२०
	पद समह	१२७		के ४६ दोषों का व	र्णन
	बुधजन निलास	१७३, ३१२	1	सोलह स्वप्न (स्वप्	न बत्तीसी) १४४
	षुधजन सतसई	88	भगवानदास-	मगवानदास के पद	244
	मृत्यु महोत्सव	<i>\$68</i>	भाऊकवि	श्रादित्यवार कथा व	:१, ११३, ११७
	थोगसार भाषा	४२		१३८, १४३, १४	४, १४६, १६१
चुलाकीदास-	प्रश्नोत्तरोपास काच	ार ६१, १८६	1	१६७, २१	.२, २६⊏, ३∙६
	पा ग्डवपुरा य	₹ ४	भागचन्द्र	उपदेश सिद्धांत रतन	माला २४, १=३
चंशीधर—	द्रव्यसम्बर्भ भाषा	۲=, ۲		प द	१६२
वंशीधर	दस्तूर मालिका	\$00	भैरवदास	शील गीत	४३५
वहादेव	प्रव्यसंग्रह वृशि	10, 250	भारामल्ल —	दर्शनकथा	⊏३
	परमात्मनकाश ट	ोंच ८५	J	दानकगा	≂ ₹

म्रंथकार का नाम	य्रथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०	प्र'थकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र संश्
,	निशिमोजनत्याग क	या =४, २२६		विनती	३०६,३०७
SF	शीलकथा	्⊏४, २=७	मनरंग—	चौबीस् तीर्पंकर पूजा	339
भावकुशल- ,	वार्वनायस्तुति	, 48		पार्श्वनाम स्तोत्र	१४ ०
भावभद्र-	च द्रग्रप्त के सोलह	स्वप्न १४२	मनसुखराम—	शिखर विचास	१ ==
सुवनकीति —	कलावती चरित्र	ŧ ७	मनसुख सागर—	सम्मेदशिखर महात्म्य	३ ६
3	चितामणि, पार्वन्।	ास्तोत्र १४०	मन्नालाल (खिन्दूका	r) - [']	
भूधरदास—	एकीमावस्तीत्र मापा	41 - 1	•	चारित्रसार माषा	२४
3. · · ·	गर्जभावना	३ ११		पद्मनंदिप=चीसी मापा	! ३१
	_, चर्चा समाधान	६, ११७	मनोहरदास—	ज्ञानचिंतामणि २ ८,१	३१,१५३,२३५
	जखडी	१३७, ३१२	• .	धर्म परीचा	3.5
	जैनशतक ह	४, १३४, २३४	मनोहर	चिन्तामणि मान नावन	ी ११२, ११६
•	पद समह ११-,१	वर, १३७, १ ५४		लघु नावनी	११ ६
ı	पच्मेर प्जा	४७, ३११		सुग्रुह सीख	3 ६ ४
·	पश्चपुराण अ	२, १११, २१३	मनहरग-	मास	२६२
	बारह मावना	१५७	मलजी	पद समह	१३७
	भूधर विलास	3 7 ₹	कवि मल्ल—	प्रबोधचन्द्रोदय (नाटः	₆ ን ይ የ
	्वक्रनामि चकवर्षी	नी १४४, १६२	महमद्—	पद	\$48
	वैराम्य भावता	३११	महिमा सागर—	स्तमनक्पार्श्वनाथ ग	
	वाईस परीषह	: ११	मुनि महिसिंह—	त्रन्र वचीसी	
,	वीनतियां	3 2 8	व्र॰ मालदेव—	पुरदर चौपई	
भूघरमल्ल	हुक्का निषेय	9 = E	वाई मेघश्री	पचाणुवत की जयमाव	
मनराम-	श्रन्रम्।ला	-	मुनि मेघराज—	सयम प्रवह्ण	१८६
	गुणान्तरमालाः	३,६	उपाध्याय मेरुनन्दनः		1
,	र्घमंसहैली	१ ६७		श्रजित शांति स्तोन	a let
	पद ११४,***,		सहजकीर्त्त-	प्राति छत्तीसी	1460 1
, -	मडा क्वना	१ ५३	यशोनन्दि	श्रीजिननमस्कार रोज	2
	नतीर्श	335	रघुनाथ	गणमेद सरस्याः	, २.६.० . २ ६०
_	मनराम विलास	૨ ३६		झानसार नित्यविहार (राधा मा	4
	रोगापहारं स्तोत्र	११५	į	।गत्पायहार (रामा गा	71 / L

मंथकार का नाम	ष्ठधनाम पंधनपूर्वाकी पद्मनः	म थफार पत्र नाम	प्रंथ नाग	प्रथ सूर्वार्षा पत्र संश्
	निश्चिमीतम याम अवः 💢 🛵 २०६		निननी	204,400
	मीलक्षा । ३ % ३	मनरंग—	ปีส์เก อักร์ระ รูล	
भावकुशल-	वाध्येनाधम्युनि १ 🕫	i	पार्वनाम स्थाप	tyc
भावभद्र—	बद्धमुत्र हे मीवर स्वयः 💎 💽 🕶	भनगुहाराम—	शिखर विस्तान	! ==
भुवनकीनि –		गनगुग मागर—	गम्मेदशिवा गराम	7 31
J	ितामधि पार्यंनाभग्यात 💎 🕫		ਗ)	
भृधरशम—	मर्शमास्त्रीत माचा 🖘 , ३११	t	पारिकार माना	ခန
•	गद्यापना ५२१	Ę	पद्मनिद्दरशीमी मा	त ३१
	च में समाचात्र १, ११०	मनोहरदाय	गलभितामी ३६,	137,213,225
	अस्त १३ ३ ३ ३ ३ १ ४		धर्म वहोदा	÷:
	जैनगत्र १२, १३४, -१४	मनाहर—	विन्तामी मान बाव	नी ११२, ११६
	वर मनद ११ (, १४२, ९३), १४		नपु वाननी	11 [±]
	पामेन प्रता १७,३११	1	सुबुद्ध गीम	367
	पार्खप्राण 🔀 २४, १११, २१३	मनहर्ग-	माछ	263
	नारह मावना १८३	मलजी—	पड संमद	१३०
	न्धर विसाम । १३२	पवि सन्न	प्रवीभवग्दीदय (नाट	£} <0
	वज्ञनामि मणवर्षा ६। १५४ १४२	गहमद	षद	{ \$£
	बेराम्य भावना 💮 🔭	महिमा मागर—	स्त्रमन्द्र पार्वनाय र	
	वाईस परीपर 🕠	गुनि गहिसिर—	चत् वर्णाना	न् पू ३
	वीनतियां ३११	1	पृश्दर योपरं	
भूघरमल्ल	हुनका निषेत 💎 ६	1	पंतागुगत की जयमा	
मनराम—	यस्माला १-३	मुनि मेपराज—		१=६
	गुणारु(माल) १ ६	उपाध्याय मेरुनन्डन		140
	धर्मसहेला १६७	24	धनित शांति सोन	ą je
•	पट ११४ ११६,१२०,१४०,३००	महजकीत्ति—	प्राति हत्तीसी	itto E
į	महा पर्वता १५३	यशोनन्द्-	भौजिननमरसार सम्बद्ध	2
	नत्तीय। २६६	रघुनाथ	गणभेद	₹₹•
	मनराम विलास २३५ रोगापहार स्तोत ११५		सानसार नित्यविहार (राधा मा	थी) ^{२१२}
	THE THE STATE OF T	•	TO BE EXCLUSIVE STATE OF THE ST	n 4-

म्र थकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की	प्रंथकार का नाम	म थ ताम म	ांथ सूची की
		पंत्र सं०			पत्र स॰
	पचमगल	१ ३१	विनोदीलाल	नेमीश्वर राजमति गीत	१५६
	राञ्चल पच्चीसी १३१	, १३२, १४६		, नेमीश्वर राञ्चल सवाद	३०६
	१५१	, १६६, २२७		प्रमात जयमाल	₹ १ १
	समवशाख पूजा	११४		सकामरस्तोत्रकथा भाष	२२६
लालदास —	महामारत कथा	१३६, २६७		मान पच्चीसी	२ ४७
मुनि लावन स्वामी-	-शालिभद्र सज्भाय	१७४		राञ्चल पश्चीसी	१६५
साइ लोहट—	श्रठारह नाता का ची	ढाला ११३,१३२	मुनि विमलकीर्त्ति-	नद बचीसी	83
	१६१	, १६६, ३०६	निमलहर्ष वाचक—	जिनपालितमुनि स्त्राध्या	य १८४
	चौबीसठाणा चौवई	१६६	विहारी —	विहारी सतसई	१११, १३४
ब्रह्मवद्ध [°] न —	ग्रणस्थान गीत	११६, १६४	कवि वीर	मिखहार गीत	₹ १ ३
वृत्द	दोहा	१३६	वील्हव—	नेमीश्वर गीत	
	पद	१३२	रयामदास (गोधा)	पद	158
	वृन्द सतसई	१११		नेमिनाय का नारहमासा	१६६
वृन्दावन	चनुर्विशति जिनपूजा	४१, १६६	पं० शिरोमणिदास-	- धर्मसार चौ रई	3 €
	छन्द शतक	5 5	शिव कबि	किशोर कल्पद्रुम	१६६
	तीस चौबीसी पूजा	५ ३	शुभचन्द्र—	चतुर्विशति स्तुति	१४३
	प्रवचनसार भाषा	४२		तत्वसार दोहा	१७=
भ० विजयकीर्त्ति—	चन्दनषष्टिव्रतकथा	\$ 3	शोभचन्द—	ज्ञान स्खडी	१२६
	पश्चि [°] नाथस्तवन	१४१	: 	पद	१५५
	श्र ेेेेिकचरित्र	30	श्रीपाल—	जिनस्तुति	३११
विजयतिलक—	श्रादिनाथ स्तवन	१४०	श्रुतसागर	षट्माल वर्णन	983
विजयदेव सूरि—	शीलरास	११३, २६१	सदासुख कासलीवाल		
विजयभद्र—	सञ्भाय	१७४		भक्षकाष्ट्रक भाषा	३४, १८७
विद्याभूषण—	लक्षण चीबीसी पद	२ ६४		ऋर्षप्रकाशिका	ţ¥
विनयसमुद्र	विकम प्रबंध रास	२६४		तत्वार्यसूत्र माषा	१ ४
विनयप्रभ	गोतम रासा	३०१	_	भगवतीद्याराघना माषा	₹३, १८७
विश्वभूषग्	qद	931		रलकरएड श्रावकाचार म	वा ३४,१८७
	पचमेर पूजा	१४२		लघु भाषा वृत्ति	t ¥
वाचक विनय सूरि-		₹0•		वोडशकारणमावना तथा	₹

प्रथकार का नाम		। सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०
	दशलक्या धर्म			वाििक प्रिया	१२,१
सम् यराज —	पार्श्वनाथ लघु स्तोत्र	१४०	सुमतिकीत्ति	जिनवंरस्वामी वीनत	गे ११७
समयसुन्दर	मात्मउपदेश गीत	2 g s		जिनविनती	१६४
)	समाबचीमी	१२६	}	त्रिलोक्साखध चौव	ई ६२, ११⊏,
٧,	चतुर्विशति स्तुति	१४२			२३ ४
* · · ·	दानशील सवाद	१४१	सुन्दर—	पद	१६७, २६६
· ,	नलदमयती चौपई	२६१		सहेली गीत	. १३१
	नाकौट्या पार्श्वनाथ स्तव	न १४२	सुरेन्द्रकीर्त्ति—	श्रादित्वार कथा	⊑ ?
	पचमी स्तवन	१४७		न्नानपच्चीसी वृतोष	ापन २०५
सहजकीर्त्ति—	चउत्रीस जिनगणधर वर्णः	न १४७		पचमास चतुर्दशी ह	तोद्यापन २०४
	पार्श्व जिनस्थान वर्णन	१४७	सूरत	दालगया	२⊏
	पार्व भजन	१४७		गा रहखडी १४	१, २५७, ३ ११
	प्राति छत्तीसी	२ ६ २	सेवाराम—	चतुर्विशतिजिन पूजा	४१, १६६
	बीसतीर्पंकर स्तुति	१ ४७	सोमदत्त सूरि-	यशोधरचरित्र रास	१२६
सहसकर्ण-	तमाख् गीत	२ ६१	हजारीमल्ल-	गिरनार सिद्धचेत्र पू	जा १६८
संतलाल—	सिद्धचक पूजा	२०८	हरिकृष्ण पाण्डे—	चतुर्दशी कथा	१५४
स्त्ररूपचन्द् विलाला			हरिराम ्	षंद रतावली	54
	चौसठऋद्धि पूजा	५२, २००	, ह्रीसिंह—	जखडी	१ ६२
	जिनसहस्रनाम पूजा	४३	ı	पद १२७, १३	प, १४६, १६२
	निर्वाण्येत्र पूजा	५६, २०२	हर्षेकीर्त्ति—	कर्म हिंडोलना	१६७, २७२
	मदन पराजय भाषा	रर		चतुर्गति नेलि ११	•
साधुकीर्त्ति—	चूनडी	२६४		(वेलि के विषे कथन	()
	पदसमह (सतरप्रकार पू	नाप्रकर्गा)	•	पद	११४, १६४
		२७३		पचमगति वेलि ११०	³ , १३०, १६४
•	रागमाला	२७३			३●७
सालिग—	पद	१६२		नेमिनाथ राज्जल गीत	१ ६६
_	भडली विचार	२४४		नेमीश्वर गीत	१६६
	श्रप्टविधि पूजा	११२		बीसतीर्थेक्र जखडी	३११
कवि सुखदेव—	धु चौरत्र	२=०		में,दा	१४८

ग्रंथकार का नाम		यंथ सूची की पत्र सं०	य थकार का नाम	प्रथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र संश्
सूरि हर्षकीर्त्त—	विजय सेठ विजया से	ठानी २६०	पं० हेमराज	गीत	₹ ₺ ७
	सन्भाय	1		गोमट्टसार कर्म कार	ह मापा =,१७७
हर्षचन्द्र—	पद सम्रह	११३		चौरासी बोल	२ <i>७, ११</i> २
हरखचंद (धनराज	के शिष्य)			दोहा शतक	148
	पदसमह	२=ह		नयचक भाषा	Yo
	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२⊏६		नेमिराजमती जलही	१ १ २
	शीतलनाथ स्तवन	३८६		पचारितकाय भाषा	₹ €, ₹ 5 ₹
हरिर्फलश —	सिंहासन बत्तीसी	२६२		प्रवचन सार माषा ४	२, ११ १ , १६३
पं० हरीवैस—	पचनधावा	१६४		मकामर स्तोत्र माश	१०४, ११२,
हीरा-	नेमि न्याहली	₽¥		रैरम, १३४, १३६	, १६४, १७२,
हेमविमल सूरि—	नन्द अतीसी	२५५ (२६३, २१६, ३०३	३०३, ३०६



🗡 शुद्धाशुद्धि विवरण 🖈

पत्र एवं पंक्ति	श्रशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१× १ ३१ x ×१ x	श्रन्तगढदशास्रो वृत्ति	श्रन्तगडदशाश्रो वृत्ति
₹\&∧\& } १× ७	इकवीसठाणा चर्चा	इकवीसठाणा—सिद्धसेनसूरि
१×१३	जीबपाठ	जीवम <u>ख</u> ्यापाठ
१ ×१ <i>४</i>	माघ सुदी	[,] पोस बुदी
२ ×१ <i>६</i>	-	१ से १७ तक सभी पाठ रामचन्द्र कृत हैं।
8× ६	कग्रयगिद	क्रायगंदी
y×≎হ	पावछ्री	यावछ्री
≂×8≯	बोछ	चोच्छ <u>ं</u>
<i>8</i> ×2 <i>8</i>	समोसरमवर्णन	समोसरणवर्णन
१३×/१	१८३६	१ ≒४६
१४×१७	×	१४२६
२०×५२	जिनाय	
≈8× ७	भडार	भडारी
२⊏४२२	Pundany.	भाषा–हिन्दी
3 ×35	रचनाकाल ×	रचनाकाल—
३६×२३ ३४४×२४ ३४३×२४ }	रइघू	श्रज्ञात
39× 7 5	मे प्रतिलिपि की थी	में संशोधन करके प्रतिलिपि करवाई थी
& X3€	4 8	२४१
३६×२०	चिन्तान	चित्तान्
₹ £ ×₹0	धर्म रेजितचैतसान	धर्मरंजितचेतसान
88× E	भाषा-श्रपभ्रंश	,
8 x ×१=	विद्यानिद्	विद्यानन्द

पत्र एवं पंक्ति	त्र्रशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४६×१४	१नम३्	. १५६३
४६× ७ ३४६×१२	त्रा समन्तभद्र	पूज्यपाद
४७×१०	यति	श्रभिनव
४७×१३	३१	३१२
४म×१०	स॰ १६२७ श्रावण सुदी २	ं मंं० १़द=६३ श्रषाढ सुदी ४ बुधवार '
६०×२३		भाषा-संस्कृत
६ १ × 3	प्राकृत्	्रञ्जपभू श्र
६४×२ <i>५</i>	राम्चन्द	रायचन्द
ξξ× ⊏	श्रघुसारि	श्र <u>म</u> ुसारि
ę̃ξ× ဖ	बस्तुपाल	वसतपाल <i>,</i>
७०× ^१ १≂	प्रद्युम्नचिर्	प्रद्युम्नचरित—सधारु
७३×२४	भविसपत्तु	भविसयत्त
७४× २	संस्कृत	श्रपभ्र श
७४× ४	परिहानन्द	नन्द
७६×२२	परिहानन्द	परि हां नन्द
७ ८ ×१६	सं० १६१८	सं० १६७=
७⊏≍३६	श्राराधना	दौततरामजी कृत त्राराधना
<i>γ</i> × 3 <i>ν</i>	श्रे शिक चरित्र	श्रे िएक चरित्र (वर्द्ध मान काव्य)
9××3v	कवि वालक	कवि रासत्तन्द्र "वालक"
≒ १×१६	गौतम प्रच्छा	गौतमप्रच्छा वृत्ति
म ^२ × १	त्र्यतिमपाठ–"पाठक पद सयुक्त ^र " के	पूर्व निम्न श्लोक श्रीर पढें —
	श्रीजिनहर्षसूरिणा सुशिष्या पाठकवरा	1
	श्रीम्त्युमतिहसाश्च तच्छि	प्रयोमतिवद्ध ^र ते ॥ १ ॥
⊏8×१⊏	व्र० मालदेव	मालदेव
५४×२१	श्र्नुस्व कोठ	श्रवस्व कोउ
८ ४८५	श्रगर्या मील तो	श्रगमी मीलतो
≒X×2%	भारामल्ला	भारामल्ल

पत्र एव पिक	ऋशुद्ध पाठ	शुङ्ख पाठ
¤x×₹x	पथ	पद्य
⊑ ξΧ ⊑	স্থা০	भ०
5 ७× ७	१७०=	१७६४
5 ७× ७	लेखनकाल ×	लेखनकाल-सं० १८०६ फागुण बुदी १३
⊏७ ×२१	रचन	रचना
११×०३	प्रारंभिक पाठ के चौथे पद्य से आ	गे निम्न पद्य ऋौर पढें —

त्रतर नाडी सोखे वाय, समरस त्रानद सहज समाय।

विस्व चक्र में चित न होय, पडित नाम कहावें सोय ॥ ४ ॥ जब वर खेमचन्द गुर दीयो; तब आरभ ग्रंथ को कीयो।

यह प्रवोध उतपन्यो आय, अधकार तिहि घाल्यो खाय ॥ ६ ॥ भीतर वाहर कहि समुक्तावे, सोई चतुर तापै किह आवे ।

जो या रस का भेदी होय, या में खोजे पाव सोइ॥०॥ मथुरादास नाम विस्तार यो, देवीदास पिता की धार यो।

श्रंतर वेद देस में रहै, तीजें नाम मल्ह किव कहै।। पा ताहि सुनत श्रद्भुति रुचि भई, निहचें मन की दुविधा गई।

जितने पुस्तक पृथ्वी श्राहि, यह श्री कथा सिरोमिण ताहि ॥ ६ ॥ यह निज बात जानीयो सही,, पर्चे प्रगट मल कवि कही । , ,

पोथी एक कहु ते आिन, ज्यो उहां त्यों इहां राखी जानि ॥ १०॥ सोरह से सबत जब लागा, तामहि वरष एक ऋद्धे भागा।

कार्तिक कृष्ण पत्त द्वादसी, ता दिन कथा जुन्मन में बसी ॥११॥ जो हों कृष्ण भक्ति निताकरीं, वासुदेव गुरु मन में धरीं।

तो यह मोपें हैं ज्यो जिसी, कृष्ण भट्ट भाषी है तिसी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

मथुरादास विलास इहि, जो रिम जानें कोय।

इहि रस वेधे मल्ह किह, बहुरिन उत्तटे सोय ॥१३॥ जब निसु चन्द्र ऋकासे होइ, तब जो तिमिर न देखें कोड ।

तैसे हि ज्ञान चन्द्र परकासे, ज्यों श्रज्ञान श्रध्यारी नासे ॥१४॥ परमात्म परगट है जाहि, मानी इंहै महादेव श्राहि।

ग्यान नेत्र तीजे जब होई, मृगतृष्णा देखें जगु सोई ॥१४॥

पत्र एवं पंक्ति श्रशुद्ध पाठ शुद्ध पाठ श्रनुभै ध्यान धारना करैं, समता सील माहि मन धरै। इहि विधि रिम जो जाने सही, महादेव मन वच कम कही ॥१६% BOXSE या र यार ६५×३ _\ ३६४×७ } टोडरमल **उतमचद** वनारसीदास £8X& चानतराय वाचक विनय विजय वाचक विनय सूरि 200×8= **उग**णतीसइ **च**गणसीयइ १०१×६ राते राते रचड १०१×६ कारणां १०१×७ कारया 3×909 इठवन इतवन नेमिदशभवर्णन नेमिदश भववर्णन १०३×२६ मानतु गाचार्य । टीकाकार मानतुं गाचार्य टीकाकार १०४×२२ १०७×२१ ξ X प्रथम पक्षि के आगे निम्न पक्षि और पहें-8×308 "शिष्य ताहि भट्टारक सत, तिलोकेन्द्रकीरति मतिवत। प्राकृत (,,) **११०**×११ श्रपभ्र श ११8×१,१= कवि वालक कवि रामचन्द्र 'बालक' दोह दोहा १/४×२३ १६६१ १६६३ ११४×२४ मुनि कनकामर १ ७×१४ नि कनकामर १२१×२ १५६० १७१७ विशेष १२७× २ ोष 3× \$9 मरकट मनरकट १३४×३ वडा चादन्त वडाचा दन्त बदो के पठनार्थ ने चंदो के पठनार्थ १३७X४ धार्मिक 835X88 क कर्त्ता का नाम 8X359 का नाम धू चरित १३६×२६ चरित

(३=१)

पत्र एवं पंक्ति	ऋशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१४६×४	तलचचंद	लालचन्द
१४७×१६ ३६३×२७ }	त्रमरमग्णिक	त्रमरमणिक के शिष्य साधुकीित
१४=×२	माणिक सूरि	पुरुयसागर
१४८×२४, २६) ३३८×२६ } ३४०×२६)	मोडा	मोरडा
१४६×२१	गुजराती	हिन्दी (राजस्थानी)
१४६×३	मोडो	मोरडो
१४०×११	जसुमालीया	जसु मालिया
१४०×१८	कापथ	कायथ
१४०×२०	पखार	परवार
१४१×६	नारी चरित्र	नारी चरित्र संबंधी एक कथा
ξ ₹₹× ξ ο	जैन	जे न
१४४×२१	वुधजन	द्यानतराय
8X0XE	राज पट्टावली	देहली की राजपट्टावली
१४६×१०	राजार्श्वों के	देहली के राजाओं के
१ ६३×१ ४ ३७०×२१	ज्ञानवत्तीसी -	श्रध्यात्म बत्तीसी
<i>3</i> ×0 <i>0</i> }	३४ वें पद्य के त्र्यागे की पंक्ति नि	म्न प्रकार है—
	तस शिष्य मुनि नाराय	ए जंपइ धरी मनि उल्हास ए ॥१३४॥
१६ <u>६</u> ×=	पत्र सख्या-।	पत्र संख्या-१६।
१७≒×२६	रचनाकाल−×।	रचनाकाल स० १४२६।
१८०×१३	क्रम् क्रमत्व	देवपट्टोदयाद्रितरुण तरुणित्व
१८० ×१८	लोधा ही	लोधाही
₹₹	विमलहर्पवाचक	भाव
१८७×११	१९०७	१६००
१ ५७ ×१ <i>६</i>	१=२४	१६२१
१ 55× €	6888	१६४४
१ ६०×२१	श्रीरत्नहर्ष	श्री रत्नहर्ष के शिष्य श्रीसार
<i>\$€8</i> × 8	भव वैराग्य शतक	वैराग्यशतक

पत्र एवं पंक्ति	त्रशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१ ६ ४×१=	भूघर	पं० भूघर
१६६×१७	घर्मभूषण	श्रभिनव धर्मभूपण
२००×२४	तेलाव्रत	लव्धिविधान तेला त्रत
२०४×१४ ३१=×१०	आ॰ गणिनंदि	त्र्या० गु र्णिनंदि
२०४×२४	पीले	पील्या
२१≒×१६	पंडि	पंडित
२१ ६ ×२४ ,	रचनाकाल	रचनाकाल सं० १६१⊏
२२१×१२	कवि वालक	कवि रामचन्द्र 'वालक'
२२ १ ×१३	सं० १७०३	१७१३
२२४×१६	श्रष्टान्हिका कथ	अप्टान्हिका कथा−मतिमदिर
२२७× ७	कनककीर्ति	कनक
२२७×२१ ३३६× २ १	वंकचोरकथा (धनदत्त सेठकी कथा)	वकचोरकथा, धनदत्त सेठ की कथा
२२⊏⋉२१	देव ए	देवरा
^{३२८} ×२६	से मदारखा	सैमदारखा
२≈४× २	कामन्द्	_
२३४×१४	३००१	१७२=
२३७⋉ ७	१०८०	१७८०
२३⊏╳१०	कुमुद्चन्द्र	मृ० कः कुमुद्चन्द्र/टीकाकार उतमऋषि
२४०× ≒	जयानिदसूरि	जयनदिसूरि
२४०×१४	शिलपंडित	शाति पंडित
२४३×१७	(युगादि देव स्तवन)।	(युगादिदेव स्तवन) विजयतिलक
२४३×२७	मिधुएयो	मिघुएयो
२४४× २	ए भगाइ	पभण्इ
२४५× ६	ज्योतिष (शकुनशास्त्र)	वास्तुविज्ञान
२४६× ७	वराहमिहरज	वराहमिहर
	महिसिंह	महेस

(३५)					
पत्र एवं पंक्ति	त्रशुद्ध पांठ	शुद्ध पाठे			
२ ५२ ×१४	महसंहि	महें सहि			
२¥२×१६	गोत्रवर्णन	खंडेलवांलों के गोत्र वर्णन			
२ ५३ × ६	रचनाकाल	रचेनीकालें सें० १८८६			
२ ४ ३× ६	लेखनकाल स० १==६	त्तेखनकाल × ।			
२ ५३×१४	छह सतीयीसिंह	ञ्चहस तीयासिंह			
२४४×२४	अ व्दनीवासी	श्रब्द नीवासी			
२४४×१४	हेमविमलसूरि	हेमविमल सूरि के प्रशिष्यण संघकुल			
२४७×१६	समासो	तमासो			
२४=x E	व्रतविधा नवासों	ब्रतविधानरासो			
२४६× ४	श्रावग्	श्रावक			
२६०× =	२७०	२७० रचना काल सं० १७४३			
२६७× ६	४१६	4 १=			
२६६×१२	वालक	रामचन्द्र 'बालक'			
२७०× ६	२६	२४			
२७१×१२	गोट	गोत			
२७३× ६	वीर स॰	विक्रम सं०			
२७३×११	हिन्दी	सस्कृत			
२७३×१४	१६४८	१६१ ८			
२७३×१⊏	पद् २	जिनदत्त सूरि गीत			
२७३×१⊏	जिनदत्तसूरि				
२७६×⊏	पाठ्य	पाठ			
२७६×१३	भूषाभूषण	भोषाभूषण			
२८०×१०	पत्रावली	च्पत्रावली			
२ ८४ १५ ३२८४१६ ३४१×२२	श्री धूचरित	श्री धूचरित-जनगोपाल			
२द६×२द	१७६६	१६६६			
₹80X ६	भाथइ	भाषइ			
58x035	तसघरन वनि धथाइ	तस घर नवनिधथाइ			
२६०×१२	श्रद्वकंड न तरुवइ	ष्यधक उनत हुवइ			

16	(3=y	١
		,
पत्र एवं विकि रहिर स	ं श्रीह पाठ 👭	शुद्ध पाठ
388× 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12	जिनक्त समि	सययमुन्दर
35 X X 3 X 3 X 3 X 3 X 3 X 3 X 3 X 3 X 3	प ए० कार्र सं० १७२१ पद्य १०	
282XE }	माति ञ् ञतीसी	
३३द्र×१८ ∫	ana stata	प्राति छ्त्तीसी
२६२× ५ } ३३५×१ ५ }	यश कीर्त्ति	सह जकीित्त
₹ ६ २ ×१ ४	हरिकत्तश	हीरकलश
२६२×१४	स० १६३२	१६३६
२६४४७	थाडलपुरि	पाडलपुरि
\$8X66	मारवदा	भैरवदास
२६४×२≒	वेतालदास	
₹७४६	२१८	३१८
३०१×१६	" (१२)	सस्कृत (१२)
३०१×२०	,, (१३)	हिन्दी (१३)
३०१×२४	चतुराई	परिचई
३०३ ×६	१७४०	१७४४
₹ ० ४×२ }	गुनगंजनम	गुनगंजन कला
३२०×२४		
३१०×१४	षिष्रशत	पछिशत प्रकरण
३१०×१४	"	प्राकृत
३१२×६	٤१	= 8
३१२×६	कुशलमुर्नि द	
₹१ ४ ×5	चैनसुखदास	चैनसुख्
३१४×१४	मुनि महिसिंह	मुनि महेस
३१६४७	गण्चन्द्र	गुराचन्द्र
३१ द्×६	चप्देशश्रतक-बनारसीदास	उपदेशशतक-द्यानतराय
३२०४१६	यृति धर्मभूषण	श्रमिनव धर्मभूपरा
३३१×११	र्मदास े	धर्मदास
३४१×२२	२६१	280
३५०×१८	२७६	३७६
३६२×१४	गोयमा	गोयम
३६३×⁰४	संवोध पचासिका	
३६ ४ × ७	उत्तमचंद्र	टोखरमल
३६४×४	कामन्द कामन्दकीय नीतिसार	
		_

मारतीय श्रृति-दर्शन केन्द्र जयपुर